हाड़ौती संभाग के राजपूत शासकों का संगीत के विकास में योगदान

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की

पीएच.डी. (संगीत)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

कला संकाय

शोधार्थी

गुंजन हाड़ा

पंजीयन क्रमांक : **RS/1381/22**

शोध पर्यवेक्षक

प्रो. डॉ. रौशन भारती

संगीत विभाग

राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) 324005 भारत

जनवरी 2025

शोध निदेशालय
कोटा विश्वविद्यालय
एम.बी.एस. मार्ग, कोटा (राजस्थान)–३२४००५
फोननम्बर : 0७४४–२४७१०३७

Directorate of Research
University of Kota
MBS Marg, KOTA (Rajasthan)-324005
Phone No.: 0744-2471037

CERTIFICATE

I feel great pleasure in certifying that the Ph.D. thesis entitled **"हाड़ौती संभाग के राजपूत शासकों का संगीत के विकास में योगदान"** submitted by **Gunjan Hada** to the University of Kota in the partial fulfillment of the requirements for the award of the degree of Doctor of Philosophy is based on the research work carried out under my guidance.

She has completed the following requirements as per UGC Regulations and research ordinance of the University :

(a) Satisfactory Completion of the Ph.D. Course Work.

(b) Submission of Annual Progress Reports.

(c) Fulfillment of residential requirement of the Research Centre (Minimum 200 Days).

(d) Presentation of research work before the Departmental Committee.

(e) Publication of at least one research paper in the referred research journal of national and international repute.

(f) Two paper presentations in the Conferences / Seminars.

I recommend the submission of the Ph.D. thesis and certify that it is fit to be evaluated by the examiners.

Date :
Place : Kota

Prof. Dr. Roshan Bharti
Research Supervisor

शोध निदेशालय
कोटा विश्वविद्यालय
एम.बी.एस. मार्ग, कोटा (राजस्थान)–३२४००५
फोननम्बर : ०७४४–२४७१०३७

Directorate of Research
University of Kota
MBS Marg, KOTA (Rajasthan)-324005
Phone No.: 0744-2471037

CANDIDATE'S DECLARATION

I, **Gunjan Hada** hereby certify that the research work presented in my Ph.D. thesis entitled **"हाड़ौती संभाग के राजपूत शासकों का संगीत के विकास में योगदान"** which is carried out by me under the supervision of **Prof. Dr. Roshan Bharti** and submitted in the partial fulfillment of the requirement for the award of the degree of Doctor of Philosophy of the University of Kota, represents my ideas in my own words and where others ideas or words have been included in this thesis, I have adequately cited and referenced the original sources.

The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any degree or diploma from any other institution or university in India or abroad. I declare that I have adhered to all the principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea / data / fact / source in my submission.

I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the University and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

Date :
Place : Kota

Gunjan Hada
(Research Scholar)

This is to certify that the above statement made by **Gunjan Hada** (Registration Number: **RS/1381/22**) is correct to the best of my knowledge.

Date :
Place : Kota

Prof. Dr. Roshan Bharti
(Research Supervisor)

शोध निदेशालय
कोटा विश्वविद्यालय
एम.बी.एस. मार्ग, कोटा (राजस्थान)–३२४००५
फोननम्बर : ०७४४–२४७१०३७

Directorate of Research
University of Kota
MBS Marg, KOTA (Rajasthan)-324005
Phone No.: 0744-2471037

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that the Ph.D. thesis entitled **"हाड़ौती संभाग के राजपूत शासकों का संगीत के विकास में योगदान"** submitted by **Gunjan Hada** has been examined with the anti-plagiarism tool.

We undertake that:

a. The thesis has significant new work/knowledge as compared already published or under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.

b. The work presented is original and own work of the author i.e. there is no plagiarism. No ideas, processes, results or words of others have been presented as the author's own work.

c. There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.

d. There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.

e. The thesis has been checked by using Plagiarism checker DrillBit Software and found within the limits as per UGC plagiarism Policy and instructions issued from time to time.

Report is also enclosed along with this Ph.D. thesis.

Date :
Place : Kota

Gunjan Hada
Research Scholar

Date :
Place : Kota

Prof. Dr. Roshan Bharti
Research Supervisor

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	गुंजन हाडा
Title	हाड़ौती संभाग के राजपूत शासकों का संगीत के विकास में योगदान
Paper/Submission ID	2818475
Submitted by	krjchoudhary@gmail.com
Submission Date	2024-12-20 08:38:55
Document type	Thesis

Result Information

Similarity	**2%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

आभार

सर्वप्रथम में अपने ईष्ट देव भगवान श्री महाकाल तथा श्री कृष्ण का आभार व्यक्त करना चाहूँगी। उनकी असीम कृपा तथा आशीर्वाद मुझ पर सदैव रहा। हर पल ईश्वर ने मेरा साथ निभाया। कभी प्रत्यक्ष, तो कभी अप्रत्यक्ष रूप में। जब मैंने शोध कार्य प्रारंभ किया तो मुझे कोई अंदाज़ा नहीं था कि इसे पूर्ण रूप किस प्रकार प्रदान किया जाएगा। मेरे शोध को पूर्ण करने में श्री नीम करोरी बाबा (कैंची धाम) ने मुझे अत्यधिक सम्बल प्रदान किया। मेरी निराशा को सदैव आशा में परिवर्तित किया तथा हर क़दम पर मेरा मार्गदर्शन किया। मुझे हर मुश्किल से बेहद आसानी से निकाल दिया।

इसके पश्चात मैं मेरे पूजनीय माता-पिता तथा बड़े भाई की ऋणी रहूँगी। संगीत के क्षेत्र में क़दम रखने के प्रथम दिवस से मेरे पापा श्री जयसिंह हाड़ा एवं मेरी माँताश्री दीपिका हाड़ा तथा मेरे भ्राताश्री शंशाक हाड़ा ने मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान किया। शोध कार्य के दौरान मुझे जब भी कहीं जाना होता, किसी का साक्षात्कार करने के लिए तो मेरे पिता श्री ने एक हमसाये व ढ़ाल की भाँति प्रतिपल मेरा साथ दिया। अपनी व्यस्ततम दिनचर्या में से हमेशा मुझे समय देकर मेरे पापा तथा बड़े भईया हर जगह मुझे अपने साथ लेकर जाते। मुझे एक पल के लिए भी अपने से जुदा नहीं किया। मेरी माँ श्रीमति दीपिका हाड़ा ने भी मेरे साथ बहुत त्याग किया। मैं पूरी रात लिखती रहती तो मेरी माँताश्री भी मेरे साथ जागती रहती। मुझे इतना लाड़ और दुलार दिया, शायद मैं जिसके क़ाबिल भी नहीं हूँ।

इस शोध प्रबंध की रचना की सम्पूर्ण प्रेरणा, चयन व गवेषणात्मक दृष्टिकोण के प्रर्वतक व नियामक शोध निदेशक मेरे परमप्रिय तथा परम सम्मानीय गुरू जी डॉ. रौशन भारती जी, जिनके लिए कुछ भी लिख पाना कठिन तथा सूरज को दीपक की एक लौ दिखाने की तरह है। मेरे गुरू जी ने प्रथम दिवस से ही अपना स्नेह-प्यार तथा आर्शीवाद मुझे प्रदान किया है। मैंने तो सिर्फ अपने गुरू का सपना पूरा करने की एक छोटी-सी कोशिश की है। आपका सपना था कि मैं स्वर्ण पदक हासिल करके पीएच.डी. करूँ। पर मेरे गुरू जी ने अपने बेहद व्यस्त समय में से भी हमेशा अपना बहुमूल्य समय तथा मार्गदर्शन मुझे प्रदान किया। अगर ईश्वर की कृपा से आप मेरे गुरू नहीं होते तो ना ही मैं कभी स्वर्ण पदक अर्जित कर पाती और ना ही अपना

शोध कार्य पूर्ण कर पाती। आपने शोध के दौरान आने वाली कठिन परिस्थितियों से कैसे गुज़रना है, यह सीख भी मुझे प्रदान की। आपने मेरे पथ प्रदर्शक बनकर हमेशा मुझे सही-ग़लत तथा अच्छे-बुरे में फ़र्क़ करना सिखाया। आपने कठिन से कठिन व विषम परिस्थितियों में भी मेरा मार्गदर्शन करके मुझे हमेशा सत्य की राह पर चलना सिखाया। मैं ताउम्र आपकी ऋणी रहूँगी।

मेरे नाना सा श्री बृजमोहन सिंह जोधा, जिन्हें मेरे शोध कार्य पूर्ण होने पर मुझ से ज़्यादा ख़ुशी है, को भी में वंदन करना चाहूँगी।

मेरी भाभी सा श्रीमती सोनम हाड़ा का भी मैं आभार व्यक्त करना चाहूँगी, जिन्होंने मुझे हमेशा अपनी बहन तो कभी दोस्त की तरह समझाया व हर पल मेरा ख़्याल रखा। जब भी मैंने हार मानी तो मुझें प्रोत्साहन व ऊर्जा प्रदान की।

मैं डॉ. जीतेश जोशी जी का भी धन्यवाद देना चाहूँगी, जिन्होंने समय-समय पर मुझे उचित मार्गदर्शन प्रदान किया तथा शोध कार्य शीघ्र पूर्ण करने को प्रोत्साहित किया।

मैं आभार व्यक्त करना चाहूँगी कोटा विश्वविद्यालय के श्री चमन तिवारी जी का जिन्होंने मुझे पीएच.डी. में प्रवेश लेने के प्रथम दिवस से ही पूर्ण सहयोग प्रदान किया, आपके सहयोग के बिना मेरा शोध पूर्ण होना कठिन था, मैं सदैव आपकी आभारी रहूँगी।

मैं इतिहासविद डॉ. अरविन्द जी सक्सेना का भी धन्यवाद देना चाहूँगी, जिन्होंने समय-समय पर मुझे मार्गदर्शन दिया। सरस्वती कम्प्यूटर के राजकुमार सेन जी को भी में धन्यवाद देना चाहूँगी, जिन्होंने इस शोध कार्य की टाईपिंग का सम्पूर्ण कार्य किया है।

शोधार्थी
गुंजन हाड़ा

प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध प्रबंध ''हाड़ौती संभाग के राजपूत शासकों का संगीत के विकास में योगदान'' हाड़ावती अथवा हाड़ौती अंचल की भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान के दक्षिण पूर्व भाग में स्थित ऐसे क्षेत्र का सांगीतिक परिवेश उद्घाटित करता है। जिसमें सघन वनों, संकीर्ण नदियों व छोटी पहाड़ियों के मध्य गायन, वादन व नृत्य के अनेक मानदण्ड स्थापित किए। समीक्षाधीन क्षेत्र का राजनैतिक संरक्षण प्रायः एक जाति अथवा एक राजवंश के अधीन रहा। फलतः बाहरी आक्रमणों के उपरान्त भी सांस्कृतिक विकास प्रायः एक सूत्र, गति व लय में होता रहा। इसके अनुकूल प्रभाव का तथ्यगत व प्रमाणिक स्त्रोतों के अध्ययन की प्रस्तुति शोध का प्रमुख लक्ष्य रहा है। इसके केन्द्र में रजवाड़ी एवं कलाकारों के वंशजों के साक्षात्कार एवं व्यक्तिगत अनवेशण की विधि रही है। बूंदी व कोटा के उत्त्त्राधिकारियों हाड़ा नरेशों तथा झालावाड़ के झाला नरेशों ने राजपूती रजवट (शौर्य) के समानान्तर दृश्य व श्रव्य कला के क्षेत्र में सांगीतिक विकास को जिस प्रकार संरक्षण व प्रोत्साहन दिया, उसे उद्घाटित करना भी शोध का लक्ष्य है। स्वतंत्र भारत में राजस्थान प्रांत में विलयित होकर उपयुक्त तीनों राज्यों ने ज़िलों के रूप में कोटा संभाग की प्रशासकीय ईकाई के अंतर्गत जितना सांगीतिक क्षेत्र को मुखर बनाया, उसकी गवेषणा भी उद्देश्य रहा हैं। विभिन्न प्रख्यात कलाकारों उदाहरणार्थ बूंदी के सूर्यमल्ल मिश्रण जी, मीर बख्श खाँ, नन्ही बाई, मोहम्मद अली, काले खाँ, संगीत सम्राट अल्लादिया खाँ, फकीर चन्द जी, शकूरन शहज़ादी, वहीदन बाई जी, मोतीलाल जी (भुजवाले), झालावाड़ के उदयशंकर जी, पं. रविशंकर जी, नवल किशोर जी राव, मुहम्मद अली खाँ जी, प्यारे इमामुद्दीन जी के सांगीतिक योगदान का विषद अध्ययन महत्ती लक्ष्य रहा है।

शोध सार

प्रस्तुत शोध प्रबंध हाड़ौती संभाग के राजपूत शासकों का संगीत के विकास में योगदान में आलोच्य क्षेत्र में राजवंशों, राजकीय संस्थाओं, स्वयंसेवी संस्थाओं एवं निज प्रतिभा के कारणों से हुए सांगीतिक विकास की सर्वथा अभूतपूर्ण गवेषणा है। इसमें देश काल एवं समकालीन भारतवश के विभिन्न संचार साधनों के समावेश के प्रभावों की भी गणना की गई हैं। उत्तरी डिंगल, दक्षिणी डिंगल व मालवी आदि भाषाओं की पृष्ठभूमि में धर्माचरण, लोकाचार, रीति-रिवाज़ों, लोक-उत्सवों व अन्य परम्परागत उत्सवों को केन्द्र में रखकर गायन, नृत्य व वाद्य संगीत में अन्य निकटवर्ती क्षेत्रों से अपेक्षाकृत भिन्न सांगीतिक प्रभाव उत्पन्न करने में सफलता पाई है। युद्धों की विभिषीका एवं प्राकृतिक विपदाएँ इस संगीतमय संस्कृति की गतिशिलता को अवरूद्ध ना कर सकी। इस परिवेश में इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायक संधियों व आधुनिकीकरण की समानान्तर प्रक्रिया ने विभिन्न गायन शैलियों, नृत्य विधाओं एवं समयानुकुल वाद्य यंत्रों की प्रस्तुति की। गुणीजनखाने के अधीन अनेक कलाकारों ने जहाँ लोक-कलाओं की गहनता विकसित की, वहीं साम्प्रदायिक सद्भाव व कलाकारों के दरबारी शिष्टाचार में रची-बसी जीवनप्रणाली का सृजन भी किया। परिणामतया अन्न-पान, वेश-भूषा, अंलकारों, सौंदर्य प्रसाधनों एवं सौंदर्य शास्त्रीय नवाचारों ने बूंदी, कोटा व झालावाड़ में राज्यगत सूत्रबद्ध संस्कृति का भी विकास किया, जो अनेक अर्थों में अभिजात्य ज्ञात होती थी। स्थानीय भौगोलिक स्थिति व इतिहास का विवरण देते हुए इस शोध प्रबंध में हाड़ौती संभाग के शासकों के दरबार के कलाकारों का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

कोटा में राज परिवार तथा राजकीय संस्थाओं उदाहरण- राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, राजकीय महाविद्यालय बून्दी, झालावाड़ विद्यालय द्वारा सांगीतिक उन्नयन एवं इसके समावेशी प्रसार पर प्रकाश डाला गया है, इस युग के विभिन्न कला जीवियों के भी विवरण हैं। प्रत्येक युग विशेष में समकालीन अन्य रियासतों एवं राष्ट्रव्यापि संस्कृति का प्रभाव प्रत्येक देशी राज्य की सांगीतिक अवस्था पर स्वाभाविक रूप से होता था, इस पृष्ठभूमि में हाड़ौती के राज्यों ने भी अन्य शैलियों को आत्मसात करना प्रारंभ कर दिया, इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव हुआ पाश्चात्य संगीत के समावेश पर। यही नहीं मंचन एवं मंच संयोजन की आधुनिक विधियों व तकनीकि सहायोग ने इसे अधिक सरस एवं व्यापक बना दिया। इसलिए हाड़ौती मात्र राज्यों का एक समूह बनकर न रहा, वरन जीवंत कला शैलियों का सशक्त केन्द्र भी बन गया।

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु		पृष्ठ संख्या
प्रमाण पत्र		I
घोषणा पत्र		II
एन्टी–प्लेगरिज़्म प्रमाण पत्र		III-IV
आभार		V-VI
प्राक्कथन		VII
शोध सार		VIII
अनुक्रमणिका		IX
शब्द संक्षिप्ताक्षर		X
चित्र सूची		XI-XIII
प्रथम अध्याय	हाड़ौती संभाग की भौगोलिक स्थिति	1-25
द्वितीय अध्याय	बून्दी रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान	26-75
तृतीय अध्याय	कोटा रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान	76-118
चतुर्थ अध्याय	झालावाड़ रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान	119-145
पंचम अध्याय	बारां में संगीत का विकास	146-155
षष्ठम् अध्यम्र	हाड़ौती संभाग की वर्तमान सांगीतिक स्थिति	156-172
	उपसहांर	173-174
	सारांश	175-179
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	180-183
	प्रकाशित शोध पत्र	
	सेमिनार में सहभागी प्रमाण पत्र	

शब्द संक्षिप्ताक्षर

संक्षिप्ताक्षर	वर्णन
प्रो.	प्रोफेसर
डॉ.	डॉक्टर
पं.	पण्डित
उ.	उस्ताद
पृ.	पृष्ठ
सं.	संख्या
ई.	ईस्वी
वि.सं.	विक्रम संवत
नं.	नम्बर
वि.वि.	विश्वविद्यालय

चित्र सूची

चित्र संख्या	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.1	बून्दी ज़िले का नक्शा	3
1.2	बून्दी तीज के मेले में तथ्य संकलन करते शोधार्थी गणगौर माता की सवारी के साथ	8
1.3	कोटा राज्य का नक्शा (मानचित्र)	13
1.4	झालावाड़ राज्य का मानचित्र	20
2.1	बून्दी रियासत के वर्तमान शासक वंशवर्धन सिंह जी के साथ शोधार्थी	26
2.2	बून्दी रियासत का राज चिन्ह	26
2.3	फकीर चन्द जी राव रियासतकालीन कलाकार का परिचय प्राप्त करते हुए शोधार्थी गुंजन हाड़ा	54
2.4	सुंदरलाल जी के पुत्र का साक्षात्कार लेते शोधार्थी	57
2.5	रियासतकालीन नृत्यांगना मल्लिका आपा जी के साथ शोधार्थी गुंजन हाड़ा	63
2.6	बून्दी चित्रशाला में शोध विषय सम्बन्धित चित्रों का संकलन करते शोधार्थी	64
2.7	बून्दी गढ़ में तथ्य संकलन करते हुए शोधार्थी	65
2.8	संध्याकालीन जनाना शामियाना दरबार	67
2.9	झरोखे का चित्रण (भित्ति चित्रण)	68
2.10	सुखमहल का चित्रण (वस्ली पर लघु चित्रण)	68
2.11	सुखमहल में तथ्य एवं चित्र संकलन के दौरान शोधार्थी	68

2.12	शिकार बुर्ज की पिछली इमारत का चित्रण	69
2.13	बसन्त राग में राधिका का चित्रण	69
2.14	राग तोड़ी का वर्णन	70
2.15	नायक की राह निहारती नायिका	71
2.16	दरबार की हिण्डोला सेवा	71
2.17	सरस्वती वंदना	72
2.18	गणगौर कृष्ण-राधिका मिलाप	72
2.19	चेरोलाल जी रियासतकालीन सारंगी वादक	72
2.20	सामुहिक नृत्य करती भक्तन	75
2.21	पेट पर तबला बांध कर तबला वादन करते तबला नवाज़	75
3.1	कोटा रियासत का राज चिन्ह	76
3.2	कोटा के राव माधोसिंह संग्रहालय में प्रदर्शित महारानी श्री जाडेची का हारमोनियम	88
3.3	कोटा गढ़ (दरबार) में तथ्य संकलन करते हुए शोधार्थी	90
3.4	कोटा की बनी हुई सितार	90
3.5	रियासतकालीन वाद्य यंत्र	91
3.6	रानी सुभद्रा कुमारी जी (कुन्हाड़ी) के द्वारा भेंट की गई दिलरूबा	91
3.7	कोटा गढ़ में प्रदर्शित की गई नगारी का चित्र	91
3.8	कोटा महारानी श्रीमती कल्पना देवी के साथ शोधार्थी	92
3.9	रियासत कालीन मांड गायिका किशोरी देवी जी का परिचय प्राप्त करते शोधार्थी गुंजन हाड़ा	99
3.10	उमाशंकर जी काबरा का साक्षात्कार लेते शोधार्थी गुंजन हाड़ा	107

3.11	रियासतकालीन संगीत की महफ़िल का चित्रण	109
3.12	गायन व नृत्य करती भक्तिन	110
3.13	हाथी दाँत पर नृत्य करती नृत्यांगना	110
3.14	कोटा गढ़ में तथ्य संकलन करते शोधार्थी गुंजन हाड़ा	110
3.15	पाटनपोल स्थित मथुराधीश मन्दिर के ब्रज वल्लभ श्री मथुराधीश जी प्रभु का चित्र	111
4.1	भवानी सिंह जी के द्वारा बनवाई गई भवानी नाट्यशाला	122
4.2	झालावाड़ नरेश अपने दरबारियों के साथ	123
4.3	नौका विहार में संगीत महफ़िल का चित्रण	129
4.4	नृत्य कला की प्रस्तुति देते उदय शंकर जी	131
4.5	झालावाड़ रियासत में सितार वादन करते रविशंकर जी	132
4.6	वीणा वादन करते सादिक अली जी	138
4.7	झालावाड़ दरबार द्वारा सम्मान प्राप्त करते उस्ताद मथुरा लाल जी	142
5.1	गायक माँगीलाल जी के साथ शोधार्थी	154
6.1	राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा पर शोधार्थी गुंजन हाड़ा	157
6.2	राजकीय महाविद्यालय, बून्दी के संगीत विभाग से तथ्य संकलन करते शोधार्थी	158
6.3	डॉ. रौशन भारती जी रियाज़ करते हुए	162
6.4	शैल हाड़ा जी के साथ शोधार्थी	167
6.5	रेखा राव का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी	171

प्रथम अध्याय

हाड़ौती संभाग की भौगोलिक स्थिति

प्रथम अध्याय

हाड़ौती संभाग की भौगोलिक स्थिति

हाड़ौती शब्द की उत्पति सम्बन्धित मत –

राजस्थान राज्य को भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूप से कई भागों में विभाजित किया गया है। राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी पठारी क्षेत्र जो कि हाड़ौती का पठारी क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र पर चौहान राजपूतों की हाड़ा शाखा का शासन रहा है। नाडौल के चौहान शासक माणिक्यराय द्वितीय के उत्तराधिकारी हरराज या हाड़ा राव के नाम पर चौहान वंश की शाखा हाडावंश की शुरूआत मानी जाती है। जिस के आधिपत्य क्षेत्र में कोटा-बूंदी रियासत के क्षेत्र आते थे।

हाड़ौती शब्द की उत्पत्ति सम्बन्धित मत -

हाड़ौती शब्द हाड़ा से व्युत्पन्न माना जाता है। "हाड़ा शब्द की उत्पत्ति के संबंध में विद्वान एकमत नही है कुछ इतिहासकार इसकी व्युत्पत्ति 'अस्थि' शब्द से मानते है तो दूसरी ओर कुछ इतिहासकार "हिडि" धातु। बीसलदेव चौहान के पोते इस्तपाल के गजनी के साथ युद्ध में मृत्यु होने पर उसकी हड्डियों से पुनर्जीवित होने के फलस्वरूप हाड़ा वंश की उत्पत्ति मानी गयी है किंतु कुछ इतिहासकार इसे किवदंती मात्र मानते हुए हाड़ा शब्द की उत्पत्ति हरराज मूल पुरूष से मानते है जिसकी पुष्टि मैनाल के शिलालेख (विक्रम संवत् 1445) से होती है।"[1]

हाड़ौती शब्द की उत्पत्ति कुछ इतिहासकार 'हाड़ी' या 'हाड़ा' शब्द से मानते है जो कि देशी भाषा में घुमक्कड़ घूमने वाले के लिए प्रयुक्त होता है। यहाँ के शासकों के पूर्वज साहस, बल, और वीरता से अपनी जीविकोपार्जन करते थे।

"चन्द्रशेखर द्वारा रचित "सुर्जन चरित्र" हाड़ा शासकों पर लिखा गया सबसे प्रमाणित ग्रंथ माना जाता है जिसके अनुसार हाड़ाओं का मूल पुरूष माणिक्यराज को माना गया है, फ़ारसी स्त्रोतों और लेखों से यह बात प्रमाणित होती हैं"[2] कि सुर्जन चरित्र का माणिक्यराज एवं हरराज एक ही व्यक्ति है जिसने अपरमाल क्षेत्र पर लम्बे समय तक शासन किया।

हाड़ौती शब्द मुख्य रूप से भौगोलिक क्षेत्र एवं भाषीय भिन्नता के रूप में प्रयुक्त होता है। बूंदी राज्य की स्थापना के साथ ही हाड़ौती प्रदेश के निर्माण का कार्य प्रारंभ माना जाता है। इस प्रकार हाड़ा राजपूतों के अधिन क्षेत्र को हाड़ौती नामकरण

---

[1] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास (आद्योपांत इतिहास), पृष्ठ सं. 27 अरविन्द सक्सेना

[2] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, डॉ. अरविन्द सक्सेना, पृष्ठ सं. 17

किया गया। कालान्तर में बून्दी रियासत के विभाजन के फलस्वरूप बने कोटा एवं झालावाड़ रियासत का क्षेत्र भी हाड़ौती के अन्तर्गत आने लगा। इसकी पुष्टि कोटा संग्रहालय में सुरक्षित मोहरें एवं बून्दी के डिंगल कवि एवं इतिहासकार सूर्यमल्ल मिश्रण की रचना से होता है।

दूसरी ओर हाड़ौती शब्द भाषायी भिन्नता के रूप में इस क्षेत्र में बोली जाने वाली स्थानीय बोली के रूप में भी होता है जो कि ढूंढाड़ी की उपबोली है हाड़ौती का भाषा के अर्थ में प्रयोग सर्वप्रथम केलाग की हिन्दी ग्रामर में सन् 1875 में किया गया। इसमें ट-वर्गीय ध्वनि मुख्य रहती छै एवं वर्तमान काल के लिए है एवं भूतकाल के लिए छी, छो का प्रयोग होता है। कुंभलगढ़ से प्राप्त शिलालेख में हाड़ौती शब्द का उल्लेख "हाड़ावती" मिलता है।

भौगोलिक स्थिति -

हाड़ौती प्रदेश राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र की प्रादेशिक इकाई है जिसके अन्तर्गत वर्तमान में चार ज़िले कोटा, बांरा, बून्दी, झालावाड़ आते है जो कि राजस्थान के कुल क्षेत्रफल के 9.6% भू-भाग में विस्तृत है इसका विस्तार 23^{0} 51' से 25^{0} 27' उत्तरी अंक्षांश एवं 75^{0} 15' से 77^{0} 25' पूर्वी देशांतर के मध्य है।[3] इसकी दक्षिणी पूर्वी एवं पष्चिमी सीमा मध्यप्रदेश से मिलती है तथा उत्तरी एवं उत्तरी पष्चिमी सीमा, सवाई-माधोपुर, टोंक, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ ज़िले से मिलती है।

यह क्षेत्र चम्बल नदी के सहारे विस्तृत है। उच्चावच की दृष्टि से यह प्रदेश मालवा के पठार का उत्तरी भाग है। इसकी धरातलीय आकृति पठारीय होने के कारण इस पूरे क्षेत्र को हाड़ौती का पठार कहा जाता है। इसको मुख्य रूप से दो धरातलीय भाग में विभाजित किया जाता है।

(अ) विंध्य कगार भूमि

(ब) दक्कन का लावा पठार

उच्चावच की दृष्टि से बूंदी के निकट तश्तरीनुमा पहाड़ी क्षेत्र आड़ावल के नाम से प्रसिद्ध है। हाड़ौती क्षेत्र में आर्द्र तथा उपआर्द्र प्रकृति की जलवायु पाई जाती है यहाँ की प्रमुख नदियाँ चम्बल, कालीसिंध, नेवज, परवन, पार्वती आदि है।

हाड़ौती प्रदेश में स्थित रियासत की भौगोलिक स्थिति निम्न प्रकार है-

हाड़ौती प्रमुख रूप से राजस्थान के दक्षिण-पष्चिम भाग में स्थित ऐसा संभाग है जिसमें मुख्य रूप से चार ज़िलों का भाग समावेशित किया गया है हाड़ौती क्षेत्र में

---

[3] भौगोलिक स्थिति, सक्सेना, एच.एम. राजस्थान का भुगोल, पृष्ठ सं. 28, 29, 30

हाड़ा राजा तथा हाड़ा राजपूतों की बाहुलता होने के कारण इस भू-भाग को हाड़ौती के नाम से जाना गया। जिसके अंतर्गत कोटा, बूंदी, झालावाड़ तथा बांरा ज़िले आते है यह संभाग प्राचीन काल से लेकर गुप्त, परमार, औलिंकर तथा प्रतिहार युग तक की कला, संस्कृति संगीत आदि को अपने में समेटे हुए है।

हाड़ौती की जनसंख्या-

हाड़ौती का कुल क्षेत्रफल 24,204 कि.मी. (9345 वर्ग मील) है। हाड़ौती संभाग की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 5,695804 के लगभग है क्षेत्रफल की दृष्टि से यहाँ का सबसे बड़ा शहर कोटा तथा कोटा के बाद बांरा है। यहाँ 51.57% जनसंख्या अपने बोलचाल की भाषा में हाड़ौती भाषा का प्रयोग करती है तथा 32.76% जनसंख्या हिंदी और 5.51% जनसंख्या मालवी भाषा का प्रयोग करती है।

हाड़ौती संभाग की भौगोलिक स्थिति

बून्दी रियासत की भौगोलिक स्थिति –

बून्दी रियासत का क्षेत्रफल 57.50 वर्गमील है।

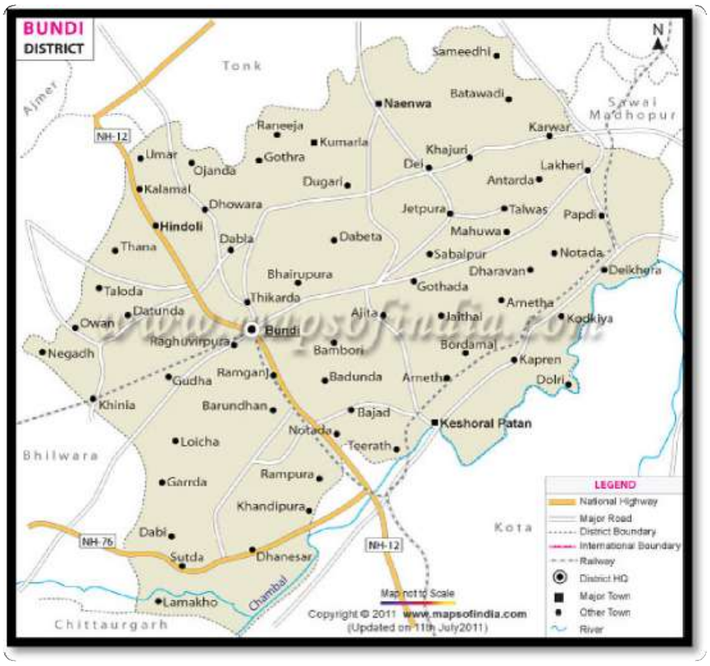

चित्र सं. 1.1 बून्दी ज़िले का नक्शा

पहाड़ –

बून्दी राज्य के बीचों बीच पहाड़ है जो उत्तर पूर्व माधोपुर की पहाड़ियों से घिरा हुआ है, लाखेरी के पास में दोहरी श्रेणी में चलकर राज्य व दक्षिण-पश्चिम में मेवाड़ की पहाड़ियों से जा मिला है। इस प्रकार आड़ावला पहाड़ से इस राज्य के लगभग दो बराबर भाग हो गये है। उत्तर का भाग पहाड़ी है जिसमें एक ही फसल

होती है दक्षिण का भाग समतल है जो बहुत ही उपजाऊ तथा फसल करने के योग्य है।[4]

नाल-

पहाड़ से होकर निकलने वाले तंग रास्तों को यहाँ 'नाल' कहते है इस तरह की नाल इस राज्य में पांच है। एक रियासत बून्दी में 'बांदू की नाल' के नाम से जानी जाती है। जिसमें होकर कोटा देवली एवं नसीराबाद की छावनी (अजमेर) को सड़क गई है। दूसरी जैतिवास नामक गांव के पास है जिसमें होकर टोंक का मार्ग है तीसरी रामगढ़ और खटकड़ के पास है जहाँ मेज नदी पहाड़ को काटती हुई उत्तर से दक्षिण की ओर जाती है चौथी राज्य की सीमा पर उत्तर पूर्व में लाखेरी कस्बे के पास लाखेरी घाटा है पाँचवा खिणिया का घाटा है। जो उदयपुर राज्य को जाता है।

बून्दी राज्य में आड़ावला पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी सतूर के पहाड़ की है जो समुद्र की सतह से। फुट ऊँची है यह बून्दी के 20 मील पश्चिम को है। बून्दी नगर के किनारे पर तारागढ़ नामक पहाड़ी 1426 फुट ऊँची है अजीतगढ़ में तलवास के पास की पहाड़ी 1662 फुट मेमोती में 1569 फुट और हिंडोली में 1128 फुट ऊँची है।[5]

नदियां -

इस राज्य की सबसे बड़ी नदी चम्बल है जो राज्य की पूर्वी और दक्षिण सीमा पर बहती है इस नदी का प्राचीन नाम चर्मण्यवती है।[6] यह नदी राज्य की सीमा में कहीं-कहीं बहती है इस नदी का पाट कहीं कहीं 240 फुट तक का है इसकी गहराई केशोरायपाटन के पास बहुत ज़्यादा है चम्बल नदी को छोडकर यहाँ की अन्य सभी नदियां बरसाती है जो गर्मियों के समय में सूख जाती है चम्बल नदी विन्ध्याचल पहाड़ के उत्तरी पार्श्व से निकल कर मध्य भारत और उदयपुर राज्यों में होती हुई दक्षिण में बून्दी राज्य व कोटा राज्य की सीमा बनाती हुई बहती है। कुछ दूर कोटा राज्य में बहकर तहसील पाटन, कापरेन और लाखेर की पूर्वी सीमा बनाती हुई यह इन्द्रगढ़ (कोटा) में चली जाती है आगे जाकर जयपुर, करौली और धोलपुर राज्यों को मध्यभारत के राज्य से अलग करती हुई और मध्यभारत के राज्य से अलग करती हुई और मध्यभारत की सीमा बनाती हुई। पूर्वात्तर में उत्तर के इटावा नगर के पास यमुना नदी में जा मिलती है इसकी कुल लम्बाई लगभग 650 मील है बून्दी राज्य में इसकी लम्बाई लगभग 78 मील है इसके किनारे पर प्रसिद्ध नगर भैसरोडगढ़ (मेवाड़) कोटा, पाटन, धोलपुर आदि बसे है इसका उपयोग सिंचाई व जल विद्युत के लिये अभी तक नही किया गया था। अब राजस्थान सरकार ने इसके लिये 70 करोड़ रूपये की

[4] राजपूताने का इतिहास, बून्दी राज्य, पृ.4

[5] राजपूताने का इतिहास, पृ.सं.4

[6] राजपूताने का इतिहास, पृ.सं.4

चम्बल योजना हाथ में ली है जिसमें 3 बड़े बांध और एक सिंचाई बांध का निर्माण होगा। इस योजना के पूरे होने पर कोटा, बून्दी और सवाई माधोपुर ज़िलों में सिंचाई के लिये जल और विद्युत की बहुतायत उपलब्धि से कृषि और उद्योग-धन्धो के विकास में महत्वपूर्ण सहायता मिलेगी।

बून्दी राज्य में चम्बल की बड़ी सहायक नदी मेज है जो मेवाड़ के पूर्वी भाग के 1700 फुट ऊँचे पहाड़ों से निकल कर शामपुरा होती हुई नगर के पास बून्दी राज्य में प्रवेश करती है।

झील और बांध -

इस राज्य में कोई बड़ी झील नहीं है बरधा बांध 1925 में बनाया गया था। दुगारी में कनक सागर झील लगभग चार वर्ग मील है हिंडोली में रामसर नामक पुराना बांध है।[7] इसकी पक्की पाल महाराव रघुवीर सिंह ने बनवाकर उस पर बहुत अच्छी कोठी बनवाई है। नैणवा में गांव के दक्षिण-पश्चिम और पूर्वी-उत्तर में तीन तालाब है जिनमें सब से बड़ा नवलसागर, नवलसिंह सोलंकी द्वारा ई. सन् 1403 में बनवाया हुआ है बून्दी राजधानी से 4 मील पर फूलसागर है जहां बून्दी नरेशों के गर्मीयों के समय में निवास करने के लिए फूलबाग में महल बने हुए है। इसी के दक्षिण में जोध सागर है हिंडोली के रामसागर, दुगारी के कनकसागर तथा बरधा बांध में मछली, पकड़ी जा सकती है।[8]

बून्दी शहर के उत्तर में जेता मीणा का बनवाया जेतसागर नामक बड़ा तालाब है यह पहाड़ी से सटा हुआ है बरसात के समय में जब इस तालाब में पानी की चादर चलने लगती है उस समय यहाँ का दृश्य बहुत सुहावना लगता है।[9]

आबोहवा -

यहाँ की आबोहवा सामान्यत: अच्छी है लेकिन तरी होने से बुखार की शिकायत ज़्यादा रहती है। ठण्डी के समय में तापक्रम 20डिग्री से 30 डिग्री तथा गर्मियों में 40डिग्री से 50 डिग्री पर रहता है।[10]

बाग -

बून्दी राज्य में बाग ज़्यादा नहीं है बून्दी, हिंडोली दुगारी में अनार, आम, केले, नारंगी और सीताफल के बाग है लाखेरी और नैनवा में पान बहुत पैदा होता है लाखेरी का पान बहुत प्रसिद्ध है जो दूर-दूर तक जाता है।[11]

---

[7] राजपूताने का इतिहास, बून्दी राज्य 4

[8] राजपूताने का इतिहास, बून्दी राज्य 6

[9] राजपूताने का इतिहास, बून्दी राज्य 6

[10] राजपूताने का इतिहास, बून्दी राज्य 6

धर्म -

यहाँ के लोग अधिकतर हिन्दू होने के कारण हिन्दू देवी देवताओं की पूजा करते है यहाँ का शासक वर्ग वैष्णव मत में अधिक विश्वास करता है और प्राय: कट्टर हिन्दू वैष्णव धर्मी रहे है नाथद्वारा के श्रीनाथजी उनके आदि देवता रहे है जिनकी केशवरायपाटन में रंगनाथ जी के रूप में मूर्ति स्थापित की गई है राव उम्मेदसिंह इन्ही रंगनाथ जी के परम भक्त थे शासक वर्ग यद्यपि वैष्णव-धर्मावलम्बी थे परन्तु धार्मिक अत्याचार की नीति नही अपनाई गई। कभी-कभी धर्मगुरू राजनीति में प्रवेश कर राजनैतिक उथल-पुथल किया करते थे जैसे कि बुद्धसिंह को बेगू वाली रानी और कछवाही रानी के धर्म-गुरू ने किया। बेगू वाली रानी का गुरू नित्यनाथ कनफटा जोगी थे कछवाही रानी वैष्णव धर्मानुरागीनी थी।[12]

सांस्कृतिक कला -

बून्दी का सांस्कृतिक जीवन कला साहित्य के दृष्टिकोण से अभूतपूर्व रहा है बून्दी का निर्माण कलापूर्ण दृष्टि से किया गया। पहाड़ी के बीच में बसा हुआ बून्दी प्राकृतिक सौन्दर्य का केन्द्र है स्थापत्य कला की दृष्टि से बून्दी का महल अपनी तरह का एक ही महल है ये महल शहर से ऊपर की घाटी में बने हुए है इन महलों के कई भाग है जो अलग-अलग शासकों के द्वारा बनवाये गये है।[13] इन महलों से ऊपर तारागढ़ का किला है उसके पास ही एक सुन्दर छतरी है जिसे सूरज छतरी कहा जाता है जो खम्बों पर आधारित है। यह सूर्य छतरी कलाविदों के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। बून्दी के अन्य स्थानों पर भी स्थापत्य तथा संगीतकला के अवशेष पाए जाते है।

केशोरायपाटन का रंगनाथ जी का मन्दिर सादी कला का एक अद्वितीय नमूना है। इस मन्दिर को रावराजा छत्रसाल ने विष्णु के केशोराय के रूप में बनवाया था यह मन्दिर पहले महादेव का जम्बू मार्गेश्वर या केश्वर का मन्दिर था जो कि परशुराम जी ने बनवाया था चम्बल नदी के किनारे सतियों के मन्दिर है जिन पर अभिलेख अंकित है।

चित्रकला -

राजस्थानी चित्रशैलियों में बून्दी चित्रशैली का महत्वपूर्ण स्थान है इसकी अपनी भित्ति चित्र शैली है, जिस पर राजपूत शैली का प्रभाव पड़ा। इसका विकास सत्रहवी शताब्दी के आरम्भ में हुआ। इस शैली के चित्रों में राजाओं, रानियों, राग-रागिनी, तथा

---

[11] राजपूताने का इतिहास, बून्दी राज्य 6

[12] सामाजिक धार्मिक व सांस्कृतिक विवरण बून्दी राज्य, पृ.सं. 9

[13] राजपूताना का इतिहास, पृ.सं.12

बारहमासों का बड़ा सुन्दरता से चित्रण किया गया है धार्मिक चित्रों का भी बाहुल्य है।[14]

साहित्य -

बून्दी के शासकों में महाराजा रामसिंह के काल में साहित्य की अत्यन्त उन्नति हुई थी। इनके दरबार में कई विद्वान रहा करते थे, इनमें पंडित गंगादास मुख्य थे जो संस्कृत के धुरन्दर विद्वान थे। जो पत्रकार ज्योतिषाचार्य व खगोल शास्त्री थे। इन्होंने एक खगोलिक यंत्र बनवाया।[15] जिससे तारों का अध्ययन किया जा सके। इन्होंने श्री भागवत पर भी टीका लिखी। इनके अलावा बाबा आत्माराम सन्यासी, वैधराज प्रमुख रहे है। आसानन्द, जीवनलाल, पठाण, हमीद खाँ आदि कवि इन्हीं के दरबार में रहते थे। 'वंशभास्कर' के रचयिता सूर्यमल्ल मिश्रण ने इनका आश्रय प्राप्त कर अपनी पुस्तक 2000 पद्यों के करीब में रचकर बून्दी इतिहास में स्थान प्राप्त कर लिया है। दादूपंथो साधु निश्चलदास ने 'विचार-सागर' नामक वेदान्त ग्रन्थ इन्ही के समय में लिखा।

बूंदी के ऐतिहासिक स्थल

तारागढ़ किला -

तारागढ़ किले का निर्माण राव राजा बैर सिंह ने 1354 में 1426 फीट ऊंची पहाड़ी की चोटी पर करवाया था। किले के केंद्र में भीम बुर्ज स्थित है, जिस पर एक बार विशेष रूप से बड़ी तोप लगाई गई थी, जिसे 'गर्भ गुंजन' या 'थंडर फ्रॉम द वोम्ब (Womb)' कहा जाता था। इसकी घुमावदार छतों के साथ मंडप, मंदिर के स्तंभों की अधिकता और हाथी और कमल के रूपांकरों के साथ महल राजपूत शैली के लिए एक श्रद्धांजलि है।[16] किले में हज़ारी दरवाज़ा, हाथी पोल, नौ धान, रतन दौलतखाना, दरीखाना, रतन निवास, बादल महल और मोती महल शामिल है।

सुख महल -

सुख महल, एक छोटा, दो मंज़िला महल, शासकों का ग्रीष्मकालीन आश्रय स्थल था। जैतसागर झील के तट पर स्थित महल का निर्माण राव राजा विष्णु सिंह ने 1773 ई. में करवाया था। यह वही स्थान है, जहां किपलिंग ने किम लिखा था। कई लोगों ने महल को प्रसिद्ध उपन्यास के लिए न्यूज़ प्ले के रूप में श्रेय दिया। वास्तव में उपन्यास पर आधारित एक फिल्म का हिस्सा भी यहां शूट किया गया था।

[14] राजपूताना का इतिहास, पृ.सं. 13, बून्दी गढ़ स्थित चित्रशाला देखने पर प्राप्त जानकारी

[15] बून्दी राज्य राजपूताना का इतिहास, 13

[16] तारागढ़ दुर्ग की जानकारी शोधार्थी को स्व. दुर्गाप्रसाद जी माथुर के द्वारा दी गई।

रानी जी की बावड़ी -

बूंदी को 50 से अधिक बावड़ियों के शहर के रूप में जाना जाता है। रानी जी की बावड़ी 1699 में बूंदी के शासक राजा राव राजा अनिरुद्ध सिंह की छोटी रानी नाथवती जी द्वारा निर्मित एक प्रसिद्ध बावड़ी है।[17] यह बहुमंज़िला बावड़ी गजराज की उत्कृष्ट नक्काशी को प्रदर्शित करती है, जिसकी सूंड अंदर की ओर मुड़ी हुई है। इसका ऊंचा धनुषाकर द्वार इसे आकर्षक रूप देता है।

84 स्तंभों वाली छतरी या 84 खभों की छतरी -

जैसा कि नाम से पता चलता है 84 स्तंभों वाली कब्र, 84 स्तंभों द्वारा संरचित एक संरचना है। बूंदी के महाराजा राव अनिरुद्ध द्वारा रचित करवाया गया यह स्मारक उनकी प्यारी धाय माँ के पुत्र अथवा धाय भाई देवा को श्रद्धांजलि है, जिसे वह बहुत प्यार करते थे। एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण, इस प्रभावशाली संरचना को हिरण, हाथी और अप्सराओं की नक्काशी से सजाया गया है। ऊपरी छतरी के निचले सभी दरों में विष्णु भगवान के सभी दस अवतारों का वर्णन किया गया है।[18]

गरड़दा गुफा -

2010 में, बूंदी स्थित पुरातत्वविद ओमप्रकाश शर्मा उर्फ कुक्की ने मांगली नदी के बेसिन पर फैले रॉक पेंटिंग में 32 साइटों की खोज की। शैल चित्र लगभग 10,000 वर्ष पुराने हैं और मेसोलिथिक ताम्रपाषाण काल के हैं।

बूंदी के मेले और त्यौहार

चित्र सं. 1.2 बून्दी तीज के मेले में तथ्य संकलन करते शोधार्थी गणगौर माता की सवारी के साथ

---

[17] सुख महल, हाड़ौती इतिहास : फ़िरोज़ अहमद ऐतिहासिक बून्दी के दर्शनीय स्थल पृ.सं.284

[18] 84 स्तंभों की छतरी की जानकारी दिलदार के द्वारा शोधार्थी को प्रदान की गई।

कजली तीज मेला -

इतिहासकार अरविन्द सक्सेना के मतानुसार तीज महोत्सव राजस्थान में पूरे बरसात के मौसम में मनाया जाता है, जिसमें प्रत्येक क्षेत्र का अपना उत्सव होता है। यह बूंदी में भाद्रपद के तीसरे दिन मनाया जाता है। जबकि यह श्रावण के तीसरे दिन अन्य स्थानों पर मनाया जाता है। राज्य उत्सव विशेष रूप से सजी हुई पालकी में देवी के पारंपरिक जुलूस के साथ जीवंत होता है, जो मुख्य बाज़ार और सड़कों से होकर गुज़रता है।[19]

गणगौर पर्व -

गणगौर का त्योहार बूंदी के प्रमुख त्योहारों में से एक है और यह उन महिलाओं द्वारा बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है जो देवी गोरी की भक्त हैं। यह वसंत और वैवाहिक निष्ठा के उत्सव का प्रतीक है। इस पर्व को महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और खुशहाल जीवन के लिए मनाती है।

बूंदी के विशिष्ट त्यौहार

बूंदी राज्य में विभिन्न मत-मतान्तरों के त्यौहार प्रचलित थे। इनमें पूजा, दान दक्षिणा, नृत्यगान व सवारी आदि के द्वारा बूंदी नरेश व जनसाधारण अपनी निष्ठा का प्रदर्शन करते थे। हिंदुओं के त्योहारों को राज परिवार में विशेष रूप से मनाया जाता था। कई त्योहारों में स्वयं बूंदी महाराज सार्वजनिक रूप से सम्मिलित होते थे, उदाहरणार्थ डोल यात्रा, होली व कजली तीज इत्यादि। बूंदी के विशिष्ट त्योहारों का अध्ययन निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है[20] –

हिंदुओं के उत्सव -

1. डोल यात्रा - राजधानी बूंदी नगर में भादो सुदी ग्यारस के दिन प्रतिवर्ष डोल यात्रा होती थी, जिसमें गढ़ में स्थित श्री रंगनाथ जी की मूर्ति को बाहर लाकर राम तलाई में स्नान कराया जाता है।[21]
2. होली पूजा - होली के त्योहार पर विशेष पूजा की व्यवस्था की जाती थी। राजपुरोहित द्वारा निर्धारित शुभ मुहूर्त में राजमहल के द्वार के सामने होली में अग्नि प्रज्वलित की जाती थी। तदुपरांत नगर के विभिन्न मोहल्लों की होलिका के दहन के लिए इसी होली से नागरिक अग्नि प्राप्त करते थे।[22]

---

[19] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.200
[20] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.200
[21] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.200
[22] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.200

3. गणगौर - बूंदी में राजपूतों के अधिकार के समय से ही यह उत्सव अत्यंत उल्लास पूर्वक मनाया जाता रहा है। किंतु 17वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में बूंदी नरेश बुधसिंह के अनुज जैतसिंह की मृत्यु गणगौर के दिन ही हो गई। वह अपनी पत्नियों के साथ नौका विहार करते समय जैतसागर तालाब में डूब गए। एक लोकोक्ति प्रचलित हो गई "हाड़ो ले डूब्यो गणगौर"। तभी से इस उत्सव को राजपरिवार के लिए अशुभ मानकर यह आज्ञा दी गई कि राज्य में यह उत्सव ना मनाया जाएगा।[23] दीर्घकाल तक यही प्रतिबंध जारी रहा। राजपूतों की एक मान्यता है कि यदि ऐसे प्रतिबंधित उत्सव के दिन राज परिवार में किसी पुत्र का जन्म हो जाए तो उक्त उत्सव को पुनः मानना आरंभ कर दिया जाता है। तदनंतर महाराव राजा रघुवीर सिंह के भ्राता बांसी के जागीरदार रघुराज सिंह के पुत्र ईश्वरी सिंह जिन्हें कालांतर में महाराव का उत्तराधिकारी मनोनीत किया गया था, का जन्म बुधवार 8 मार्च 1893 ई को हुआ। यह गणगौर का दिन था। इसी कारण इस उत्सव को पुनः मानना आरंभ करने की घोषणा कर दी गई। इसके अतिरिक्त महाराज ने यह भी आज्ञा दी की बूंदी नगर में इस उत्सव पर विशेष सवारी निकाली जाए।[24]

मेले

राज्य में अनेक मेले अत्यंत धूमधाम से मनाए जाते थे। हिंदू और मुसलमान दोनों धर्म के विभिन्न त्योहारों पर मेलों की व्यवस्था थी। उनकी व्यवस्था, मेले के स्थान विशेष के कर्मचारियों द्वारा की जाती थी, जो मंदिर के पुजारी अथवा दरगाह के खादिम आदि होते थे। विभिन्न मेलों की स्थिति का अध्ययन निम्नांकित रूप से किया जा सकता है[25] –

तीज -

बूंदी राज्य में श्रावण तथा भादो के महीनों में अमावस्या की तीज व चौथ के दिनों कजली तीज की सवारी निकाली जाती थी। यह सवारियाँ गढ़ से आरंभ होती थी तथा संपूर्ण बूंदी नगर में होकर रानी जी की बावड़ी पर समाप्त होती थी। वहां देवी पार्वती की प्रतिमा को स्नान कराया जाता है। राजस्थान बनने के उपरांत नगर पालिका की ओर से भादो के महीने में यह सवारियाँ निकाली जाने लगी और बूंदी नगर के बालचंद पाड़ा में स्थित नवल सागर उद्यान से आरंभ होकर पूर्ववत रानी जी की बावड़ी पर समाप्त होती हैं। श्रावणी तीज को अब मोती महल से लगे हुए नवल

[23] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.200

[24] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.201

[25] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.201

सागर तालाब में स्नान करवाकर उसकी पूजा करके इस उत्सव को समाप्त कर दिया जाता है।[26]

रियासत के समय में स्वयं बूंदी महाराज लवाज़मे के साथ इन सवारियों का नेतृत्व करते थे। राजपरिवार के पुरुष सदस्य तथा जागीर भी उनके साथ होते थे। इन सवारियों में बाजे व अखाड़े की शोभा के अतिरिक्त ग्रामीणों के गीतों से अत्यंत आल्हादपूर्ण दृश्य उपस्थित हो जाता था। बूंदी के ग्रामवासी भी भारी संख्या में तीज देखने के लिए आते हैं।

तेजा दशमी -

भादो की शुक्ल दशमी के दिन बूंदी नगर में तेजा दशमी का मेला मध्यकाल से आयोजित किया जाता रहा है। नगर के पूर्वी छोर पर रणजीत निवास नामक भवन के पास तेजाजी का मंदिर स्थित है, जहां राज्य की ओर से इस मेले की व्यवस्था की जाती है। इस अवसर पर यहाँ सर्पदंश से पीड़ितों की चिकित्सा की जाती है। जिसे स्थानीय भाषा में डसी काटना कहते हैं। ग्रामीणों में इस मेले के प्रति विशेष उत्साह दृष्टिगोचर होता है। कहा जाता है की बूंदी के अंग्रेज़ दीवान श्री रॉबर्टसन की बिल्ली को सर्प विष से यही मुक्ति दिलाई गई, इस चमत्कार को देखकर अंग्रेज़ भी दंग रह गए थे।[27]

झोजू जी का मेला -

बूंदी नगर में बालचंद पाड़ा में झोजू जी का मेला आषाढ़ के प्रत्येक रविवार को आयोजित किए जाते हैं। कहा जाता है कि झोजू जी एक मीणा सरदार थे, जो एक मीणा कन्या की रक्षा करते हुए मारे गए थे। उनकी स्मृति में यह मेला भरता है।[28]

श्रावण के मेले –

श्रावण मास के प्रत्येक रविवार को बूंदी नगर के विभिन्न स्थानों पर मेले आयोजित किए जाते हैं। इन स्थानों के नाम है क्रमशः चंपा बाग, गणेश बाग, चामुंडा देवी, बैजनाथ महादेव एवं अभयनाथ महादेव। इन मेलों को किसी घटना से आरंभ नहीं किया जाता अपितु श्रावण मास में वर्षा ऋतु के कारण बूंदी नगर में हरियाली की विशेष शोभा दृष्टिगोचर होती है, जिसके आनंद की अभिव्यक्ति के लिए ही इनका आयोजन प्रारंभ किया गया था।[29]

---

[26] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.201

[27] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.202

[28] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.202

[29] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.202

केशोरायपाटन का मेला –

केशवराय पाटन में स्थित केशवराय जी के मंदिर में 17वीं शताब्दी से एक विशाल मेला कार्तिक पूर्णिमा के दिन आयोजित होता आया है। दूर-दूर से ग्रामवासी इस मेले में सम्मिलित होने के लिए आते हैं। इन दिनों यहां पर चंबल नदी में स्नान का विशेष धार्मिक महत्व माना जाता है, क्योंकि यहां पर चंबल पूर्वाभिमुख हो जाती है। इस मेले का महत्व धार्मिक होने के अतिरिक्त व्यावसायिक भी है। यहां पशुओं का भारी संख्या में क्रय-विक्रय होता आया है।

चौथ माता का मेला –

बूंदी नगर के समीप केदारनाथ के निकटस्थ पहाड़ी पर स्थित चौथ माता के मंदिर में माघ कृष्ण चतुर्थी के दिन एक मेला आयोजित किया जाता है। यहां देवी पूजा करके दर्शनार्थियों में प्रसाद वितरण किया जाता है। राजस्थान के निर्माण के उपरांत इस मंदिर तक सीढ़ियां बना दी गई है।[30]

मुहर्रम –

महाराज रामसिंह के शासनकाल (1821-89 ई.) में बूंदी के मुसलमानों ने मुहर्रम के उपलक्ष में बूंदी नगर में ताज़िए निकलना आरंभ किया। कुछ वर्षों तक यह क्रम चलता रहा। जब महाराव रामसिंह को यह अनुभव हुआ कि इससे नगर की हिंदू मुस्लिम संघर्ष की स्थिति की आशंका है, तब उन्होंने ताज़िए बंद कर देने की आज्ञा दी तथा मुसलमानों को केवल यह स्वतंत्रता दी कि वह मुहर्रम के दिन केवल अखाड़े के जुलूस ही निकाल सकते हैं।[31]

कोटा रियासत की भौगोलिक स्थिति -

आधुनिक राजस्थान के पांच डिवीज़नों में कोटा डिवीज़न भी एक है। इसमें भूतपूर्व राजपूताने की तीन रियासतें कोटा, बूंदी व झालावाड़ शामिल है। कोटा राज्य राजपूताना प्रांत के दक्षिण पूर्वी भाग में स्थित है।[32] इस राज्य की राजधानी कोटा का नाम कोटिया नाम के भील नेता के कारण पड़ा और इसी से इस राज्य का नाम कोटा है।

सीमा-

इस राज्य के उत्तर पश्चिम में चंबल नदी है, जो इसे बूंदी राज्य से अलग करती है। इस राज्य के उत्तर में जयपुर और टोंक राज्य, पश्चिम में बूंदी और उदयपुर

[30] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, डॉ. अरविन्द कुमार सक्सेना, पृ.सं.203

[31] वही, पृ.सं.203

[32] बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, स्व.श्री जगदीश सिंह गहलोत, पृ.सं.3

राज्य, दक्षिण पश्चिम में इंदौर, झालावाड़ राज्य और ग्वालियर राज्य की आगरा तहसील है। दक्षिण में खिलचीपुर और राजगढ़ राज्य और पूर्व में ग्वालियर राज्य और टोंक राज्य की छबड़ा तहसील है। इस राज्य का आकार चतुर्भुज पद के समान है।[33]

चित्र सं. 1.3 कोटा राज्य का नक्शा (मानचित्र)

विस्तार –

इस राज्य का क्षेत्रफल (आठ जागीर की कोटरियों सहित) 14828 वर्ग मील है। यह अंश, 27 कला तथा 25 अंश 51 कला उत्तरांश और 75 अंश 37 कला तथा 77 अंश 27 कला पूर्व रेखांश के बीच फैला हुआ है। इसकी अधिक से अधिक लंबाई उत्तर से दक्षिण तक कोटरी इंदरगढ़ के उत्तरी सिरे से निज़ामत मनोहर थाने के दक्षिणी सिरे तक लगभग 155 मील और अधिक से अधिक चौड़ाई पश्चिम से पूर्व तक 220 मील है। इस राज्य में एक नगर 4 कस्बे और 2525 गांव है।[34]

पहाड़ –

कोटा राज्य का अधिकतर भाग पहाड़ी है। यह पहाड़ ज़्यादातर दक्षिण की ओर है। ये निज़ामत लाडपुरा के दक्षिणी कोने से आरंभ होकर निज़ामत चेचट और असनावर की उत्तरी सीमा बनाते हुए निज़ामत अकलेरा, बकानी, मनोहरथाना और छीपाबड़ौद में फैले हुए हैं यह पहाड़ मालवा के उत्तरी भाग में है।[35] ये कोटा राज्य का क्षेत्र प्राचीन काल में मालवा का ही एक भाग था। ये पहाड़ी भाग संपूर्ण राज्य का

[33] कोटा राज्य का इतिहास, पृ.सं.3

[34] कोटा राज्य का इतिहास, राजपूताने का इतिहास, स्व. श्री जगदीश सिंह गहलोत, पृ.सं.3

[35] कोटा राज्य का इतिहास, राजपूताने का इतिहास, स्व.श्री जगदीश सिंह गहलोत, पृ.सं.3

चौथाई भाग था। ये पहाड़ अरावली और विंध्याचल पर्वत को मिलाते हैं। इनकी एक ऊंची चोटी लाडपुरा तहसील के दक्षिण में समुद्र के धरातल से 1609 फुट ऊंची है। मालवा जाने का रास्ता इन पहाड़ियों में से ही होकर है। सबसे अच्छा व सुगम रास्ता नियामत चेचट के उत्तर पूर्वी भाग में मुकुंदरा (दरा) घाटी है। अभी मार्ग इसी घाटी में से होकर निकल गया है। इस पर्वत श्रृंखला की लंबाई 20 मील के लगभग है। उत्तर की ओर इंदरगढ़ की पहाड़ियां हैं, जो 15 फुट के लगभग हैं। उत्तर की ओर इंदरगढ़ की पहाड़ियां है। सबसे ऊंची पहाड़ी इस राज्य के पूर्व में शाहबाद क्षेत्र में है, जो विंध्य की पहाड़ी कहलाती है और 1800 फुट ऊंची है। ये पहाड़ घने जंगलों से घिरे और झाड़ियां से ढके हैं।

नदियाँ -

इस राज्य की मुख्य नदियां चंबल (प्राचीन नाम चर्मण्यवती) काली सिंध और पार्वती है, जो 12 महीने बहती है। अन्य छोटी नदियां परवन, मण्डेरी और कूर्नां है। ये सब नदियाँ उत्तर या उत्तर पूर्वी दिशा में बहती है। चंबल इन नदियों में सबसे बड़ी और मुख्य नदी है। कोटा राज्य में यह लगभग 9 मील बहती है। इस नदी में 197 फुट लंबा तथा 12 फुट ऊँचा एक बांध कोटा नगर के पास बनाया गया है। इससे राजस्थान राज्य की लगभग 7 लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होती है तथा दो लाख तीस हज़ार टन अतिरिक्त अनाज पैदा होता है तथा साथ ही एक लाख किलोवाट बिजली तैयार की जा सकती है।[36]

इस राज्य में चंबल की दो बड़ी सहायक नदियाँ हैं काली सिंध और पार्वती, जो विंध्याचल पर्वत से निकलकर इस राज्य के दक्षिण में होकर प्रवेश करती है। कालीसिंध गागरोन के किले के पास तथा पार्वती निज़ामत कुजड के दक्षिण पूर्वी कोने से प्रवेश करती है। कालीसिंध के तट पर इस राज्य के प्रसिद्ध स्थान गागरोन, पलायता तथा बड़ौदा है। पार्वती के किनारे पर जलवाड़ा, फूसोद और खातोली है। कालीसिंध लगभग 35 मील तक कोटा राज्य को ग्वालियर, इंदौर व झालावाड़ राज्यों से अलग करती हुई बहती है और पार्वती लगभग 48 मील तक कोटा राज्य को ग्वालियर और टोंक राज्य से अलग करती है। छोटी नदियों में साहू नदी महत्वपूर्ण है जो कोटा और झालावाड़ राज्य की सीमा नदी बनकर गागरोन के पास आकर कालीसिंध में मिल जाती है।

जलवायु –

इस राज्य में तापक्रम गर्मी में अधिक से अधिक 51°C तथा सर्दी में कम से कम 440 फारेनहाइट तक चला जाता है। इस राज्य में पानी का फैलाव ज़्यादा रहता

[36] कोटा राज्य का इतिहास, श्री जगदीश सिंह गहलोत, पृ.सं.4

है, अतः मच्छर ज़्यादा होते हैं और इस कारण मलेरिया का प्रकोप बहुत रहता है।[37] वर्षा का औसत 30 इंच है। कभी-कभी तो इतनी ज़्यादा वर्षा होती है की चंबल में बाढ़ आ जाती है और कोटा नगर के कई हिस्सों में पानी भर जाता है।

भूमि व उपज –

इस राज्य की ज़्यादातर भूमि उपजाऊ और काली है। ऐसी भूमि चंबल, पार्वती और साहू नदियों तथा दर्रे के पर्वत श्रेणियों और कोटरियों के बीच में स्थित है। इसमें बाराँ, अन्ता, मांगरोल, इटावा, बड़ोद, दीगोद, लाडपुरा, कनवास, सांगोद, खानपुर और कुन्जेड की रियासतें आती है। यह भाग ज़्यादातर मैदानी और उपजाऊ है। इसमें ईख, अफीम, तंबाकू, रूई तथा सब प्रकार के अनाज पैदा होते हैं। अफीम पहले यहाँ बहुत ज़्यादा पैदा होती थी, लेकिन अब सरकार के आदेशों के अनुसार उत्पादन कम किया जा रहा है।[38] बाराँ में केंद्रीय सरकार का अफीम का गोदाम है, जहाँ से विभिन्न स्थानों को अफीम भेजी जाती है। अफीम बेचने का अधिकार केवल केंद्रीय सरकार का है।

यह राज्य राजपूताने का धान्य भंडार है। पश्चिमी राजपूताने के लोग काल के वक़्त इस क्षेत्र में ही शरण लेते हैं।

जंगल –

पार्वती नदी के पूर्व की ओर जंगल घने हैं। जंगलों में लकड़ी, महुवा, मॉम, गौंद, शहद आदि पर्याप्त मात्रा में होते हैं। इनसे यहाँ के निवासी अपना जीवन निर्वाह करते हैं, क्योंकि जंगली भागों में खेती कम होती है। अधिकतर पेड़ बबूल, गूगल, बड़, सागवान, शीशम आदि पाए जाते हैं। इन जंगलों में हिंसक पशु बहुत रहते हैं। सिंह, बाघ, चीता, रीछ, सांभर, हिरण, नीलगाय, बारहसिंहा, सूअर आदि बहुतायत से पाए जाते हैं। दर्रे की घाटी के आसपास इन जानवरों का अधिक शिकार किया जाता है। गागरोन का तोता सर्वत्र प्रसिद्ध है।[39]

संचार व्यवस्था –

व्यापार एवं तरक्की के लिए तथा जनता की सुविधा के लिए यातायात की सुविधा होनी नितांत आवश्यक है। रेल, सड़कों, तार-डाक आदि से ही राज्य की प्रगति संभव हो सकती है। कोटा राज्य में संचार व्यवस्था की प्रारंभ से ही कमी रही है। महाराव भीमसिंह के शासनकाल में यहां हवाईअड्डा बनाया गया, परंतु उसका विशेष प्रयोग नहीं होता। केवल शौकिया हवाई जहाज़ उड़ाए जाते हैं। नदियों का नावों द्वारा

[37] कोटा राज्य का इतिहास, श्री जगदीश सिंह गहलोत, पृ.सं.5

[38] कोटा राज्य का इतिहास, पृ.सं.5

[39] कोटा राज्य का इतिहास, पृ.सं.6

व्यापार नहीं होने के कारण कोई विशेष प्रयोग नहीं होता। वर्षा के दिनों में तो इनमें बाढ़ आ जाने के कारण खेती नष्ट हो जाती है, आवागमन के मार्ग रुक जाते हैं, सामान्य संचार व्यवस्था के साधन, रेल व सड़के ही है।[40]

उद्योग –

यहाँ के लोगों का मुख्य धंधा खेती बाड़ी है। उपजाऊ काली मिट्टी होने के कारण तथा वर्षा व सिंचाई के पर्याप्त साधन होने के कारण कोटा के ज़्यादातर लोग खेती करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं। यह राजपूताने का धान्य भंडार कहलाता रहा है। यहां रबी व खरीफ़ दोनों फसलें पर्याप्त मात्रा में होती है। यहाँ सब कुछ होते हुए भी यहाँ का किसान वर्ग ग़रीबी में ही रहता है। इस क्षेत्र में भूमिहीन किसानों की संख्या बहुत ज़्यादा है। राज्य में बड़ी-बड़ी धान की मंडियाँ कोटा, बाराँ, अंता, मांगरोल, सीसवाली, सांगोद, खानपुर, सारोला, रामगंज आदि स्थानों पर है। यहां का मुख्य धंधा जो खेती के बाद दूसरे स्थान पर आता है, वह कपड़ा बनाना है। कोटा की मलमल, महमूदी डोरिया आदि अपनी बारीक़ी और रंगों के लिए प्रसिद्ध है।[41]

निवासी –

इस राज्य के अधिकांश निवासी आर्य और इस्लाम पंथ के हैं। भारत में जितने विदेशी आक्रमण हुए और विदेशी भारत में बसे वह सब कोटा के क्षेत्र में भी रहे। अतः कोटा जो की मालवा का अंश कहलाया जाता था, यहां कई ज़ातियों का संघर्ष स्थल रहा है। यही कारण है कि यहां मिश्रित ज़ातियाँ अधिक पाई जाती है। सामाजिक दृष्टि से आबादी विभिन्न ज़ातियों में बटी हुई है।

राजपूतों ने यहाँ शासन स्थापित कर अपना प्रभुत्व सामाजिक जीवन में भी स्थापित किया और यहाँ के लोग भी उनके रीति-रिवाज़, खान-पान, वेशभूषा तथा आचार्य-व्यवहार अपनाने लगे। लोगों की खाँपे राजपूत की खाँपों की तरह होने लगी। राजपूत स्त्रियाँ तो बहुत पर्दा करती है। राज्य की तरफ से जिसे सोना बख्शा जाता है समाज में उसकी इज़्ज़त होती है। पहले लोग ज़्यादा पढ़े लिखे नहीं थे। पहली बार राज्य की ओर से शिक्षालय संवत 1872 में खोला गया, जिसमें दो अंग्रेज़ी, दो फ़ारसी, दो हिंदी के अध्यापक नियुक्त किए गए और दस रूपये उनका मासिक वेतन था। स्त्री शिक्षा भी प्रारंभ की गई।[42]

---

[40] कोटा राज्य का इतिहास, पृ.सं.6

[41] कोटा राज्य का इतिहास, श्री जगदीश सिंह गहलोत, पृ.सं.8

[42] कोटा राज्य का इतिहास, श्री जगदीश सिंह गहलोत, पृ.सं.8, 9

धर्म –

कोटा राज्य में हिंदू अधिक संख्या में होने के कारण आम धर्म सनातन धर्म है। यद्यपि हिंदुओं के सभी संप्रदाय पाए जाते हैं, परंतु कोटा के शासक और जनता वैष्णव संप्रदाय को अधिक मानते हैं। 'श्री नाथ जी' गोस्वामी वर्ग के वैष्णों का कोटा में बहुत प्रभाव है और कई मंदिर इस प्रकार के पाए जाते हैं। कोटा स्थित मथुरेश जी का मंदिर वैष्णव धर्म का प्रतीक है।[43]

भाषा –

यहाँ की भाषा राजस्थानी है क्योंकि इसमें राजस्थानी शब्द अधिकतर होते हैं। यहाँ की बोलचाल की भाषा हाड़ौती कही जाती है। कुछ लोग मालवी बोलते हैं। हाड़ौती शुद्ध राजस्थानी भाषा नहीं, जिसे डिंगल का स्वरूप दिया जा सके।[44]

दशहरा –

कोटा में दशहरा का आगाज़ इस राज्य के मध्ययुगीन हाड़ा शासक महाराज दुर्जनशाल सिंह जी के समय से हुआ। यह मुस्लिम शासक मोहम्मद शाह रंगीला के समकालीन थे। इनकी मुगल दरबार में अत्यधिक प्रतिष्ठा थी।

दशहरे का शुभारंभ आशापुरा माताजी की पूजा अर्चना व उनके आशीर्वाद से होता था। राजसी वैभव के साथ हाथी-घोड़े की सवारी एवं दरीखाने में आयोजित होने वाले विभिन्न उत्सव महाराज दुर्जनशाल जी द्वारा ही प्रारंभ हुए थे। उनके द्वारा प्रारंभ की गई सभी परंपराओं का अनुसरण सभी राजपूत हाड़ा शासक अभी भी कर रहे हैं।

दशहरे मेले को ओर ज़्यादा आकर्षक बनाने का श्रेय लोकप्रिय नरेश महाराव उम्मेद सिंह द्वितीय (ई. सन् 1889 से 1940 तक) को है। महाराव उम्मेद सिंह साहब बेहद कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ ही दयालु हृदय व श्रद्धालु भक्त थे। कोटा का राष्ट्रीय दशहरा मेला आपकी ही देन है। सन् 1893 ई. से दशहरे मेले का शुभारंभ हुआ। जब मेला शुरू हुआ था तब यह केवल रावण वध से तीन दिन के लिए ही लगता था। जिसमें कोटा, बूंदी, बाराँ, झालावाड़ के लोगों के साथ-साथ आसपास के ग्रामीण इलाकों के लोग भी भारी संख्या में आया करते थे। जो तीन दिवसीय मेले का लुत्फ़ लेकर लौट जाया करते थे। पहले मेले में जो दुकानें लगती थी, वह तिरपालों में लगती थी, समय के साथ-साथ परिवर्तन हुआ अब यहां पर पक्की दुकानें बन गई है।

रावण वध के तीन दिन बाद लोग अपने घर लौट जाया करते थे। इस तीन दिन के मेले को लेकर एक बात प्रचलित थी, "रावण जी रो तीसरो और कोटा बाहर

[43] कोटा राज्य का इतिहास, श्री जगदीश सिंह गहलोत, पृ.सं.10

[44] कोटा राज्य का इतिहास, श्री जगदीश सिंह गहलोत, पृ.सं.10

निसरो" इसका अर्थ है कि रावण दहन हो गया है, रावण मर गया और उसका तीसरा भी हो गया, अब ग्रामीण लोग अपने घरों को लौट गए और मेले की दुकान भी हट गई है।[45] फिर आने वाले कुछ समय बाद यह दशहरा मेला एक सप्ताह का हुआ और मेले में लगने वाली दुकानों की संख्या भी अधिक हो गई। सन् 1928-29 तक कोटा राज्य में नल व बिजली के लगने के कारण महाराव उम्मेद सिंह जी ने इस मेले को भव्य रूप प्रदान करने की चेष्टा में देश के सभी बड़े नगरों के व्यापारियों को मेले में आमंत्रित करने के लिए पत्र जारी किए।

नगर पालिका की स्थापना सन् 1921 में महाराव उम्मेद सिंह जी के द्वारा की गई थी तथा मेले की ज़्यादातर ज़िम्मेदारियों को पालिका के अधीन कर दिया गया था।

महाराव साहब ने भारत देश से आने वाले सभी व्यापारियों को इतनी अधिक सुविधाएं उपलब्ध करवाई कि देश के सभी बड़े-बड़े शहरों जैसे मुंबई, लखनऊ, श्रीनगर, पंजाब, मद्रास, मथुरा, अहमदाबाद, कानपुर, इंदौर, हरियाणा आदि के व्यापारी विभिन्न प्रकार के सामानों की दुकान मेले में लगाने को आने लगे। सर्कस कंपनी, मौत का कुआं, जादूगर आदि के आने से मेला काफी प्रसिद्ध तथा आकर्षक हो गया। महाराज साहब के समय में दशहरे मेले की रौनक पंचमी तिथि से शुरू हो जाती थी। पहले के समय में दशहरा मेला किशोरपुरा में स्थित विशाल मैदान में लगता था, जो आज दशहरा मैदान के नाम से ही जाना जाता है। दशहरा मेले के लिए गढ़ पैलेस के बाहर से ही दुकान लगना शुरू हो जाती थी। महाराव के शासनकाल में विशाल पशु मेलों का भी आयोजन होता था, जो कि रावण दहन के कुछ दिनों पहले ही शुरू हो जाता था। आज भी पशु मेला लगता है, जिसमें हाड़ौती, मध्य प्रदेश व राजस्थान के व्यापारी अपने पशुओं को बेचने तथा खरीदने के लिए आते हैं। पशु मेला देखने के लिए विदेशी पर्यटक भी आते हैं। इसमें ग्रामीणों के द्वारा ग्रामीण परिवेश की झांकियां भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनी रहती है।

महाराव उम्मेद सिंह द्वितीय के शासनकाल में नवरात्रि से दशहरा उत्सव तक अलग-अलग धार्मिक कार्यक्रमों की व्यवस्था करवाई जाती थी। "नवरात्रा स्थापना की एकम को आशापुरा देवी माँ, डाढ़ देवी माता, काल भैरव जी (जो नांता में स्थित है), मनोरथ के बालाजी, कृष्णा अन्नपूर्णा (रामगढ़) इत्यादि देवालयों पर राजा द्वारा ब्राह्मणों को भेजकर देवी देवताओं का पाठ पूजन करवाया जाता था। इसके साथ ही उस जगह से क्षेत्रपाल व घास भैरव का भी पूजन होता था।"[46]

---

[45] हाड़ौती इतिहास, फ़िरोज़ अहमद, पृ.सं.179

[46] हाड़ौती इतिहास, फ़िरोज़ अहमद, पृ.सं.180

यह पूजन अपनी प्रजा में सुख, संपत्ति, शांति, आरोग्यता, यश एवं वैभव बढ़ाने की मनोरथ सिद्ध करने के साथ करवाया जाता था।

पंचमी की सवारी –

इतिहासविद् फ़िरोज़ अहमद जी के अनुसार महाराज उम्मेद सिंह जी अपने लवाज़मे के साथ पंचमी तिथि के दिन माता डाढ़देवी जी को भैंसे व पाँच बकरों की बलि चढ़ाने के लिए जाते थे। परंतु यह प्रथा कुछ समय के बाद बंद कर दी गई थी तथा दुर्गा अष्टमी के अवसर पर महाराव साहब द्वारा माताजी का हवन करवाया जाता था तथा हवन के बाद कन्या व ब्राह्मण भोज का आयोजन होता था।[47]

सप्तमी की सवारी –

सप्तमी तिथि के दिन नान्ता स्थित काल भैरव बाबा तथा करणी माता (जो अभेड़ा में स्थित है) के यहाँ महाराज साहब अपनी शाही सवारी के साथ पूजन करने के लिए जाते थे। पूजा के बाद महाराव के द्वारा माता जी से पाती ली जाती थी तथा माता की स्वीकृति मिलने पर बलि दी जाती थी और अगर माताजी ने पाती नहीं देती तो बकरे को ऐसे ही छोड़ दिया जाता था। महाराव नदी पार करने के लिए नावड़े का उपयोग करते थे। तत्पश्चात महायान में बैठकर नान्ता आते थे।

अष्टमी की पूजन की रस्म –

राजपूतों में अष्टमी के पर्व का अत्यधिक महत्व है। इस दिन महाराव साहब द्वारा गढ़ के अंदर स्थापित की गई अपनी कुल की देवी माता आशापुरा के मंदिर में माँ की विधिवत पूजा अर्चना की जाती थी। यह पूजा सुबह तथा शाम होती थी। अष्टमी के दिन माता की पूजा के उपरांत सभी शस्त्रों, रथों, महायानों, गजों तथा अश्व पूजन भी किया जाता था। इस दिन हाथिया पोल दरवाज़े के बाहर स्थित एक छोटे चबूतरे पर छोटा दरी खाना आयोजित होता था। इसमें राज परिवार के सदस्य, भाई बंधु, जागीरदार आदि पारंपरिक वेशभूषा धारण करके सम्मिलित हुआ करते थे तथा दरीखाना समाप्त होने के पश्चात् गढ़ में तोपों की सलामी होती थी।

विजयदशमी की (रावण वध की सवारी) –

विजयदशमी अथवा दशहरे के दिन शाम को शाही सवारी निकलती थी। यह सवारी अत्यधिक भव्यता व राजसी ठाठ बाठ लिये होती थी। शाम को निकलने वाली सवारी की तैयारी दिन से ही शुरू हो जाती थी। रावण वध तथा शाही लवाज़मे से सजी-धजी सवारी को देखने के लिए दिन से ही कोटावासीयों सहित समस्त हाड़ौती की प्रजा की भीड़ एकत्रित हो जाती थी। गढ़ के आसपास के क्षेत्र तथा दशहरा मेले के

[47] हाड़ौती इतिहास, फ़िरोज़ अहमद, पृ.सं.180

रास्ते तक दर्शकों की इतनी भीड़ होती थी कि पैर रखने तक की जगह नहीं होती थी। सवारी में जाने से पहले राजा जी द्वारा गढ़ में स्थित खेजड़ी के वृक्ष का पूजन किया जाता था। उसके बाद गोबर से बनाए गए रावण जी को खासा घोड़े से धुंधाया जाता था। राजा साहब स्वर्ण जडित तीतरी वाले हौदे में विराजते थे तथा शाही सवारी मेले की ओर प्रस्थान करती थी। जिसमें माही मरातिब के हाथी तथा दो नौबत भी होते थे। सवारी के रावण के समीप के स्थान पर पहुंचने पर लंका के बाहर लगे तोरण पर कोरड़ा मारते थे। उसके पश्चात महाराव साहब, महाराज कुमार साहब को साथ लेकर अपने राजपुरोहितों के द्वारा सीता जी का पाना (पाने) तथा शमी का पूजन किया जाता था। इसके बाद ही महाराव व महाराज कुमार रावण पर तीर चलाने की रस्म पूर्ण करते थे।[48]

झालावाड़ रियासत की भौगोलिक स्थिति –

झालाओं का प्रदेश झालावाड़ राज्य राजस्थान के दक्षिण पूर्व में स्थित है। इस राज्य का विस्तार 1838 ईस्वी में $23^{\circ}45'$ से $25^{\circ}25'$ उत्तरी अक्षांश के मध्य तथा $75^{\circ}28'$ से $77^{\circ}25'$ पूर्वी देशांतर के मध्य तक रहा है, किंतु 1899 में राज्य का विभाजन होकर केवल झालरापाटन में 4 परगनों से मिलकर बना हुआ लघु झालावाड़ का $23^{\circ}45'$ से $24^{\circ}41'$ उत्तरी अक्षांश के मध्य तथा $75^{\circ}28'$ से $26^{\circ}15'$ पूर्वी देशांतर के मध्य तक ही विस्तार रहा।

चित्र सं. 1.4 झालावाड़ राज्य का मानचित्र

यह राज्य का उत्तर पूर्व उत्तर में कोटा राज्य, पश्चिम से होल्कर के इंदौर राज्य, भानपुरा, रामपुरा व सुनेल परगने, दक्षिण में आगरा परगना, दक्षिण पश्चिम में सीता

[48] सभी सवारियों के विषय में शोधार्थी को इतिहासविद् फ़िरोज़ अहमद जी द्वारा जानकारी दी गई।

मऊ व जावरा रियासतों की सीमाओं से घिरा था। 1838 में झालावाड़ का क्षेत्रफल 2694 वर्ग मील वह 1899 में इसका क्षेत्रफल 812 वर्ग मिल रहा है।

भौतिक स्वरूप –

झालावाड़ राज्य हाड़ौती व मालवा के पत्थरों का भू-भाग रहा है। यह राज्य वन क्षेत्र, नदियों, वन्य जीवों आदि की दृष्टि से संपन्न रहा। स्वरूप की दृष्टि से इसे चार प्राकृतिक विभागों में विभाजित किया गया। 810 वर्ग मील का क्षेत्र दो अलग-अलग भागों में बांटा हुआ था। इसमें छोटा क्षेत्र किरपापुर जो 14 वर्ग मील में विस्तृत तथा ये ग्वालियर व मेवाड़ ज़िलों के सीमावर्ती था तथा मुख्य भाग 23$^{\underline{o}}$45' व 24$^{\underline{o}}$41' व 75$^{\underline{o}}$28' व 76$^{\underline{o}}$15' क्षेत्र में मिश्रित था तथा इसका आकार अंग्रेजी के (S) अक्षर के समान था।

जलवायु –

झालावाड़ ज़िले की जलवायु यथेष्ठ रूप से शुष्क व स्वास्थ्यवर्धक है। जलवायु की दृष्टि से वर्षा को चार ऋतुओं में विभक्त किया जा सकता है।

दिसंबर से फरवरी तक शीत ऋतु, मार्च से मध्य जून तक ग्रीष्म ऋतु, मध्य जून से सितंबर तक वर्षा ऋतु व अक्टूबर नवंबर की अवधि में उत्तर वर्षा ऋतु रहती है। इस राज्य का अधिकांश भू-भाग मालवा पठार का ही भाग है तथा जलवायु समशीतोष्ण व आरोग्यप्रद है। 1901 से 1980 तक सबसे कम वर्षा 1905 में (18") हुई जो सामान्य से 49% कम थी। सबसे अधिक वर्षा 1917 ई. में हुई 1942 ई. में औसत 48" वर्षा दर्ज़ की गई, जो सर्वाधिक वर्षा का रिकॉर्ड है। शीत ऋतु सहज वह ग्रीष्म ऋतु में गर्म धूल भरी आंधी चलती है।

तापमान –

राज्य में तापमान की दृष्टि से जनवरी सबसे ठंडा महीना है। इस समय औसत न्यूनतम तापमान 8.8$^{\underline{o}}$C रहता है। शीत ऋतु में पश्चिमी विक्षोभ व शीत लहर का प्रभाव रहता है। फरवरी से रात व दिन के तापमान में वृद्धि प्रारंभ होती है तथा मई माह के अंत व जून के प्रारंभ तक तापमान काफी अधिक बढ़ जाता है। ग्रीष्मकाल में अधिकतम तापमान 46$^{\underline{o}}$C से भी ज़्यादा हो जाता है।

पर्वत –

राज्य की मुख्य पर्वत श्रृंखला मुकुंदरा श्रेणी है। यह राज्य के उत्तर में विस्तृत दर्रा है। मुकुंदरा श्रेणी राज्य में अकलेरा व बकानी तहसील की सीमा से प्रवेश करती

है, मुख्य श्रेणी उत्तर पश्चिम की ओर आगे बढ़कर झालरापाटन के समीप से छिपाबड़ौद की ओर बढ़ जाती है। इस श्रृंखला का एक भाग चेचट की ओर तक गया है तथा एक सहायक श्रेणी अकलेरा, मनोहरथाना तहसील के उत्तरी सीमा तक विस्तृत है। मुकुंदरा श्रेणी की दो शाखाओं के मध्य आहू का कालीसिंध से संगम तथा चंद्रभागा नदियों का क्षेत्र है, इस श्रेणी में वन्य जीवों तथा वनस्पतियों का बाहुल्य है।

भवानी नाट्शाला –

झालावाड़ स्थित भवानी नाट्यशाला कोटा से 80 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। जिसका निर्माण 1921 में महाराज राणा श्री भवानीसिंह जी ने करवाया था।[49] इसलिए इस नाटक शाला का नाम भवानी नाट्यशाला रखा गया। महाराजा अत्यंत कला प्रेमी थे, जो कलाकारों को खूब सम्मान दिया करते थे। भवानी नाट्यशाला में नर्तक उदय शंकर जी थे। इस नाट्यशाला के कलाकारों ने आगे चलकर राष्ट्रीय स्तर पर तो नाम कमाया ही, साथ ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हाड़ौती का गौरव बढ़ाया। फ़ारसी ओपेरा शैली में बनी हुई भवानी नाट्यशाला संपूर्ण उत्तर भारत में ओपेरा शैली पर बनाई गई एकमात्र नाट्यशाला है, जो अपने देश के साथ-साथ विदेशी लोगों का भी ध्यान अपनी ओर केंद्रित करती है।[50] 16 जुलाई 1921 ई. को जब इस नाट्यशाला का उद्घाटन समारोह हुआ, तब इसमें मंचन किया गया पहला नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम था, जिसकी रचना महाकवि कालिदास द्वारा की गई थी। भवानी नाट्यशाला के प्रवेश द्वार पर स्थापित अभिलेख से इसकी जानकारी मिलती है।

घंटाघर –

झालावाड़ शहर की त्रिकोणात्मक शैली में बना होना इस ज़िले की प्रमुख विशेषता है इस कारण से ही झालावाड़ में अधिकतर तिराहे ही दिखाई देते हैं। यहां की प्रमुख त्रिकोणात्मक शैली को ऐतिहासिक स्थल 'क्लॉक टावर' अथवा 'घंटाघर' में देखा जा सकता है। राजेंद्र सिंह 'सुधाकर' जो की झालावाड़ के बेहद लोकप्रिय शासक रहे, उनके द्वारा पेरिस के कलात्मक टावर के आधार पर झालावाड़ का क्लॉक टावर बनाया गया था। यह क्लॉक टावर 3 मंज़िला तथा 45 फीट ऊंचा है। इसका निर्माण पेरिस के क्लॉक टावर से साम्यता रखता है।[51] यह बना हुआ तो त्रिकोण है लेकिन चौकोर प्रतीत होने के कारण कई लोग भूलभुलैया में तीनों और घूमते रहते हैं।[52]

---

[49] झालावाड़ इतिहास, संस्कृति व पर्यटन, ललित शर्मा, पृ.सं.278

[50] झालावाड़ इतिहास, संस्कृति व पर्यटन, ललित शर्मा, पृ.सं.278

[51] झालावाड़ इतिहास, संस्कृति और पर्यटन, पृ.सं. 287

[52] पुरा सम्पदा (पुरातत्व जर्नल) 2009, पुरातत्व विभाग, जयपुर राजस्थान

राज नृत्यांगना कुक्की का मकबरा -

झालावाड़ रियासत में इतने कलावन्त हुए हैं कि उन्होंने अपनी कला से देश दुनियाँ में अपने देश का नाम रौशन किया। इन कलावन्तों में से एक सुप्रसिद्ध राजनृत्यांगना कुक्की बाई हुई, जो रियासत काल में निकलने वाली शाही सवारी में शामिल होने वाले हाथी के दांतों पर लगे हुए पट्टों पर बहुत सुंदर नृत्य करती थी जिनकी चित्रकारी आज भी शाही महल में देखने को मिलती है। अपनी अद्भुत नृत्य कला के दम पर कुक्की बाई ने ब्रिटिश सरकार के वायसराय से लेकर अनेक राजा महाराजाओं तथा मेवाड़ के महाराणाओं तक से विशेष सम्मान प्राप्त कर इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर अपना नाम दर्ज़ करवाया ईदगाह के पास में उत्तर की ओर उनकी याद में एक विशाल तथा भव्य मकबरा स्थित है।[53] यह मकबरा इस राजनृत्यांगना की यादों को अपने में समाहित किए हुए हैं कुक्की बाई का मकबरा राजपूत तथा मुगल स्थापत्य शैली का स्वरूप है जहां आज भी लाल पत्थरों से की गई नक्काशी देखने पर तरोताज़ा दिखाई देती है।

कोठी पृथ्वी विलास तथा महासती जी -

'पृथ्वी विलास पैलेस' का निर्माण झालावाड़ के शासक पृथ्वी सिंह जी ने अपने शाही महल के रूप में करवाया था। यह शाही महल गढ़ पैलेस बनने के बाद बना था। जब से इस शाही महल का निर्माण करवाया गया। उस समय से तत्कालीन समय में यहां के झाला शासको का यह निज़ी आवास है।[54] यहां के सुंदर महराब तथा छतरियां राजपूती स्थापत्य कला का एक सुंदर उदाहरण है। महल चारों ओर से बाग एवं छायादार वृक्षें से घिरा हुआ है। इसके प्रवेश द्वार पर चारों ओर एक पक्की नहर है,[55] जिसमें चंद्र सरोवर का जल प्रवाहित होता रहता है। महल के पिछले हिस्से में पूर्व शासको का क्षारबाग है इसी में स्थित बेहद ख़ूबसूरत स्मारक है जो 'महासती जी' के नाम से जाना जाता है।

गढ़ पैलेस -

यह महल एक किलेनुमा गोल परकोटे से आवृत्त है इसके चारों कोनों पर विशाल जंगी बुर्ज व मध्य में अर्ध गोलाकार बुर्जियां हैं।[56] परकोटे के पीछे की ओर दो दीवानी बनी हुई है, जिस पर एक चौड़ा रास्ता है जिसका निर्माण इसलिए करवाया गया था कि घुड़सवार उसे रास्ते से होकर पूरे परकोटे पर घूम कर महल की सुरक्षा

[53] झालावाड़ इतिहास, संस्कृति और पर्यटन, ललित शर्मा, पृ.सं.304

[54] झालावाड़ : इतिहास, संस्कृति और पर्यटन

[55] मध्ययुगीन भारतीय संस्कृति, युसुफ हुसैन

[56] शर्मा, ललित ; झालावाड़ : इतिहास, संस्कृति और पर्यटन, पृ.सं.269

तथा निगरानी कर सके।[57] परकोटे के मुख्य द्वार को नक्कारखाना भी कहा जाता था यह महल राजपूत राजाओं की बहुमुखी प्रतिभा का भी एक उदाहरण है कि वह युद्ध के साथ-साथ कला, संस्कृति तथा स्थापत्य पर भी ध्यान देते थे इस महल की छत पर अर्धगोलाकार भाग पर मिट्टी की उभरी हुई राधा कृष्ण और उनकी दो सखियों की मूर्तियां स्थापित है जिन पर राजस्थानी शैली के चटक रंगों का प्रयोग देखने योग्य है।[58] इस पैलेस में भव्य दरीखाना, शयनकक्ष, जनानी ड्योढ़ी, दरबार हाल, विशिष्ट अतिथि कक्ष सुरक्षाकर्मी कक्ष, मालखाना, भंडार गृह, मकरानी ड्योढ़ी, भंडार गृह आदि अनेक प्रकार के विशाल कक्ष मौजूद हैं।[59]

बाराँ क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति तथा परिचय -

हाडौती के अंतर्गत कोटा संभाग आता है, जिसमें बूंदी, कोटा, बाराँ व झालावाड़ ज़िले सीमांकित किए जाते है।

सन् 1991 से पहले तक कोटा ज़िले के अंतर्गत बाराँ एक उपखंड के रूप में आता था। 10 अप्रैल 1991 से बाराँ को कोटा से पृथक कर एक नया ज़िला बना दिया गया। बाराँ ज़िला प्राचीन समय में टोंक तथा कोटा राज्य के जागीरदार के रूप में कार्य करता था। इसकी स्थापना सौलंकी राजपूतों ने की थी। इसके नामकरण को लेकर दो प्रमुख मान्यता है। एक मान्यता के अनुसार बारह (12) लोगों के द्वारा बसाए जाने के कारण इसका नाम बाराँ हुआ तथा दूसरी मान्यता के अनुसार यह बारह तालाबों की भूमि पर निर्मित नगर होने के कारण इसका नामकरण बाराँ किया गया। धार्मिक मान्यता के अनुसार बाराँ नगर में भगवान वाराह की बड़ी संख्या में प्रतिमाएँ मिलने के कारण इसे वाराह नगरी कहा गया है, जो कि बाद में अपभ्रंश होने के कारण बाराँ कहलाया।

बाराँ ज़िले की स्थिति -

बारां ज़िला मध्यप्रदेश से पूर्व, दक्षिण, दक्षिण-पूर्व तथा उत्तर की ओर कोटा ज़िले से, उत्तर-पश्चिम में तथा झालावाड़ ज़िले से दक्षिण-पश्चिम में बसा हुआ है। इस ज़िले का फैलाव उत्तर से दक्षिण की तरु 110 किमी के लगभग तथा पश्चिम से पूर्व की तरफ का विस्तार 120 किमी के लगभग है। यह ज़िला $24^{\underline{o}}24'$ से $25^{\underline{o}}26'$ उत्तरी अक्षांश तथा $76^{\underline{o}}12'$ से $72^{\underline{o}}26'$ पूर्वी देशान्तर पर दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान की ओर स्थित है।[60]

---

[57] वही, पृ.सं. 269

[58] वही, पृ.सं. 269

[59] वही, पृ.सं. 269

[60] राकेश प्रकाश पाण्डेय, भारतीय पुरातत्व, 1989, पृ.1

भौगोलिक स्थिति -

विंध्य पहाड़ियों के कारण बाराँ ज़िले का अधिकतर हिस्सा बलुआ चट्टान तथा चूना पत्थर से बना हुआ है। बाराँ ज़िले में स्थित यहाँ की प्रमुख बैसाल्टिक चट्टानें दक्षिण के पठार को दर्शाती है, जो एक के बाद एक कई परतों के रूप में बाराँ ज़िले के दक्षिण तथा पूर्वी भागों में स्थित है।

प्राकृतिक विभाजन -

इस क्षेत्र में उच्च तथा निम्न भूमियों का मैदानी हिस्सा है। इसका ढ़लाव उत्तर दिशा की तरफ है, जिससे यह नहर तथा नदियों के बहने को उत्तर की तरफ प्रेरित करता है। मध्यप्रदेश स्थित मालवा प्लेटों का यह पठारी क्षेत्र है। इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 250 मीटर है।[61]

पहाड़ियाँ -

यहाँ की पहाड़ियाँ सामान्य रूप से विंध्य पर्वत श्रृंखला से सम्बन्धित है। लघु वृत्ताकृति में पहाड़ी श्रृंखला की एक छोटी पंक्ति मध्यप्रदेश से छीपाबड़ौद तहसील के बीच के भाग में प्रवेश करती है, जो कि बाराँ में दक्षिण की तरफ तथा बाराँ से उत्तर-पूर्व कोण को झालावाड़ के पहाड़ी क्षेत्र से जोड़ते हुए दरा की नाल की ओर जाते हुए चम्बल तक जाती है। इन पहाड़ियों के अटरू तथा छबड़ा के क्षेत्र से गुज़रने के कारण इन्हें वहाँ भी देखा जा सकता है।

रामगढ़ एवं टोडी रामपुरा गाँव में भी इस पहाड़ी श्रृंखला की छोटी-छोटी पहाड़ियाँ देखने को मिलती है।[62] जिसकी ऊँचाई रामगढ़ में 463 मीटर हैं।

---

[61] राकेश प्रकाश पाण्डेय, भारतीय पुरातत्व, 1989, पृ. 1

[62] राकेश प्रकाश पाण्डेय, भारतीय पुरातत्व, 1989, पृ. 1

द्वितीय अध्याय

बून्दी रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान

द्वितीय अध्याय

बून्दी रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान

चित्र सं. 2.1 बून्दी रियासत के वर्तमान शासक वंशवर्धन सिंह जी के साथ शोधार्थी

1. बून्दी रियासत की स्थापना –

चित्र सं. 2.2 बून्दी रियासत का राज चिन्ह[1]

---

[1] कोटा गढ़ से लिया गया चित्र

बून्दी क्षेत्र का अस्तित्व पाषाण काल से ही प्रमाणित है। यहाँ आदिमानव द्वारा निर्मित शैल चित्र, प्रस्तर के उपकरण व मृदा पात्र इत्यादि भी शोधार्थियों को प्राप्त हुए हैं। इस परिदृश्य में यहाँ मालव जनपद का शासनाधिकार भी रहा था। तदोपरान्त मीना जाति की उसारा शाखा ने यहाँ अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इनका कोई राजवंश नहीं था, किंतु जन श्रुतियों में बुंदा नामक मीणा सरदार को यहाँ का शासक स्वीकार किया गया है। उसके वंशजों में जैता ने चौहदवीं शताब्दी ई. में अपना स्वामित्व ही स्थापित नहीं किया अपितु अनेक सांस्कृतिक विरासतों को भी समृद्ध बनाया। जैत सागर नामक तालाब उसकी ही रचना मानी जाती है। उसके अधीन अनेक राजपूत सरदार भी सेवारत थे। एक अवसर पर उसने जसराज गोलवाल नाम राजपूत सरदार से उसकी दो पुत्रियों के विवाह अपने दो पुत्रों से करने की इच्छा प्रकट की। इस घटना ने बून्दी पर मीणा प्रभुत्व के स्थान पर राजपूतों की हाड़ा शाखा के स्वामित्व का मार्ग प्रशस्त कर दिया। जसराज ने बम्बावदा वर्तमान में बिजोलिया के राजपूत नरेश राव देवा हाड़ा से जैता मीणा के विरूद्ध सहायता की याचना की। इस घटनाक्रम में एक षडयंत्र वश जसराज ने अपने स्वामी जैता को विवाह के लिए स्वीकृति प्रदान कर दी। योजनानुसार उमर तुडा में तय विवाह स्थल पर मीणाओं की बारात की खातिर की गई। उन्मत बारातियों को राव देवा हाड़ा की सेना ने बारूद में आग लगा कर नष्ट कर दिया। अतः जैता कि पराजय के उपरान्त देवा हाड़ा ने 24 जून 1241 को बून्दी पर बम्बावदा के हाड़ा राजवंश का स्वामित्व स्थापित कर दिया।

ठाकुर सुर्यमल्ल मिश्रण द्वारा रचित वंश भास्कर में वर्णित बारूद के प्रकरण पर डॉ. मथुरा लाल शर्मा, जे. एस. गहलोत, डॉ. अरविन्द कुमार सक्सेना इत्यादि ने आपत्ति व्यक्त की है, क्योंकि भारतवर्ष में 14वीं शताब्दी ई. में बारूद के प्रयोग पूर्णतया अप्रमाणित है। बारूद, बंदूक व तोप के सर्वप्रथम प्रयोग के प्रमाण चगताई तुर्क व फरगना के शासक बाबर द्वारा 1519 ई. में भारत पर आक्रमण के समय हुआ था। बाबर ने ही भारत में इस ईरानी शस्त्र व पोन्सपेंटिनोपल तुलुगमा पद्धति का प्रवेश किया था। अत: वंश भास्कर जिसकी रचना 19वीं शताब्दी में हुई थी, का विवरण भ्रांतिमूलक है। अंततः जैता मीणा के स्वामित्व का अंत हो गया एवं मीणा जाति उन्हीं के निवास भू-क्षेत्रों की स्वामी अवश्य बनी रही।

राव देवा हाड़ा ने बून्दी पर अधिकार करके बम्बावदा व बून्दी को दो राज्यों में बाँट दिया। इस प्रकार प्रथम बार राजपूती राजवंश ने मालव जनपद एवं मत्स्य

जनपद के संधिस्थल पर स्थित बून्दी को एक राजतंत्रीय शासन व्यवस्था के अधीन कर लिया। इसमें राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानने एवं सम्प्रभु राजत्व का सिद्धान्त को लागू किया गया। 14वीं ईस्वी में चित्तौड़ में क्रमशः गुहीलोत एवं सिसोदिया राजवंश, आमेर में कछवाहा राजवंश एवं अजमेर, नाडौल, जालौर, भीनमाल इत्यादि में शांकभरी चौहान जैसे राजपूत राजवंश शासनारूढ़ थे। इस परिदृश्य में बून्दी को मांडू के तुर्क सुल्तानों से भी अपने अस्तित्व की सुरक्षा की चुनौती का सामना करना पड़ा। दूसरी ओर बून्दी नरेश समर सिंह के पुत्र जेत सिंह ने 1264 ई. में निकटवर्ती कोटा क्षेत्र को कोटिया नामक भील सरदार के स्वामित्व से मुक्त करवा लिया। इस प्रकार हाड़ा राज्य चम्बल पार करके मुकन्दरा घाटी वराह नगरी की ओर विस्तृत होने लगा। इस घटनाक्रम से मांडू के सुल्तानों क्रमशः महमूद खिलजी प्रथम तथा महमूद खिलजी द्वितीय ने बून्दी पर आक्रमण किये, क्योंकि नर्मदा नदी, बेतवा नदी तथा चम्बल के मध्य के मालवा पर वे अपना एकाधिकार चाहते थे। इसके परिणामस्वरूप बून्दी नरेश राव बेरीशाल सिंह परास्त हुए। इसके उपरान्त बून्दी पर मांडू का अधिकार हो गया। स्वयं बून्दी नरेश बेरीशाल के पुत्र श्याम जी ने समरकन्धी के नामकरण से इस्लाम में मिश्रित होकर बून्दी का प्रशासन संचालित किया। यद्यपि कालान्तर में बेरीशाल के पुत्र भांडा जी के पुत्र नारायण दास ने बून्दी को पुनः तुर्काधिपत्य से मुक्त करवा लिया। यहाँ भी बून्दी पर आक्रमणों का क्रम थमा नहीं। चित्तौड़ के सिसोदिया नरेश क्रमशः हम्मीर व लाखा इत्यादि ने बून्दी पर आक्रमण किये। इन विपदाओं से त्रास पान के उपरान्त बून्दी नरेश राव सुर्जन हाड़ा को 1569 में मुगल बादशाह अकबर की अधीनता व मनसबदारी स्वीकार करनी पड़ी। यद्यपि बून्दी दुर्ग पर मुगल ध्वज नहीं फहराया किन्तु बून्दी नरेशों क्रमशः राव सुर्जन हाड़ा, राव भोज, राव राजा शत्रुशल्य सिंह जी, राव राजा भाव सिंह, महाराव राजा उम्मेद सिंह, महाराव राजा बुद्धसिंह एवं महाराव राजा दलेलसिंह को मुगल केन्द्रीय शक्ति के अधीन रहना पड़ा। मुगल साम्राज्य के पराभाव काल में दक्षिण भारत के मराठा छत्रपति साहू के वंशजों व उनके पेशवाओं ने प्रमुखतयाः बालाजी बाज़ीराव ने उत्तरी भारत को रौंदने के क्रम में राजपूताना की लगभग प्रत्येक रियासत में धनशोषण हेतु सैनिक हस्तकक्षेप किए। मात्र 1631 ई. में बून्दी राज्य से पृथक हुए कोटा के हाड़ा राज्य को इसके दीवान जालिम सिंह झाला ने मराठा आतंक से मुक्त कर दिया। बून्दी राज्य में मराठा सरदार मल्हार राव होल्कर की सहायता से 1748 ई. में दलेल सिंह के पराभव के उपरान्त महाराव राजा उम्मेद सिंह का राज्यारोहण हुआ, जिसने

राव देवा हाड़ा के वंश की पुन:स्थापना की एवं उम्मेद सिंह के अनुज दीपसिंह के क्रम से दीपसिंहोत हाड़ा राजवंश शाखा का उद्भव हुआ। उम्मेद सिंह के पौत्र महाराव राजा विष्णुसिंह ने 1818 ई. में इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सहायक सन्धि द्वारा अधिनता स्वीकार कर ली। जिसके परिणामस्वरूप बून्दी राज्य उनके उत्ताधिकारियों क्रमश: राम सिंह, रघुवीर सिंह व ईश्वरीय सिंह के काल में ब्रिटिश प्रभुत्व के अन्तर्गत एक देशी राज्य के स्वरूप में स्थिर रहा। स्वाधिनता के समय राजस्थान के पुन: गठन के युग में युनाईटेड स्टेट ऑफ राजस्थान जैसे 12 राज्यों के संघ का गठन हुआ, जिसके राज प्रमुख 1948 में कोटा नरेश भीमसिंह द्वितीय बने एवं वरिष्ठ उपराज्य प्रमुख पद बून्दी नरेश बहादुर सिंह हाड़ा को प्राप्त हुआ। 25 मार्च 1948 को इस संघ का उद्घाटन हुआ। 30 मार्च 1949 को नवनिर्मित वृहत्तर राजस्थान में इस संघ का विलय हो गया एवं भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधिन रियासतीय मंत्रालय ने कोवनेन्ट नाम एक समझौते द्वारा बून्दी राज्य को यूनीयन ऑफ इण्डिया में विलयित करके एक ज़िला बना दिया।

2. बून्दी रियासत के प्रमुख शासक -

1.	देवा जी(1342-1343)(1368-1400)	14.	छत्रसाल (1631-1658)
2.	समर सिंह (1343-1346)(1400-1403)	15.	भाव सिंह (1658-1681)
3.	नरपाल (1346-1370)	16.	अनिरूद्ध सिंह (1681-1695)
4.	हम्मीर (1370-1403)	17.	बुद्ध सिंह (1695-1729)
5.	वीर सिंह (1403-1413)	18.	दलेल सिंह (1729-1748)
6.	बैरीशाल (1413-1459)	19.	उम्मेद सिंह (1748-1771)
7.	भाणदेव (1458-1503)	20.	अजीत सिंह (1771-1773)
8.	नारायणदास (1503-1527)	21.	विष्णु सिंह (1773-1821)
9.	सूरजमल (1527-1531)	22.	राय सिंह (1821-1889)
10.	सुरतान (1531-1554)	23.	रघुवीर सिंह (1889-1927)
11.	सुर्जन प्रथम (1554-1585)	24.	ईश्वर सिंह (1927-1945)
12.	भोज (1585-1608)	25.	बहादुर सिंह (1945)
13.	रतन सिंह (1608-1631)		

1. राव देव सिंह हाड़ा -

राव देव सिंह पहले चित्तौड़ (मेवाड़) के महाराणाओं के अधीन थे। देव सिंह ने बून्दी राज्य मीणाओं से छीनकर अपने अधिकार में कर लिया। महाकवि सूर्यमल्ल द्वारा वंश भास्कर में लिखा गया है[2] कि देव सिंह ने मेवाड़ की सहायता से बून्दी का राज्य स्थापित किया।

2. समर सिंह -

इन्होंने केवल 3 वर्ष बून्दी पर राज्य किया। इनके समय में राज्य का विस्तार चम्बल नदी के बायें किनारे तक हो गया। इनके चार पुत्र नरपाल, हरपाल, जेतसिंह, डूंगरसिंह थे। कर्नल टॉड ने लिखा है कि राव देवा अपने जीते-जी राजपाट छोड़ अपने पुत्र समरसिंह को उत्तराधिकारी बना कर बून्दी से दूर चले गए।[3] देव सिंह तक बम्बावदा के हाड़ाओं की स्थिति सामान्य थी। मीणों से बून्दी लेने के पश्चात समरसिंह ने अपना राज्य बढ़ाया।

3. राव नरपाल -

अपने पिता की मृत्यु के बाद यह राजगद्दी पर बैठा। इसने करीब 26 वर्ष राज किया। नरपाल ने पलायथा के महेश दास खींची को हराकर पलायथा को अपने कब्ज़े में किया।[4] बाद में नरपाल के राज्य का अधिकांश हिस्सा उनके हाथों से चला गया। राव नरपाल के तीन पुत्र हम्मीर, नोरंग और पीरराज थे। नरपाल का देहान्त वि.सं. 1460 के आसपास हुआ।

4. राव हम्मीर -

अपने पिता की मृत्यु के पश्चात यह गद्दी पर बैठे। इनका उपनाम हामा भी था। यह अत्यधिक वीर तथा तेजस्वी पुरूष था।[5] इसने बून्दी के पास शेरगढ़ के पंवारों से लोहा लिया, क्योंकि पंवारों ने इसके पिता जी की गणगौर को लूटा था। अंत समय में यह अपने पुत्र वीरसिंह को राजगद्दी देकर वह सन्यास लेकर काशी चले गए तथा वहीं पर उसी वर्ष परलोक सिधार गए।

---

[2] राजपूताने का इतिहास, बून्दी राज्य का इतिहास, गहलोत स्व. श्री जगदीश सिंह, पृ.सं.42

[3] वही, पृ.सं. 43

[4] वही, पृ.सं.46

[5] वही, पृ.सं. 47

5. राव वीर सिंह -

यह राव हम्मीर का ज्येष्ठ पुत्र था और वि.सं. 1460 में बून्दी की राजगद्दी पर बैठा। वंश भास्कर में लिखा है कि इसने चित्तौड़ के राजा की अधीनता में रहने से मना कर दिया।[6] वीर सिंह के तीन पुत्र बैरीशाल, जावदजी और निरमराज थे। वीर सिंह की मृत्यु सन् 1490 के करीब हुई।

6. राव बैरीशाल -

32 वर्ष की आयु में सन् 1490 के लगभग बैरीशाल बून्दी की राजगद्दी पर बैठा। यह निर्बल तथा अयोग्य शासक था।[7] इसके राज्यकाल की उल्लेखनीय घटना यह है कि माण्डव (मालवा) के बादशाह महमूद खिलजी ने तीन बार कोटा व बून्दी पर चढ़ाई की।

7. राव भाण्देव -

इसका नाम भारमल भांडा बन्दो और सुभाड़ देव भी मिलता है। यह बून्दी के इतिहास में एक प्रसिद्ध पुरूष हुए थे।[8] इन्होंने अन्य लोगों की मदद लेकर बून्दी के खोए हिस्सों को भी वापस प्राप्त किया। इन्होंने बून्दी पर लगभग 14 वर्ष तक राज किया। इसके पश्चात भाणदेव पर्वतों में मातूण्डा नामक गाँव में जा कर रहे। मातूण्डा में इनकी छतरी आज भी मौजूद है। यह बड़े ही धार्मिक तथा उदार नरेश थे। इन्होंने कला-संस्कृति को काफी सम्मान दिया।

8. राव नारायणदास -

यह बड़े वीर, साहसी और पराक्रमी नरेश थे। यह चित्तौड़ के महाराणा रायमल के समकालीन थे। पिता की मृत्यु के समय नारायण राव इतने शक्तिशाली नहीं थे की समरकन्दी का विरोध कर सके, परन्तु बाद में धीरे-धीरे पठार देश के राजाओं और उनकी सेनाओं को इकठ्ठा कर बून्दी को अपने धर्मभ्रष्ट चाचाओं से वापिस लेने का निश्चय किया।[9] इसमें हाड़ाओं ने नारायणदास का साथ दिया और इस तरह बून्दी पर फिर से हाड़ाओं का राज्य स्थापित हो गया।

---

[6] वही, पृ.सं.48

[7] बून्दी राज्य का इतिहास, पृ.सं.48

[8] वही, पृ.सं.52

[9] वही, पृ.सं.52

9. राव सूरजमल हाड़ा -

यह भी अपने पिताजी की भांति महान पराक्रमी, वीर, उदार तथा साहसी थे। इनकी भुजाऐं घुटनों तक लम्बी थी।[10] इनके समय में मेवाड़ तथा बून्दी में वैवाहिक सम्बन्ध के द्वारा प्रेम बढ़ गया था। नाणता में इन की छतरी अभी भी मौजूद है। राव सूरजमल ने केवल 4 वर्ष राज्य किया। इनके उत्तराधिकारी इनके पुत्र सुरताण थे।

10. राव सुरताण -

यह सन् 1588 में आठ वर्ष की आयु में राज्य का मालिक हुआ। इसका विवाह महाराणा उदयसिंह के पुत्र शक्तिसिंह की पुत्री से हुआ था। इससे महाराणा उदयसिंह ने पठानों से अजमेर छीन कर राव सुरताण हाड़ा को दे दिया। राव सुरताण के वंश वाले लोग सुरतानोस् हाड़ा कहलाते है।

11. राव सुर्जन हाड़ा -

यह हाड़ा अर्जुन का बड़ा पुत्र था तथा राव सुरताण के पश्चात बून्दी की गद्दी पर बैठा। आरम्भ में यह अपनी माता जयन्ती के आदेशानुसार राज्य करता रहा।[11] इसका शासन काल बून्दी के इतिहास में सबसे अधिक महत्वपूर्ण रहा। काशी में इनके निवास करते समय इनके अनुरोध से ही चन्द्रशेखर (प्रसिद्ध कवि) ने काशी में "सुर्जन चरित" नामक संस्कृत काव्य सन् 16वीं शताब्दी के आसपास बनाना शुरू किया था। इसमें चौहान वंश की वंशावली थी।

12. राव भोज -

यह 34 वर्ष की आयु में सिंहासनारूढ़ हुए। राव भोज ने बादशाह अकबर के गुजरात अभियान में मुगल सेना का सहयोग करते हुए अतुलनीय वीरता का परिचय दिया। अहमदनगर की विजयोपरांत अकबर ने अहमदनगर दुर्ग की एक बुर्ज का निर्माण भोजबुर्ज की संज्ञा से राव भोज के प्रति सम्मानवश ही करवाया। जब गुजरात विजय के उपरांत शाही पुरस्कार के विषय में बादशाह ने उसकी सम्मति जाननी चाही तब उसने मात्र यही विनय किया कि उसे प्रतिवर्ष अपने राज्य बून्दी की एक यात्रा की

---

[10] वही, पृ.सं.53

[11] बून्दी राज्य का इतिहास, पृ.सं.57

अनुमति अवश्य दी जाए।[12] अहमदनगर के इस युद्ध में प्रख्यात वीरांगना चाँदबीवी ने वीरगति पाई थी। राव भोज 1607 में मृत्यु को प्राप्त हुए।

13. राव रतन सिंह -

राव रतन सिंह का जन्म बून्दी के इतिहास के अनुसार 1571 ई. में हुआ था और आप आपके पिता राव राजा भोज के परलोक गमन होने पर 1607 की आषाढ़ शुक्ल 4 को बून्दी के राजसिंहासन पर बैठे थे।[13] राव भोज के तीन पुत्र थे - रतन सिंह, हृदयनारायण सिंह और केशवदास। हृदयनारायण को कोटा का शासक बनाया गया तथा केशवदास को 27 गाँवों के सहित ढीपरी जागीर दी तथा राव रतन बून्दी के सिंहासन पर बैठे। राव रतन के दो काका थे। एक का नाम दुर्जनशाल तथा दूसरे का नाम रायमल्ल जी था। इनके तीन भाई व तीन बहन थी। रतन सिंह जी के भाई हृदयनारायण सिंह जी के वंशज हरदावत कहलाये।

14. राव छत्रशाल -

राव रतन के बाद उनके पौत्र छत्रशाल गद्दी पर बैठे। राव छत्रशाल ने शाहजहाँ के समय दक्षिण के सूबेदार औरंगज़ेब को अनेक दुर्ग विजय करने में सहायता दी थी। दौलताबाद और बीदर गुलबर्ग के दुर्गों पर विजय प्राप्त करने में राव ने असीम साहस और शौर्य का प्रदर्शन किया था। सन् 1653 में कलवर्ण के युद्ध में विजय प्राप्त की थी और थामूनी का दुर्ग भी जीत लिया था।[14]

छत्रशाल जी दाराशिकोह के सर्वाधिक विश्वासपात्र थे। इस कारण ही छत्रशाल जी को जीवन-पर्यन्त मुगल राजधानी का सूबेदार पद सौंपा गया था।

15. महाराव राजा भावसिंह -

महाराव राजा भावसिंह 35 वर्ष की आयु में सिंहासन पर विराजमान हुए थे। राव छत्रशाल ने दारा का साथ दिया था। इस ही कारण औरंगज़ेब ने उनके पुत्र भावसिंह से बदला लेने की ठानी। उसने शिवपुर के राजा आत्माराम को बून्दी पर आक्रमण करने भेजा। राजा आत्माराम ने खातौली के पास गौठड़ा नामक स्थान पर आक्रमण किया, किन्तु हारकर भाग गया। परन्तु कालान्तर में यह घटनाक्रम बदला

[12] वही, पृ.सं.65

[13] वही, पृ.सं.66

[14] बून्दी राज्य का इतिहास, पृ.सं.70

और राव भावसिंह की वीरता से प्रसन्न होकर औरंगज़ेब ने उन्हें दिल्ली में बुलाकर सम्मानित किया था। भावसिंह ने बून्दी में मोती महल तथा रतनबाग में एक बाग बनावाया। फूल सागर से उत्तर की तरफ बाग व फव्वारें लगवाए।

16. महाराव राजा अनिरूद्ध सिंह -

राव भावसिंह के कोई पुत्र नहीं था, इसलिए उनके भ्राता भीमसिंह के पुत्र अनिरूद्ध सिंह को बून्दी का महाराव राजा बनाया गया। इनके राज्याभिषेक उत्सव में औरंगज़ेब ने गजगौर नामक एक विशेष हाथी व बहुमूल्य खिलअत आदि सम्मानस्वरूप भेंट किए जो हाड़ाओं द्वारा मुगल साम्राज्य की निष्ठापूर्वक सेवा के प्रति आभार प्रदर्शन का संकेत था।[15] महाराव अनिरूद्ध सिंह ने भी दक्षिण भारत के युद्धों में मुगलों की ओर से अत्यधिक वीरता का परिचय दिया। एक बार तो शाही बेगमों की रक्षार्थ भयानक संकट का भी सामना किया। आपकी वीरता से प्रसन्न होकर औरंगज़ेब ने इन्हें सेना के हरावल में रहने का अधिकार दिया था।

17. महाराव राजा बुद्धसिंह -

1695 ई. में महाराव अनिरूद्ध सिंह के 10 वर्षीय पुत्र बुद्धसिंह का राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ।[16] यह एक युगांतकारी घटना थी। क्योंकि अब बून्दी व इसके स्वजन कोटा राज्य तथा कछवाहों के आमेर राज्य के साथ राजस्थान में त्रिकोणीय संघर्ष की विभीषिका प्रारंभ हो गई। महाराव राजा बुद्धसिंह को शहज़ादा मुअज़्जम के साथ काबुल जाने का आदेश दिया गया था। 1707 ई. के प्रारंभ में बुद्धसिंह से अनुमति लेकर आमेर में पड़ाव किया। यहाँ उन्होंने आमेर नरेश सवाई जयसिंह की बहन अमरकुंवरी से अपना विवाह सम्पन्न किया। तब यह प्रारब्ध का दुर्योग कोई नहीं जानता था कि यह विवाह राजस्थान में विनाशक युद्धों की जड़ साबित होगा।

18. महाराव राजा दलेल सिंह -

करवर के ठिकानेदार सालिमसिंह के पुत्र दलेल सिंह को 19 मई 1730 ई. में सवाई जयसिंह के प्रयासों से बून्दी का राजसिंहासन विधिपूर्वक सौंप दिया गया। इस काल में उपर्युक्त राज्याभिषेक की पृष्ठभूमि में कोटा व जयपुर जैसे राज्यों के पूर्ववर्ती मुधरतापूर्ण संबंध अब शत्रुता में परिवर्तित हो गए, क्योंकि कोटा नरेश महाराव

---

[15] टॉड, राजस्थान जिल्द 3, पृ.सं.1463

[16] वही, बून्दी राज्य का इतिहास, पृ.सं.77

दुर्जनशाल सिंह ने अपने अग्रज बून्दी के हाड़ाओं के राजवंश को सिंहासन पर अधिकार पुनः दिलवाने की ठान ली थी। तद्नुसार 21 जुलाई 1730 ई. को पछौला में जयपुर व कोटा के मध्य एक भीषण संघर्ष हुआ, जिसमें बुद्धसिंह के बून्दी पर अधिकार की दावेदारी का पक्षपोक्षण कर रही कोटा की सेना की पराजय हुई।

19. महाराव राजा उम्मेद सिंह -

महाराव राजा उम्मेद सिंह अपने पिता राव राजा बुद्धसिंह की मृत्यु पर वि.सं. 1748 में वर्ष की आयु में बून्दी के राव राजा माने जाकर बेगू में ही गद्दी पर बैठाया गया। परम्परा के अनुसार इसे गुरू-मंत्र सुनाने के लिए वल्लभ सम्प्रदाय का गोस्वामी गोपीनाथ सवाई जयसिंह कछवाहा के डर से नहीं आया। इस कारण यह रस्म रामानुज सम्प्रदाय के ब्राह्मण द्वारा सम्पन्न कराई गई।[17] सवाई जयसिंह का स्वर्गवास होने के पश्चात अवसर देख कर उम्मेद सिंह ने बून्दी का राज्य वापस लेने की ठानी। महाराव उम्मेद सिंह ने महलों में चित्रशाला बनवाकर बून्दी चित्रशैली के उत्कृष्ट भित्तिचित्र बनवाए तथा इसके साथ-साथ ही रंगशाला भी बनवाई।

20. महाराव अजीत सिंह -

यह राजर्षि महाराव उम्मेद सिंह के ज्येष्ठ राजकुमार थे। वि.सं. 1771 में अपने पिताजी के बैरागी हो जाने पर राजसिंहासन पर बैठे।[18] मेवाड़ और बून्दी की सरहद पर मीणाओं का उपद्रव देख कर महाराव अजीतसिंह ने विलेटा नामक गाँव में एक किला बनवाया और वहाँ अपना एक किलेदार रखा। इस कार्य में महाराणा अरिसिंह की सम्मति नहीं ली गई, इसलिए दोनो नरेशों में मनमुटाव हो गया।

21. महाराव राजा विष्णु सिंह -

इनका जन्म सन् 1773 ई. को हुआ। यह राजगद्दी पर बैठे उस समय केवल साढ़े चार माह के थे। इनके दादा उम्मेद सिंह ने धाय भाई सुखराम को राज्य का प्रधानमंत्री नियुक्त कर पौत्र की शिक्षा-दीक्षा का और राज्य की देखभाल करने का काम संभाला। बालक महाराव का प्रथम विवाह केवल चार वर्ष की आयु में बीकानेर नरेश महाराव गजसिंह की चार वर्ष की कन्या पन्ना कुंवर से हुआ।[19]

---

[17] बून्दी राज्य का इतिहास, पृ.सं.83

[18] वही, पृ.सं.86

[19] बून्दी राज्य का इतिहास, पृ.सं.91

22. महाराव राजा रामसिंह -

महाराव राजा रामसिंह का जन्म सन् 1811 ई. की 25 दिसम्बर को हुआ था। यह बून्दी के राजसिंहासन पर वि.सं. की श्रावण वदि 12 (ई. सन् 1821 ता. 26 जुलाई गुरूवार) को दस वर्ष की आयु में बैठे। इनके दो बड़े भाई इन्द्रसिंह व बलदेवसिंह कुंवारेपन में ही स्वर्ग सिधार गये थे। इनका राज्याभिषेक प्रसिद्ध इतिहासज्ञ कर्नल जेम्स टॉड की उपस्थिति में बड़े समारोह में हुआ था[20] तथा उन्हें विधिवत सिरोपाव उपहार में दिया गया। महाराव राजा रामसिंह जब सिंहासन पर बैठे तब उनकी आयु कम होने के कारण ईस्ट इंडिया कम्पनी ने प्रशासन के लिए एक कॉन्सिल का गठन किया। कम्पनी के अधिकारी बून्दी प्रशासन का निरीक्षण करते थे। महाराव के व्यस्क होने पर भी कम्पनी से उनके संबंध सौहार्द्रपूर्ण ही रहे।

23. महाराव राजा रघुवीर सिंह -

महाराव राम सिंह के ज्येष्ठ पुत्र रघुवीर सिंह का 2 अप्रैल 1889 ई. में 20 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ।[21] उनका काल निकटवर्ती कोटा राज्य एवं सम्पूर्ण भारत के आधुनिकीकरण का युग था। महाराव राजा रघुवीर सिंह ने अंग्रेज़ों के साथ ओर भी अधिक अच्छे संबंध बनाए। प्रथम विश्व युद्ध एवं अफगान युद्धों में उन्होंने आर्थिक व सैनिक सहायता प्रदान की। महाराव को 1894 ई. में के.सी.आई. 31 दिसम्बर 1901 को वायसराय ने महाराव को उनके अकाल राहत कार्यो पर सम्मानपूर्वक जी.सी.आई.ई. का अलंकरण सम्राट की ओर से देना घोषित हुआ। ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम एवं उनकी रानी मेरी के सम्मान में दिल्ली में 12 दिसम्बर 1911 को एक विशेष दरबार आयोजित किया गया, जिसमें बून्दी नरेश भी सम्मिलित हुए।

24. महाराव राजा ईश्वरी सिंह -

महाराव राजा रघुवीर सिंह के दत्तक पुत्र ईश्वरी सिंह का राज्याभिषेक वि.सं. 1984 की श्रावण सुदी 13 मंगलवार तद्नुसार 26 जुलाई 1927 ई. के दिन हुआ। इसके उपरांत बून्दी में महाराव ईश्वरी सिंह का राज्याभिषेक उत्सव वि.सं. 1984 श्रावण सुदी 10, सोमवार तद्नुसार 8 अगस्त 1927 के दिन सम्पन्न हुआ।[22] महाराव ईश्वरी सिंह

[20] वही, पृ.सं.97

[21] वही, पृ.सं.102

[22] बून्दी राज्य का इतिहास, पृ.सं.104

ने अपने पिता व दादा सा की तरह ही अंग्रजों के प्रति स्वामिभक्ति प्रदर्शित की। उनके शासनकाल में द्वितीय विश्वयुद्ध हुआ। महाराव राजा ईश्वरी सिंह को अंग्रेजी सरकार की ओर से जी.सी.आई.ई. की उपाधि 1937 ई. में प्रदान की गई।[23] बून्दी राज्य अंग्रेजों को वार्षिक कर के रूप में 1,20,000 रूपये प्रदान करता था। बून्दी की याचना पर 1938 ई. में इस राशि को घटाकर 70,400 रूपये कर दिया गया।

25. महाराव राजा बहादुर सिंह -

14 मई 1945 ई. को महाराव राजा ईश्वरी सिंह के दत्तक पुत्र बहादुर सिंह का राज्याभिषेक हुआ। महाराव बहादुर सिंह के सिंहासनारोहण के समय द्वितीय विश्वयुद्ध लगभग समाप्त हो चुका था[24] तथा भारत की स्वाधीनता के प्रयासों व भारत-पाक विभाजन के समय रियासतों के विलय के प्रश्न ने बल पकड़ लिया। बून्दी के हाड़ा राजवंश ने वर्ष 2010 के जनवरी में साढ़े सात शताब्दियों का इतिहास पूर्ण विराम तक पहुँचा दिया। बून्दी के प्राचीन काल से आधुनिक काल तक की सांस्कृतिक यात्रा के मूल में आध्यात्मिकता, कला, संस्कृति, संगीत आदि दिखाई देती है। बहादुर सिंह जी की पुत्री जिनका विवाह अलवर में हुआ था, एक बार वो शेर का शिकार कर के अपनी जीप/कार में रखकर कार चलाकर महल में आ गई थी। इस बात से राजा बहुत प्रसन्न हुए तथा बहुत भव्य उत्सव का आयोजन किया, जिसमें दूर-दूर से कलाकारों को बुलाया गया। उसमें बून्दी के काले खाँ साहब का गायन हुआ।

बून्दी के शासकों का संगीत के विकास में योगदान -

राजस्थान अपने आप में विभिन्न संस्कृतियों को समेटे हुए है। सांस्कृतिक एवं सांगीतिक विभिन्नता से सम्बन्धित क्षेत्रों में राजपूत राजाओं ने प्रारम्भ से ही महत्वपूर्ण कार्य किए है। 12वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध तक यहाँ के प्रत्येक शासक ने यहाँ की लोकगायन शैली, नृत्य आदि को ओर अधिक सुंदर बनाने का प्रयास किया है।

प्रत्येक राजा अपने दरबार में दरबारी संगीतज्ञ, राजनर्तक, कवि आदि रखते थे, जिन्हें राजसी वैभव के साथ-साथ ही अच्छा वेतन तथा सम्मान भी प्राप्त होता था।

---

[23] वही, पृ.सं.106

[24] वही, पृ.सं.106

राजपूत राजा शौर्य, पराक्रमी व कला प्रेमी थे। इसी कारण यहाँ के राजाओं ने कला तथा संगीत के क्षेत्र में भी अत्यंत सराहनीय कार्य किए है।

बून्दी राज्य में सामान्य जन-साधारण में तो संगीत प्रचलित था ही परन्तु यहाँ के राजा स्वयं भी लेखन व गायन में रूचि रखते थे। बून्दी नरेश द्वारा अपने ईष्ट देव को प्रसन्न करने के लिए गीत लिखा गया, जो इस प्रकार है -

"रँगजी रँगजी सब कहै, रँगजी रँगे न कोय।।
जो रँगजी जियमें रँगे, तुरत मोख जिय होय।।
विना रेल रस्ता विषय, नैनपुरी इक द्रँग।
गंग जात नमिजे प्रथम, ध्यान धरी श्री रंग।।
दाता बने अदातबनि, मोर दीनके काज।
अपनो विरद विचारियो, बांहि गहेकी लाज।।
रंगनाथ तुम सदय हो, करो कृपा यहिकाल।[25]

राजाओं के राजदरबार में विभिन्न संगीतकारों को नियुक्त किया जाता था, जो विभिन्न राग (राग समय के अनुसार) दरबार में प्रस्तुत करते थे। राजपरिवार में प्रत्येक उत्सव पर संगीतकारों की कला का प्रदर्शन होता था।

प्रात:काल एवं संध्या काल में राजमहल के द्वार पर उच्च स्वर में नगाड़े बजाये जाते थे। जब भी राजकीय सवारियाँ निकलती थी तब संगीतकारों का बैण्ड़ भी राजा की शाही सवारियों के साथ चलता था तथा इस बैण्ड़ की गणना भी सेना के एक भाग के रूप में की जाती थी। एक बैण्ड़ सार्जेण्ट को इस दल का प्रधान नियुक्त किया जाता था।

शास्त्रीय संगीत की परम्परा भी बून्दी राज्य में प्रचलित थी, जिसके कई प्रमाण महल में स्थित चित्रों द्वारा पता लगते है। अनेक सारंगी वादक, बांसुरी वादक एवं शहनाई वादक बून्दी नरेशों व जागीरदारों के सम्मुख शास्त्रीय राग सुनाते थे, उन्हें पुरस्कृत भी किया जाता था। राज्य में कुछ संगीतज्ञ निज़ी रूप से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा भी देते थे। जिसमें ज़्यादातर पुरूष वर्ग ही संगीत शिक्षा ग्रहण करते थे। महिलाओं में सामान्यत: नृत्यांगनाएँ ही इसमें रूचि लेता था। अन्य महिलाएँ घर पर

---

[25] प्रस्तुत गीत सौभाग्यबिहारी भजन माला से है जो बून्दी के वरिष्ठ साहित्यकार के साक्षात्कार के दौरान मुझे बताया गया।

ही अपने परिवार के सदस्यों से ही संगीत की शिक्षा ग्रहण करती थी। बाहर जा कर सीखने की व्यवस्था तथा महिलाओं के लिए सार्वजनिक विद्यालय नहीं था।

वाद्य -

बून्दी राज्य में लोक संगीत का महत्व था। अनेक वाद्य काम में लाए जाते थे। अलगोज़ा सर्वाधिक प्रयुक्त किया जाता था। इसके अतिरिक्त झांझ-मंजीरे, ढ़ोलक, बांसुरी, ढफली तथा शहनाई आदि भी प्रचुरता से बजाए जाते थे। यहाँ के वाद्य संगीत की मुख्य विशेषता यह थी कि इसे अत्यधिक ऊँचें स्वर में बजाया जाता था। इसके अतिरिक्त माधुर्य को यहाँ कम महत्व दिया जाता था। यहाँ पर तीखी धुनों वाले भावोत्तेजक संगीत को प्रधानता दी जाती थी, जो की मुख्यता नृत्य एवं भजनों के लिए अधिक उपयुक्त है।

राजपूत नरेश इतने ज़्यादा कला प्रेमी होते थे कि वो कलाकारों को प्रोत्साहन देने के साथ ही रहने के लिए आश्रय, पेटिया यहाँ 'पेटियों' से तात्पर्य है, खाद्य सामग्री से राजा के द्वारा हर कलाकार को पेटियों दिया जाता था, जिसमें घी, तेल, अनाज, गेहूँ, दलहन, मेवे आदि दिए जाते थे, शामिल है। इसे ही पेटिया कहा जाता था।

राजकीय सम्मान की परम्परा -

बून्दी नरेश प्रायः उत्सवों पर प्रजाजनों को राजकीय प्रतिष्ठा के अलंकरण प्रदान करते थे। राज्य में निम्नलिखित अलंकरण प्रचलित थे, जिनकी श्रेणियाँ बनाई गई थी -

प्रथम श्रेणी - (स्वर्ण व स्वर्ण ताज़ीम) -

बून्दी नरेश द्वारा विशिष्ट व्यक्तियों को सोने का एक कड़ा पैर में पहनने के लिए भेंट करते थे। जबकि राजा तथा राजपूतों के अलावा किसी को भी पैर में सोना पहनने की आज्ञा नहीं थी, जो हमारे शास्त्रों में भी वर्णित है। राज्य में यह कड़ा महाराव द्वारा सम्मानित व्यक्ति ही पहन सकता था। ताज़ीम एक ऐसा सम्मान था, जिसमें महाराव स्वयं खड़े होकर ताज़ीम प्राप्त व्यक्ति का स्वागत करते थे। प्रायः सोना तथा ताज़ीम दोनों सम्मान एक साथ भी दिए जाते थे।[26]

---

[26] बून्दी का सांस्कृतिक वैभव : संस्कृति, चित्रकला धर्म बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, डॉ. अरविन्द कुमार सक्सैना, पृ.सं. 203

द्वितीय श्रेणी - (माला अथवा सोसर भोज) -

तीज की सवारी निकलने के पश्चात् उपरान्त रानीजी की बावड़ी पर लगने वाले दरबार में राजपरिवार के सदस्य तथा विशिष्ट व्यक्तियों को पुष्पमाला भेंट की जाती थी।

तृतीय श्रेणी - (चौब अथवा छड़ी) -

तृतीय श्रेणी के सम्मान के अन्तर्गत डोल यात्रा के उत्सव पर सम्मानीय व्यक्ति को लाल रंग में रंगी हुई छड़ी प्रदान की जाती थी।

चतुर्थ श्रेणी - (हीड़) -

राजपरिवार के सदस्य द्वारा विशिष्ट सम्मानित व्यक्तियों को दीपावली के दिन रंगनाथ जी के मंदिर में हीड़ (जलती हुई उल्का) प्रदान की जाती थी।[27]

बून्दी रियासत का गुणीजनखाना

गुणीजनखाना -

'गुणीजनखाना' से तात्पर्य उस विभाग से है, जहाँ गुणियों, गायकों, वादकों, नर्तकों तथा नर्तकियों को राज्याश्रय प्रदान किया जाता था। इसी प्रकार ही 'सूरतखाना' भी होता था, जहाँ रियासत में चित्रकारों को राज्याश्रय प्रदान किया जाता था। 'सूरतखाना' की तरह ही 'पोथीखाना' था, जिसमें कवि, कथाकार, पंडित, विद्वान लोग आश्रय पाते थे। गुणीजनखाने की तरह ही 'नक्कारखाना' था, जहाँ शहनाई वादक, नक्कारची आदि नियुक्त होते थे। इस विभाग की व्यवस्था देखने के लिए अलग से अधिकारियों को रखा जाता था, जो इस गुणीजनखाने की व्यवस्था देखते थे। अलग-अलग स्थानों पर इस गुणीजनखाने के अलग-अलग नाम हुआ करते थे। कलाकारों के उदयपुर विभाग को 'संगीत प्रकाश', जोधपुर में इस विभाग को 'तालीमखाना' तथा बीकानेर में 'संगीतशाला' के नाम से जाना जाता था। प्रत्येक राजपूत राज्य के समान ही बून्दी रियासत के हाड़ा राजा भी रियासतीय विभागों में गुणीजनखाना नामक विभाग का संचालन करते थे। इनका प्रमुख कार्य राजदरबार में संगीतकारों, गायकों, नर्तकीयों, वादकों एवं किन्नरों को राज्याश्रय प्रदान करना था। इस गुणीजनखाने का राजकोष से सम्बन्ध होने के कारण उपर्युक्त कलाकारों को वेतन प्राप्त होता था तथा

[27] बूंदी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं. 203

राजकोष से विभिन्न वाद्ययंत्र भी ख़रीदे जाते थे। बून्दी रियासत के मध्ययुगीन इतिहास में अनेक वाद्ययंत्र राजकीय संग्रह में विद्यमान थे। उदाहरणार्थ - सारंगी, वीणा, नगाड़ा, चंग, खरताल, डफ, रबाब, तबला, झांझ, शहनाई, तुरही, सितार, मंजीरा इत्यादि प्रमुख थे। अनेक आहत नाद वाले छोटे वाद्यों का वादन भी किया जाता था। उदाहरणार्थ बकरे के चर्म से मढ़ी हुई मटकी, अलगोज़ा (जो बून्दी में प्रमुख रूप से प्रचलित था। इसमें चार छेद होते थे)।

बून्दी रियासत के गुणीजनखाने में अनेक कलाकारों को नियुक्त किया गया, जिसमें मांड गायिका सरस्वती देवी, गुलाम गौस खाँ, मीरबख्श, बड़ी बिलास बाई, मोती बाई, हरकु बाई, गणेशी बाई, सुल्तान बाई, पेफा जी, मनभावन बाई, केसर बाई तथा नर्तकी में नन्ही जी सर्वप्रमुख है, जिन्हें राज दरबार का सदस्य माना जाता था। नन्ही जी को राजदरबार में नृत्य की प्रस्तुति के लिए स्वर्णज़डित वस्त्र तथा हीरे-जवाहरात आदि दिए जाते थे। यह केवल राजदरबार में ही अपनी प्रस्तुति देती थी। जहाँ इनका निवास स्थान था उस जगह को आज के समय में भी नन्ही जी की गली के नाम से जाना जाता है। ऐसा शायद ही पहले कभी हुआ हो कि एक नर्तकी के नाम पर किसी गली का नाम रखा गया हो।

भाव नृत्य -

गुणीजनखाना के अंतर्गत नर्तकीयों को भी रखा जाता था, जो अनेक लोक गीतों पर स्थानीय लोक भाषायी गीतों पर लोक नृत्य तथा भाव नृत्य की प्रस्तुतियाँ देती थी। गीतों की भावाभिव्यक्ति, शब्द रचना तथा संगीत के माध्यम से ही नर्तकीयों के अंग-प्रत्यंग संचालित व स्फुरित होते थे, जो गीतों की आत्मा का स्पष्टीकरण दर्शाते थे। अनेक प्रतिस्पर्धात्मक भाव नृत्य देव प्रतिमाओं के सम्मुख प्रस्तुत किए जाते थे, जिनका उद्देश्य देवताओं एवं नरेशों अथवा अपने आश्रयदाता सामन्तों को प्रसन्न करना होता था। ऐसे भाव नृत्य में संगीत व गायन अत्यंत सम्मोहक होता था, जो भावों को चरम तक पहुँचाता था।

गुणीजनखाना का कार्य एवं व्यवस्था इसमें नियुक्त कलाकारों, विद्वानों को राज्य की ओर से निर्धारित वेतन नियमित रूप से मिलता था। कलाकार, कवि, लेखक, चित्रकार, संगीतकार, नाटककार आदि अपनी कला की दक्षता दिखलाते और पुरस्कार भी प्राप्त करते थे। गुणीजनखाने के कलाकारों को उपहार स्वरूप जागीर, ज़मीन भी दी जाती थी। श्रेष्ठतम कलाकारों को उचित मान-सम्मान, घोड़ा, पालकी,

मशालची, चौपदार आदि नौकर-चाकर रखने का व्यय अलग से दिया जाता था। अनेक अवसरों पर समारोह हुआ करते थे, जिनमें इनाम-इकरार दिया जाता था। कुछ लोगों को वेतन नहीं मिल कर उसके एवज में जागीरें भी दी जाती थी। गुणीजनखाने के संगीतकार नियमित रूप से एक निर्धारित परम्परा में संगीत साधना करते थे। सुबह से रात तक गायन-वादन होता था। सम्पूर्ण वातावरण संगीतमय रहता था।

नियुक्ति के पूर्व महाराजा के सम्मुख हाज़री होती थी। शासक के सम्मुख कला प्रदर्शन का अवसर प्रायः सभी को मिलता था और यदि आश्रयदाता को उनका संगीत पसंद आ गया तो उस कलाकार के भाग्य जाग उठते थे। गुणीजनखाने के कलाकार विभिन्न वर्गों में विभाजित थे, जैसे - कलावंत, कत्थक, नर्तक-नर्तकी, सारंगिया, पखावज वादक, हालुका रासधारी, करताल वादक आदि तथा कलावंतों में गायक, बीनकार, सितार वादक सम्मिलित थे। बड़े गुरूओं व उस्तादों को रोज़ नहीं आना होता था। जब उनकी आवश्यकता होती थी, तब ही उनको उपस्थित होना पड़ता था या तो महाराजा स्वयं उन कलाकारों को सुनने के इच्छुक हो या फिर कोई विशिष्ट मेहमान आए हो और विशेष उत्सव, त्योहार, संगीत गोष्ठी, विशेष संगीत सभा आदि होने पर सभी कलाकार उपस्थित होते थे। बाकि कलाकारों की उपस्थिति प्रतिदिन निर्धारित स्थानों पर होती थी।

जितना भी समय निश्चित हो प्रतिदिन सबको गाना-बजाना पड़ता था। कुछ कलाकारों की 'ड्यूटी' दरबार के मंदिरों में भी लगती थी। कई मंदिरों में संगीत कीर्तन की अपनी परम्परा स्वतंत्र रूप से देवस्थान विभाग के अधीन नियुक्त कीर्तनकारों, पखावज वादकों आदि द्वारा चलती थी। कत्थक नृत्यकार भी मंदिरों में नृत्य करते थे। कलाकार अपना समय व्यर्थ नहीं करें इसलिए प्रत्येक की ड्यूटी बाँध दी गई थी। इस व्यवस्था से दैनिक रियाज़ के साथ ही आपस में राग व गुण चर्चायें भी होती थी।

गुणीजनखाने के अन्तःपुरों में संगीत होता था। 'जनानी ड्योढ़ी' में निवास करने वाली पड़दायतों, बाईयों, बढ़ारिनों आदि को भी गाना-बजाना सिखाया जाता था। इसके लिए चयनित संगीतज्ञ/नर्तक तथा तवाईफों को भी नियुक्त किया जाता था। गुणीजनखाने के कुछ कलावंत जनानी ड्योढ़ी में गायन, नृत्य, नाट्य, कला आदि की शिक्षा देने जाते थे। काव्य रचना, सुलेखन की शिक्षा भी दी जाती थी। इन बाईयों की लिखी हुई अनेक पुस्तकें, कॉपियाँ, संग्रहीत भजन, नाटकों के कथोपकथन या संवाद लिखी गई कॉपियाँ जयपुर की 'जनानी ड्योढ़ी' रिकॉर्ड से प्राप्त हुई है। महारानियाँ,

माजी साहिबा, पासवानों आदि की ये बाईयाँ सेविकाऐं थी। नाच-गानों में प्रवीण बाईयों के अलग-अलग अखाड़ों में गायन के दंगल या प्रतियोगिताएँ भी होती थी। इनके लिए अलग से नाटक भी खेले जाते थे।

शाही परिवार के लोग, राजकुमार, सामन्तों आदि को भी संगीत कला की शिक्षा दी जाती थी। नर्तकीयों अथवा तवाईफों की भी श्रेणियाँ थी। भगतणियाँ मंदिरों में भगवान अपने आराध्य देव के सम्मुख नृत्य-गायन भी करती थी। अच्छी गायिकाओं को तवाईफों से अलग किया हुआ था, क्योंकि तवाईफों को समाज में हीन दृष्टि से देखा जाता था।

गुणीजनखाने के कलाकारों के अपने रंग-ढंग तथा नाज़-नखरे भी होते थे। रियासतकाल के कलाकार रौब-रूतबे वाले प्रतिष्ठा सम्पन्न कलाकार थे, जिन पर राजा-महाराजाओं की अटूट कृपा थी, क्योंकि कलाकार राजा-महाराजाओं को संगीत की शिक्षा देते थे, इस कारण वो उनके गुरू भी थे। कलाकार पूरे सम्मान के साथ दरबार में आते थे। कुछ कलाकार पालकी में बैठकर आते थे तथा कुछ तांगे में बैठकर आते थे। उस समय में पालकी तथा तांगा वाहन ही प्रतिष्ठा सूचक थे। कुछ नरेश तो कला का इतना आदर-सम्मान करते थे कि जब वो चाहते तो कलाकार के घर जाकर छुपकर के कलाकार की साधना का लुत्फ़ लेते थे।

कलाकारों का अपना-अपना अलग स्वभाव होता था। कुछ कलाकार अफीम का सेवन करने के, कुछ मिठाई खाने के, तो कुछ पान खा कर गाने के तथा कुछ ईत्र लगाने के शौकीन होते थे। कुछ कलाकार ऐसे भी होते थे जो मन होने पर ही अपनी प्रस्तुति देते थे अथवा गाते थे। अगर उनकी तबीयत गाने की नहीं होती थी तो गाते नहीं थे।

कलाकारों को अगर किसी भी कारणवश राज्य के बाहर जाना होता था तो उन्हें राजा की आज्ञा लेनी होती थी। राजा की आज्ञा के बग़ैर रियासत में नियुक्त कलाकार बाहर नहीं जा सकते थे। काम होने पर अवकाश लेना होता था। अनुपस्थिति का वेतन नहीं मिलता था। एवजी रखने की भी परम्परा रही। इस विभाग में कार्यरत कलाकारों को सामान्यजन भी विशेष सम्मान की दृष्टि से देखते थे। गुणीजनखाने के कलाकारों के परिवार की सुरक्षा तथा उनके लिए आवास की व्यवस्था करना भी यह विभाग ही करता था।

बून्दी रियासत के दरबारी संगीतज्ञ, कलावंत, भगतण एवं तवायफ -

1.	सूर्यमल्ल मिश्रण जी	20.	नन्ही बाई
2.	मीर बख्श खाँ साहब	21.	महताब खाँ
3.	गुलाम गौस खाँ	22.	भँवरलाल जी
4.	संगीत सम्राट अल्लादिया खाँ	23.	धुलीराम जी
5.	काले खाँ	24.	बहादुर जी कलावंत
6.	बदन सिंह जी	25.	मोहम्मद अली
7.	चंडीदान जी	26.	सुल्तान बाई
8.	मतिराम जी	27.	पेफा जी
9.	गजानंद जी राव	28.	मनभावन बाई
10.	धुलीलाल जी राव	29.	गणेशी बाई
11.	देवलाल जी राव	30.	मोती बाई
12.	फकीर चंद जी राव	31.	हरकू बाई
13.	मास्टर भँवरलाल जी	32.	बिब्बो बाई
14.	छोटूलाल जी	33.	बिलास बाई
15.	चिम्मन खाँ	34.	नन्दा बाई
16.	राधा बाई	35.	सौभाग बाई
17.	सुंदरलाल जी	36.	लाडकँवर बाई
18.	उस्ताद धोकल जी	37.	फूला भगतण
19.	उस्ताद देवीलाल जी		

बून्दी के दरबारी संगीतज्ञ सूर्यमल्ल मिश्रण -

सूर्यमल्ल मिश्रण जी का जन्म चारणों की मीसण शाखा के एक प्रतिष्ठित कुल में ई. 1815 में कार्तिक कृष्णा 1 को बून्दी में हुआ। इनके पिता जी का नाम चंडीदान

था, जो की बून्दी रियासत के दरबार में प्रधान कवियों में से थे। सूर्यमल्ल जी के पूर्वजों में नवमी पीढ़ी पूर्व ईश्वर नाम के एक कवि हुए जो सं. 16वीं शताब्दी में बून्दी के राजा सूरजमल के शासन काल में पोलपात्र बनकर आये। सूर्यमल्ल जी के दादा जी बदनसिंह भी प्रसिद्ध कवि थे, जिन पर नरेश राव राजा विष्णुसिंह जी की विशेष कृपा थी। जिन्हें पुरस्कार स्वरूप रोसूंदा गाँव तथा कवि राजा की उपाधि प्रदान की गई थी।[28] इनकी माँ का नाम भवानबाई था, जो जयपुर में स्थित कुम्हारिया के ठाकुर जोरावर सिंह जी की पुत्री थी।

महाकवि सूर्यमल्ल जी बचपन से ही असाधारण प्रतिभा के धनी थे। उनकी असाधारणतया के सम्बन्ध में कई किंवदन्तियाँ प्रचलित थी। जैसे -

1. पाँच वर्ष की अवस्था में उनको जब विद्यारंभ के लिए पाठशाला भेजा गया तो प्रथम दिवस ही उन्होंने लेखन-पठन की अभिज्ञता प्राप्त कर ली और तीन दिन में अमरकोष के तीनों ही काण्ड कंठस्थ कर अर्थ सहित सुना दिए।
2. सात वर्ष की अवस्था में आशु कवि के रूप में अपने पिता को डिंगल का एक गीत तत्काल छन्दोबद्ध करके सुना दिया।
3. दस वर्ष की अवस्था में 'रामरंजाह' नामक पद्य ग्रंथ की रचना कर दी।
4. बारह वर्ष की अवस्था में व्याकरण के पदज्ञान के प्रवीण अधिकारी बन गये।

सूर्यमल्ल मिश्र जी का शास्त्रीय ज्ञान अत्यधिक था। वह संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, डिंगल, पिंगल आदि अनके भाषाओं के निष्णात पंडित थे। वे शकुनशास्त्र, धर्मशास्त्र, मीमांसा, व्याकरण, न्यायशास्त्र, संगीतशास्त्र, दर्शन, इतिहास, साहित्य, ज्योतिष, चौदह विद्या, चौसठ कला आदि विषयों के अच्छे ज्ञाता थे। वंश भास्कर से पता लगा कि इन्होंने छह विवाह किए। इनकी भार्याओं के नाम ढोला, सुरणा, विजयिका, जसा, पुष्पा तथा गोविंदा थे तथा इनके भाई का नाम जयलाल था, जो कवि तथा वैयाकरण थे। छः पत्रियाँ थी पर एक से भी कोई बेटा नहीं होने के कारण इन्होंने मुरारीदान को गोद लिया जो कि डिंगल भाषा के अच्छे कवि थे। बून्दी नरेश रामसिंह जी की आज्ञा से इन्होंने ही 'वंश भास्कर' के अपूर्ण अंश को पूरा किया। इन्होंने एक डिंगल कोष की भी रचना की। सूर्यमल्ल जी के एक कन्या हुई जिसे शराब के नशे में लाड़ लड़ाते समय वे इतना हिलाते-डुलाते रहे की उसका प्राणान्त ही हो गया।

---

[28] वंश भास्कर, सूर्यमल्ल मिश्रण, पृ.सं.51-54

सूर्यमल्ल जी के गुरू का नाम स्वरूपदास जी था, जो उस समय के पहुँचे हुए दादूपंथी साधु थे। इनका सूर्यमल्ल पर बहुत अधिक स्नेह था। गुरू के ह्दय में इस शिष्य के प्रति बहुत आदर भाव था। स्वरूपदास ने अपने पत्र में इन्हें 'चारणचक्रवर्ती' श्री सूर्यमललेषु, 'कवि कर्म भुवन विधान लोकोत्तरप्रजातिषु', 'पंडित मंडल वदनसरोरूहविकासवचन', 'दिनमणिकिरण संचारचारूतरेषु', 'वेदांतासिद्धान्त प्रत्यग् ब्रछतत्वगोचर' आदि कहकर सम्बोधित किया है। सूर्यमल्ल ने अपने पत्रों में इनके लिए 'परमपूजनीय', 'स्वामिस्वरूप चरणै:', 'श्रीस्वरूप गुरूचरणा:', 'वन्देस्वरूपालयान्' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।

वंशभास्कर के टीकाकार श्री कृष्ण सिंह ने उक्त शब्दावली के प्रयोग के आधार पर दोनों में गुरू-शिष्य के सम्बन्ध के पक्ष को लेकर संदेह प्रकट किया है। पर इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि बचपन में कवि ने उनसे विद्या प्राप्त की होगी और यावज्जीवन उनको वे बड़े पूज्य भाव से देखते रहे होगे।

सूर्यमल्ल जी के अन्य गुरूओं के भी उल्लेख मिलते है। कहा जाता है कि इन्होंने आशानंद से पद ज्ञान, मुहम्मद नामक किसी मुसलमान से फ़ारसी और किसी अन्य मुसलमान कलाकार से संगीत शिक्षा ग्रहण की थी।

सूर्यमल्ल जी के कई प्रमुख शिष्य, मंगल जी राव (बून्दी), धूंकल जी महड़ (लीलेडा गाँव - बून्दी), हरदानजी किसनावत बारहठ (डांसलोजी का बास), मोतीराम जी रानु (जोधपुर), बख्शीरामजी बारहठ (जोधपुर), वल्लभजी बारेठ (कृष्णगढ़), गणेशपुरी जी (जोधपुर), विजयनाथ जी खिडिया (गंगावती), सीताराम जी बारेठ (जयपुर) हैं।

सूर्यमल्ल जी बहुत ही प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे। वो देखने में जितने बाहुबली नज़र आते थे, मन से उतने ही अधिक करूण-कोमल थे। उनका व्यक्तित्व अन्तर्द्वन्दों व असंगतियों से परिपूर्ण था। 'वीर सतसई' के सम्पादकों ने उनका शब्द-चित्र खींचते हुए लिखा है, ''विशालकाय दीर्घ अरूण नेत्र, पुष्ट भुजदण्ड, भौंहो से मिली हुई मूँछे, सँवार कर पट्टी बैठाई हुई दाढ़ी, एक हाथ में नग्न तलवार और दूसरे में मंजूवादिनी वीणा, नस-नस और पेशी-पेशी में स्फूर्ति की उमंग ऐसा आकार मन की आँखों के सामने खड़ा होता है, जब हम वीररसावतार महाकवि सूर्यमल्ल का नाम लेते है। वे अपने पास अंकुश और वीणा रखा करते थे। अंकुश उनके चारणोचित

स्वाभिमान, स्वातन्त्रय प्रेम और सत्यवादिता का प्रतीक था, तो वीणा उनके ह्दय की तन्मयता, संगीतात्मकता, कोमलता और करूणा की प्रतीक।

सूर्यमल्ल स्वाभिमानी स्वभाव के इंसान थे। वह साधारण दरबार के कवियों से बहुत उच्च कोटि के कवि थे। वह झूठी प्रशंसा, लोभ, चाटुकारिता से बहुत ऊँचे उठ चुके थे। कोई भी वाक्या या घटनाक्रम जो वो देखते थे, उस घटनाक्रम को उस ही रूप में लिखते थे, जो सही होता था। कवि की निरंकुशता और सच्चाई के वे मूर्तिमंत रूप थे। इन कई गुणों की सूचक घटनाएँ जो सूर्यमल्ल जी के व्यक्तित्व तथा जीवन से सम्बन्धित है, उसमें से एक घटना कुछ इस प्रकार है-

अपने शिष्य स्वामी गणेशपुरी जी के इस अनुरोध को कि यदि आप कुछ समय के लिए जोधपुर पधार आए तो जोधपुर नरेश जसवन्त सिंह जी आपको 60-70 हज़ार की जागीर अवश्य दे देंगे। इस बात को सूर्यमल्ल जी ने यह कहकर अस्वीकार किया था कि रामसिंह जी को छोड़कर यह लोभ मुझसे नहीं होगा।

महाराव राजा रामसिंह जी की आज्ञा लेकर 23 से 24 वर्ष की आयु में ही सूर्यमल्ल जी ने 'वंशभास्कर' ग्रंथ की रचना आरम्भ कर दी थी, पर वह पूर्ण नहीं हो सका, जिसका कारण था कि जब सूर्यमल्ल जी ने 'वंशभास्कर' में राव राजा के गुणों के साथ-साथ ही उनके दोषों को भी लिखना शुरू कर दिया तो राजा सूर्यमल्ल जी से नाराज़ हो गए। सूर्यमल्ल जी ने सच लिखना ही कवि कर्म समझा। अतः उन्होंने ग्रंथ को अपूर्ण ही छोड़कर ग्रंथ रचना करना ही बंद कर दिया।

इस सघन लोक से ही निवृत होने वाली तेजस्विनी भावुकता, कोमलता, उदारता तथा स्पष्टवादिता का पता भी सूर्यमल्ल मिश्रण के व्यक्तित्व से लगता है। काव्य तथा संगीत के संयोग से उनमें मानवीय गुणों का विकास हुआ, जिस के कारण वह बड़े से बड़े दु:ख को भी संगीत की संगति/साहचर्य से भूल जाया करते थे। उनकी उदारता, सदाशयता, सहनशीलता, दायित्वबोध आदि का पता निम्नलिखित जीवन-प्रसंगों से लगता है -

कहा जाता है कि सूर्यमल्ल जी ने एक बार तुलसी के क्यारें में एक लाल मिर्ची लगाई। इस मिर्ची के प्रति उनके मन में बड़ा आत्मीय भाव था। ज्यों-ज्यों वह मिर्ची बढ़ती वह उसे देखकर बड़े प्रसन्न होते। एक दिन एक मोर उसे खा गया जिससे कवि बड़े दुखी हुए।

अपने लेखक अम्बालाल जी के लड़की होने पर सूर्यमल्ल ने दरबार से उन्हें कुछ सहायता देने की प्रार्थना की। इस आग्रह पर दरबार ने सूर्यमल्ल से कहा कि पुण्यार्थ की सीमा आपके पास ही है। आप जो उचित समझें वह सहायता प्रदान करें। कहकर सूर्यमल्ल को ही ज़िम्मेदारी सौंप दी। सूर्यमल्ल जी ने प्रतिदिन दरबार की ओर से अम्बालाल जी को कांसे के पात्र में सवा पाव घी के साथ आधा माशा सोना जो की किसी ब्राह्मण को दिया जाता था, वह देने की आज्ञा दे दी। लगभग दो वर्ष तक यह क्रम चलता रहा। यह बंद तब हुआ जब अम्बालाल जी ने स्वयं बहुत निवेदन कर इसे बंद करवाया।

अपनी पत्नी ठकुरानी महियारणी जी (कोटा) के देहान्त होने पर अंतिम संस्कार के लिए जाते समय बहादुर जी कलावंत के रास्ते में मिल जाने पर उनसे तंबूरा लेकर सूर्यमल्ल जी ने ऐसी संगीत की स्वर लहरी छेडी कि सब दंग रहकर/मंत्रमुग्ध होकर आनंद विभोर हो गए।

यह भी कहा जाता है कि एक बार किसी गणिका के गायन पर प्रसन्न होकर सूर्यमल्ल ने उसे कुछ रकम इनाम देने के लिए खजाऩे पर चिट्ठी लिख दी। खज़ानची ने रकम अधिक समझ कर उसे टाल दिया। इस पर सूर्यमल्ल जी क्रोधित हुए तथा उस रकम को दुगुना कर दिया, फिर भेजा। रामसिंह जी तक जब यह बात पहुँची तो उन्होंने खज़ानची को कहा कि तुम्हें उनकी चिट्ठी वापिस नहीं लौटानी थी और आज्ञा दी कि जो रकम पहले लिखी थी वह खज़ाने से दे दी जाए और उतनी ही तुम अपने पास से दे दो।

सूर्यमल्ल जी को अफीम सेवन और शराब पीने का बड़ा शौक था। वे शराब पीकर ही काव्य रचना किया करते थे। उनको जब भी सलाह-मशवरा करने के लिए दरबार में आमंत्रित किया जाता था, तब भी वह शराब का सेवन करके ही दरबार में उपस्थित होते थे। रतलाम नरेश बलवन्त सिंह जी की मृत्यु का समाचार सुनकर उन्हें श्रृद्धाजंलि अर्पित करने के लिए जो छंद लिखे वे भी शराब पीकर ही। उनका विश्वास था कि मद्य पिये बिना अच्छी कविता हो ही नहीं सकती। शराब का इतना सेवन करने पर भी उन्होंने किसी के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया ना ही विवेकरहित हुए वह शराब का सेवन तो करते थे पर औषधवत् ही वह बहुत ही प्रसन्नचित रहने वाले मस्तमौला व्यक्तित्व के धनी थे। जब कभी भी उनका रियाज़ का मन होता तो वह सितार लेकर

हवेली में लगे इमली के पेड़ पर बने मचान पर जा कर बैठ जाते और तन्मय होकर गाते।

सूर्यमल्ल जी केवल कवि ही नहीं थे अपितु वह कवि होने के साथ-साथ ही सच्चे मित्र, हितैषी, दूसरों के दुःख में दुःखी होने वाले, अच्छे सलाहकार, देशप्रेमी, संगीतज्ञ, समाज-सुधारक, इतिहासवेत्ता, षडभाषाभिज्ञ आदि भी थे। वह राजस्थान की तत्कालीन परिस्थितियों के सूक्ष्म दृष्टा थे। उनके राजस्थान की सभी रियासतों के सुप्रसिद्ध महात्माओं, राजाओं, जागीरदारों, कवियों और वीरों से घनिष्ठ सम्पर्क था। बड़े-बड़े राजा तथा उमराव उनके लिए बेहतर से बेहतर शराब, कटारी, तलवार और घोड़े भेंट-स्वरूप भेजने में अपना अहोभाग्य समझते थे। बड़े से बड़े राजा भी उनके समागम के लिए बैचेन रहते थे। प्राचीन रियासत के सभी राजा-महाराजा संगीत व कलाप्रेमी होते थे। इस ही कारण वह अपनी रियासतों में अनेक कवि, संगीतज्ञ, वादक आदि को नियुक्त करके उन्हें उचित मान-सम्मान, आश्रय, वेतन आदि प्रदान किया करते थे।

समाज तथा आम-जनमानस के मन में सूर्यमल्ल जी के प्रति विशेष आदर-सम्मान था। जब सूर्यमल्ल जी का देवलोक गमन हुआ तो ऐसा प्रतित हुआ मानों गुणों का समुद्र ही नष्ट हो गया है। जैसे एक प्रेरणादायी आलोक स्तम्भ ही नष्ट हो गया है। कोटा के कविराजा भवानीदास जी महियारिया तथा अलवर के सुप्रसिद्ध कवि रामनाथ कविया ने बड़े मार्मिक शब्दों में सूर्यमल्ल जी को अपनी श्रृद्धाजंलि प्रदान की थी, जो कुछ इस प्रकार है -

"देस कविंद दूजाह, रहिया सो आछां रहो।
सामंद गुण सूजाह, तो मरतां बिनस्तो त दिन।।"

अर्थात् देश में दूसरे कवि जो शेष रह गये है, परमात्मा करे, वे बने रहें। लेकिन हे सूर्यमल्ल, जिस दिन तुम्हारी मृत्यु हुई, उस दिन गुणों का समुद्र नष्ट हो गया।

"हायन एक हज़ार में, आदि हुवौ नहिं अंत।
सुरसत बाणी सूजड़ा, पढ़ी पदारथ पंत।।"

अर्थात् एक हज़ार वर्षों के प्रारंभ और अंत में कोई महान कवि नहीं हुआ, परन्तु स्वयं सरस्वती ने सूर्यमल्ल की वाणी में पदार्थ (तत्व) पाया।

सूर्यमल्ल जी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ उनके कृतित्व में स्थान-स्थान पर प्रकट हुई है। उन्होंने अपनी वाणी को सिद्ध कर लिया था। कहा जाता है कि 'वंशभास्कर' की रचना करते समय चार लेखक (कही-कही पर इन लेखकों की संख्या आठ भी बताई गई है) सुबह से शाम तक उनके दाएँ-बाएँ बैठे रहते थे। शराब पीने के बाद अथवा जब कभी भी वह मस्ती में आते 'हूँ' कहते और सब लेखक सावधान हो जाते थे। जैसे ही सूर्यमल्ल जी बोलना शुरू करते वैसे ही उनके साथ-साथ ही लेखकों की क़लम चलने लगती थी। जब लिखना बंद करवाने की इच्छा होती तब सूर्यमल्ल कहते थे, "हे सरस्वती माता, कृपा करो। अभी मुझमें इतनी शक्ति नहीं है।"

सूर्यमल्ल जी द्वारा वंशभास्कर, वीर सतसई, बलवद्विलास (बलवंत विलास), रामरंजाट, छंदोमयूख, सतीरासो, फुटकर कवित, सवैये, धाठरूपावलि ग्रंथ लिखे गए हैं।

मीरबख्श खाँ -

मथुरा घराने के बेजोड़ सितारवादक मीरबख्श बून्दी दरबार में नियुक्त रहे। मीरबख्श खाँ मथुरा के प्रसिद्ध गायक मेहताब खाँ के पुत्र थे।[29] कुछ समय तक मथुरा में निवास करने के पश्चात ये बून्दी के महाराजा बख़्तसिंह जी के अनुरोध पर बून्दी चले आए तथा महाराजा द्वारा इन्हें दरबार में नियुक्त कर दिया गया तथा यह बून्दी रियासत के दरबारी गायक बन गए। मीरबख्श खाँ गायन के साथ-साथ ही सितार वादन में भी निपूर्ण थे।[30] बून्दी के महाराजा स्वयं भी इनसे सितार की शिक्षा ग्रहण करते थे। इनका स्वर्गवास बून्दी दरबार में रहते हुए ही सन् 1870 में हुआ।

गुलाम गौस खाँ -

यह सुल्तान सिंह जी राजपूत वंश के थे। इनका जन्म स्थान तो अतरौली था, किंतु ये राजस्थान चले आए और बून्दी के महाराज रामसिंह के दरबार में रहे। महाराजा इनकी गायन शैली से बहुत प्रभावित थे और इनका बहुत ही सम्मान करते थे। वयोवृद्ध गुलाम गौस खाँ को महाराज जी 'काका' कहकर पुकारते थे। ये एक अत्यंत सच्चे, नेक कलाकार थे। इनके व्यवहार में बहुत ही सरलता तथा सादगी थी।[31] इनका मानना था कि आप जब लोगों से प्रेम करेंगे तब ही आप संगीत को जान पाऐंगे। उसमें कुछ कर पाने में सफल हो पाऐंगे। इनका कहना था कि आरंभ में

---

[29] राजस्थान संगीन और संगीतकार, चौधरी प्रताप सिंह, गायक भाग 1, पृ.सं.7

[30] वही, पृ.सं. 7

[31] चौधरी प्रताप सिंह, राजस्थान संगीत और संगीतकार, पृ.सं.15

इनके पूर्वज हिंदू थे और सुल्तान सिंह राजपूत के ही वंशज थे, किंतु देश-काल परिस्थिति की वजह से बाद में इन्हें मुसलमान बना दिया गया तथा इस्लाम कुबूल करवा दिया गया।[32] प्रमुख रूप से ये ध्रुपद, धमार का ही गायन करते थे और अपनी वाणी 'नौहार' बताते थे। 'डागर' वाणी की तरफ भी यह आकर्षित थे और उसे इन्होंने अपनाया भी। इनकी आवाज़ सुमधुर तथा लच्छेदार थी तथा गौहरवाणी के आप विशेषज्ञ माने जाते थे।

संगीत सम्राट अल्लादिया खाँ -

महान संगीतज्ञ उस्ताद अल्लादिया खाँ का नाम तानरस खाँ के समकालिन संगीतज्ञों में से सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध है। आपका जन्म राजस्थान के उनियारा में जो कि जयपुर रियासत के अंतर्गत आता था, में हुआ था। आपके परिवार में संगीत की परम्परा पीढ़ीयों से चली आ रही थी। आपके पिता का नाम ख़्वाजा अहमद खाँ था, जो स्वयं एक उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे तथा दरबारी गायक के पद पर उनियारा रावजी के यहाँ पर थे। आपके पूर्वज गौड़ ब्राह्मण थे, परन्तु आलमगीर शंहशाह के द्वारा आपको ज़बरदस्ती मुसलमान बनवाया गया। जिसके पश्चात से ही आपका वंश मुसलमान हो गया। आपको गायकी की विधिवत शिक्षा आपके पिता जी अहमद खाँ से ही प्राप्त हुई थी, किंतु यह शिक्षा केवल 14 से 15 वर्षों तक ही जारी रह सकी तथा आपके पिता जी की मृत्यु हो जाने के कारण आपकी शिक्षा वही रूक गई। आपकी संगीत शिक्षा की दोबारा शुरूआत आपके दादा जी जूगनू खाँ तथा चाचा चिम्मन खाँ एवं जहाँगीर खाँ से हुई। आपके चाचा चिम्मन खाँ बून्दी में निवास करते थे। आपकी किशोरावस्था भी गायन की शिक्षा ग्रहण करते हुए बून्दी में ही व्यतित हुई।

काले खाँ -

बूंदी के दरबारी संगीतज्ञों में उस्ताद काले खाँ का नाम भी काफ़ी मशहूर है। काले खाँ यूँ तो गायन की सभी विधाओं ध्रुपद, धमार, भजन गाने में भी पारंगत थे, किंतु प्रमुख रूप से ख़्याल का गायन करते थे। काले खाँ मलंग फितरत के गायक थे। दरबार उनके गायन से बहुत प्रसन्न रहते थे। राजपूत शासक प्रारंभ से ही संगीत व

---

[32] वही, पृ.सं.15

कला प्रेमी थे, इसलिए वह अपने राज दरबार में जिन भी संगीतज्ञों को रखते थे, उनको उचित मान-सम्मान, आश्रय आदि प्रदान किया करते थे।

बूंदी में साक्षात्कार के माध्यम से काले खाँ के बारे में एक रोचक सत्य घटना की जानकारी प्राप्त हुई कि एक समय काले खाँ बून्दी नरेश को एक संगीत की महफ़िल में कुछ सुना रहे थे। दरबार ने उनके गायन से प्रसन्न होकर उनको सोने चांदी की अशर्फी आदि देकर उन्हें खूब प्रोत्साहित किया। उसके बाद आम जनता ने काले खाँ जी से कहा हमें भी कुछ सुनाइएँ, हम आपका गाना सुनना चाहते हैं। तब काले खाँ जी ने उन्हें उत्तर दिया कि जब दरबार को ही सुना दिया, वो मेरे गायन से प्रसन्न हो गए, अब किसी ओर को क्या सुनाना। काले खाँ अपने नरेश का बहुत आदर करते थे, इसके बाद उन्होंने कभी गाना नहीं गाया और ना किसी को सुनाया।[33]

गजानन्द जी राव -

बून्दी के गुणीजनखान में गजानन्द जी राव दरबारी संगीतज्ञ के रूप में नियुक्त थे। गजानन्द जी रघुवीर सिंह जी के दरबार में थे, जो राजाओं को कई पद गाकर सुनाते थे। राजा की प्रशंसा गान करना तथा राजाओं में युद्ध के लिए जोश, उत्साह भरना इनका प्रमुख कार्य था, जैसा कि मुझे साक्षात्कार के माध्यम से ज्ञात हुआ। युद्ध के समय कटीले दोहे गाए जाते थे जिससे राजा क्रोधित होकर युद्ध के लिए जाते थे। जैसे -

"कंठा मरजे मारजे भाग जे मत भरतार,
क कुण क कालो लागसी मरनो एक ही बार।।"

इस तरह के कुछ ओर भी दोहे गा कर सुनाते थे। दरबार के द्वारा अच्छा गाने पर उपहारस्वरूप ज़मीन तथा चाँदी की अशरफी दी जाती थी। गढ़ के अंदर गुणीजनखाना में कार्यरत संगीतज्ञों, कवियों तथा नर्तकों के अलावा किसी को भी जाने की अनुमति नहीं थी। महल के अंदर तो आयोजन होते ही थे, पर कुछ विशेष उत्सवों पर महल के अलावा शिकार बुर्ज पर भी संगीत की महफ़िल सजती थी तथा उन महफ़िलों में स्थानीय कलाकारों के साथ-साथ बाहर से भी कलाकारों को बुलाया जाता

---

[33] मुकेश रावल जी के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

था। जहाँ पर स्थानीय कलाकारों तथा बाहर से आए कलाकारों के बीच मुकाबला भी हुआ करता था।[34]

धुलीलाल जी राव -

बून्दी रियासत के गुणीजनखाने में धुलीलाल जी राव कार्यरत थे। धुलीलाल जी महाराज ईश्वर सिंह जी के समय में प्रमुख रूप से माँड गाया करते थे। इनको मासिक तनख़्वाह के रूप में 40 रूपये दिये जाते थे। ये माँड गायन तो करते ही थे, किंतु इसके साथ-साथ ही सारंगी वादन, शहनाई वादन तथा तबला वादन भी करते थे। इनकी नित्य संगीत साधना के लिए एक विशाल कक्ष था, जहाँ सभी संगीतज्ञ बैठकर संगीत का अभ्यास करते थे तथा दरबार के द्वारा बुलाये जाने पर उनके सामने प्रस्तुत होते थे। धुलीलाल जी बून्दी दरबार के साथ-साथ झालावाड़ तथा कोटा के दरबार में भी दरबारी संगीतज्ञ के रूप में नियुक्त रहे हैं।

यहाँ के दरबार में गाये जाने वाले दोहे, भजन तथा माँड पिंगल भाषा में होते थे। धुलीलाल जी दरबार को भजन भी सुनाया करते थे तथा वीर सतसई के दोहे भी। एक भजन के बोल कुछ इस प्रकार है -

"सुन प्राणी सूनी ज़िन्दगानी भजन बिना,
बिन विवेक बैराग्य बिन भक्ति नहीं जानी।।"

देवलाल जी राव -

देवलाल जी गुणीजनखाने में गायक के रूप में नियुक्त थे। देवलाल जी लक्ष्मीनाथ जी के मंदिर में पाँच भजन गाया करते थे। दरबार ने इन्हें अपने ईष्ट देव की सेवा में भजन गाने का कार्य सौंपा था। इन्हें तनख़्वाह के रूप में 50 रूपये हर माह प्रदान किए जाते थे। दरबार सभी संगीतज्ञों को तनख़्वाह के साथ-साथ उचित सम्मान तथा भेंट भी दिया करते थे। दरबार जब भी गायन से प्रसन्न होते तो चाँदी के सिक्कों से भरी हुई केसरिया रंग की ज़री की पोटली भी कलाकार को दिया करते थे। देवलाल जी भजन के अलावा गीत, छंद, सुक्तियाँ भी गाया करते थे। इस के साथ गाते-गाते शहनाई भी बजाया करते थे।

[34] स्वयं शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार

फकीर चन्द जी राव –

चित्र सं. 2.3 फकीर चन्द जी राव रियासतकालीन कलाकार का परिचय प्राप्त करते हुए शोधार्थी गुंजन हाड़ा

यह बून्दी रियासत के अंतिम शासक महाराव राजा बहादुर सिंह जी के दरबार में गायन तथा हारमोनियम का वादन करने के लिए दरबार में जाया करते थे। जब दरबार में इनका गायन होता था तब उस समय की बून्दी की प्रसिद्ध नृत्यांगना नन्ही बाई की नृत्य की प्रस्तुति होती थी। कुछ विशेष उत्सवों पर जोधपुर से भी कलाकारों को आमंत्रित किया जाता था। फकीर चन्द जी मुख्य रूप से माँड गायन तथा इसके साथ ही भजन का गायन भी करते थे। इन्हें दरबार के द्वारा उपहार स्वरूप 16 बीघा ज़मीन भी दी गई थी तथा इन्हें मासिक वेतन के रूप में 50 रूपये के साथ चाँदी के सिक्के भी दिए जाते थे। विशेष रूप से दरबार को इनसे 'दारू दांखा रो' सुनना बहुत पसन्द था।[35]

फकीर चन्द जी गायन के साथ तबला भी बजाते थे तथा शहनाई भी बजाते थे। इनके वंश में पिछली सात पीढ़ीयों से गाने-बजाने का काम होता था। राजा बहादुर सिंह जी की शादी के समय में जोधपुर से विशिष्ट कलाकारों को आमंत्रित किया गया था। कुछ इस प्रकार के दोहे भी गाए जाते थे, जैसे -

[35] शोधार्थी द्वारा लिया गए साक्षात्कार पर आधारित जानकारी

"जननी जने तो ऐसा जने जैसे काका जैत,
दिल्ली हुंदा चौक में अड़ रहे खडेत।।"

"बून्दी राखी ब्रजपत कर जयपुर से जंग,
पचरंग झंडा पाडिया थाने राव उम्मेदा रंक।।"

मास्टर भँवरलाल जी -

आप बून्दी रियासत के दरबारी गायक थे। समय-समय पर आयोजित होने वाली संगीत महफ़िलों में आपका गायन होता था। आपके पिता दुर्गालाल जी अलवर दरबार में तथा किशनगढ़ दरबार में कीर्तनकार के पद पर नियुक्त थे तथा हवेली संगीत के अच्छे जानकार थे। आपको भी संगीत की विधिवत शिक्षा आपके पिता श्री दुर्गालाल जी द्वारा ही प्राप्त हुई। आप राजपूती शैली के माँड तथा हवेली संगीत के पदों का गायन करते थे।[36]

छोटुलाल जी –

छोटुलाल जी को ईश्वर सिंह जी के पहले के दरबार ने दरबारी संगीतज्ञ के रूप में नियुक्त कर रखा था। छोटुलाल जी को दरबार ईश्वर सिंह जी मुख्य रूप से अपने महल के मुख्य मंदिर में पाँच भजन गाने के लिए नियुक्त कर रखा था। छोटुलाल जी भजन का गायन करते थे तथा उन भजनों को श्रवण कर के राजा साहब गायन करते थे। उस समय बून्दी रियासत में नगारखाने चलते थे, जहाँ पर शहनाई वादकों को नियुक्त किया जाता था, जो सुबह 4 बजे उठ कर महल में शहनाई बजाया करते थे। शहनाई वादन में वो विभिन्न राग-रागनियों को बजाया करते थे। छोटुलाल जी को गुणीजनखाने से मासिक वेतन के रूप में 28 रूपये प्रदान किए जाते थे।[37] छोटुलाल जी द्वारा गाये जाने वाले चार प्रमुख भजन (1) जानकीनाथ सहाय करे, तब कौन बिगाड करे नर तेरो, (2) भजमन राम चरण सुखदाई दीनानाथ, (3) माई री म्हाने सपना में परणया जी, (4) रथ धीरा हाको जी, है।

तनख़्वाह के साथ-साथ ही दरबार के द्वारा ज़मीन, हाथी, घोड़े, गाय, बकरी, बैल आदि भी दिये जाते थे। छोटुलाल जी भजन के साथ ही शास्त्रीय संगीत का

[36] गोविन्द गंधर्व जी के साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

[37] मुकेश जी रावल के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

गायन भी करते थे तथा समय-समय पर विशेष राग-रागिनी भी गाया करते थे। दरबार ने इनके गायन से प्रसन्न होकर हरीपुरा गाँव में 16 बीघा जमीन दी।

छोटुलाल जी के चार पुत्र सुवालाल जी (सारंगी वादन) ज्येष्ठ पुत्र, बंशीलाल जी (शहनाई वादन), सुंदरलाल जी (गायन), सत्यनारायण जी (तबला) थे।

छोटुलाल जी को दरबार के द्वारा रहने के लिए आवास भी प्रदान किया गया था, जो कि परकोटे के पास में ही था। यह परिवार सहित यहीं पर रहते थे। इनके बाद इनके पुत्रों को भी दरबार के द्वारा बून्दी रियासत में दरबारी गायक तथा वादकों के रूप में अपनी सेवा देने के लिए राज्याश्रय दिया गया।

राधा बाई -

राधा बाई महाराजा रामसिंह जी के दरबार की राज नर्तकी थी, जो गढ़ पैलेस में सजने वाले दरबार में अपनी प्रस्तुती दिया करती थी। राधा बाई की बेटी भी बून्दी दरबार की प्रसिद्ध नर्तकी रही। राधा बाई को दरबार में प्रस्तुती देने के कई दिनों पहले से ही केसर तथा दूध उपलब्ध करवाया जाता था। उस समय में सौंदर्य-सज्जा के लिए ज़्यादा साधन नहीं होने के कारण इन्हें स्नान के लिए हल्दी, केसरयुक्त दूध दिया जाता था, जिससे दरबार में उपस्थित होने के पहले से ही उससे (केसरयुक्त दूध) से स्नान करते थे, जिससे रूप निखर जाए तथा देखने वाले को भी नृत्य तथा नर्तकी दोनों ही आकर्षित लगे।

चिम्मन खाँ -

आप बून्दी दरबार के सबसे प्रसिद्ध कलावंतों में से एक थे तथा महान संगीतज्ञ अल्लादिया खाँ साहब के गुरू थे तथा रिश्ते में उनके चाचा थे। आपकी आवाज़ बुलंद थी तथा ख़्याल, ठुमरी एवं माँड गायकी सभी में आप दक्ष थे। आप दरबार के बाद कई कलाकारों को भी संगीत की बारीकियाँ सिखाते थे। आप राजा के प्रसिद्ध संगीतज्ञों में से एक थे। राजा साहब आपके गायन से बहुत प्रसन्न रहते थे। आपका गायन होने के बाद हमेशा राजा साहब आपको केसरिया रंग की पोटली में अशरफी तथा सोने-चाँदी की मुद्राएँ दिया करते थे।

सुंदरलाल जी –

सुंदरलाल जी राज दरबार में शास्त्रीय संगीत के गायक थे। सुंदरलाल जी की गायन की मुख्य विशेषता जो इनके पिता श्री छोटुलाल जी द्वारा इनको सिखाई गई थी

कि यह एक विशेष राग गाते थे। जैसे की हम सभी संगीत प्रेमियों, संगीत शोधार्थियों को विदित है कि राग गायन के लिए कुछ विशेष नियमों का होना आवश्यक है, जिसमें से प्रमुख है कि राग गायन के लिए कम से कम पाँच तथा अधिक से अधिक सात स्वरों का होना आवश्यक है, परन्तु इनके यहाँ के गायन की विशेषता थी कि यह केवल तीन स्वरों में ही गायन करते थे, जो कि बहुत मुश्किल से ही कहीं सुनने को मिले।[38] ऐसे गायक भी इस हाड़ौती की धरा पर हुए है, जो कि किसी बंदिश का गायन केवल 3 स्वरों में करते थे, जैसे कि पाश्चात्य संगीत का मेजर कोर्ड सा-ग-प। इस बंदिश के बोल कुछ इस प्रकार है –

राग वृन्दावनी सारंग, ताल - झपताल -

स्थाई - "मंदीरे रास बाजे मोरे ख़्वाजा मुईनुद्दीन के दरबार,
जोही सोही ध्यावे ख़्वाजा सो फल पावे,
मुश्किल से करो बेडा पार"

चित्र सं. 2.4 सुंदरलाल जी के पुत्र का साक्षात्कार लेते शोधार्थी

[38] स्वयं शोधार्थी के द्वारा मुकेश जी रावल के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

(तबला)

5वीं मात्रा से

मात्राएँ 10, भाग – 4 ताल – झपताल

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
x		2			0		3		

स्थायी

									प मं / प
ग	सा	ग	प	ग	प	प	ग	ग	
दि	रे	रा	ऽ	स	बा	ऽ	जे	ऽ	मो
0		3			x			2	
ग	ग	सा	–	–	सा	–	ग	प	ग
रे	ऽ	ख़	वा	जा	मुई	न	दि	ऽ	न
प	–	सा	–	–	प	–	ग	ग	प
के	ऽ	द	ऽ	र	बा	ऽ	र	ऽ	में

अंतरा

					प	प	स	–	सा
					जो	ही	सो	ऽ	ही
सां	–	–	स्नां	–	प	प	ग	ग	प
ध्यावे		ख़्वा	ऽ	जा	सो	ऽ	फ	ऽ	ल
ग	ग	सा	सा	–	सा	–	ग	प	प
पा	ऽ	वे	ऽ	ऽ	मु	श्‍ि	क	ल	से
प	प	सां	–	सां	प	प	ग	ग	प
क	रो	बे	ऽ	डा	पा	ऽ	र	ऽ	मं
x			2		0			3	

उ. धोकल जी -

उ. धोकल राव जी बून्दी दरबार में दरबारी गायक तथा सारंगी वादक के रूप में नियुक्त थे। दरबार में इन्हें दो समय उपस्थित होना होता था। एक तो राजभोग के समय में तथा दूसरा संध्या आरती तथा भजन का समय होने पर यह दरबार में तथा दरबार के निज़ी मंदिर में उपस्थित होते थे। दरबार के द्वारा इन्हें उचित पारिश्रमिक, स्वर्ण आभूषण तथा सोने-चाँदी की अशरफी दी जाती थी। उ. धोकल राव जी के भ्राता उ. देवीलाल जी भी दरबार के दरबारी संगीतज्ञ थे। यह मंदिर में अपनी प्रस्तुति देने के पश्चात वहाँ की मशहूर नृत्यांगनाओं को गायन की शिक्षा भी देते थे।

उ. देवीलाल -

बून्दी रियासत के गुणीजनखाने में उ. देवीलाल जी दरबारी भजन गायक तथा सारंगी वादक के रूप में दरबार के द्वारा श्री रंग जी तथा चारभुजा नाथ जी के मंदिर में भजन गायन/प्रभु के गुणगान करने के लिए नियुक्त किया था, जो गायन के साथ-साथ सारंगी वादन भी किया करते थे। दरबार के द्वारा विशेष आग्रह पर यह विभिन्न-विभिन्न रागों में पद तथा भजन गाकर सुनाते थे। दरबारी गायक को विभिन्न रागों की समझ होना आवश्यक था तथा साथ ही अलग-अलग पद तथा भजन भी कंठस्थ होना जरूरी था, क्योंकि दरबार अपनी इच्छानुसार कभी भी कोई भी राग के पद अथवा भजन सुनने की फ़रमाईश करते थे।

नन्ही बाई -

नन्ही बाई बून्दी रियासत की सबसे प्रमुख तथा बेहद ख़ुबसूरत नृत्यांगनाओं में से एक थी, जो दरबार की सबसे खास नृत्यांगनाओं में शुमार थी। यह महाराजा रघुवीर सिंह जी के समय तक दरबारी नृत्यांगना के रूप में राजसी महल में अपनी सेवाएें देती रही। इनकी प्रस्तुती रोज़ ना होकर विशेष तीज-त्यौहार पर हुआ करती थी। यह सिर्फ राजमहल में महाराजा साहब तथा उनके विशिष्ट अतिथियों के समक्ष ही अपने नृत्य की प्रस्तुती देती थी। आमजन के सामने नृत्य नहीं किया करती थी। नन्ही बाई को दरबार अपने परिवार का सदस्य ही मानते थे तथा दरबार में उन्हें शेष आदर-सत्कार प्रदान किया जाता था। नन्ही बाई को हर प्रस्तुती में दरबार के द्वारा विशेष स्वर्ण ज़डित पौशाके दी जाती थी तथा सिर से पैर तक के हीरे-मोती जड़ित

आभूषण दिये जाते थे, उन्हें पहनकर ही नन्ही बाई अपनी नृत्य की प्रस्तुती दिया करती थी।[39]

दरबार के जन्मदिवस पर भी विशेष महफ़िल का आयोजन किया जाता था, जिसमें नन्ही बाई की प्रस्तुती भी हुआ करती थी। नन्ही जी ने उ. धोकल राव से संगीत की शिक्षा ग्रहण की थी। नन्ही बाई राज दरबार के अलावा मंदिरों में भी नृत्य किया करती थी। यह दरबार के निज़ी मंदिर रंगनाथ जी के मंदिर में तथा इसके साथ ही चारभुजा जी के मंदिर में भी नृत्य किया करती थी। इनकी दो पुत्रियाँ उषा तथा उमा बाई भी दरबारी नृत्यांगना हुई, जो कि रघुवीर सिंह जी के दरबार में अपनी सेवाएँ देती थी। चौमुखा बाज़ार में आज भी नन्ही जी के नाम से गली है, जिसे नन्ही की गली के नाम से जाना जाता है। एक नृतकी के नाम से एक गली का होना अत्यंत सम्मान की बात है। बून्दी रियासत के संगीतज्ञों का गायन हुआ करता था तथा उनके गायन के साथ-साथ ही नन्ही जी नृत्य किया करती थी।

महताब खाँ -

महताब खाँ मथुरा घराने के संस्थापक थे, जो कि महताब खाँ द्वारा स्थापित किया गया। ब्रज भूमि के क्षेत्र का प्रमुख घराना था। यह बून्दी दरबार में दरबारी गायक के रूप में कई वर्षों तक रहे। बून्दी रियासत के दरबारी गायक होने के कारण यह दरबार में विभिन्न रागों को बेहद ही आसानी से प्रस्तुत करते थे। इसके साथ ही महताब खाँ हवेली संगीत के भी प्रसिद्ध कलाकार थे।

भंवरलाल जी -

बून्दी रियासत के दौरान जब गढ़ में कोई विशेष उत्सव होता या विदेशी मेहमान आते अथवा राजा साहब के घर में शादी, जन्मोत्सव होता था तो भंवरलाल जी बून्दी दरबार में राजपूती रजवाड़ी माँड, प्रशंसा गीत गाया करते थे तथा ईनाम के रूप में दरबार द्वारा इन्हें रकम तथा सोने-चाँदी के सिक्के भी दिए जाते थे।

धुलीराम जी -

बून्दी रियासत के गुणीजनखाने में दरबार के द्वारा श्री धुलीलाल जी को दरबारी कवि के रूप में नियुक्त किया गया। इनका जन्म स्थान उरासी (बासी दुगारी) जो बून्दी रियासत के अंतर्गत आता था। यह दरबारी कवि होने के नाते दरबार के लिए

---

[39] गोविन्द गंधर्व जी के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

कविता लिखते थे तथा इसके साथ ही यह माँड गायन भी करते थे। गायन के साथ-साथ ही धुलीराम जी वादन में भी निपुण थे। यह दरबार में संजने वाली गीत-संगीत की महफ़िलों में सारंगी वादन भी किया करते थे। इनके द्वारा महफ़िल में पेश की जाने वाली कविता के बोल कुछ इस प्रकार है -

"छप्पन के साल नृप धड़के नही हाड़ा राव"

धड़ पर्वत समान भीमसिंह कोटा अवतारी हो"

बहादुर जी कलावंत -

आप बून्दी के दरबारी संगीतज्ञ सूर्यमल्ल मिश्रण के समय के संगीतज्ञ थे। आप बून्दी दरबार में दरबारी संगीतज्ञ के रूप में नियुक्त थे। पुरानी से पुरानी रागों का ज्ञान आपको था तथा आपकी काफी अप्रचलित रागों की भी अच्छी जानकारी थी। राजा के द्वारा जब जिस राग की फ़रमाइश की जाती थी, आप उस समय ही उन्हें वो राग गाकर सुना देते थे। राजा साहब आपकी खूब सराहना करते थे तथा खास महफ़िलों पर आपका गायन जरूर होता था। आपने अपने आख़री समय तक दरबार में अपनी सेवाएँ दी।

मोहम्मद अली -

मोहम्मद अली का संबंध रंगीला घराने से है। आप बून्दी रियासत के दरबारी गायकों में से एक है। आप बेहद सुरीले कंठ के धनी थे तथा आप के जोड़ का कोई दूसरा उस समय दरबार में नहीं था। दरबार के कहने पर आप किसी भी रचना को उसी समय संगीतबद्ध करके दरबार को सुनाते थे। राजा साहब का आपके प्रति विशेष आदर तथा प्रेम का भाव था। आप कई नृत्यांगनाओं को भी संगीत की शिक्षा प्रदान करते थे।

पेफा जी -

बून्दी की सबसे ख़ास नृत्यांगना में आपका नाम शुमार है। आप राज दरबार की सबसे ख़ास राज नर्तकी थी। आप माँड, कलाली आदि गीतों पर नृत्य पेश करती थी। जब भी राजा के यहाँ पर विदेश से कोई अतिथि आते थे तो पेफा जी का नृत्य अवश्य होता था। नृत्य के लिए उन्हें हीरे-जवाहरात जड़ी हुई पौशाके दी जाती थी, जिन्हें पहन कर ही यह अपनी प्रस्तुती दिया करती थी। इन्हें राज दरबार का सदस्य तो माना जाता ही था, पर इसके साथ ही इन्हें विशेष आदर-सत्कार भी प्रदान किया

जाता था। इनका भोजन भी चाँदी के पात्र में ही होता था। पेफा जी सबसे बड़ी नृत्यांगना होने के कारण यह अन्य नृत्यांगनाओं को नृत्य की शिक्षा भी देती थी। राज दरबार के साथ ही राज परिवार के निजी रंगनाथ जी के मंदिर पर भी जब कीर्तन होते थे तो यह नृत्य भी करती थी।[40]

मनभावन जी -

बून्दी रियासत काल की सुप्रसिद्ध कलाकार थी, जो महाराव राजा विष्णु सिंह (1773 ई. - 1821 ई.) के काल में हुई थी। इनका बून्दी गुणीजनखाने से संबंध रहा है। अपनी ख़्याल गायकी तथा लोकगीत, संगीत गायन में विभिन्न आयामों एवं दक्ष आवाज़ के कारण शास्त्रीय गायन में इन्होंने अपनी सबसे अलग पहचान स्थापित की थी। आप दरबार के महल में स्थित रंगनाथ जी के मंदिर में भी भजन गायन करने के लिए जाती थी तथा संध्या कालीन बेला पर आप भगवान के सामने नृत्य भी किया करती थी।

गणेशी बाई जी -

आप बून्दी रियासत में महाराव राजा राम सिंह के शासन काल की सबसे अनुभवी गायिका थी। आपको दरबार की ओर से सबसे अधिक वेतन मिलता था। आप दरबार में शास्त्रीय संगीत तथा नृत्य प्रस्तुत करती थी। आप मल्लिका आपा के साथ दरबार में गायन के लिए जाती थी तथा आप से कम उम्र की भगतणों, गायिकाओं को संगीत गायन व नृत्य का प्रशिक्षण भी देती थी। आपको दरबार में कार्यरत अन्य गायिकाएँ व नृत्यांगना बुआजी गणेशी संबोधन देकर बुलाया करती थी। आप बहुत विनम्र स्वभाव की गायिका थी। अपने से उम्र में छोटे कलाकारों को भी आप बेहद सम्मान दिया करती थी। दरबार की ओर से आपको प्रत्येक प्रस्तुति के लिए भिन्न आभूषण तथा पोषाकें प्रदान की जाती थी। जिसमें ज़री वाले लंहगें, चाँदी की मोजड़ी आदि शामिल हैं। एक अवसर पर स्वयं बून्दी नरेश ने "खिचडी" (मुट्ठी भर चाँदी के सिक्के) भेंट किए थे।

---

[40] शोधार्थी को मलिका आपा के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

मल्लिका आपा -

चित्र सं. 2.5 रियासतकालीन नृत्यांगना मल्लिका आपा जी के साथ शोधार्थी गुंजन हाड़ा दाएँ, मल्लिका आपा बाएँ

मल्लिका आपा ने महाराव राजा बहादुर सिंह जी के दरबार में अपनी नृत्य व गायन की सेवाएँ प्रदान की। वर्तमान में वृद्धावस्था प्राप्त मल्लिका आपा ने राजस्थान निर्माण के उपरान्त बून्दी में अपनी नृत्य कला से कलाजिज्ञासुओं को लगभग चार दशकों तक भाव-विभोर व सम्मोहित किया है। इन्हें सूफी गायकी के साथ ख़्याल गायकी का गहन अभ्यास रहा है। वर्तमान काल में नवोदित कलाकारों को रियाज़ व शास्त्रीय गायन हेतु अधिक श्रम करने की प्रेरणा देती है। आपने सर्वधर्म समभाव के अंतर्गत हिन्दू भजन गायकी में भी अपनी दक्षता प्रदर्शित की है। वृद्धावस्था में भी आप अत्यंत लावण्यमयी है। इन्हें गुणीजनखाने की ओर से शुरूआत में 50 रूपये प्रत्येक प्रस्तुति के लिए दिए जाते थे। इसके अलावा अनगिनत उपहार व खिचड़ी (मुट्ठी भर चाँदी के सिक्के) भी आपको प्रदान किए जाते थे। इन्होंने राजकीय उत्सवों में मुजरे भी पेश किए है।

बून्दी की चित्रशाला –

चित्र सं. 2.6 बून्दी चित्रशाला में शोध विषय सम्बन्धित चित्रों का संकलन करते शोधार्थी

18वीं शताब्दी में राजा उम्मेद सिंह द्वितीय के द्वारा बून्दी चित्रशाला का निर्माण करवाया गया था। राजपूत शासक युद्ध तथा राज्य के साथ-साथ कला प्रेमी होने के कारण भारत की गौरवपूर्ण कला व संस्कृति पर भी अत्यधिक ध्यान दिया करते थे। इसका एक जागृत उदाहरण बून्दी चित्रशाला के रूप में आज भी हमारे समक्ष मौजूद है। यहाँ पर बारहमासा तथा रागमाला का अत्यंत मनोहर रूप से चित्रण किया गया है। रागमाला चित्रों का निर्माण होना राजस्थान के अंदर 17वीं शताब्दी से पहले के समय से ज़्यादा होने लगा था।

'रागमाला' शब्द से आशय रागों की माला से है, जो कि संगीत के जानकार व रूचिकार लोगों में अपना एक विशेष स्थान रखती है। इससे पहले संगीत केवल सुना जा सकता था अर्थात श्रव्य रूप में ही था, परन्तु रागमाला आधारित चित्रण होने से संगीत प्रेमियों को यह लाभ हुआ कि संगीत श्रव्य से दृश्य रूप में भी देखा जाने लगा। इसका मुख्य कारण यह भी है कि राजा-महाराजाओं के दरबार में संगीतकार (गायक, वादक), काव्य (कवि, लेखक) और चित्रण (चित्रकार) इन तीनों कलाओं का ज्ञान रखने वाले ज्ञाता एक ही साथ एक दरबार में निवास करते थे। तीनों कलाओं के ज्ञाताओं का एक ही दरबार के आश्रय में रहने के कारण आपस में सौहार्द व मिलन की भावना होने के कारण रागों को सुनने के साथ-साथ देखा जा सका। रागमाला को आसान शब्दों में संगीत, चित्र तथा काव्य का संगम अथवा त्रिवेणी कहा जा सकता है।

राजपूत शासकों के द्वारा रागमाला के चित्रों का खूब संरक्षण किया गया तथा कलाकारों को ख़ूब प्रोत्साहन दिया गया, जिससे वह पूरे मन से अपनी कला को साकार रूप प्रदान करें। राजपूत शासक संगीत को तो अत्यधिक पंसद करते ही थे, साथ ही साथ वह लेखनी तथा चित्रों की विभिन्न शैलियों को भी दिल से सराहते थे। संगीत, काव्य तथा चित्रकला दरबारों तथा रियासतों में हमेशा आश्रय प्राप्त करती रही।

चित्र सं. 2.7 बून्दी गढ़ में तथ्य संकलन करते हुए शोधार्थी

बून्दी चित्रशाला में धार्मिक चित्र, बारहमासा के चित्र, शिकार के चित्र, राग-रागिनियों के चित्र, मौसम-ऋतुओं के चित्र, श्रृंगार के चित्र, रजवाड़ी शैली के चित्र, संगीत महफ़िलों के चित्र, युद्ध के चित्र, सावन के हिण्डोले के चित्र आदि देखने को मिलते है। इसमें 6 राग 36 रागनियों के चित्र भी देखने को मिलते है।

बून्दी चित्रशैली की निम्न विशेषताएँ है -

1. बून्दी चित्रशैली, जिसे बून्दी क़लम के नाम से भी जाना जाता है। यह शैली 15वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान की बून्दी रियासत में विकसित लघु चित्रों की एक विशिष्ट शैली है। इसे हाड़ौती शैली की उप-शैली माना जाता है, जो बून्दी रियासत तथा कोटा रियासत के क्षेत्रों को शामिल करती है।

2. बून्दी चित्रशैली में चित्रों के लिए चमकीले रंगों, ख़ासकर सिन्दूरी, लाल और पीले रंगों (गऊ गोली) के साहसिक प्रयोग से पहचानी जाने वाली बून्दी चित्रशैली में प्रकृति का अत्यंत सुंदर चित्रण होने के साथ, दरबारी जीवन,

दरीखाना, संगीत महफ़िल, बारहमासा (रसीकप्रिया, गीत-गोविन्द, रागमाला, नायिका), कृष्ण लीलाएँ और पौराणिक दृश्यों के चित्रण के लिए जानी जाती है। चित्रों में अक्सर परिदृश्य, वास्तुकला और आकर्षक चित्रण इस प्रकार से किया गया है कि वो देखने वालों को आज भी जीवंत लगते है।

3. बून्दी चित्रशैली ने मुगल और मेवाड़ शैली दोनो से प्रेरणा ली जिसका प्रभाव बून्दी चित्रशैली के शुरूआती चित्रों में देखने को मिला। धीरे-धीरे बून्दी चित्रशैली ने अपनी ख़ुद की अनूठी चित्रशैली विकसित की, जो बून्दी तथा राजपूत चित्रशैली के नाम से भी जानी गई।

4. बून्दी गढ़ में स्थित चित्रशाला जिसे उम्मेद महल के नाम से भी जाना जाता है, बून्दी चित्रशैली के खज़ाने के रूप में कार्यरत है, जो कि इस प्रसिद्ध राजपूत कला रूप के उत्कृष्ट नमूने को प्रदर्शित करती है।

5. बून्दी चित्रशाला जो कि बून्दी में तारागढ़ महल के अंदर स्थित है, इस चित्रशाला को चितराशाला के नाम से भी जाना जाता है। यह एक प्रसिद्ध कला दीर्घा है।

6. 18वीं शताब्दी में राजा उम्मेद सिंह द्वितीय द्वारा स्थापित चित्रशाला में बून्दी क़लम के लघु चित्रों का एक विशाल संग्रह है। यह शैली राजपूत शैली की एक प्रसिद्ध शाखा है, जो अपने तेज चटक् रंगों, विस्तृत रचनाओं और दिल लुभाने वाली कहानियों के लिए जानी जाती है।

7. चित्रशाला की दीवारों पर बने चित्र हिन्दू पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं, दरबारी जीवन, राजसी वैभव, संगीत उत्सव और प्राकृतिक दुनियाँ के दृश्यों को दर्शाते है। चित्रशाला की प्रत्येक दीवार पर राग-रागिनी और श्री कृष्ण की लीलाओं से सुसज्जित यह संग्रह बून्दी और राजपूत साम्राज्य की कलात्मक विरासत की झलक देता है।

8. बून्दी चित्रशाला में रागमाला, श्री कृष्ण की लीलाओं के, मृग शावक, वर्षा ऋतु के चित्र, जल भरती नायिका के चित्र, पक्षी आदि के चित्रों में मेवाड़ चित्र शैली तथा मुगल चित्र शैली का प्रभाव देखने को मिलता है। इसके साथ-साथ ही कहीं-कहीं पर स्वर्ण रंगों का भी प्रयोग किया गया है।

9. बहुत ज़्यादा राग होने के कारण रागों को राग तथा उसकी रागिनी राग की पत्नी, पुत्र तथा पुत्रवधु के रूप में दर्शाया गया है।

10. गऊ गोली, निल, अंगार निल, सिलु का हरा, सिनुरी पेवड़ी (मिट्टी) बून्दी चित्रशाला जिसे उम्मेद चित्रशाला के नाम से भी जाना जाता है, इसमें बने हुए चित्रों में सबसे ज़्यादा उपयोग किए जाने वाला रंग सिलु का हरा है।

चित्र सं. 2.8 संध्याकालीन जनाना शामियाना दरबार[41]

जनाना शामियाना दरबार

प्रस्तुत चित्र में ग्रीष्म ऋतु के अंत के समय सांय काल में दरबारी सखियों एवं दासियों द्वारा रानी के आनन्द के लिये एक शामियाना लगाया जाता था तथा उनके मनोरंजन के लिये संगीत की महफ़िल सजाई जाती थी, इसीलिए इसे जनाना शामियाना दरबार कहा जाता था। इस तरह के दरबारों में उस समय के प्रमुख प्रसंगों को गायन शैली द्वारा प्रस्तुत किया जाता था, साथ ही चित्रकला में पारंगत चित्रकारों द्वारा उन प्रसंगों को चित्रों में अभिव्यक्त किया जाता था। जिस कारण इस गायन चित्रशैली (रागमाला) अर्थात रागों की माला की शुरूआत मानी जा सकती है। जिसके विकास में इन दरबारों का विशेष योगदान रहा।

[41] चित्र सं.(2.10, 2.11, 2.12, 2.14, 2.15, 2.16) के संदर्भ में जानकारी शोधार्थी को लघु चित्रशैली के चित्रकार दिलदार कुरैशी जी द्वारा प्रदत्त की गई।

पक्षी चुग्गा से संबंधित चित्र

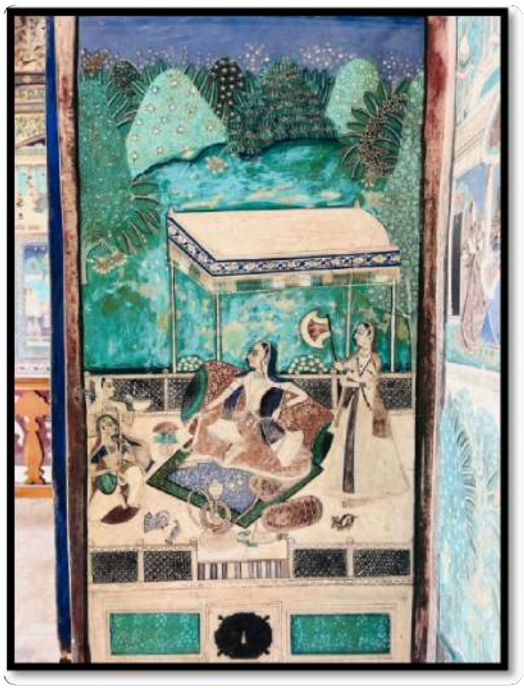

चित्र सं. 2.9 झरोखे का चित्रण (भित्ति चित्रण)

चित्र सं. 2.10 सुखमहल का चित्रण (वस्ली पर लघु चित्रण)

पक्षी चुग्गा चित्रों में सुखमहल का चित्रण सबसे अधिक विशेष भूमिका वाला है। इन चित्रों में प्रदर्शित इमारत व तालाब की सुंदरता को देखते हुए इसी प्रकार का चित्रण कोटा के दीवान की झाला हवेली में भी हुआ है।

चित्र सं. 2.11 सुखमहल में तथ्य एवं चित्र संकलन के दौरान शोधार्थी गुंजन हाड़ा

चित्र सं. 2.12 शिकार बुर्ज की पिछली इमारत का चित्रण

चित्र सं. 2.13 बसन्त राग में राधिका का चित्रण

बसन्त राग - यह राग प्रमुखतः बसंत ऋतु के आगमन के निवेदन के तौर पर गाया जाता है। प्रस्तुत चित्र में श्री कृष्ण के स्वरूप में श्री राधिका है जबकि अक्सर बसंत राग के चित्रों में श्री कृष्ण को दर्शाया गया है, जो चित्रों में सबसे बड़े नायक की भूमिका निभाते हैं। इस चित्र की ख़ासियत है कि इसमें महारास के चित्रों की भांति ही रास का चित्रण देखने को मिलता है। जिसमें अधिकांशतः गहरे पीले और चटक रंगों का ही प्रयोग होता है। श्री कृष्ण के नहीं होने पर श्री राधा जी अपनी सखियों के साथ इस राग में मुख्य भूमिका निभाती है तथा श्री कृष्ण का स्वरूप धारण करती है और श्री कृष्ण की तरह नृत्य करती है। जिससे की लोगों को भ्रम हो कि यहाँ पर श्री कृष्ण ही उपस्थित हैं।

इस चित्र में शास्त्रीय संगीत की राग बसंत का चित्रण है, जो की हिन्दुस्तानी पद्धति का राग है। बसंत का अर्थ बसंत ऋतु से है, अतः इसे विशेष रूप से बसंत ऋतु में गाया-बजाया जाता है। बसंत राग गाते हुए अक्सर श्री कृष्ण के चित्र देखने को मिलते है, क्योंकि श्री कृष्ण स्वयं संगीत के जादूगर हैं और साथ ही श्री कृष्ण को हर्ष-उल्लास के प्रतीक के रूप में माना जाता है। वसंत ऋतु में इस राग का गायन होने के कारण इसमें फाग तथा होली का चित्रण बहुत हुआ है। यह राग प्रसन्नता, उल्लास का राग है। ऐसा माना जाता है कि इस राग का गायन, वादन एवं श्रवण करने से मन प्रफुल्लित होता है। इसका गायन समय रात्री का अंतिम प्रहर है, किंतु

यह राग दिन या रात के किसी भी प्रहर में गाया-बजाया जा सकता है। रागमाला में इसे राग हिंडोल का पुत्र माना गया है। शास्त्रों में इससे मिलते-जुलते एक राग वसंत हिंडोल का भी उल्लेख है। यह अत्यंत प्राचीन राग है।

चित्र सं. 2.14 राग तोड़ी का वर्णन

रागिनी तोड़ी

रागिनी तोड़ी – यह राग प्रकृति प्रेम एवं मनुष्य के संबंध को दर्शाता है। इसके बारे में एक प्रसंग बहुत प्रचलित है कि दरबार के खेतों में जब हिरन आया करते थे तब फसलों को नुकसान से बचाने के लिये हिरनों को मार कर भगाने की सख़्त मनाही थी क्योंकि हिरनों को लक्ष्मी, यौवन एवं जोश का प्रतीक माना गया था इसलिए उन्हें खेतों से दूर ले जाने के लिये एक वीणा वादिनी नायिका अपनी वीणा के स्वरों से हिरनों को मोहित कर खेतों से दूर ले जाती थी। हिरन के होने से किसी भी चित्र को राग तोड़ी नहीं माना जा सकता। नायिका के हाथ में वीणा होने पर ही इसे राग तोड़ी माना जाएगा, जो की राग तोड़ी का भेद माना जाता है।

चित्रकार मोहम्मद वसीम के द्वारा बताया गया कि राग तोड़ी दर्शाने के लिए वीणा अथवा सितार का होना बेहद ज़रूरी है। जिसके लिये चित्रों में विशेष प्रकार की वीणा (महाटी वीणा) का चित्रण इस राग के चित्रण में किया गया है। महाटी वीणा (दो मंदकों वाली मोरमुख वाली वीणा) का प्रयोग नारद मुनि से प्रारम्भ माना गया है। जिसका प्रयोग संगीत एवं प्रकृति के पवित्र ईश्वरीय संबंध को दर्शाता है।

चित्र सं. 2.15 नायक की राह निहारती नायिका[42]

कामौदी रागिनी - बून्दी शैली में बना यह चित्र एक नायिका की अपने नायक के प्रति प्रेम कामना से संबंधित गायन करते हुए है। जिसमें नायिका का प्रियतम परदेस किसी व्यापार के लिए गया हुआ है और कई अरसे से वापस लौट कर नहीं आया है। वो अपने प्रियतम की राह देख रही है तथा उसके लिए गायन कर रही है कि कैसे भी कर के नायिका की आह उसके प्रियतम तक पहुँच जाए। इसमें प्रस्तुत राग कामोद है, जिसको मुख्यत: कामोदी रागनी के नाम से भी जाना जाता है। सरल शब्दों में कहा जाए तो इसमें ठुमरी गायन दर्शाया गया है, जिसे ठुमरी (आए न बालम का करू सजनी) के नाम से अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई है।

चित्र सं. 2.16 दरबार की हिण्डोला सेवा

---

[42] लघु चित्रशैली के चित्रकार दिलदार कुरैशी जी द्वारा चित्रों के बारे में प्राप्त हुई जानकारी

श्री बृजनाथ जी हिंडोला सेवा - यह चित्र पवित्र श्रावण मास में आयोजित किए जाने वाले हिंडोला उत्सव का है। महाराव श्री बृजनाथ जी के गढ़ पैलेस में स्थित राजमहल में अपने ईष्ट देव की सेवा, अराधना के लिए हिंडोला (झूला) लगाया जाता था। जिस हिंडोले में श्री बृजनाथ जी महाराज (श्री कृष्ण) तथा श्री स्वामिनी जी की प्रतिमाओं को विराजमान किया जाता था। श्री महाराव साहब, श्री महाराज कुंवर साहब रियासत के सभी छोटे-बड़े सरदारों (जागीरदारों), प्रबुद्धजनों व श्री बृजनाथ जी महाराज (श्री कृष्ण) के अनुयायियों सहित सभी परिवारजन इसमें उत्साहपूर्वक सम्मिलित होते थे। जिसके प्रारंभ से अंत तक सावन के भजन तथा लोकभाषा के गीत गाए जाते थे।

चित्र सं. 2.17 सरस्वती वंदना

चित्र सं. 2.18 गणगौर कृष्ण-राधिका मिलाप

बून्दी रियासत के दरबार से सम्बन्धित एक रोचक घटना –

चित्र सं. 2.19 चेरोलाल जी रियासतकालीन सारंगी वादक

यह तो सर्वविदित है कि राजपूतों का इतिहास शौर्य, परिक्रम, वीरता से परिपूर्ण रहा है। राजपूत शासक हर क्षेत्र में अग्रणी रहे है, परन्तु इस घटना से राजपूत शासकों की पारखी नज़र का भी पता लगता है कि जब किसी भी राजा को राज्यभार सौंपा जाता है तो यह तय है कि उस में ऐसे काबिलियत ज़रूर होती है कि वो राज्य का सुचारू रूप से संचालन कर सके।

एक बार राज दरबार में संगीत महफ़िल का आयोजन किया गया जिसमें सभी दरबारी संगीतज्ञ उपस्थित थे। इस महफ़िल में एक सारंगी वादक भी अपनी कला प्रदर्शन करने के लिए राजा के दरबार में मौजूद था। आज के समय में तो भरपूर साधन/संसाधन है, परन्तु वो दौर सादगी से परिपूर्ण था। संगीत की महफ़िल शुरू हुई तो सारंगी वादक का भी समय आया। कलाकारों को गायन या वादन करने से पहले कुछ पान-ज़र्दा आदि लेने की आदत होती थी। सारंगी वादक ज़र्दा, कत्था साथ ले कर आना भूल गए। नहीं तो उस समय कलाकार कमर पर जो साफी बांधते थे, उसमें कत्था, चूना, सुपारी, पान आदि रखते थे। दरबार सामने ही बैठे थे तो ना ही वो महफ़िल से उठ कर कही जा सकते ना ही पान लाने को किसी को कह सकते थे। जैसे-तैसे उन्होंने वादन प्रारंभ किया। वही पर अपने आंचल/साड़ी को लहराते हुए या हवा करते हुए उनकी पत्नि वहीं मौजूद थी। कलाकार चेरोलाल जी दरबार की बहुत इज़्ज़त करते थे, इस कारण अपनी पत्नि से भी नहीं कह सके। जैसे ही उन्होंने वादन प्रारंभ किया उनकी पत्नि समझ गई कि यह अपना ज़र्दा साथ लाना भूल गए है। वो गई और अपने पति के लिए ज़र्दा ले कर आई और इस अंदाज़ से अपने पति को लाकर दे दिया। कलाकार के साथ रहकर उसकी पत्नि भी सुरों से कितनी वाक़िफ़ हो जाती है कि वादक ने बग़ैर अपने होठों से कुछ कहे वादन के ज़रिए ही अपनी पत्नि को समझा दिया कि मुझे इस चीज़ की ज़रूरत है।

यह सारा वाक्या राजा साहब ने देखा तथा अगले दिन अपने सेनापति से कहा कि कल दरबार में जो सारंगी वादन कर रहा था, उसको मेरे सामने लाया जाए। दरबार के कहने पर उन्हें दरबार में लाया गया। दरबार ने उन्हें पूरा किस्सा बताया कि मैंने देखा कल तुम्हारी पत्नि ने चुपके से तुम्हे ज़र्दा ला कर दिया और कहा साधन के उपासक हो तो संसाधन तो पूरे रखो। उसके बाद से ही दरबार हर महफ़िल में पानदान भी रखवाने लगे।

शिकार बुर्ज की महफ़िल –

राजपूत शासक युद्ध के साथ-साथ कला प्रेमी भी होते थे। उस समय मनोरंजन के लिए शिकार, संगीत, नृत्य, साहित्य आदि का ही सहारा था। राजा जब भी युद्ध से लौटकर घर आते थे तो उसके बाद जीत के जश्न में कई महफ़िल तथा समारोह आयोजित करते, जिसमें रियासत के खास कलाकारों की प्रस्तुति होती थी।

महाराव ईश्वरीय सिंह जी शिकार करके आए और उस शाम के वक़्त उन्होंने एक बहुत बड़ी संगीत की महफ़िल का आयोजन किया गया। उस महफ़िल में बून्दी रियासत के साथ ही इसके आस-पास की रियासतों के राजाओं तथा विशिष्ट लोगों को भी आमंत्रित किया गया। इसमें संगीत के साथ ही नृत्य की महफ़िल का भी आयोजन हुआ था। प्रत्यक्षदर्शी गोविन्द जी के द्वारा मुझे यह जानकारी प्राप्त हुई कि यह एक भव्य संगीत की महफ़िल थी, जिसमें एक से बढ़कर एक संगीत की प्रस्तुतियाँ एवं कलाकारों के बीच प्रतिर्स्पधात्मक जुगलबंदी भी हुई। इस महफ़िल में उस्ताद धोकल जी, उस्ताद देवीलाल जी, उस्ताद छीतर जी तथा नन्ही बाई आदि की प्रस्तुतियाँ हुई थी, जिसमें कलाकारों के द्वारा राजपूती माँड गायन प्रस्तुत किया गया जो लोक गायकी में माँड गायन शैली की सबसे परिष्कृत शैली मानी गयी है, जो राजपूत नरेशों के युद्ध में विजयी होने पर, राजपूत नरेशों की प्रशंसा में तथा राजपूत नरेशों के यश का गुणगान करने के लिए सिर्फ शाही दरबारों में ही गाया जाता था।[43]

इसके अलावा कलाकारों के द्वारा शिकार के गीतों, कलाली के गीतों की प्रस्तुतियाँ दी गई। महाराव ईश्वरीय सिंह जी के द्वारा इस समारोह में कलाकारों को बहुत अधिक धन या पुरस्कार स्वरूप कई वस्तुएँ भेंट की गई थी। महाराव साहब द्वारा जो धन दिया गया उसे प्रत्येक कलाकार ने 22 तोला सोना खरीदा। इस महफ़िल की एक विशेष बात यह है कि कलाकारों की अपेक्षा गायकों को चार गुना अधिक धन दिया गया था।

[43] स्वयं शोधार्थी को साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

चित्र सं. 2.20 सामुहिक नृत्य करती भक्तन

चित्र सं. 2.21 पेट पर तबला बांध कर तबला वादन करते तबला नवाज़

बंधवा तबला वादक –

इस चित्र में तबला वादक द्वारा खड़े रहकर तबला वादन किया जाना दर्शाया गया है। क्योंकि उस वक्त दरबार को सम्मान देने के लिये कलाकार खड़े रहते थे। इस प्रकार तबला वादन प्रायः भूखे पेट रहकर ही किया जा सकता था। जिसमें तबला वादक द्वारा ताज़ा पान के पत्तों या छिले हुए तंबाकू के पत्तों को पहले वादक द्वारा अपने पेट पर बांधा जाता था, उसके पश्चात् तबलों को बंधकज़ामा नामक कपड़े की सहायता से पेट पर बांधकर तबला वादन किया जाता था। अक्सर यह कपड़ा हरा या सफेद रंग से दर्शाया गया है। क्योंकि इन दोनों रंगों को शांति का प्रतीक माना गया है।

तृतीय अध्याय

कोटा रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान

तृतीय अध्याय

कोटा रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान

(अ) कोटा रियासत की स्थापना

(ब) कोटा रियासत के प्रमुख शासक

(स) कोटा रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान

(द) कोटा रियासत का गुणीजनखाना

(य) कोटा रियासत के दरबारी संगीतज्ञ

(अ) कोटा रियासत की स्थापना –

चित्र सं. 3.1 कोटा रियासत का राज चिन्ह[1]

24 जून 1241 ई. को सृजित बून्दी के हाड़ा राज्य का विस्तार 13वीं व 14वीं शताब्दी ई. में मुकन्दरा घाटी तक हो गया। इसकी सीमाएँ खींचीवाड़ प्रदेश तक विस्तृत हो गई। कोटा क्षेत्र पर 1264 ई. में बून्दी नरेश राव समर सिंह के पुत्र जैत सिंह ने कोट्या भील सरदार को पराभूत करके अधिकार कर लिया। इसके उपरान्त कोटा को बून्दी राज्य अधीन एक परगना सम्बोधित किया जाने लगा। डॉ. आर. एस.

[1] कोटा गढ़ स्थित शीश महल से लिया गया चित्र

माथुर के ग्रंथ 'The Relation of Hada Ruler with Mughal' के अनुसार एक परम्परा बन गई थी कि बून्दी का द्वितीय राजकुमार ही कोटा के परगने का प्रशासन ग्रहण करेगा। इसी नियम के अनुसार राजकुमार वीरम देव ने यहाँ शासन किया, जिससे मांडू के दो पठान योद्धओं सर्वश्री केसर खाँ तथा डोकर खाँ की सेना ने कोटा पर अधिकार कर लिया, किन्तु वीरम देव की रानी ने पद्मिनी के समान दोनों पठान भाईयों को होली खेलने के बहाने छलपूर्वक परास्त करके पुनः वीरम देव के लिए सिंहासन प्राप्त कर लिया। दूसरी ओर कविराजा सूर्यमल्ल मिश्रण जी के इस विवरण को डॉ. मथुरालाल शर्मा सत्य मानते है कि कोटा को पठानों से बून्दी नरेश राव सुर्जन हाड़ा जी ने मुक्त करवाया था। सुर्जन हाड़ा का मुगल बादशाह अकबर से रणथम्भौर पर अधिकार के प्रश्न पर संघर्ष हुआ, जिसकी परिणीति बून्दी की पराजय में हुई। वंश भास्कर एवं कविराजा श्यामलदास के ग्रंथ वीरविनोद का विवरण है कि 1569 ई. में राव सुर्जन हाड़ा व अकबर के मध्य संधि सम्पन्न हुई। इसमें सुर्जन हाड़ा ने मुगल मनसब व मुगल सेवा अवश्य स्वीकार की, किन्तु बून्दी की राजकन्या का डोला मुगल हरम में कभी भी ना भेजने की शर्त भी स्वीकार करवा ली गई। इस आधार पर बून्दी राज्य मुगलों की सैन्य सेवा करने लगा। दूसरी ओर कोटा परगना बून्दी के द्वितीय राजकुमार के अधिकार में ही रहा। 17वीं शताब्दी ई. के प्रारम्भ में जब बादशाह जहाँगीर के पुत्र खुर्रम ने पिता के विरूद्ध राजद्रोह किया तब बून्दी नरेश रतन सिंह के अनुज हृदयनारायण कोटा के प्रशासक थे। इस समय मुगल मनसबदार राव राजा रतन सिंह तथा उनके दो पुत्रों क्रमशः हरिसिंह व माधोसिंह ने खुर्रम का विद्रोह दमन किया एवं उसे कैद कर लिया। यहाँ कैद में हरिसिंह जी ने खुर्रम के प्रति कठोरता का व्यवहार किया, किन्तु माधोसिंह ने उसका आतिथ्य मुगल शहज़ादे के समान किया। अब जहाँगीर ने कविराजा सूर्यमल्ल मिश्रण तथा कर्नल टॉड के मतानुसार खुर्रम को प्राण दण्ड देने का आदेश दे दिया। रतन सिंह ने मुगल सिंहासन के भविष्य का संकट भाप कर खुर्रम को गुप्त रीति से मुक्त कर दिया। परिणामतया जाते समय खुर्रम ने माधोसिंह को विशेष पुरस्कार देने का वचन दिया और जब खुर्रम शाहजहाँ की उपाधि ग्रहण कर के 1628 ई. में मुगल तख्त का स्वामी बना तब उसने रतन सिंह के पुत्र माधोसिंह को कोटा का परगना स्वतंत्र राज्य के रूप में प्रदान कर दिया। 'बादशाह नामा' नामक पुस्तक में माधोसिंह को कोटा राज्य की राजगद्दी को संभालने का दायित्व निर्धारित दिनांक 21 दिसम्बर 1631 ई. माना गया है। खुर्रम की रतन सिंह द्वारा प्राणरक्षा पर यद्यपि जहाँगीर अत्यधिक कुपित हुआ किन्तु राजनैतिक

दूरदर्शितावश मुगल सिंहासन का भविष्य अंधकारमय समझ कर रतन सिंह के द्वारा किए गए इस कार्य पर कर्नल टॉड ने एक प्रसिद्ध लोकोक्ति कही है -

"सागर फूट्यो जल बह्यो अब की करे जतन,
जातो गढ़ जहाँगीर को राखयो राव रतन।"

इस पृष्ठभूमि में कोटा पर माधोसिंह के वंशज माधानी हाड़ा की संज्ञा से शासन करने लगे। कालान्तर में कोटा नरेशों की उपाधि राव से महाराव भीमसिंह के शासनकाल (1760 से 20वीं ई.) में महाराव हो गई। राव व महाराव यह दोनों ही उपाधियाँ राजपूत शासकों की वीरता, शौर्यता, वचनबद्वता, योग्यता आदि से प्रसन्न होकर मुगल बादशाह के द्वारा प्रदान की गई थी। कालान्तर में महाराव किशोर सिंह जी के उपरान्त कोटा के हाड़ा राजवंश के उत्तराधिकारी किशोर सिंहोत हाड़ा सम्बोधित किए जाने लगे। इस वंश ने 1817 ई. में महाराव उम्मेद सिंह प्रथम के शासनकाल में 26 दिसम्बर को इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायक संधि सम्पन्न की। जिसके अंतर्गत कोटा राज्य कम्पनी के अधीन हो गया। कोटा दीवान राजराणा जालिम सिंह झाला जी ने एक संधि करके कोटा महाराव को विवश कर दिया कि जालिम सिंह के उत्तराधिकारी ही सतत् रूप से कोटा के दीवान व सेनापति नियुक्त किए जाऐंगे। अब जालिम सिंह के पुत्र व कोटा के दीवान माधोसिंह झाला ने कोटा नरेश पर अपना नियंत्रण बनाना आरंभ कर दिया। अंततः माधोसिंह के पुत्र मदन सिंह झाला को कोटा राज्य के कुछ परगने पृथक करके नए झालावाड़ राज्य का राजतंत्र कम्पनी के प्रभाव से सौंप दिया गया। यहाँ पर यह नियम लागू हुआ कि जब भी झालावाड़ के राजसिंहासन का उत्तराधिकारी गोद लिया जाएगा तब उसका नाम जालिम सिंह ही रखा जाएगा। कोटा राज्य स्वतंत्रता प्राप्ति के समय महाराव भीम सिंह द्वितीय को राजप्रमुख बना कर बारह (12) राज्यों का एक संघ United State of Rajasthan गठित किया गया, जिसका उद्घाटन 25 मार्च 1948 ई. को किया गया। 12 अप्रैल को उदयपुर के महाराणा को इसमें सम्मिलित करके उन्हें इसका सर्वोच्च पद महाराज प्रमुख प्रदान किया गया। 30 मार्च 1949 को गठित राजस्थान संघ में इसे विलयित कर लिया गया एवं भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन रियासतीय सचिवालय से एक संधि द्वारा कोटा राज्य भारत संघ में सम्मिलित हो गया है।[2]

---

[2] कोटा रियासत की स्थापना की जानकारी शोधार्थी को इतिहासकार डॉ. अरविन्द कुमार सक्सेना जी के द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त हुई।

(ब) कोटा रियासत के प्रमुख शासक - (कोटा राजवंश) -

1. राव माधोसिंह जी (1681-1705 वि.)
2. राव मुकुन्दसिंह जी (1705-1714 वि.)
3. राव जगतसिंह जी (1714-1740 वि.)
4. राव किशोरसिंह जी (1741-1752 वि.)
5. राव रामसिंह जी (1752-1764 वि.)
6. महाराव भीमसिंह जी (1764-1777 वि.)
7. महाराव अर्जुनसिंह जी (1777-1780 वि.)
8. महाराव दुर्जनशाल जी (1780-1813 वि.)
9. महाराव अजीतसिंह जी (1813-1815 वि.)
10. महाराव शत्रुशाल जी प्रथम (1815-1821 वि.)
11. महाराव गुमानसिंह जी (1821-1827 वि.)
12. महाराव उम्मेद सिंह जी प्रथम (1827-1876 वि.)
13. महाराव किशोरसिंह जी (1876-1884 वि.)
14. महाराव रामसिंह जी (1884-1922 वि.)
15. महाराव शत्रुशाल जी द्वितीय (1922-1945 वि.)
16. महाराव उम्मेद सिंह जी द्वितीय (1945-1997 वि.)

1. राव माधोसिंह –

बून्दी रियासत के शासक राव रतन सिंह जी के तीन पुत्र गोपीनाथ, माधोसिंह तथा हरिसिंह हुए। माधोसिंह जी का जन्म ज्येष्ठ सुदि 3 सम्वत् 1621 को बून्दी नगर में हुआ था। टॉड के अनुसार इनका जन्म सम्वत् 1621 (सन् 1564) में हुआ।[3] अल्पायु से ही इनकी शिक्षा का सुचारू प्रबन्ध किया गया, जिसमें संस्कृत, साहित्य, कला, युद्ध विधा आदि शामिल थे। टॉड के अनुसार जब राव माधोसिंह केवल 24 वर्ष के थे तब ही उन्होंने शौर्य पराक्रम तथा वीरता के बल से राजा का खिताब् प्राप्त कर कोटा रियासत का राज्य मिला।

---

[3] टॉड, राजस्थान, तृतीय भाग, पृ.1

2. राव मुकुन्द सिंह हाड़ा (1705-1714) -

राव मुकुन्दसिंह हाड़ा राव माधोसिंह जी के ज्येष्ठ पुत्र थे। 1705 ई. में आपके पिता राव माधोसिंह जी के स्वर्ग सिधारने के पश्चात आपको कोटा रियासत का स्वामित्व प्राप्त हुआ। बादशाह शाहजहाँ के द्वारा भी आपको कोटा राज्य का राजा स्वीकार किया गया तथा 3000 जात व 2000 सवार का मनसब दिया गया। आपके शासनकाल में मुगल शासन का प्रसिद्ध गृह युद्ध जो (उत्तराधिकार का युद्ध था) हुआ।[4] राव मुकुन्दसिंह जी के द्वारा अपने राज्य की दक्षिणी सीमा के पहाड़ जो हाडौती तथा मालवा की सरहद के बीच के स्थान पर एक किला बनवाया तथा अपनी उपपत्नी अबली मीणी (सदाम) के लिए एक महल बनवाया। अबली मीणी की फरमाईश राजा साहब से थी कि मेरे लिए ऐसा महल बनवाया जाए जिस पर से मुझे कोटा की रोशनी नज़र आए। यह महल दरा की नाल में आज भी है तथा यहाँ स्थित घाटा मुकुन्दसिंह जी के नाम पर मुकुन्दरा कहलाता है।

राव मुकुन्दसिंह एवं दीवान झाला जालिम सिंह का एक प्रसंग बहुत लोकप्रिय है, जिसके अनुसार यह दोनों ही एक प्रसिद्ध नृत्यांगना मन्नी बाई जो नीलगर जाति से थी पर मोहित हो गए थे और इसके परिणाम स्वरूप राव मुकुन्दसिंह ने दीवान झाला जालिम सिंह को अपनी रियासत से बाहर कर दिया था। दीवान झाला जालिम सिंह ने महाराणा के साथ मिलकर राव मुकुन्द सिंह के विरूद्ध सैन्य शक्ति अर्जित की, राव मुकुन्द सिंह को महाराणा द्वारा हमले की सूचना मिलने पर उन्होंने दीवान झाला जालिम सिंह को वापिस बुलावा भेजा। परन्तु दीवान झाला जालिम सिंह ने मन्नी बाई को सौंपने की बात कही, जिसके लिये राव मुकुन्द सिंह तैयार नहीं हुए। ऐसा भी कहा जाता है कि भविष्य में दीवान झाला जालिम सिंह ने कूटनीतिक तरीका अपनाते हुए राव मुकुन्द सिंह को धीमा जहर दिया जिससे कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। राव मुकुन्द सिंह की मृत्यु पश्चात् मन्नी बाई ने शैव सम्प्रदाय स्वीकार कर लिया तथा दीवान झाला जालिम सिंह ने उन्हें अपने साथ रखा तथा उनके द्वारा मन्नी बाई को नान्ता की जागीर दी गई थी।[5]

[4] गहलोत स्व. श्री जगदीश सिंह, कोटा राज्य का इतिहास, पृ.सं.47

[5] वही पृ.सं.47

3. राव जगतसिंह -

राव जगतसिंह राव मुकुन्दसिंह के एक मात्र पुत्र थे। इनका जन्म वि.सं. 1709 में हुआ। राव मुकुन्दसिंह हाड़ा की मृत्यु के पश्चात राव जगतसिंह हाड़ा को कोटा की राजगद्दी प्राप्त हुई। औरंगजेब के द्वारा राव जगतसिंह हाड़ा को अपनी शाही दरबार में आमंत्रित किया गया। वहाँ पहुँचने पर राव जगतसिंह जी को 2000 का मनसब तथा खिलपत्र प्राप्त हुआ।[6] युद्ध में वीरगति प्राप्त होने के उपरान्त राव माधोसिंह जी के चौथे पुत्र कन्हीराम जी के पुत्र प्रेमसिंह को सर्वसहमति से कोटा शासन का भार सौंप दिया गया, क्योंकि जगतसिंह जी के कोई पुत्र नहीं था।

नान्ता के नज़दीक अभेड़ा महल राव जगतसिंह जी की पसंदीदा जगह थी, जहाँ वह अपना दरबार लगाते थे तथा नृत्यांगनाओं एवं गायक कलाकारों की प्रस्तुति हुआ करती थी। इस प्रकार राव जगतसिंह के द्वारा संगीत कला के विकास में विशेष योगदान रहा।

4. राव किशोरसिंह -

किशोरसिंह जी ने जब कोटा का शासन संभाला तब वो वृद्ध हो चुके थे, परन्तु इनके अलावा उस समय में कोई ऐसा था नहीं जिसे राज्य का शासन प्रबन्ध सौंपा जाए। इन्हीं के कारण कोटा की राजनैतिक व्यवस्था को सुचारू शासन तथा अच्छा नेतृत्व प्राप्त हुआ। इनकी वीरता, पराक्रम, बहादुरी तथा योग्यता से प्रभावित होकर औरंगजेब ने इन्हें 300 मनसब और खिलअत देकर इन्हें कोटा का राजा स्वीकार किया।[7] इन्हीं के नाम पर कोटा का मुख्य आकर्षण केन्द्र किशोर सागर तालाब है तथा किशोरपुरा नाम इलाका भी इनके नाम पर ही है। इनके चार पुत्र थे - विशनसिंह, रामसिंह, अर्जुनसिंह और हरनाथसिंह। इनके बड़े पुत्र बिशनसिंह ने मुगलों के अधीन युद्ध करने से अपना अपमान समझ कर युद्ध के लिए मना कर दिया, जिससे क्रोधित होकर किशोर सिंह जी ने इन्हें राजगद्दी के अधिकार से वंचित कर अंता की जागीर दी तथा रामसिंह जी को अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया।

---

[6] टॉड राजस्थान, जिल्द 3, पृ. 1423, वंशभास्कर, तृतीय भाग, पृ. 1, आलमगीरनामा, पृ. 163-167

[7] कोटा राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, राजपूताने का इतिहास 5

5. राव रामसिंह -

रामसिंह जी के पिता श्री किशोरसिंह जी का अधिकांश समय कोटा के बाहर युद्ध क्षेत्र में ही व्यतित होता था। इस कारण कोटा के शासन की जिम्मेदारी अपने पुत्र राजसिंह को सौंप कर जाया करते थे। अकार्ट के युद्ध में किशोरसिंह जी की मृत्यु हो जाने पर इनके बड़े भाई विष्णु सिंह जी ने मौका देखकर कोटा पर अधिकार कर लिया तथा बाद में दोनों भाईयों का युद्ध हुआ, जिसमें रामसिंह जी की विजय हुई। रामसिंह जी के काल में साहित्य एवं कला बहुत फली-फूली। राव रामसिंह कलाप्रेमी होने के कारण कलाकारों को आश्रय प्रदान करते थे।

6. महाराव भीमसिंह जी प्रथम -

महाराव भीमसिंह जी प्रथम कोटा रियासत के सबसे शक्तिशाली शासकों में से एक थे, जिन्होंने सबसे अधिक राज्य का विस्तार किया। महाराव भीमसिंह बड़े धैर्यवान तथा वीर राजपूत शासक थे। अनेकानेक युद्धों में भाग लेने के कारण इनके शरीर पर कई घाव थे। कुरवाई के रण क्षेत्र में इनके घावों को देखकर लोग आश्चर्यचकित हो गए थे, पर भीमसिंह ने मरते वक्त भी कहा कि हाड़ा राज्य तथा देश की रक्षा करने वालों को ऐसे घाव मिलते ही रहते है। राजपूत संतान का धर्म है कि वह युद्ध में हमेशा आगे रहे।[8] कोटा राज्य के शासकों में भीमसिंह जी ही ऐसे प्रथम शासक थे, जिन्होंने 'महाराव' की पदवी धारण की इससे पहले यहाँ के शासकों के नाम के आगे 'राव' लगाया जाता था।

महाराव भीमसिंह जी कोटा रियासत के प्रमुख कृष्ण भक्त शासक थे। जिन्होंने श्री कृष्ण (श्री गोवर्धननाथ जी) से प्रेरित होकर शैव सम्प्रदाय को छोड़कर वैष्णव सम्प्रदाय को स्वीकार किया, जिसमें आचार्य जी श्री वल्लभाचार्य जी की विशेष भूमिका रही। इन्होंने अपना नाम बदलकर कृष्ण दास अर्थात् कृष्ण भक्त रख लिया तथा राजमहल के अन्दर ही श्री बृजनाथ जी के मन्दिर का निर्माण करवाया। जहाँ भक्त, गवईयों को मासिक वेतन पर पाबन्द किया गया और उन्हें प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार कृष्ण भक्ति एवं संगीत कला के विकास में महाराव भीमसिंह जी का विशेष योगदान रहा।

---

[8] कोटा राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ. 56

7. महाराव अर्जुनसिंह जी -

महाराव भीमसिंह जी के तीन पुत्र थे - अर्जुन सिंह, श्याम सिंह और दुर्जनशाल सिंह।[9] महाराव भीमसिंह जी के स्वर्गवास हो जाने पर अर्जुन सिंह जी कोटा राज्य की गद्दी पर बैठे। इन्होंने केवल 3 वर्ष तक ही कोटा राज्य पर शासन किया तथा इनकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के पूर्व मुख्य सरदारों के बीच इन्होंने अपनी इच्छा रखी थी कि मेरे नहीं रहने पर मेरे छोटे भाई दुर्जनशाल को कोटा राज्य का उत्तराधिकारी बनाया जाए, क्योंकि इनके कोई पुत्र नहीं था। इनके द्वारा दरीखानों के अन्दर नृत्यांगनाओं एवं संगीत कलाकारों की प्रस्तुतियों का आयोजन करवाया। जिनका चित्रण कोटा राज महल के अर्जुन महल में देखा जा सकता है। वहाँ की प्रत्येक दीवार नृत्यांगनाओं की प्रस्तुतियों को दर्शाती है।

8. महाराव दुर्जनशाल जी -

महाराव दुर्जनशाल जी एक बहादुर शासक थे तथा कला व साहित्य प्रेमी होने के साथ-साथ ही एक सच्चे कृष्ण भक्त थे। अपने ईष्ट देव मथुराधीश महाप्रभु के लिए इन्होंने ही द्वारिकाधीश मंदिर अर्पण किया था। आपका विवाह महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय की बड़ी पुत्री महारानी ब्रजकुँवर जी के साथ सम्पन्न हुआ था, जो संगीत एवं कलाक्षेत्र में अत्यधिक रूचि रखती थी। जिन्होंने बृजविलास महल का निर्माण करवाया जो मुख्यतः गीत-संगीत की महफिल के आयोजन में काम लिया जाता था।[10] जिससे संगीत के क्षेत्र में विभिन्न कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त हुआ। आप दोनों ही शिकार के बेहद शौकीन थे। आप जब भी शिकार पर जाते रानी साहिबा ब्रजकुँवर जी भी आपके साथ जाती थी। आपके कोई पुत्र नहीं होने के कारण आपने अंता के जागीरदार अजीतसिंह जी को गोद लेकर राजगद्दी पर बैठाया।

9. महाराव अजीतसिंह जी -

महाराव दुर्जनशाल जी के कोई पुत्र नहीं होने के कारण इन्होंने अजीतसिंह जी को कोटा राज्य की राजगद्दी पर बैठाया गया। अजीतसिंह जी ने लगभग डेढ़ वर्ष कोटा राज्य पर राज्य किया। आपके साथ ही आपकी रानी भी सती हो गई थी। आपके तीन पुत्र थे - ज्येष्ठ पुत्र शत्रुशाल, इनके बाद गुमानसिंह तथा राजसिंह थे।[11]

---

[9] राजपूताने का इतिहास, 6

[10] कोटा राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.51

[11] वही, पृ.सं.

10. महाराव शत्रुशाल सिंह जी -

महाराव दुर्जनशाल ने शत्रुशाल जी को गोद लिया था तथा महाराव दुर्जनशाल जी चाहते थे कि उनके मरणोपरान्त आप कोटा की राजगद्दी पर विराजमान हो। परन्तु हिम्मतसिंह झाला की चाल के कारण आपके पिता अर्जुन सिंह जी राजगद्दी पर बैठे तथा उनके स्वर्गवास हो जाने पर आपने कोटा का शासन प्रबंध संभाला।[12] आप एक कुशल शासक होने के साथ-साथ बहुत दयालु प्रवृति के थे। आप जनता के हित को सबसे ऊपर रखते थे।

11. महाराव गुमान सिंह जी -

महाराव शत्रुशाल जी की मृत्यु हो जाने के बाद उनके अनुज गुमान सिंह कोटा की राजगद्दी पर बैठे। महाराव गुमान सिंह वीर, साहसी अत्यधिक बुद्धिमान व्यक्तित्व के धनी थे। आपका विवाह जालिम सिंह झाला की बहन के साथ सम्पन्न हुआ था। आप मृत्यु के पूर्व अपने बालक पुत्र उम्मेद सिंह को जालिम सिंह झाला की गोद में बैठा कर अपने पुत्र की जिम्मेदारी जालिम सिंह झाला को सौंप कर गए थे।[13]

12. महाराव उम्मेद सिंह -

महाराव उम्मेद सिंह जी किशोरावस्था में ही कोटा राज्य के राजसिंहासन पर बैठे थे। महाराव गुमान सिंह ने आपके मामा जालिम सिंह को कोटा राज्य का संरक्षक बनाया था। इस कारण जालिम सिंह अपने आप को कोटा का सर्वेसर्वा समझता था। महाराव उम्मेद सिंह जी बेहद सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। महाराव साहब का अधिकांश समय ईश्वर सेवा एवं आराधना में ही व्यतीत होता था। आप श्री कृष्ण के परम उपासक थे। आपके दरबार में आपने कुछ गायकों की नियुक्ति केवल भजन गाने के लिए ही की थी।

महाराव उम्मेद सिंह जी का शासन काल कलाप्रेमियों एवं कलाकारों के लिये स्वर्णिम समय था। इन्होंने कलकारों के मासिक वेतन में बढ़ोतरी की तथा प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन करवाया, जिससे हाड़ौती में कोटा दरबार के मान प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

---

[12] वही, पृ.सं.

[13] कोटा राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.

13. महाराव किशोर सिंह द्वितीय -

जिस समय आपका राज्याभिषेक हुआ उस समय आपकी आयु 40 वर्ष की थी। किशोर सिंह द्वितीय के समय ही यहाँ के दीवान का पद वंशानुगत हो गया था, जो कि जालिम सिंह झाला को दिया गया था। अंग्रेज़ों के दबाव के कारण जालिम सिंह तथा उसका पुत्र कुँवर माधोसिंह झाला ही कोटा राज्य के सर्वेसर्वा थे।[14] जालिम सिंह ने महाराव किशोर सिंह को किले से निकाल कर उस पर पूर्ण आधिपत्य कर लिया था, जिस कारण महाराव किशोर सिंह अपना राज्य छोड़ कर बून्दी की शरण में गए, किन्तु बून्दी महाराव ने अंग्रेज़ी संधि के कारण ज्यादा दिन तक शरण नहीं दी, इससे महाराव किशोर सिंह दुखी होकर वृंदावन चले गए।[15]

महाराव किशोर सिंह जी सदैव श्री वल्लभाचार्य जी के ज्येष्ठ पुत्र विट्ठलनाथ जी के साथ रहे। विट्ठलनाथ जी का मानना था कि त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को प्रसन्न तभी रखा जा सकता है जब संगीत कला को प्रोत्साहित किया जाए। आप बांसुरी तथा गायों के प्रतिरूप को पूजा की गद्दी पर रखा जाता था।

14. महाराव रामसिंह द्वितीय -

महाराव रामसिंह जी द्वितीय महाराव किशोर सिंह जी के अनुज महाराजा पृथ्वी सिंह के पुत्र थे। किशोर सिंह जी के कोई पुत्र नहीं होने के कारण अपने बाद रामसिंह जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। महाराव साहब एक उच्च कोटि के शासक थे। महाराव साहब बहुत रसिक प्रिय शासक थे। इनके समय में संगीत कला का सबसे अधिक विकास हुआ। महाराव साहब के समय में चित्रकला, साहित्य आदि विषयों की खूब उन्नति हुई तथा कलाकारों को भी अपने दरबार में उचित मान-सम्मान प्रदान करते थे। महाराव रामसिंह गीत-संगीत के बगैर किसी भी सवारी में निकलते नहीं थे तथा एक बार तो महाराव साहब जब सवारी में जा रहे थे, तो उसमें संगीत-नृत्य का कोई माहौल नहीं होने पर महाराव साहब ने कहा कि जब तक इस सवारी में नृत्य व गायन का इंतज़ाम नहीं होगा हम सवारी में नहीं जाऐंगे। महाराव की आज्ञा से उसी वक्त हाथी के दांत पर एक पट्टा लगाया गया, जिस पर एक नर्तकी नृत्य करती रही, जब तक सवारी निकलती रही। बाद में इस प्रकार नृत्य

---

[14] वही, पृ.सं.

[15] कोटा राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, 72

करना एक प्रथा बन गई। चित्रकला शैलियों का इनके शासनकाल से पूर्व समन्वय था परन्तु इनके शासनकाल के पश्चात् कोटा शैली को बिल्कुल अलग पहचान मिली।

15. महाराव शत्रुशाल जी द्वितीय -

रामसिंह जी की मृत्यु के पश्चात उनका गोद लिया पुत्र भीमसिंह जी गद्दी पर बैठे, जिन्होंने अपना नाम परिवर्तित करके शत्रुशाल रख लिया। अंग्रेज सरकार ने 17 तोपों की सलामी दी थी, लेकिन अपनी कुसंगत व मदिरापान के कारण राज्य में रिश्वत तथा मदिरापान एवं अनावश्यक खर्च के कारण कोटा आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा था। इसी कारण अंग्रेज सरकार ने मुसाहिब के पद पर नवाब फैज अली खान को नियुक्त किया। नवाब ने कोटा की रियासत की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु कई महत्वपूर्ण प्रयास किये। इनके शासन में शिक्षा की उन्नति के लिए कई विद्यालय खोले तथा मेयो कॉलेज में छात्रावास का निर्माण तथा कॉलेज निर्माण हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की।

16. महाराव उम्मेद सिंह द्वितीय -

महाराव शत्रुशाल के कोई संतान नहीं होने के कारण कोटडे के जागीरदार के पुत्र भीमसिंह को गोद लिया गया तथा इनका नाम भीमसिंह से बदलकर उम्मेद सिंह रखा। महाराव उम्मेद सिंह को आधुनिक कोटा राज्य का निर्माता कहा जाता है। इन्होंने पड़ोसी राज्यों से मित्रतापूर्ण संबंध बनाए। भूमि तथा कृषि व्यवस्था में सुधार किया। महाराव उम्मेद सिंह प्रजावत्सल्य तथा न्यायप्रिय शासक थे। शिक्षा के क्षेत्र में इन्होंने काफी कार्य किए। इन्होंने अपने शासनकाल में हिन्दी को कोटा की राज्य भाषा बनाया तथा सभी सरकारी विभागों में हिन्दी को कार्यालयी भाषा बनाने का आदेश पारित किया।[16] हिन्दी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए साहित्यकारों को आर्थिक सहायता प्रदान की तथा कोटा रियासत में हिन्दी भाषा की संस्था भारतेन्दु समिति की स्थापना की गई। उम्मेद सिंह के समकालीन कवि सुन्दरदास भटनागर ने हिन्दी में रामचरित मानस की रचना की। इसकी उपलब्धि का गुणगान खानपुर के हेडमास्टर कन्हैया भट्ट ने कोटा राज्य के बालक-बालिकाओं के लिए गाने योग्य गीतों का संग्रह

---

[16] कोटा राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ.सं.

स्वराज गान नामक पुस्तक की रचना की, जिसमें महाराव उम्मेद सिंह के शासनकाल की उपलब्धि का गुणगान है।[17]

(स) कोटा रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान -

कोटा रियासत में राजाओं के आश्रय में इतने मशहूर संगीतज्ञ हुए है कि जिन्होंने देश ही नही विदेश में भी भारतीय संस्कृति को गौरान्वित किया है, परन्तु कुछ संगीतकारों-कलावन्तों के नाम से ही हम परिचित है। कुछ बेहद खास कलाकारों के बारे में लोगों को पता ही नहीं है कि वो इस कोटा भूमि से है। यहाँ हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों समुदाय के कलाकारों ने राजाश्रय तथा उचित सम्मान पाया है। कोटा रियासत के दौरान कलावन्त तथा समाधनिये दो प्रकार के संगीतज्ञ थे।

i. समाधानिये - इन कलाकारों को समाधानिया कहा जाता था। इन्हें समाधानिया इसलिए कहा जाता था क्योंकि जब भी कोई व्यक्ति या संगीत में रूचि रखने वाला, किसी राग को गाने-बजाने और पहचानने में असमर्थ होता था तो उस राग का समाधान ढूंढने और खोजने के लिए इन गुणी लोगों के पास जाते थे, जहाँ राग से संबंधित उलझन का समाधान किया जाए। कोटा में आज भी पाटनपोल क्षेत्र में समाधानियों का मौहल्ला मौजूद है।

ii. कलावन्त - इन लोगों की कम से कम तीन से चार पीढ़ी संगीत के क्षेत्र में संबंधित थी। यह अप्रचलित तथा प्राचीन रागों की जानकारी रखते थे, जिससे कि बेहद कठिन राग को भी आसान करके सामने वाले को बता देते थे, जिससे सामने वाले कलाकार के लिए वह राग आसान हो जाता था। कैथूनीपोल क्षेत्र में कलावन्तों का मौहल्ला तथा कलावन्तों की मस्जिद आज भी देखी जा सकती है।

कोटा रियासत के शासक राव रामसिंह जी द्वितीय इतने अधिक कला व संगीत प्रेमी थे कि संगीत के बगैर कोई एक सवारी भी नहीं होती थी। जो भी सवारी निकलती उसमें राजा के साथ-साथ कलाकारों का काफिला भी रहता था। एक बार शाही सवारी निकलने वाली थी तब राजा को भी सवारी में साथ चलने को कहा राजा साहब ने कहा जब तक संगीत व नृत्य का प्रबंध नहीं होगा हम सवारी में नहीं जा सकते, तो एक हाथी की सूँड पर एक पटीया लगाया गया। नर्तकी ने पूरी सवारी के दौरान सूँड पर नृत्य किया।

---

[17] वही, पृ.सं.

1. महारानी साहिबा ब्रज कंवर जी -

कोटा रियासत के शासक महाराव दुर्जन शाल सिंह जी की महारानी साहिबा ब्रज कंवर जी संगीत व कला में रूचि रखती थी। महारानी साहिबा ब्रज कंवर जी का विवाह जब कोटा रियासत के राजा महाराव दुर्जन शाल सिंह जी के साथ तय हुआ था, तब महारानी ब्रज कंवर जी ने अपने दाता हुकम से उपहार के रूप में उच्च कोटी के कलाकार, संगीतज्ञ, कवि, नर्तक, वादक, चित्रकार आदि की मांग की। उनके पिता जी के द्वारा उनकी शादी के वक्त उनके साथ सभी कलाकारों को भेजा गया। इस बात से ही पता लगाया जा सकता है कि महारानी कला व संगीत से कितना प्रेम करती थी। महारानी साहिबा संगीत कला में इतनी रूचि रखती थी कि उन्होंने महाराजा साहब से कह कर खास कर संगीत व कलाओं की महफिल का आयोजन रखने के लिए महल से अलग स्थान पर एक भवन का निर्माण करवाया जिसे ब्रजविलास भवन के नाम से जाता है, जो नयापुरा में स्थित है। इस भवन में बाहर से आये विशिष्ट अतिथियों के स्वागत के जश्न के लिए तथा गीत-संगीत की महफिलों के लिए ही रखा गया था। किशोर सागर तालाब के मध्य में स्थित जग मंदिर का निर्माण भी महारानी ब्रज कुंवर साहिबा ने ही करवाया था।[18]

2. महारानी जाडेची (केसर कुंवर) -

चित्र सं. 3.2 कोटा के राव माधोसिंह संग्रहालय में प्रदर्शित महारानी श्री जाडेची का हारमोनियम

---

[18] हाड़ौती इतिहास - फिरोज अहमद

महारानी साहिबा केसर कुंवर संगीत कला की शौकीन थी। वह खुद बहुत अच्छा गाती थी तथा संगीत का अच्छा ज्ञान रखती थी। महारानी साहिबा के पास एक अनोखा बाजा था, जिसमें चाबी भर कर भी उसे बजाया जाता था तथा उस बाजे में पैरों के सहारे से भी हवा भरी जाती थी एवं दोनों हाथों से स्वर लगाए जाते थे। इस हारमोनियम की कई खासियत थी। इसका वजन 60 किलों था, जिसका उपयोग केवल विशेष उत्सव पर ही होता था। यह बाजा राव माधोसिंह म्यूज़ियम ट्रस्ट की ओर से गढ़ पैलेस स्थित म्यूज़ियम में रखा गया था, जिसे आज भी वहाँ देखा जा सकता है।[19]

महारानी साहिबा श्री कृष्ण की अनन्य भक्त थी। महारानी जी के विवाह के समय में उनके साथ सौ दासियाँ आई थी। महारानी साहिबा अपनी इन सौ दासियों के साथ अपने महल में रासलीला का मंचन करती थी। अपनी दासियों को अलग-अलग सखी तथा गोपी-ग्वाल आदि बना कर भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का गुणगान करती थी।

यहाँ के राजा-महाराजाओं ने अपने दरबार में ऐसे-ऐसे प्रतिष्ठित कलाकारों तथा संगीतज्ञों को नियुक्त किया था कि जब दरबार के यहाँ संगीत महफिलों का आयोजन होता था तब देश के अलग-अलग स्थानों से संगीतज्ञों को बुलाया जाता था। उन में तथा कोटा के संगीतज्ञों के बीच संगीत की जुगलबंदी तथा मुकाबले होते थे, जिस में विजय श्री कोटा के पक्ष में आती थी।

3. महारानी साहिबा शिव कुमारी जी -

महाराव भीमसिंह जी द्वितीय की धर्मपत्नि महारानी साहिबा शिव कुमारी जी संगीत व कला दोनों विधाओं में पारंगत थी। कोटा रियासत के सभी संगीतकारों एवं कलाकारों को वह खूब प्रोत्साहन देती थी। शास्त्रीय संगीत के साथ ही महारानी साहिबा विभिन्न साजों को बजाने में भी रूचि रखती थी। गायकी की भिन्न-भिन्न विधाओं में आपकी पसंदीदा गायन शैली रजवाड़ी मांड शैली थी। आपके समय में कोटा रियासत की संगीत कला ने खूब उन्नति की थी। आप बीकानेर के शासक गंगासिंह बहादुर जी की पुत्री थी, इस कारण आपकी रूचि मारवाड़ के संगीत की ओर भी थी। आप बेहद सुरीले भजन, गीत तथा मांड गाया करती थी। गायन की

[19] 22 जून, 2023 को दैनिक भास्कर कोटा में प्रकाशित खबर से ली गई जानकारी

बारीकियों को आप भली-भांति समझती थी, क्योंकि आपने शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा ग्रहण की थी। आपको शास्त्रीय संगीत गायन तथा वादन की शिक्षा प्रदान करने के लिए उस्ताद को खास आपको संगीत की तालीम देने के लिए कोटा रियासत में बुलाया गया था।

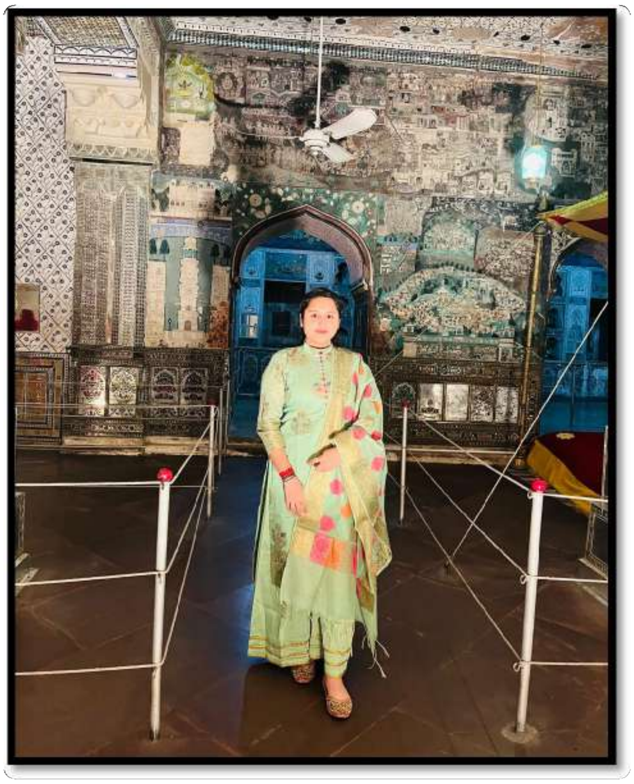

चित्र सं. 3.3 कोटा गढ़ (दरबार) में तथ्य संकलन करते हुए शोधार्थी

चित्र सं. 3.4 कोटा की बनी हुई सितार है यह सितार आप जी चतर सिंह जी ने बनवाई थी तथा वो इस सितार का वादन करते थे।

चित्र सं. 3.5 रियासतकालीन वाद्य यंत्र

चित्र सं. 3.6 रानी सुभद्रा कुमारी जी (कुन्हाड़ी) के द्वारा भेंट की गई दिलरूबा

चित्र सं. 3.7 कोटा गढ़ में प्रदर्शित की गई नगारी का चित्र

चित्र 3.8 कोटा महारानी श्रीमती कल्पना देवी के साथ शोधार्थी गुंजन हाड़ा

(द) कोटा रियासत का गुणीजनखाना -

'गुणीजनखाना' से तात्पर्य उस विभाग से है जहाँ पर गुणी कलाकारों, गायकों, वादकों, नर्तकों तथा नर्तकियों को राज्याश्रय प्रदान किया जाता था। गुणीजनखानें में नियुक्त होने वाले कलाकार बेहद ख़ास होते थे। इन्हें ऐसे ही गुणीजनखानें में नियुक्त नहीं किया जाता था। जिस प्रकार आज हमें किसी भी मंच तक पहुँचने या पद पर आसीन होने के लिए कई परिक्षाओं में सफल होना पड़ता है, उसी प्रकार गुणीजनखानें में नियुक्त होने वाले कलाकारों को कुछ मापदण्डों पर खरा उतरना होता था, उस के बाद ही उन्हें गुणीजनखानें में नियुक्ति मिलती थी। हर अलग विधा के अलग-अलग मापदण्ड होते थे। जैसे - अगर गुणीजनखाना विभाग में किसी गायक की नियुक्ति करनी है तो उसके लिए निम्न मापदण्ड थे -

- वह सुरीले कंठ वाला होना प्रथम प्राथमिकता थी।
- गायक गाने की सभी विधाओं में से किस-किस विधा में निपुण है।
- गायक को सभी रागों का ज्ञान होना आवश्यक था।
- गायक को राग-रागनियों की पहचान होनी ज़रूरी थी।
- गायक को शास्त्रीय संगीत का ज्ञान होना आवश्यक था।

गुणीजनखाना विभाग में जब किसी नर्तकी की नियुक्ति होती थी तो उसके लिए निम्न मापदण्ड थे -

- नर्तकी को कत्थक का ज्ञान होना अनिवार्य था।
- नर्तकी का सुंदर होना भी जरूरी था।
- नर्तकी का शरीर सुडौल होना जरूरी था, आदि।

कोटा रियासत के गुणीजनखाना के अंतर्गत अनेक कलाकारों को नियुक्त किया गया। जिसमें श्री लाल जी उस्ताद, प्रभुलाल जी उस्ताद, फिदा हुसैन खाँ साहब मोहम्मद खाँ साहब, रामचंद्र समाधानी, मोतीलाल भुजवाले, भंवरलाल राव, नन्दराम जी, रामकरण जी राव, भैरूलाल जी पँवार, शकुरन शहजादी, बिब्बो बाई (राजेश), माणिक बाई आदि।

श्री लाल जी उस्ताद के नाम पर कोटा में स्थित एक मोहल्ले को श्रीपुरा नाम दिया गया, जो आज भी श्रीपुरा के नाम से ही जाना जाता है।

कोटा रियासत के गुणीजनखाने का बजट सन् 1899 ई.

क्र.सं.	पद नाम	संख्या	मासिक वेतन	वार्षिक व्यय
1.	भगतण	5	40/- मासिक 49/- किया गया 84/- 12/- 10/-	480/- 1008/- 144/- 120/-
2.	बाजा (हारमोनियम)	1	15/- + 5/- वृद्धि	240/-
3.	नक्कारची	1	5/-	60/- मीजान 2412/-
4.	ढोलणियाँ	4	-	299
5.	वीणकार (छगनलाल)	-	15/-	180/-
6.	शायर	-	3/-	36/-

7.	भेरों गड़वा हालो	-	6/-+1/-=7/-	84/-
8.	नंदो गड़वा हालो	-	5/-	60/-
9.	ढोलणी हालो	-	7/-	84/-
10.	ढोलणी हाला अंकार	-	5/-	60/-

(उपर्युक्त कलाकारों की इसी वर्ष आठ आने प्रतिमाह वेतन वृद्धि की गई। पूर्व में 5/- रूपये मासिक वेतन था।)[20]

(य) कोटा रियासत के दरबारी संगीतज्ञ, कलावंत एवं भगतण -

1.	उस्ताद श्री लाल जी	20.	उस्ताद इब्राहिम खाँ
2.	उस्ताद प्रभुलाल जी	21.	भंवरी बाई जी
3.	फिदा हुसैन खाँ	22.	सुरईया बाई जी
4.	नन्द राम	23.	मोहम्मद अली
5.	बाला बख्श	24.	इब्राहिम खाँ
6.	किशोरी देवी जी (गायिका)	25.	शहज़ादी बाई जी
7.	सुन्दर बाई	26.	चिडिया बाई जी
8.	राजेश (बिब्बो बाई)	27.	बसन्ती बाई जी
9.	भूरी बाई	28.	चाऊ बाई जी
10.	केसर बाई	29.	भवानी बाई जी
11.	बुल्लो बाई	30.	लाड कँवर बाई जी
12.	लक्ष्मण राव	31.	बड़ी बिलास बाई जी

[20] राजस्थान : संगीत और संगीतकार प्रताप सिंह चौधरी (गुणीजनखाने : हाड़ौती) लेखक प्रताप सिंह चौधरी, पृ.सं. 115

13.	माणक बाई जी	32.	छोटी बिलास बाई जी
14.	शकूरन शहजादी जी	33.	कल्लो बाई जी
15.	मुमताज बाई जी	34.	फूला बाई जी
16.	वहीदन बाई जी	35.	मुन्नी बाई जी
17.	अल्लाह रक्खी बाई जी	36.	पन्नी बाई जी
18.	चाँद बाई जी	37.	मोतीलाल जी (भुजवाले)
19.	हसीना बाई जी	38.	रामचन्द्र समाधानी

कोटा रियासत के दरबारी संगीतज्ञ -

1. श्री लाल जी उस्ताद -

उस्ताद श्री लाल जी कोटा के प्रमुख दरबारी संगीतज्ञों में से एक है। आपने कोटा रियासत के तीन शासकों महाराव शत्रुशाल सिंह द्वितीय, महाराव उम्मेद सिंह द्वितीय एवं महाराव भीम सिंह द्वितीय के दरबार में अपने संगीत का जादू बिखेरा है। कोटा रियासत के सभी संगीतकार आपकी श्रेष्ठता स्वीकार करते है। श्री लाल जी हाड़ौती क्षेत्र के सबसे बेहतरीन सारंगी वादक रहे। सारंगी वादन में भी जोड अंग बजाने में आपको महारत हासिल थी। आप बेहद मुश्किल रागों को भी बहुत आसानी से सारंगी पर वादन करते थे।[21] आप अनिबद्व गायकी के रूपकालाप एवं रागालाप करने में दक्ष थे। आप विभिन्न रागों का वादन करते हुए राग के स्वरों को आत्मा का ऐसा लिबास पहनाते थे कि सुनने वाले श्रोता आपके वादन में खो जाते थे। आपने सारंगी वाद्य में कई अभूतपूर्व प्रयोग किए। आप खूँटी से ही जोड अंग बजा लेते थे। रियासत कालीन दौर ऐसा था कि उस समय कोटा रियासत के कलाकार तथा बाहर से आए कलाकारों के बीच में होने वाले प्रतिस्पर्धात्मक मुकाबले खुले मंच पर हुआ करते थे। उस्ताद श्री लाल जी के संबंध में एक जानकारी मुझे प्राप्त हुई। एक बार उस्ताद गुलाम मुस्तफा खाँ, जिनका उपनाम झण्डे खाँ था, कोटा में आए। गुलाम मुस्तफा खाँ को झण्डे खाँ नाम से इसलिए जाना जाता था क्योंकि उनकी सारंगी पर झण्डी लगी

[21] हाड़ौती इतिहास : फिरोज़ अहमद

हुई होती थी। साथ ही वो जहाँ भी जाते और जिस भी कलाकार के साथ उनका मुकाबला होता था और जिस भी कलाकार की हार होती वह हारे हुए कलाकार की सारंगी अपनी बैलगाड़ी में भर कर लाते थे। वह उस्ताद श्री लाल जी की प्रसिद्धि सुन कर उनसे मुकाबले के लिए कोटा आए। श्रीपुरा मोहल्ला (जिसका नामकरण श्री लाल जी के नाम पर हुआ है) में स्थित "हाजी पीर जी का चौक" स्थान में झण्डे खाँ तथा श्री लाल जी के बीच प्रतियोगिता हुई। जिसमें झण्डे खाँ की हार हुई तथा विजय श्री कोटा रियासत के उस्ताद श्री लाल जी को प्राप्त हुई। इस मुकाबले के पश्चात झण्डे खाँ ने अपनी बैलगाड़ी में रखी हारे हुए सभी कलाकारों की सारंगी उस्ताद श्री लाल जी को सौंप दी तथा अपनी सारंगी पर लगी झण्डी भी उस्ताद श्री लाल जी की सारंगी पर लगा दी। श्री लाल जी ने जिन भी कलाकारों की वो सारंगी थी उन्हीं को बुलाकर सौंप दी। जिस सारंगी से मुकाबला हुआ था, वह भी अपने आप में एक ऐतिहासिक सारंगी है,[22] जिसे केशोरायपाटन स्थित केश्वराय जी के मंदिर में आज भी देखा जा सकता है, जो चार फीट ऊँची तथा एक फीट चौड़ी है। जो हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि यह भारत की पहली विशालकाय सारंगी है और हमारे क्षेत्र में देखने के लिए आज भी मौजूद है। श्री लाल जी उस्ताद भारत के विख्यात स्व. उस्ताद बुन्दू खाँ की जोड़ में भी सारंगी वादन कर चुके है। आप मंद गति से गज को बजाते हुए बाएँ हाथ की उँगलियों से बहुत तीव्र गति से सारंगी वादन करते थे। आप गज का इस्तेमाल किए बगैर ही केवल खूटियों को घुमाकर ही मालकौंस, भूपाली, विभास जैसे पाँच स्वर वाले रागों को तालबद्ध बजाने में आपको महारत हासिल थी। आप अपनी कला में इतने पारंगत थे कि आपने अपने पालतू श्वान (टीपू) को सारंगी के साथ 'सा' और 'ग' यह दोनों स्वर का अभ्यास करवाया था। जब भी आप रियाज़ करते थे, टीपू आपके पास चुपचाप बैठकर आपके वादन को सुनता रहता था।

2. उस्ताद प्रभुलाल जी -

आप कोटा रियासत के गुणीजनखानें में नियुक्त थे। आप उस्ताद श्री लाल जी के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। आप को सभी राग-रागनियों का बहुत अच्छा ज्ञान था। आप दरबार की महफिलों में गायन करने के साथ-साथ श्री बृजनाथ जी मंदिर में परम्परागत रूप से कीर्तन करते थे। एक बार कोटा रियासत में आयोजित होने वाली

[22] श्रीलाल जी के विषय में उपयुक्त जानकारी शोधार्थी को इतिहासकार फिरोज़ अहमद जी से वार्तालाप के माध्यम से प्राप्त हुई

महफिल में बाहर से कई कलाकार आए जिनमें एक के बाद एक अपनी कला प्रदर्शन के मुकाबले हो रहे थे। दरबार के द्वारा उस्ताद प्रभुलाल जी से कहा गया कि, "अजी प्रभुलाल जी य कलाकार बार सूँ आया छः, अर य ही य याकी कला दिखा रया छः, आपाः की तरफ सूँ भी तो काइ न काइ गा बजार दिखाओ या क ताई।" तब प्रभुलाल जी द्वारा कहा गया कि दरबार जैसे आप आदेश करे, पर मेरा एक निवेदन है कि यह जो कलाकार सारंगी वादन कर रहे है अगर मैं इस सारंगी की सभी खूँटीयों को उतार दूँ तो यह मुझे सिर्फ एक बार सारंगी को पहले की तरह मिला कर बता दे उसके बाद गाने का दौर मुकाबला शुरू करे दरबार ने आज्ञा दी और प्रभुलाल जी ने सारंगी के सभी स्वरों को खूँटीयों की सहायता से उतार दिया। सामने वाले कलाकार सारंगी मिला भी नहीं पाए और अपनी हार स्वीकार ली। इस बात से यह साबित होता है कि कोटा रियासत के गुणीजनखानें में एक से बढ़कर एक बेहतरीन कलाकार थे। आप सारंगी वादन, गायन तथा ध्रुपद-धमार गायन में भी निपूण थे। आपके प्रमुख शिष्यों में केसरीलाल जी गंधर्व, मदनलाल जी जोशी प्रमुख है।[23]

3. फिदा हुसैन खाँ -

फिदा हुसैन खाँ साहब कोटा रियासत के गुणीजनखानें में दरबारी संगीतज्ञ के पद पर नियुक्त थे। आपकी आवाज़ में इतनी मिठास थी कि श्रोता को मंत्रमुग्ध करने की शक्ति आपकी आवाज़ में थी। आपका स्वर लगाने का अपना अलग अंदाज था मानो आपके षडज् स्वर में से तानपूरे की आवाज का स्वतः ही अनुभव होता था। जब आप ख्याल गायन करते तो स्थाई गाने के बाद अंतरों को 2-3 बार एक जैसा गाते उसके बाद बोल बांट तथा बोल श्रृंगार से ख्याल के पद (स्थाई-अंतरा) के भावों से रसों की ऐसी अनुभूति करवाते ही पूरे माहौल में उस राग के स्वर विचरने लगते तथा सम्पूर्ण वातावरण आनन्दित हो जाता था।[24] जिस तरह से आप आरोह की ताने-पलटे गाते थे, उस ही ऊर्जा के साथ अवरोह की ताने व पलटे गा कर बहुत आसानी से सम दर्शाते थे। आपकी पसंदीदा ताले क्रमशः तिलवाड़ा, झूमरा, एकताला, चौताल आदि थी। परन्तु रूपक तथा झपताल में आपकी तानों में खाली तथा भरी मात्राओं को सपष्टता से अनुभव किया जा सकता था।[25] जिस प्रकार तालों का अलग-अलग

---

[23] प्रभुलाल जी के संबंध में जानकारी शोधार्थी को बून्दी के कलाकार मुकेश जी रावल से प्राप्त हुई।

[24] राजस्थान संगीत और संगीतकार, पृ.सं. 74

[25] वहीं, पृ.सं; 74

विभागों में विभाजन होता है, उसी प्रकार आप तानपुरे के तारों को छेडते वक्त ऐसे मात्राओं में बजाते थे, जिससे की तबला नवाज़ को भी सहारा मिल जाए। यह आपकी दूसरे कलाकार के लिए दयालुता व सम्मान के भाव को दर्शाता है। आप तानपुरे पर जितना सुरीला गायन करते थे, उतना ही अभ्यास आपको एकतारा पर भी था।[26] कोटा रियासत के सभी कलावंत तथा गुणीजन एक मत से आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करते थे। उस्ताद श्री लाल जी का कथन था कि आप जैसे भारत के सर्वश्रेष्ठ गायक का कोटा रियासत के गुणीजनखानें में होना कोटा के लिए ही नहीं अपितु राजस्थान के लिए गौरव की बात है। फिदा हुसैन खाँ महारानी साहिबा को भी संगीत की शिक्षा देते थे। आप हिन्दुस्तान के उत्कृष्ट गायक माने जाते थे।

4. नन्दराम जी -

आप कोटा दरबार के गुणीजनखानें में दरबारी सारंगी वादक के पद पर नियुक्त थे। आपने अपने पिता जी श्री बाला बख्श जी से सारंगी वादन की शिक्षा ग्रहण की थी। सारंगी वादन के साथ आप गायन में भी प्रवीण थे। दरबार में होने वाली गीत-संगीत की महफिल में आपका सारंगी वादन अवश्य होता था। इसके साथ ही रियासतकालीन भक्तणों तथा नृत्यांगनाओं के नृत्य की प्रस्तुति भी आपके सारंगी वादन के साथ ही होती थी। सुप्रसिद्ध गायक फिदा हुसैन साहब जो कोटा के दरबारी संगीतज्ञ थे, इनके साथ भी आपने काफी संगत की थी। आपका अधिकांश समय कोटा रियासत में ही व्यतित हुआ। कुछ वक्त के लिए आप जयपुर रियासत के उनियारा ठिकाने में रहे, परन्तु कुछ समय वहाँ रहने के पश्चात आप कोटा आ गए। आपने दरबार में सारंगी वादन करने के साथ-साथ स्वतंत्र रूप से सारंगी वादन के कई कार्यक्रम अलग-अलग राज्यों में किए। जिससे की आपको कोटा रियासत के अलावा अन्य स्थानों पर भी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। आपका 75 वर्ष की आयु में कोटा में ही स्वर्गवास हुआ।

5. बालाबख़्श जी -

आप कोटा रियासत के गुणीजनखाने के बेहद कुशल सारंगी वादक थे। आप कुछ समय के लिए जयपुर नरेश माधोसिंह जी के दरबार में भी रहे। परन्तु आपने सर्वाधिक समय कोटा नरेश महाराव शत्रुशाल जी के दरबार में ही व्यतित किया। आप

---

[26] वही, पृ.सं. 74

बेहद गुणी कलाकार थे। बाहर से आने वाले विदेशी मेहमानों को आपका सारंगी वादन अवश्य सुनाया जाता था। आपने अपने पुत्र श्री नन्दलाल जी को भी सारंगी वादन की शिक्षा प्रदान करके एक कुशल कलाकार बनाया।[27]

6. किशोरी देवी जी –

किशोरी देवी जी का जन्म 1940 में बून्दी के राव परिवार में उस्ताद धोकल जी के घर में हुआ था। उस्ताद धोकल जी बून्दी दरबार के राज गायक थे। किशोरी देवी कोटा रियासत की दरबारी गायिका थी। इन्हें शास्त्रीय संगीत का ज्ञान तो था ही लेकिन यह दरबार में रजवाडी मांड, बंधावा आदि भी गाती थी।

चित्र 3.9 रियासत कालीन मांड गायिका किशोरी देवी जी का परिचय प्राप्त करते शोधार्थी गुंजन हाड़ा[28]

जनानी ड्योढ़ी में आप सुहाग कामण भी गाया करती थी। किशोरी देवी जी के गायन से प्रसन्न होकर महाराव साहब इन्हें केसरी रंग की पोटली में अशर्फी भी दिया करते थे। आपके समय में किशनगढ़ दरबार सुमेर सिंह जी के यहाँ भी आपका गायन हुआ था। किशोरी देवी हाड़ौती के पारम्परिक लोक गीत जैसे लहरिया, मेहंदी, हाली

[27] राजस्थान : संगीत और संगीतकार, पृ. सं. 40

[28] स्वयं शोधार्थी के द्वारा किशोरी देवी जी से मुलाकात कर के प्राप्त परिचय

जी, बन्ना-बनी, तुररा आदि गाया करती थी, जो आकाशवाणी पर आज भी सुने जा सकते है। अभी आप 85 वर्ष की हो गई है पर अभी भी संगीत से आपका जुड़ाव पहले जैसा ही है। हालांकि बुजुर्ग होने के कारण आप गा नहीं सकती पर आपके द्वारा गीतों के बोल मुझे बताए गए। संगीत नाटक अकादमी तथा इण्टेक द्वारा भी आपको सम्मानित किया जा चुका है। किशोरी देवी जी द्वारा गाए जाने वाले गीत, मांड के बोल कुछ इस प्रकार है - म्हारा हाथा में सुरंग मेहंदी राचणी, भँवर थाकी बादली म्हारों लहरियों भजोयो जी राज, एकलणी मत छोड़ो सयाला री रैन म।

7. मोहम्मद अली -

कोटा में ही शास्त्रीय गायक मोहम्मद अली हुए, जिनके पूर्वज हिन्दू ही थे पर इनके परिवार में से किसी के द्वारा मुस्लिम धर्म ग्रहण कर लिया गया। जिसके बाद की पीढ़ी ने भी इसी धर्म का अनुसरण किया।

मोहम्मद अली के पुत्र इब्राहिम खाँ हुए, जिन्हें मशहूर मांड गायिका अल्ला जिल्हा बाई के गुरू होने का गौरव प्राप्त हुआ। इनकी शिष्या अल्ला जिल्हा बाई के 'केसरिया बालम आओ नी पधारों म्हारे देस' को हर शख्स बड़े प्यार से सुनता है। राजस्थान का कोई भी संगीतकार देश-विदेश में प्रस्तुति देने जाए तो उससे केसरिया बालम की फरमाईश जरूर की जाती है। इब्राहिम खाँ के बेटे हाफिज खाँ हुए।[29]

8. सुन्दर बाई -

सुन्दर बाई जी कोटा रियासत की दरबारी नृत्यांगना तथा गायिका थी। सुन्दर बाई जी के नृत्य को तथा गायन को महाराव उम्मेद सिंह जी खूब सराहते थे। एक बार महल में शाम के समय में सुन्दर बाई जी की प्रस्तुति रखी गई तो सुन्दर बाई ने दरबार से कहा - दरबार साहब जब तक मेरे दोनों हाथों में सवा-सवा पाव के बाजू नहीं होगें मैं प्रस्तुति नहीं दूँगी। दरबार साहब महाराव उम्मेद सिंह जी ने अपने दरबान से कहा कि जाओ खजाने में से दो बाजू ले कर आओ। दरबान गए और थाल में सजाकर दो सोने के बाजू ले कर आए। महाराव साहब ने वो बाजू सुन्दर बाई को दिए उसके बाद वो बाजू अपने हाथों में पहन कर अपनी प्रस्तुति दी।[30]

---

[29] मोहम्मद अली के बारे में प्राप्त जानकारी फिरोज़ अहमद जी के द्वारा प्राप्त हुई

[30] सुन्दर बाई जी के सन्दर्भ में जानकारी कोटा के नृत्य कलाकार गोविंद जी के द्वारा प्राप्त हुई

सुन्दर बाई कलाली, प्रशंसा गीत, बधावे के गीत तथा राजपूती मांड भी गाती थी। यूँ तो कई प्रकार के मांड है, किन्तु राजपूती मांड पहले के समय में सिर्फ राजपूती नरेशों के दरबार में ही गाए जाते थे। सुन्दर बाई की ज़्यादातर प्रस्तुति जनानी ड्योढ़ी में होती थी।

9. सुश्री राजेश कुमारी (बिब्बो बाई) -

आपने शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा ग्रहण की थी। आपके सांगीतिक गुरू, नारायण प्रसाद जी, अमरोही के सरदार खाँ तथा अब्दुल कादिर खाँ थे। इनकी गायकी की झलक आपके गायन में स्पष्टतयाः नज़र आती थी। आप कोटा रियासत के दरबार में भी अपनी आवाज़ का जादू बिखेरती थी। ठुमरी, दादरा तथा गजल गायकी में तो आपको महारत हासिल थी ही परन्तु आप हाड़ौती क्षेत्र में ख्याल गायकी की नामी हस्ती मानी जाती थी। आप सुमधुर कंठ की धनी थी। आपको प्राचीन रागों तथा बंदिशों का ज्ञान होने के साथ-साथ अधिकांश रागों की बंदिशे कंठस्थ थी।[31] आपकी माता श्री का नाम मुमताज बाई था, जो स्वयं भी कोटा रियासत की नामी गायिकाओं में से एक थी। बिब्बो बाई की आवाज़ उम्र के आखरी पड़ाव पर भी अत्यंत मधुर तथा कर्णप्रिय/दमदार रही।[32]

10. भूरी बाई -

आप कोटा रियासत के गुणीजनखानें में भगतण के पद पर नियुक्त थी। आप कोटा रियासत की सबसे मशहूर भगतणों में से एक थी। कोटा के दरबार के शाही महल में तो आपके मुजरे होते ही थे, परन्तु आपको उदयपुर तथा जोधपुर रियासत के नरेशों के द्वारा भी उनके दरबार में आपकी प्रस्तुति के लिए आपको बुलवाया जाता था। आपके बाहर जाने के लिए राजा से आज्ञा लेनी होती थी, तब ही आप दूसरे राज्य में अपनी प्रस्तुति के लिए जा सकती थी। उदयपुर के दरबारी संगीतज्ञ नामक पुस्तक में उदयपुर दरबार में आपके मुजरे का उल्लेख मिलता है। इस बात का अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि आप अपनी कला में कितनी पारंगत थी कि आपको अन्य रियासतों के राजा-महाराजा भी अपने दरबार की शोभा बढ़ाने के लिए बुलाया करते थे।[33]

---

[31] राजस्थान : संगीतम और संगीतकार, पृ. 106

[32] बिब्बों बाई की जानकारी बून्दी की नृत्यांगना से प्राप्त हुई

[33] उदयपुर के दरबारी संगीत, पृ.सं. 140, डॉ. कौमुदी राजस्थान के दरबारी संगीतज्ञ, पृ.सं. 142

11. केसर बाई -

केसर बाई जी कोटा रियासत के गुणीजनखाना नामक विभाग में भगतण के पद पर नियुक्त थी। आपकी दरबार में जब भी प्रस्तुति होती थी, जो दरबार के द्वारा आपको चाँदी की ज़री हुई काम की पौशाक तथा स्वर्ण आभूषण दिए जाते थे। उनको पहन कर ही आप दरबार में अपनी प्रस्तुति देती थी। आप दरबार में प्रस्तुति देने के अलावा कोटा नरेश के महल में स्थित निजी मंदिर पर भी प्रातःकाल तथा संध्या काल के समय पर भजनों पर नृत्य करती थी। कोटा दरबार में आपके मुजरे होते थे, साथ ही कोटा रियासत के बाहर भी आपको बुलाया जाता था। उदयपुर के शाही महल के उत्सव में भी आपको अपने मुजरे के लिए बुलाया गया था।[34] आप प्रमुख रूप से तेरह ताली, भवई नृत्य तथा अन्य पारम्परिक नृत्य दरबार में प्रस्तुत किया करती थी।

12. बुल्लो बाई -

बुल्लो बाई जी कोटा रियासत के गुणीजनखानें की सबसे मशहूर नृत्यांगना थी। उनको दरबार के द्वारा सभी राजसी सुविधाऐं प्रदान की गई थी। यह कहना कोई अतिश्याक्ति नहीं होगी कि बुल्लो बाई उस दौर की सबसे मँहगी नृत्यांगना थी, जो दरबार में होने वाली महफिल में अपनी प्रत्येक प्रस्तुति के 500 रूपयें लेती थी तथा स्वर्ण जडित पोशाक पहन कर ही अपनी प्रस्तुति देती थी। इसके साथ ही चाँदी के पात्र में ही भोजन करती थी। दरबार तथा महल की रानियाँ बुल्लो बाई को अपने परिवार का सदस्य ही मानते थे। बुल्लो बाई की प्रस्तुति के लिए उन्हें नख से शिख तक स्वर्ण, हीरे-मोती जडित आभूषण प्रदान किए जाते थे, जिन्हें पहन कर ही वो अपनी प्रस्तुति देती थी। बुल्लो बाई आम लोगों के सामने कभी अपनी प्रस्तुति नहीं दिया करती थी, केवल दरबार के महल में अपनी प्रस्तुति देती थी या फिर विदेश या अन्य रियासतों से आए खास मेहमानों के सामने ही नृत्य करती थी। प्रत्यक्षदर्शी लोगों के अनुसार बुल्लो बाई बला की ख़ुबसूरत महिला थी, जिनके केश भी बहुत लम्बे थे। बुल्लो बाई के लिए लोग एक कहावत कहते थे कि, "अगर ये पान खाती थी तो इनके गले में लाल लकीर नजर आती थी।" बुल्लो बाई बहुत तहज़ीब वाली थी। जब भी वो किसी से बात करती थी तो हमेशा नज़र झुका कर बात करती थी। दरबार

---

[34] उदयपुर के दरबारी संगीतज्ञ, पृ.सं. 140

दशहरें में आयोजित होने वाली महफिल में इन्हें हमेशा आमंत्रित करते थे। इनकी प्रस्तुति पर राजा झोली भरकर अशर्फी लुटाते थे।[35]

13. लक्ष्मण राव -

आपका परिवार कई पीढ़ीयों से तबला वादन का कार्य कर रहा था। आपने भी अपने परिवार के इस पेशे को अपनाया। आप एक बेहतरीन मृदंग एवं तबला वादक थे। कोटा रियासत में आने वाले अधिकांश कलाकारों के साथ आपने तबले पर संगत की है। "आपके समय में कोटा रियासत के शासकों के दरबार में होने वाली अधिकांश संगीत की महफिल तथा भगतणों व नृत्यांगनाओं के साथ आपने तबले पर संगत की है।"[36]

14. माणक बाई जी -

कोटा रियासत के दरबार में चलने वाले गुणीजनखाना नामक विभाग में कार्यरत माणक बाई जी शास्त्रीय संगीत की विदुषी थी। "माणक बाई का जन्म सन् 1925 में हुआ था।"[37] माणक बाई जी ने उस्ताद इब्राहिम खाँ साहब जो कि मांड गायिका अल्लाह जिल्हा बाई जी के गुरू थे, उनसे शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा ग्रहण की थी तथा आपने कोटा रियासत के गुणीजनखानें के दरबारी संगीतज्ञ उस्ताद फिदा हुसैन खाँ साहब से भी संगीत की शिक्षा ग्रहण की। आपके दोनों महान गुरूओं की गायकी की झलक आपके गायन में स्पष्टतया देखी जा सकती थी। हमारे लिए गौरव की बात है कि आप जैसी विदुषी ने इस हाड़ौती क्षेत्र में रहकर अपनी गायकी को देश में अलग-अलग स्थानों पर प्रसारित किया। यूँ तो आप गायन की हर विधा में दक्ष थी पर ख्याल गायकी आपकी पसंदीदा गायन विधाओं में से एक थी। आप ख्याल गायकी करते वक्त स्थाई-अंतरे को बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करती। इसके पश्चात आप अपनी सुमधुर, दमदार व बुलन्द आवाज में दानेदार तानों, बोल-बांट, बोल-आलाप को बड़े आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करती थी। शास्त्रीय गायन के साथ-साथ ही आप राजस्थानी लोकगीतों की सुप्रसिद्ध गायिका रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात आज से लगभग 51 वर्ष पूर्व भारत ही नहीं अपितु विदेश में भी अपनी शहनाई वादन

---

[35] अरविन्द जी सक्सेना के द्वारा फोन पर प्राप्त जानकारी

[36] राजस्थान - संगीत और संगीतकार, पृ. सं. 49

[37] राजस्थान - संगीत और संगीतकार, पृ. सं. 96

का जादू बिखेरने वाले महान शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब (जिन्हें भारत सरकार के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से भी नवाज़ा गया है तथा जिन्हें वाराणसी स्थित श्री हनुमान मंदिर में स्वयं हनुमान जी के दर्शन हुए) ऐसी महान विभूति को कोटा में रियासत काल से आयोजित होने वाले राष्ट्रीय दशहरा मेला के श्री राम रंगमंच पर अपना कार्यक्रम पेश करने लिए कोटा आमंत्रित किया गया। उस कार्यक्रम में भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब के साथ माणक बाई ने भी जुगलबंदी कार्यक्रम पेश किया था। माणक बाई जी ने लगभग 30 वर्षों तक आकाशवाणी केन्द्रों से भी अपने शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम पेश किए है।

15. शकूरन शहजादी जी -

कोटा रियासत के गुणीजनखानें की आप सबसे प्रसिद्ध गायिका थी। आपके जैसी ग़ज़ल तथा टप्पा गायन उस समय के रियासतकालीन गायिकाओं में कोई ओर नहीं गा सकता था। आप जिस तरह का बेदम टप्पा गाती थी, वो इस दौर में बामुश्किल ही सुनने को मिलें। आप टप्पे की घुमावदार, दानेदार तानों तथा ज़मज़मों को बेहद सरल तरीके से संवार कर पेश करती थी। आपकी गायकी से दरबार काफी प्रभावित होते थे। दरबार के द्वारा आपको उपहार स्वरूप कई स्वर्ण आभूषण तथा स्वर्ण रजत अशर्फियाँ भी प्राप्त हुई। आप गुणीजनखानें में कार्यरत अन्य गायिकाओं को संगीत की शिक्षा भी प्रदान करती थी।

16. मुमताज बाई जी -

आप कोटा रियासत के गुणीजनखाना नामक विभाग में कार्यरत थी। आप मर्दाने ढंग की आवाज़ में ख़्याल गायन करती थी। पहले आपका गायन बहुत अच्छा नहीं था, परन्तु नृत्य के साथ-साथ आपको धीरे-धीरे गायन में भी रूचि उत्पन्न हुई तथा आपने अपनी कठिन साधना व परिश्रम से गायन में भी दक्षता प्राप्त कर ली थी। दरबार में जब आप प्रस्तुति देती थी तो इस कदर संगीत की महफिल का समा बाँध देती थी कि कोई भी आपकी पूरी प्रस्तुति श्रवण किए बग़ैर जा नहीं पाता था। इसके साथ ही आप शेरो-शायरी का भी अच्छा ज्ञान रखती थी। आप महाराजा साहब बमूलिया की निजी गायिका थी।

17. वहीदन बाई जी -

आप कोटा रियासत के महाराव राजा उम्मेद सिंह जी के दरबार के शासनकाल के समय थी। आप रियासत काल की मशहूर नृत्यांगना थी। आप ठुमरी पर नृत्य किया करती थी। आपके नृत्य में अदब स्पष्ट झलकती थी। दरबार के अलावा विदेश से आए अतिथि भी आपके नृत्य की खूब प्रशंसा करते थे तथा बेशकीमती वस्तुएँ आपको उपहार स्परूप भेंट किया करते थे। आपने कई गुणी उस्तादों से नृत्य कला की शिक्षा ग्रहण की थी। अपने उसूलों के चलते आपने राज्य से बाहर जा कर किसी दरबार अथवा मंच पर अपनी प्रस्तुति नहीं दी। आप श्रावण माह की तीज (जो सावनी तीज के नाम से जानी जाती है) के अवसर पर श्रृंगार चंवरी के दरीखाने में नृत्य करती थी।

18. अल्लाह रक्खी बाई जी -

आप कोटा रियासत के गुणीजनखानें की कुशल गायिका थी। आप महाराव राजा उम्मेद सिंह जी के दरबार के समय की गायिका रही। आपकी सुमधुर गायकी की तुलना कोयल के कंठ से की जाती थी। आप गायन के साथ नृत्य में भी निपुण थी। जब दरबार में आपकी प्रस्तुति होती तो आप स्वयं गायन भी करती तथा नृत्य भी करती थी। आपका विवाह झालावाड़ रियासत के गुणीजनखानें की सुप्रसिद्ध राजनृत्यांगना कूकी बाई जी के पुत्र नन्हें खाँ के साथ सम्पन्न हुआ था।[38] आपकी सुपुत्री सुरैया बाई भी रियासतकालीन गायिका थी।

19. चाँद बाई जी -

आप महाराव राजा रामसिंह जी के शासनकाल में कोटा रियासत के गुणीजनखानें की प्रसिद्ध गायिका रही है। आपको परिवार में भी संगीत का वातावरण मिला, इस कारण आपका रूझान संगीत की ओर रहा। आपने लगभग 20 वर्षों तक कोटा दरबार में अपनी सेवाएँ दी। आपको काफी पुराने ख़्याल तथा ठुमरियाँ कंठस्थ थी। कोटा रियासत के अलावा भी कई अन्य रियासतों के राजा-महाराजाओं के यहाँ भी आपका गायन हुआ।

[38] हाड़ौती इतिहास लेखमाला - फिरोज अहमद, पृ. सं. 155

20. हसीना बाई जी -

हसीना बाई कोटा रियासत के महाराव साहब राजा शत्रुशाल जी के दरबार की राजनर्तकी रही है। आपका रूझान शास्त्रीय नृत्य की ओर अधिक था तथा कत्थक नृत्य में आप दक्ष थी। दरबार की ओर से आपको पारम्परिक वेशभूषा तथा आभूषण प्रदान किए जाते थे।

21. मोतीलाल जी (भुजवाले) -

आप कोटा रियासत के महाराव राजा उम्मेद सिंह साहब के दरबार में संगीतज्ञ के पद पर आसीन थे। आप हाड़ौती के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में से एक थे। आप सुमधुर कंठ के धनी थे। आपकी आवाज़ की मधुरता व औज की तुलना भारत रत्न प्राप्त शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ साहब से की जाती थी। आपको पं. नारायण राव व्यास की मुद्रिकाओं तथा राजा भैया पूछवालों की तानमालिका के स्वर कंठस्थ थे।[39] कोटा रियासत के उत्तम सारंगी वादक श्री छीतरलाल जी आपके साथ सारंगी पर संगति अवश्य करते थे, जिससे आपके गायन में चार चाँद लग जाते थे। रोग ग्रस्त हो जाने के कारण युवावस्था में ही आपका स्वर्गवास हो गया था। परन्तु कोटा रियासत के संगीत के उन्न्यन में आपकी भूमिका सदैव अविस्मरणीय रहेगी।

22. माँगीलाल राव -

आप लक्ष्मण राव जी के पुत्र थे। आपके पिता के द्वारा ही आपको मृदंग तथा तबला वादन की शिक्षा दी गई थी। आप कोटा रियासत के जगदीश जी मंदिर एवं मथुराधीश जी के मंदिर के मृदंग वादक थे। मथुराधीश जी मंदिर में हवेली संगीत के पदों का ही गायन होता था। आप कोटा नरेश महाराव शत्रुशाल जी के समय में रहे। दरबार में होने वाली संगीत महफिलों तथा संगीत सभाओं में आप ही ज्यादातर कलाकारों के साथ संगति करते थे। सन् 1979 में आपका स्वर्गवास हुआ।

23. धन्नालाल जी -

आप कोटा रियासत के श्री बृजराज जी मंदिर में कीर्तनकार थे। आप महाराव राजा साहब श्री उम्मेद सिंह जी द्वितीय के शासन काल के समय हुए। आपने संगीत की विधिवत शिक्षा अपने पिता जी श्री कंवरलाल जी से प्राप्त की। बृजराज जी मंदिर

---

[39] राजस्थान : संगीत और संगीतकार प्रतापसिंह चौधरी, पृ.सं.96

में गायन के साथ-साथ आप मृदंग तथा हारमोनियम भी बजाया करते थे। आपने लगभग 25 वर्ष तक मंदिर में अपनी सेवाएँ दी। आपके द्वारा गाए जाने वाले हवेली संगीत के पद कुछ इस प्रकार है -

"मोतिन की माल उर हार सोहे मोतिन के चोकी मध्ये नायक बिराजे गोकुलेश्री।
रतन कंचन माल गिनतन कहालो गीनो पहोंची जराव सोहे मुद्रिका सुवेशरी।।1।।
धोती उपरेना धरे केसरी पावरी ओठे बैठे हैससिक सुन्दर सुवेशरी।
श्री विट्ठल कुमार प्राण वल्लभ जन्मदिन अगहन सुदि सातें जान्यो देशदेशरी।।2।।"[40]

24. उमाशंकर जी काबरा –

चित्र सं. 3.10 उमाशंकर जी काबरा का साक्षात्कार लेते
शोधार्थी गुंजन हाड़ा

आपका जन्म सन् 1940 को उरासी गाँव में हुआ। आप गायन, वादन तथा नृत्य तीनों विधाओं में निपूर्ण थे पर प्रमुख रूप से आप महाराव भीमसिंह जी के दरबार के कवि थे। आपने दरबार की प्रशंसा में कई रचनाएँ की है, जिसमें हाड़ा मांड की रचना आपके द्वारा की गई। दरबार के द्वारा आपको कई उपहार भेंट किए गए। कोटा दरबार में अनके उत्सवों पर तथा शादी में भी आपको मांड गायन करने के लिए आमंत्रित किया जाता था। आपके द्वारा दरबार को हाड़ौती का प्रशंसा गीत सुनाया

[40] पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह, भाग 2, वर्षोत्सव के पद (धनतेरस से राखी पर्यन्त), गो. वा. बच्चू भाई जवेरी, पद सं. 29, हवेली कीर्तन संग्रह, श्री गुसाई के बधाई पद, पृ. सं. 214

गया, जिससे खुश होकर दरबार ने आपको सोने की अँगूठी तथा अशर्फी प्रदान की।[41] उस गीत के बोल कुछ इस प्रकार है –

"हाड़ौती नहरा रो प्यारों देश, बुन्दी तो कोटा हाड़ौती की शान छै, हाड़ा राव नरेश चम्बल थारी नहरा सु मनख्या करे कलोल, करसयाना री काची झोपड़ी बंडगी पाकी पोल यो तो धन कुबेर रो देश छै, बून्दी तो कोटा हाड़ौती की शान छै हाड़ा राव नरेश।"

कोटा रियासत की नृत्यागंना के व्यक्तित्व का आंकलन –

आज के परिवेश में जिस नाम से इनको बुलाया जाता है और जो भ्रम इनके बारें में लोगों में प्रचलित है। कई अनुभवी व्यक्ति जो प्रत्यक्ष रूप से किसी महफिल तथा आयोजन में इनसे रूबरू हुए उनके साक्षात्कार करने पर तथा जो गायिकाऐं व ऩर्तकियाँ जो रियासत काल में दरबार में जाया करती थी उनसे साक्षात्कार करके मुझे ज्ञात हुआ कि इन को शिष्टाचार का विशेषज्ञ माना जाता था। इन्हें दरबार की सेवा के लिए नियुक्त किया जाता था, जिनकी व्यक्तिगत सुरक्षा व उत्तम भरण-पोषण का दायित्व भी गुणीजनखाना विभाग का था। इसमें भी सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि इनकी चारित्रिक सुरक्षा एवं जनसंवाद में उनकी प्रतिष्ठा का ज़िम्मा भी इस विभाग के द्वारा किया जाता था। रियासत की ओर से इनकी कला का आंकलन करके इनको आवास भी उपलब्ध कराये जाते थे। राजपूतों में एक प्रथा है कि अपनी पुत्री को नाम लेकर नहीं पुकारा जाता। ज्येष्ठ पुत्री को बाई सा लाल अथवा लाली बाई सा तथा छोटी पुत्री को बाई सा सम्बोधन द्वारा पुकारा जाता था। उसी प्रकार रियासतकालीन नृत्यांगनाओं को प्रतिष्ठित सम्बोधन बाई जी कहकर पुकारा जाता था।

राजपूत शासक उच्च स्तर पर नृत्यांगनाओं को सम्मान प्रदान करते थे। दरबार में नियुक्ति के पूर्व ही इन्हें आचार-विचार, अदब, शिष्टता, तहज़ीब आदि गुणों का प्रशिक्षण दिया जाता था। इनकी आँखों में इतनी अदब झलकती थी जो आज के दौर के लिए प्रेरणा का विषय है। कभी भी यह किसी पुरूष से आँख मिलाकर बात नहीं करती थी। बात करने का अंदाज भी बेहद खास होता था। कलाकार कोई भी हो उसे कलाकार बनने के पूर्व अपने आप को तपाना होता है। कई त्याग तथा गहन साधना करनी होती है, तब जाकर कहीं वो अपना नाम कर पाते है। पहले के समय में

[41] शोधार्थी द्वारा लिए गए साक्षात्कार पर आधारित जानकारी

चाहें नर्तकी हो या गायक सबसे प्रथम अपनी शारीरिक शक्ति का ख्याल रखते थे। उनकी दैनिक दिनचर्या में व्यायाम शामिल था। इसके साथ ही अच्छी खुराक भी लेते थे, तब जाकर घण्टों अपनी कला का अविरल प्रदर्शन कर पाते थे। पहले के दौर में मनोरंजन के कोई ओर साधन तो थे नहीं, इसलिए सप्ताह या दो सप्ताह में तो महफिल सज ही जाती थी। इसलिए इन्हें हर वक़्त अपने आप को कला प्रदर्शन के लिए तैयार रखना होता था। अगर सच की बात की जाए तो रियासतकालीन नृत्यांगना उम्दा कलाकार थी, उनमें भरपूर हूनर था। इनकी ख़ास बात यह थी कि यह पान खाकर ही अपनी प्रस्तुति देती थी। जिस पान में स्वर्ण रजत भस्म, कस्तुरी, मोती चूर्ण आदि मिलाया जाता था। इनकी सेवा के लिए इन्हें दरबार की ओर से सेवक-सेविका भी मिलते थे तथा इनकी साज-सज्जा के लिए इन्हें प्रसादिका भी दी जाती थी, जो इनका श्रृंगार करती थी। इन नर्तकियों को दरबार की ओर से आदेश था कि यह अविवाहित ही रहे। जिसका कारण था कि अगर इनका घर-परिवार हुआ तो फिर यह दरबार में नही आ सकती थी क्योंकि इन पर परिवार की ज़िम्मेदारी हो जाएगी। कुछ राजनर्तकियों को तो दरबार की ओर से हवेली भी प्रदान की जाती थी, जिसमें से कुछ ज़र्जर अवस्था में आज भी देखी जा सकती है।

कोटा रियासतकाल में बने दरबार के राजमहल, अर्जुन महल, झाला हवेली, नान्ता महल, बड़े देवता जी की हवेली में संगीत का चित्रण –

चित्र सं. 3.11 रियासतकालीन संगीत की महफिल का चित्रण

चित्र सं. 3.12 गायन व नृत्य करती भक्तन

चित्र सं. 3.13 हाथी दाँत पर नृत्य करती नृत्यांगना

चित्र सं. 3.14 कोटा गढ़ में तथ्य संकलन करते शोधार्थी गुंजन हाड़ा

कोटा के राजपूत नरेशों के समय में बने झाला हवेली, अर्जुन महल, देवता श्रीधर जी की हवेली के भित्ति चित्रों में संगीत का बहुत ही खूबसूरती के साथ चित्रण हुआ है। कोटा रियासत के नरेशों के शासनकाल में संगीत कला के साथ चित्रकला ने भी खूब उन्नति की। राजकीय संरक्षण प्राप्त चित्रकारों ने एक से बढ़ कर एक नायाब चित्रों को भित्ति पर उकेरा है, जिसके पीछे उनकी अटूट लगन व मेहनत है। महल में जिस स्थान पर चित्र बने है वहाँ सर ऊपर की ओर करके हम लगातार 10 मिनट भी

नहीं देख सकते है, परन्तु उन चित्रों को चित्रकारों ने 10 से 12 घंटे लगातार काम करके 20-25 दिनों में पूर्ण किया है। उनकी मेहनत के अनुरूप ही राजा साहब द्वारा उनको ईनाम प्रदान किए जाते थे।

कोटा के महलों में बन चित्रों में प्रमुख रूप से हमें श्री कृष्ण की लीला संबंधी चित्रण, संगीत समूह व संगीत की महफिलों का चित्रण, वाद्य यंत्र बजाती हुई नायिका, श्री कृष्ण महारास का चित्रण, बाँसुरी वादन करते हुए भगवान श्री कृष्ण का चित्रण, दरीखाने की महफिलों का चित्रण, रथ सज्जा नायिका चित्रण, हिण्डोला सेवा का चित्रण, विभिन्न सवारियों का चित्रण आदि देखने को मिलते है तथा कोटा के शीश महल में नर्तक-नर्तकीयों के चित्र, नृत्य मुद्राओं के चित्र, अंगडाई लेती हुई नायिका, अपने प्रेमी के विरह में बैठी नायिका, कृष्ण बाल-लीला, कालिया नाग दमन लीला, माखन चोरी के दृश्य, गज पर नृत्य करती नृत्यांगना आदि के चित्र देखने को मिलते है। इन चित्रों के माध्यम से कोटा नरेशों की कलाप्रेमिता, कला संरक्षण व संवर्धन आदि के प्रमाण आसानी से देखे जाते है। कलाकार तभी तो अपनी कोई भी कला जिस में वो निपूर्ण है, उसे आकार देगा, जब उसे अपने राजा से प्रोत्साहन व सम्मान प्राप्त होगा। राजपूत नरेशों ने कला को जीवन खुशहालीपूर्ण व्यतित करने का एक साधन माना है।

कोटा रियासतकाल में मंदिरों में भक्ति संगीत –

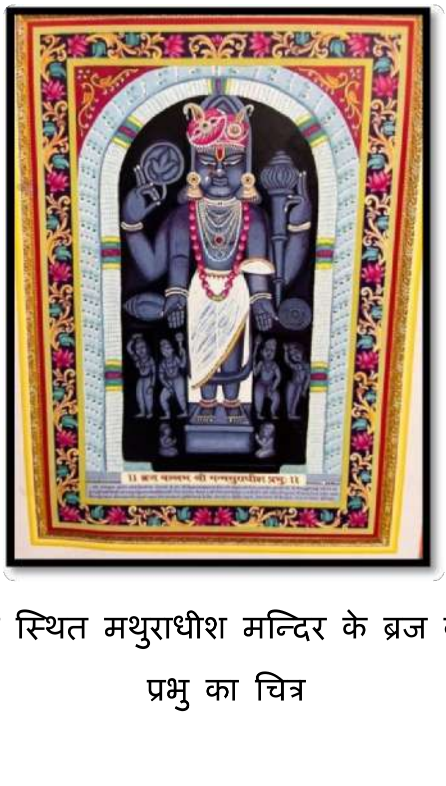

चित्र सं. 3.15 पाटनपोल स्थित मथुराधीश मन्दिर के ब्रज वल्लभ श्री मथुराधीश जी प्रभु का चित्र

यूँ तो भक्ति के कई साधन बताए गए है, पर इन सभी साधनों में से सबसे सरल व सुगम मार्ग संगीत को ही बताया गया है, जिससे बहुत आसानी से ईश्वर के साथ जुड़ाव को महसूस किया जा सकता है। ऐसा ही भक्ति संगीत कोटा शासकों के राज के समय में यहाँ के मंदिरों में फला-फूला जिसे हवेली संगीत के नाम से जाना गया। कोटा तथा बून्दी दोनों ही रियासतों के शासक वल्लभ सम्प्रदाय को मानने वाले रहे है। इनके शासनकाल में अनेको श्री कृष्ण के मंदिरों का निर्माण हुआ। कोटा के पाटनपोल नामक स्थान पर स्थित श्री मथुराधीश जी के मंदिर में विराजित श्री कृष्ण जी की प्रतिमा को ब्रज से ला कर कोटा निवासी भटनागर जी की हवेली में विराजमान किया गया था। कोटा के अधिकांश कृष्ण मंदिरों में वल्लभ सम्प्रदाय की पूजा पद्धति का ही अनुसरण किया जाता है। जिसमें नियमानुसार आठ प्रहर पदों का गायन, वादन, भक्ति-भावना से किया जाता है। भक्ति संगीत धारा में अष्टछाप कवि के पदों को भक्ति भाव से ओत-प्रोत होते हुए निर्धारित राग-रागनियों में ही गाने की परम्परा आज तक कायम है।

इन सभी श्री कृष्ण मंदिरों में रियासत की ओर से चार गायक अथवा कीर्तनकार जो श्री कृष्ण की लीलाओं के पदों का गान करते थे, चार मृदंग वादक, चार सारंगी वादक एवं चार हारमोनियम वादकों को भगवान की सेवा के लिए नियुक्त किया गया था, जिनको राज्य की ओर से निर्धारित वेतन तथा "पेटियाँ" प्रदान की जाती थी। यह संगीत की परम्परा कई वर्षो से आज तक भी चली आ रही है। जिसमें प्रातःकालीन आराधना में श्री कृष्ण के ग्वाल, भोग के पद से लेकर श्रृंगार सेवा शयन के पदों का गायन कई वर्षों से निरन्तर होता आ रहा है। रागों की प्रभुता वाले इस पुष्टिमार्ग में अपने आराध्य भगवान श्री कृष्ण की सेवा राग व संगीत के बग़ैर होना असंभव बताया गया है। अतः हवेली संगीत के सभी मंदिरों में संगीत को विशेष माना गया है। ऐसा हो भी क्यूँ नहीं जो भगवान श्री कृष्ण 16 कलाओं में पारंगत थे तथा अपनी बंसी की धुन के सुमधुर स्वरों से जड़ चेतन ग्वाल, बाल, गईया सभी को मोहित कर लेते थे। उनकी सेवा-पूजा संगीत व राग के बग़ैर कैसे ही संभव हो सकती है। इन मंदिरों में पदों के अलावा ध्रुपद, धमार गायन भी होता है। होली के समय में कई फाग के धमार का गायन होता आया है। कोटा के श्री मथुराधीश जी मंदिर की गायकी श्रीनाथ जी के मंदिर से कुछ भिन्न है। इसका एक कारण यह भी है कि श्रीनाथ जी के मंदिर में जो गायन होता है वो समूह में होता है, परन्तु कोटा के मंदिर

में जो गायन होता है वह एकाकी गायन है। यूँ तो सभी राजपूत नरेशों ने अपने-अपने ईष्ट देव के लिए कुछ ना कुछ खास अवश्य किया है, परन्तु कोटा रियासत के शासकों में से महाराव राजा साहब श्री उम्मेद सिंह जी परमपिता परमेश्वर श्री कृष्ण के ऐसे परम भक्त हुए कि सन् 1970 में सम्पूर्ण राज-पाट अथवा राजगद्दी का त्याग करके संत बन गए तथा अपना उपनाम 'श्री जी' रख लिया और प्रभु के चरणों में ही अपना जीवन व्यतित किया। इनके अलावा महाराव रामसिंह जी तथा ईश्वरी सिंह जी ने भी संगीत कला को भरपूर प्रोत्साहन देते थे। कोटा नरेश महाराव भीमसिंह जी ने भी अपना नाम भीमसिंह से बदलकर कृष्णदास रखा तथा कोटा राज्य का नाम बदलकर 'नंद गाँव' और शेरगढ़ का नाम बदलकर 'बरसाना' कर दिया। यह संगीत धारा कई शताब्दियों से आज भी मथुराधीश जी के मंदिर में अविरल प्रवाहित हो रही है।

हवेली संगीत में अपने ईष्ट देव की सेवा में गाए जाने वाले पद निम्न है –

राग तोड़ी / ताल चारताल स्थायी											
मं											
प	—	प	ग	—	मं	ध	—	ध	प	—	प
छो	—	टो	सो	—	क	न्है	—	या	ने	—	क
×		0		2		0		3		4	
मं	रे	—	ग	—	ग	मं	ग	रे	सा	—	सा
मु	र	—	ली	—	म	धु	—	र	छो	—	टी
×		0		2		0		3		4	
सा	रे	ग	ग	—	ग	मं	ग	—	नि	मं	ध
छो	—	टे	छो	—	टे	स	खा	—	सं	—	ग
×		0		2		0		3		4	
सां	—	सां	रें	नि	ध	ध	ध	—	ध	प	ग
छो	—	टी	स	—	ब	स	र	—	की	—	—
×		0		2		0		3		4	

अन्तरा

रें	—	सां	सां	—	सां	रें	सां	सां	सां	—	सां
छो	—	टी	सी	—	ल	कु	—	ट	हा	—	थ
X		0		2		0		3		4	
नि	—	नि	सां	—	सां	रें	रें	सां	ध	—	प
छो	—	टे	ब	—	च्छ	लि	ये	ये	सां	—	ध
X		0		2		0		3		4	
सां	रें	गं	गं	—	म॑	म॑	रें	रें	सां	ध	म॑ध
छो	—	टी	क	—	ट	छो	—	टी	प	—	ट
X		0		2		0		3		4	
सां	—	सां	रें	नि	ध	ध	—	ध	म॑	—	—
छो	—	टी	पी	—	—	ता	—	म्ब	र	—	—

संचारी

रें	सां	—	सां	—	रें	नि	नि	म॑ध	प	—	प
छो	—	—	टे	—	सें	कुं	ऽ	ल	का	ऽ	न
X		0		2		0		3		4	
रे	ग	—	म॑	—	म॑	ध	ध	ध	प	—	प
मु	नि	—	म	—	न	छू	—	टे	ध्या	—	न
X		0		2		0		3		4	
ध	म॑	ग	ग	—	ग	म॑	रे	ग	रे	—	सा—
छो	—	टे	से	—	ब	ने	—	री	का	—	न्ह
X		0		2		0		3		4	
सा	नि	सा	सा	—	रे	ग	—	—	रें	—	सा
दे	—	खें	गे	—	पी	ध	र	—	की	—	—
X		0		2		0		3		4	

आभोग - "नंददास प्रभु छोटे बांके भेद मोटे मोटे।

खायौ हे माखन सोभा देख्ये री बदन की।।

(स्वरलिपि अन्तरा के समान)"[42]

[42] पुष्टिमार्गीय मंदिरों की संगीत परम्परा, प्रो. सत्यभान शर्मा, पृ. सं. 35-36

राग तोड़ी / ताल धमार

स्थायी

नि													
ध	नि	सा	रे	ग	—	—	रे	—	—	ग	रे	—	सा
ते	रौ	को	ऊ	है	—	—	रे	—	—	क	है	—	या
3										2		0	
साधु	ध	—	—	प	—	—	—	ध	मं	ग	रे	—	सा
सु—	नै	—	—	या	—	—	—	क	न्है	—	—	—	या
3										2		0	

अन्तरा

ध													
मं	ध	नि	सां	सां	—	सां	ध	नि	सां	गं	रें	—	सां
द	धि	मं	रौ	खा	—	य	म	टु	कि	या	फो	—	री
3				X				2			0		
नि	सां	रें	नि	ध	ध	प	—	—	ध	मं	ग	रे	सां
औ	र	प्रा	—	न	न	के	—	—	—	लि	वै	—	या
3				X				2			0		

संचारी

				ग									
				रे	ग	—	रे	सा	सा	—	नि	—	ध
				हा	र	—	में	रौ	तो	—	र्यों	—	क
				X				2			0		
सा	रे	ग	रे	ग	—	—	मं	—	ध	—	प	—	—
म	ल	क	र	मो	—	—	र्यी	—	औ	—	र	—	—
3				X				2			0		
मं	ध	मं	ग	रे	ग	—	मं	—	ध	—	प	प	प
का	—	री	है	उ	र	—	की	—	कं	—	चु	कि	या
3				X				2			0		

आभोगी

							सां						
				सां	सां	—	रें	गं	रें	सां	सां	—	सां
				धो	धी	—	के	—	प्र	भु	हा	—	थ
				X				2			0		
रें	गं	मं	गं	रें	रें	सां	ध	—	नि	नि	ध	ध	प
दू	र	रा	खौ	जा	ने	गी	सा	—	स	न	न	दि	या
3				X				2			0		

'स्वरलिपि'[43]

"श्रवण कीर्तनं विष्णौः स्मरणं पादसेवनम्।

अर्चनं वन्दनं दास्यं संख्यमादमनिवेदंनम्।।

कीर्तन भक्ति का प्रकार पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणाली का प्रमुख अंग है। जिसमें रागात्मक के साथ-साथ लीलात्मक स्वरूप की अभिव्यक्ति की प्रस्तुति है। श्रीमद् वल्लभाचार्य चरण ने अष्टयाम सेवा पद्धति को प्रधानता देकर प्रत्येक दर्शन के समय हेतु अपने इन चार सेवकों सूरदास, कुंभनदास, परमानन्ददास और कृष्णदास को कीर्तन की सेवा प्रदान की। इनके पश्चात इनके छोटे पुत्र परमदयाल, श्री गुंसाई जी, श्री विट्ठलनाथ जी ने अपने चार भक्त कवियों नन्ददास, छीतरस्वामी, गोविन्द सवामी और चतुर्भुजदास स्वामी को सम्मिलित कर अष्टछाप की स्थापना की।

"सम्प्रदाय के मंदिरों में नित्य कीर्तन तथा अन्य उत्सवों में विभिन्न भावों के पदों में प्रयुक्त होने वाली रागों का प्रयोग किया गया है। तोड़ी से संबंधित भाव - पालना, बाललीला, दानरास है।"[44]

मनाये जाने वाले पर्व एवं त्यौहार -

जन्माष्टमी, राधाष्टमी, दान एकादशी, वामन द्वाद्वशी, सांझी, रास एवं मुरली। रास के पदों का गान विशेषकर तोड़ी, सारंग, नट, केदार, कान्हड़ा आदि रागों में किया गया है। दशहरा, धनतेरस, रूपचतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाई-दूज, गोपाष्टमी, कंसवध, देव प्रबोधिनी एकादशी, ब्याह के पद, विट्ठलनाथ जी का उत्सव, संक्रान्ति, बसंत पंचमी, कुंज एकादशी, डोल, होली आदि।

"वर्षोत्सव के समय कीर्तन विभिन्न रागबद्ध करके गाये जाते हैं। रागों का प्रयोग समय, ऋतु एवं इस सिद्धान्त को दृष्टि में रखकर किया गया है।"[45]

"ऋतु उत्सव - भारत की छः ऋतुएँ शरद, हेमन्त, शिशिर, बसंत, ग्रीष्म, वर्षा है। इनके बीच कृष्ण के व्यापक स्वरूप का चित्रण होता है।"[46]

---

[43] पुष्टिमार्गीय मंदिरों की संगीत परम्परा, प्रो. सत्यभान शर्मा, पृ. सं. 37-38

[44] वही ' पृ. सं. 43

[45] वही, पृ. सं. 36-39

[46] वही, पृ. सं. 39

"प्रत्येक झाँकी में श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाओं से संबंधित पदों का गायन समय रस एवं ऋतु सिद्धान्त के आधार पर विभिन्न रागों में गाने के निश्चित विधान की व्यवस्था दी। श्रीनाथ जी के सेवा में राग गायन के साथ विभिन्न वाद्य यंत्रों की व्यवस्था का भी उल्लेख मिलता है।"[47]

श्री गुंसाई जी के बधाई के पद -

राग टोडी

"हेली रस मय श्रीवल्लभ सुत प्रकट भये आज।।

अंग अंग धुति तरंग मधुरावलि केलि प्रसंग हक विशाल भ्रोंह भाल कमनीय साज।।1।।

लीला अमृत रसाल प्रेम भक्ति के प्रतिपाल स्मरण करें निहाल भावकी बांधे पाज।।

पद्मनाभ वागधीश कुंवर केलि कल अखिल अवगाहत प्रेमसिंधु ब्रजजन शिरताज।।2।।

राग टोडी

चतुराई ताकी सांची जो श्रीवल्लभ नंदन जूको स्मरण करे।।

सो जन निकट रहो के दूरै रसना श्री विट्ठलेश धरे।।1।।

सेवा करे के न करे मन कर्म वचन इन्हीं के चरण कमल अनुसरे।

चतुर विहारी जू कहे एसो सेवक मेरे ह्दयते कबहुं न टरे।।2।।[48]

श्री गोकुल नाथ जी की बधाई के पद -

राग टोडी

मोतिन की माल उर हार सोहै मोतिन के चोकी मध्ये नायक बिराजे गोकुलेशरी।।

रतन कंचन माल गिनतन कहालो गीनो पहोंची जराव सोहे मुद्रिका सुवेशरी।।1।।

धोती उपरेना धरे केसरी पावरी ओढे बैठे है ससिक सुनदर सुवेशरी।।

श्री विट्ठल कुमार प्राण वल्लभ जन्मदिन अगहन सुदि सातें जान्यो देशदेशरी।।2।।[49]

---

[47] संगीत चिंतन, डॉ. सुरेखा सिन्हा, पृ. सं. 32

[48] पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह भाग 2, वर्षोत्सव के पद (धनतेरस से राखी पर्यनत), गो. वा. बच्चूभाई जवेरी, पृ. सं. 171, पद सं. 76-77, हवेली कीर्तन संग्रह, श्री गुंसाई के बधाई पद

[49] पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह भाग 2, वर्षोत्सव के पद (धनतेरस से राखी पर्यनत), गो. वा. बच्चूभाई जवेरी, पद सं. 29, हवेली कीर्तन संग्रह, श्री गुंसाई के बधाई पद, पृ. सं. 214

राग टोडी

नीको बन्यो मंदिर सुंदर प्राणवल्लभको बैठे प्राननाथ देखे अखियाँ सिरतरी।।

मखमली छत और पिछवाई सब जरतारी सोहत सिंघासन बिछोना भांति भांतिरी।।1।।

मोतिन को माल उर हार सुकुमार कंठ चोकीमध्य सुदेश गन पांतिरी।।

धोती उपरेना सुखदेना सोंधेसो लपटात पहुँची जराय कान कुंडल की कातिरी।।2।।[50]

मकर संक्रान्ति भोजन के पद -

राग टोडी

लाडीले ललन चलो वेग भोजन करन ठाडे निज भवन देखत बाट ब्रजराज।।

बोलत तुतरात दोऊ भ्रात बूझत बात चुम मुख तात कह्यो बैठो भोगी आज।।1।।

खीर चीला अपूप फीके मीठे बहुत चुपर कर नवनीत जेंवो धरे तुम काज।।

औरहु पकवान मन भाये धराये लया कृष्णदासनि नाथ थासर भर-भर साज।।2।।[51]

---

[50] पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह भाग 2, वर्षोत्सव के पद (धनतेरस से राखी पर्यनत), गो. वा. बच्चूभाई जवेरी, पद सं. 26, हवेली कीर्तन संग्रह, श्री गुंसाई के बधाई पद, पृ. सं. 214

[51] पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह भाग 2, वर्षोत्सव के पद (धनतेरस से राखी पर्यनत), गो. वा. बच्चूभाई जवेरी, पद सं. 9, हवेली कीर्तन संग्रह, श्री गुंसाई के बधाई पद, पृ. सं. 237

चतुर्थ अध्याय

झालावाड़ रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान

चतुर्थ अध्याय

झालावाड़ रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान

1. झालावाड़ रियासत की स्थापना
2. झालावाड़ रियासत के प्रमुख शासक
3. झालावाड़ रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान
4. झालावाड़ रियासत का गुणीजनखाना
5. झालावाड़ रियासत के दरबारी संगीतज्ञ

1. झालावाड़ रियासत की स्थापना –

डॉ. राम प्यारी शास्त्री के ग्रंथ राज राणा जालिम सिंह झाला में वर्णित है कि कोटा के दीवान जालिम सिंह झाला (झाला राजपूत गुजरात से आकर कोटा में आवासित हो गए थे, जालिम सिंह झाला ने सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त करके रियासत में सेवा कार्य प्रारंभ किया। अपनी योग्यता व कुटनीतिक चातुरी से उसने राज्य सेवा में उच्च पद प्राप्त कर लिए अंततः वह दीवान के दायित्व तक पहुँच गए।) ने इस रियासत पर अपनी पकड़ अत्यधिक सुदृढ़ कर ली थी। उन्होंने अनेक हाड़ा सरदारों (ज्ञातव्य है कि कोटा राज्य के हाड़ा प्रथम नरेश राव माधोसिंह के नाम से माधाणी हाड़ा कहलाते थे, तत्पश्चात् इन्हें किशोर सिंह हाड़ा संज्ञापित किया गया, इनके रीति रिवाज़ डिंगल भाषा, दुर्गा, आशापूर्णा तथा महादेव की उपासना में संस्कृतिबद्ध थे दूसरी ओर झाला राजपूत गुजराती संस्कृति के साथ कुटनीतिज्ञ दक्षता में लिप्त थे।) को रियासत से निर्वासित तक कर दिया था, दूसरी ओर उन्होंने मराठाओं के राज की सभी रियासतों पर बढ़ते अनुचित प्रभाव को राजनैतिक प्रयत्नों से कोटा में समाप्त कर दिया था, यही नहीं उन्होंने English East India Company से कोटा को संधिबद्ध करके रियासत को बाह्य आक्रमणों से सुरक्षित भी कर लिया, इसी संधि के द्वारा जालिम सिंह ने स्वयं के व अपने उत्तराधिकारियों के लिए कोटा रियासत के दीवान का पद वंशानुगत रूप से स्वीकृत करवा लिया। जालिमसिंह ने कोटा में अपनी दो हवेलियाँ निर्मित भी करवाई, जिनसे उनके परिवार का राजसत्ता पर प्रभाव सिद्ध हो गया। 1817 ई. की पूर्वोक्त संधि के पश्चात् कोटा नरेश महाराव किशोरसिंह द्वितीय से

जालिम सिंह व उसके उत्तराधिकारी माधोसिंह जी के संबंध उत्तरोत्तर कटुतापूर्ण होते गए। किशोरसिंह जी के उत्तराधिकारी महाराव रामसिंह व माधोसिंह के संबंधों में राज्य प्रशासन के संदर्भ में वैमनस्य बढ़ता गया। कम्पनी प्रशासन ने सदैव झाला परिवार का पक्षपोषण किया। इसी क्रम में अंततः माधोसिंह के उत्तराधिकारी मदन सिंह झाला को 8 अप्रेल, 1838 ई. को श्री सी.यू.ऐचीसन के ग्रंथ A Collection of Treaties, Engagements and Sanads Relating to India and Neighbouring Countries, Volume. 3 में वर्णित समझौते के अनुसार झालावाड़ नामक नया राज्य प्रदान किया गया, मदन सिंह झाला को महाराज राणा की उपाधि व कोटा राज्य के अग्रांकित 17 परगने सौंप दिए। इस नवोदित राज्य को कम्पनी की सहायक सन्धि के पश्चात् नमक की सन्धि भी करनी पड़ी, इसमें उत्तराधिकारी गोद लेने की सनद भी प्राप्त हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व तक झालावाड़ राज्य 'Agent to The Governor General' राजपूताना के अधिक हाड़ौती एण्ड टौंक पोलिटिकल ऐजेन्सी द्वारा नियंत्रित था। यहाँ की सभी गतिविधियों की सूचनाएँ पोलिटिकल ऐजेन्ट द्वारा A.G.G. व गर्वनर जर्नल एवं वायसराय को दी जाती थी। जिसके रिकॉर्ड National Archives of India, New Delhi में संरक्षित है। झाला राजपूतों की अभिरूचि ललित कलाओं के प्रति अगाध थी। कोटा रियासत की दोनों झाला हवेलियों में निर्मित भित्ति चित्रों से भी इसके प्रमाण मिलते हैं। एक चित्र में वीणावादन करती नारी के मदिरा पात्र में एक तोता चोंच डाले हुए प्रदर्शित है। रागमाला के चित्र भी इनमें तुलिकाबद्ध है। इसी पद्धति पर झालाओं ने झालावाड़ व झालरापाटन में निर्मित हवेलियों तथा गढ़ में संगीत गोष्ठियों के आयोजन करके इस राज्य की संस्कृति को समुन्नत बनाया। भवानी सिंह जी झाला द्वारा निर्मित नाट्यशाला संगीत आयोजनों का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। यहाँ की संस्कृति में मालवी मिश्रित दक्षिणी डिंगल भाषा प्रचलित थी इस कारण यहाँ के लोक गायन पर मालवा क्षेत्र का अत्यधिक प्रभाव था। यहाँ के विद्यालयों में झालावाड़ राज्य का इतिहास एक विषय के रूप में इसी उद्देश्य से निर्धारित किया गया कि विद्यार्थियों को अपनी सरस संस्कृति का ज्ञान हो सके। झालरापाटन स्थित लकड़ी का रैन बसेरा नामक महल संगीत गोष्ठियों से अभिजात्य वर्ग के मनोरंजन का स्त्रोत बन गया। महाराज राणा हरिशचन्द्र सिंह झाला ने पाश्चात्य संगीत विधा को भी यहाँ प्रचलित किया। इस रियासत की एक विशेषता थी कि स्वयं झालावाड़ नरेश विद्यालयों के संगीत कार्यक्रमों की अध्यक्षता करते थे। स्वर्गीय कविवर रघुराज सिंह जी हाड़ा के साक्षात्कार में ऐसे अनेक दृष्टान्त उपलब्ध है। झालरापाटन के सूर्य मन्दिर में भक्ति

संगीत इस रियासत का प्रमुख आकर्षण था। इसी भाँति झालरापाटन का कार्तिक मेला भी संगीत की प्रस्तुति का एक स्त्रोत बन गया है।

2. झालावाड़ रियासत के प्रमुख शासक –

- महाराज राणा मदन सिंह जी
- महाराज राणा पृथ्वी सिंह जी
- महामहिम महाराज राणा जालिम सिंह बहादुर जी
- महाराज राणा भवानी सिंह बहादुर
- महाराज राणा राजेन्द्र सिंह जी बहादुर

महाराज राणा मदन सिंह जी –

आप झालावाड़ के प्रथम शासक बने। आपका जन्म सन् 1808 ई. में हुआ। सन् 1838 ई. में कोटा के महाराव की रज़ामंदी से कोटा राज्य से अलग होकर जालिम सिंह झाला के वंशजों के लिए एक अलग प्रावधान के रूप में झालावाड़ को नई रियासत बनाने का संकल्प किया गया तथा मदन सिंह जी ने महाराज राणा की उपाधि प्राप्त की और इन्हें राजस्थान राज्य के अन्य शासकों के समान ही दर्ज़ा प्रदान किया गया। सन् 1822 में रामपुरा के राव साहब की बेटी चंद्रावती जी से आपका विवाह हुआ। महाराज राणा कला में भी रूची रखते थे।

महाराज राणा पृथ्वी सिंह –

आप झालावाड़ रियासत के द्वितीय शासक बने। आपका जन्म सन् 1830 ई. में हुआ। तब ये कोटा रियासत के दीवान व प्रधानमंत्री राजराणा माधोसिंह झाला के भंवर अथवा पौत्र थे। जब इनकी अवस्था 8 वर्ष की हुई तब इनके पिता मदन सिंह झाला 1838 ई. में स्वतंत्र झालावाड़ राज्य के शासक व महाराज राणा की उपाधि के स्वामी बन गए। अब महाराज कुमार पृथ्वी सिंह का पालन पोषण, राजसी वैभव की पृष्ठभूमि में होने लगा। इनकी 15 वर्ष की अल्प आयु में ही पिता की मृत्यु के कारण इन्हें राजसिंहासन ग्रहण करना पड़ा। अपने पराधीनता विरोधी विचारों के कारण उन्होंने 1857 ई. की क्रांति के दौर में सेनानायक तात्या टोपे को झालावाड़ राज्य से सुरक्षित अन्यत्र गमन करने दिया।[1] इन्होंने बड़ी कोठी पृथ्वी विलास नामक महल बनवाया।

[1] ललित शर्मा : झालावाड़ इतिहास, संस्कृति और पर्यटन, पृ.सं.20

इनके दरबार में अनेक कलाकारों को संरक्षण प्राप्त था। मुख्यतया इन्होंने गुणीजनखाने को पर्याप्त धनराशि आवंटित की।

महामहिम महाराज राणा जालिम सिंह बहादुर –

आप झालावाड़ रियासत के तृतीय शासक बने। आपका जन्म 5 नवम्बर, 1865 ई. में हुआ। वढवान के कुमार श्री बख्त सिंह जी केसरीसिंह जी के रूप में अपने पूर्ववर्ती द्वारा गोद लिए गए जो 24 जून 1876 को गद्दी पर बैठे तथा सन् 1884 ई. को आपको शासन करने की शक्तियाँ सौंपी गई। आपके द्वारा राज्य का प्रशासन सुचारू रूप से नहीं कर पाने के कारण ब्रिटिश सरकार के साथ आपके संबंध तनावपूर्ण हो गए, जिसके परिणामस्वरूप 2 मार्च 1896 को आपको झालावाड़ रियासत के नरेश के पद से हटा दिया गया।

महाराज राणा भवानी सिंह जी बहादुर –

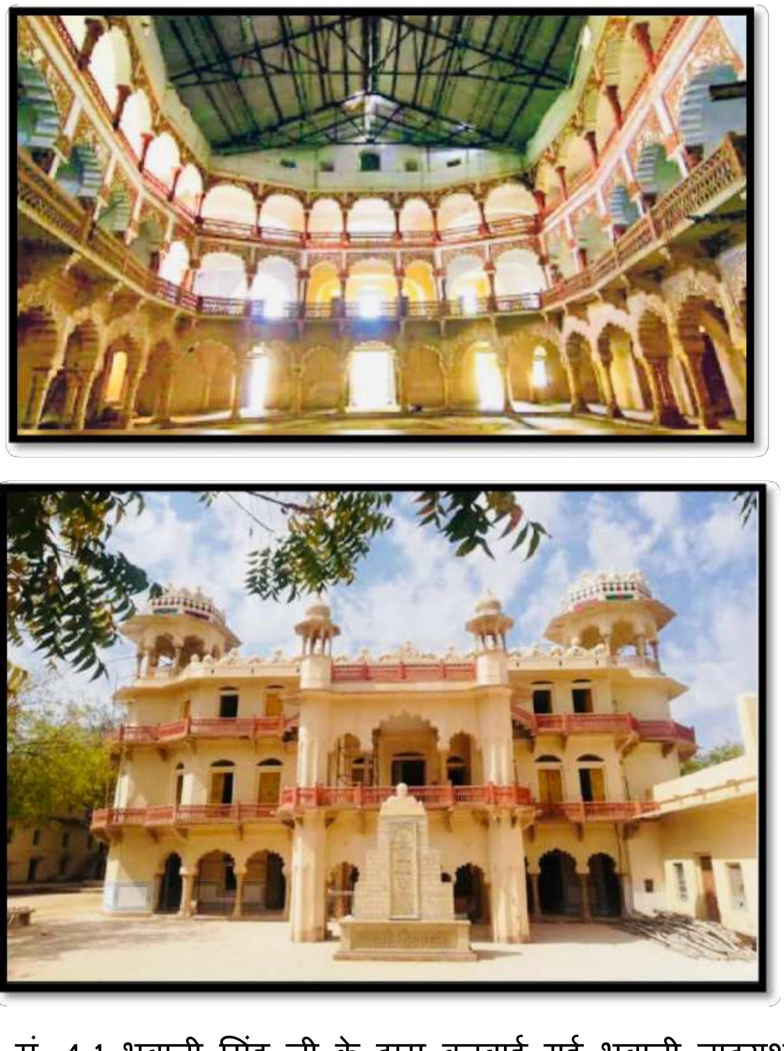

चित्र सं. 4.1 भवानी सिंह जी के द्वारा बनवाई गई भवानी नाट्यशाला

आप झालावाड़ रियासत के चतुर्थ शासक बने। आपका जन्म 3 सितम्बर 1874 ई. में झालावाड़ के फतेहपुर के ठाकुर श्री चतरसाल जी के पुत्र के रूप में हुआ। आप गुणी, विद्या अनुरागी तथा कला प्रेमी शासक थे। आपने अपने समय में दरबार में अनेक साहित्यकारों, कवियों, नर्तक, नर्तकियों को, शायरों को, संगीतज्ञों को तथा वादकों को आश्रय प्रदान किया था। आपके द्वारा झालावाड़ में ओपेरा शैली पर बनी एक विशाल नाट्यशाला का निर्माण करवाया गया, जो भवानी नाट्यशाला आज भी आपकी संगीत कला के प्रति अत्यधिक प्रेम को प्रदर्शित करती है।

महाराज राणा राजेन्द्र सिंह जी देव बहादुर –

आप झालावाड़ रियासत के पंचम शासक बने। आपका जन्म 15 जुलाई 1900 ई. को हुआ। आपने सन् 1929 से 1943 ई. तक शासन किया। आप कुशल शासक तो थे ही साथ ही आप एक श्रेष्ठ कोटि के कवि भी थे। आप अपने नाम के साथ उपनाम 'सुधाकर' लिखते थे। आप हिन्दी भाषा के कवि होने के साथ उर्दू भाषा में भी शायरी लिखा करते थे। आपके शासन काल में संगीत कला का भी भरपूर विकास हुआ। आपका शासन काल साहित्य, कला तथा विकास कार्यों की दृष्टि से झालावाड़ रियासत का स्वर्णिम युग माना जाता था।

3. झालावाड़ रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान –

चित्र सं. 4.2 झालावाड़ नरेश अपने दरबारियों के साथ

झालावाड़ रियासत में अनेक ऐसे कलाकार हुए, जिनका नाम शीर्ष कलाकारों में आज भी लिया जाता है। रियासत काल के समय में सार्वजनिक मनोरंजन के बहुत

सीमित साधन थे। इस कारण राज-दरबारों में मन्दिरों में ही कलाकारों की कला को पुरूस्कार, आश्रय व प्रोत्साहन मिलता था। विश्वप्रसिद्ध सितार वादक रविशंकर जी भी झालावाड़ रियासत के गुणीजनखाने में उच्च कोटी के कलाकारों में शामिल थे तथा विश्वप्रसिद्ध नर्तक उदयशंकर जी भी झालावाड़ रियासत के गुणीजनखाने के कलाकार थे।

झालावाड़ रियासत के शासक भवानीसिंह जी हर एक कला में रूची रखते थे तथा कलाकारों को प्रोत्साहन देते थे इसका सबसे बड़ा उदाहरण फारसी औपेरा शैली में वास्तुकला की भव्यता के साथ निर्मित भवानी नाट्यशाला है, जिसे समस्त उत्तरी भारत में एक मात्र अलग तरह का प्रेक्षागृह होने का गौरव प्राप्त है। जिसमें 16 जुलाई सन् 1921 ई. को महाकवि कालिदास जी द्वारा रचित अभिज्ञान शाकुंतलम् प्रथम नाटक के रूप में मंचन किया गया था। महाराज राणा भवानी सिंह जी नाटक, अभिनय के साथ संगीत की महफ़िलों का आयोजन भी समय-समय पर करवाते रहते थे। इन्होंने अनेक साहित्यकारों को भी दरबार में आश्रय दिया। हिन्दी, खड़ी बोली के अनेक कवि इनके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। 'अमर काव्य वंशावली' नामक ग्रंथ में इनके आश्रित अनेक साहित्यकारों के उल्लेख हैं। यह स्वयं संगीत के शास्त्रीय पक्ष के मर्मज्ञ थे, अतः कलाकारों के चयन व प्रोत्साहन में इनकी व्यक्तिगत रूची का योगदान रहता था। इनके व्यक्तित्व का आकर्षण इतना ज़्यादा चर्चित था कि प्रायः लोक कलाकार इनके सम्मुख प्रस्तुति देने को जिज्ञासु रहते थे। परिणामस्वरूप लोक संगीत में भी राज्य में संरक्षण प्राप्त किया। उच्च कोटी के कलाकारों के वेतन व अन्य सुविधाओं के प्रति इनकी व्यक्तिगत रूची कलाकारों का सम्बल बन जाती थी।

झालावाड़ नरेश राजेन्द्र सिंह सुधाकर जी स्वयं उच्च कोटी के कवि थे। उन्होंने अपने शासन काल में कलाकारों को खूब प्रोत्साहन दिया। इसी कारण इनके शासन काल में अनेक बेहतरीन गायक व वादक झालावाड़ रियासत में आ कर रहे। झालावाड़ के कलाप्रिय नरेशों में आपका नाम लिया जाता है। आप आस-पास की रियासतों से भी संगीतकार, कवि, चित्रकार, साहित्यकार आदि को अपनी रियासत में बुलाकर उन्हें आश्रय प्रदान करते थे। राजेन्द्र सिंह सुधाकर जी अपने दरबार में जिन भी कलाकारों को आश्रय देते थे, उनकी सुख-सुविधाओं पर दिल खोलकर खर्चा किया करते थे, जैसे की शादी-ब्याह के समय आर्थिक सहायता, शीत ऋतु में पहनने के लिए गर्म वस्त्र, आवास की उत्तम व्यवस्था आदि। दरबार में यह प्रथा भी प्रचलित थी कि

गुणीजनखाने के कलाकार का स्वर्गवास हो जाने पर उनके स्थान पर उनके ही परिवार के उत्तराधिकारी कलाकार को नियुक्त किया जाता था।

हिन्दी भाषा में आपकी तीन कृतियाँ 'मधुशाला-मधुबाला', 'सवैया शतक', 'सुधाकर काव्य' झालावाड़ नरेश की कई कविताओं की रचना की जो इस प्रकार है-

1. कह के लिखके जिस भाँति बने,
निज देश दशा को सुधारत है।
समझाया के अन्तर की बतियाँ,
सब द्वेष कलेश निवारत है।
तुम मानों न मानो स्वतंत्रता है,
यह प्रेम सुधारस धारत है।
इतना बस ध्यान रहे सब भांति,
'सुधाकर' को प्रिय भारत है।

2. 'सत्य–प्रेम के अंगूरों की खींची है अनुपम हाला।
भारत की जय हो जय हो, कह पियो सभी उसका प्याला
आर्यवीर हो भारत के तुम पी-पी कर सब खुल खेलो
देती यह सन्देश सभी को प्रतिपल मेरी मधुशाला'

3. परवाह नहीं जो जान भी जाए तो ग़म नहीं
मरना वतन के वास्ते जीने से कम नहीं
देता है चमक ओर भी सोना कटा हुआ
पिसने के बाद देती है हिना रंग कम नहीं
जलती नहीं जब आत्मा पड़ कर के आग में
फिर देश की भलाई में मरने का ग़म नहीं
पड़ कर क़फ़स में शेर ने ना छोड़ा गरजना
घबराना विपदा देख के क्षत्रीय धर्म नहीं
''मरदानगी का शेवा है देना किसी का साथ
आफत में हाथ छोड़ दे, ऐसे वो हम नहीं''
'कृष्ण' प्रार्थना है 'सुधाकर' की आप से

सर ज़ालिमों का किस लिए होता क़लम नहीं
विद्या, बल, बुद्धि सब देश हित में ही लगे,
'सुधाकर' प्रेम हाये द्वेष का ना लेश हो।।
खाते, पीते, सोते, बैठे देश का ध्यान रहे,
देश हित रक्षाकारी भारत का वेष हो।।
भारत के हित में ही तन्मय हो वृत्ति सारी,
मंत्र से स्वतंत्रता के गूंजता स्वदेश हो।।

सुधाकर काव्य कला की कुछ पंक्तियाँ निम्न है –

सुन्दर सरोवर हो खिले हो सरोज रम्य,
पंछी के कलरव हो आलि की गुंजार हो।
शीतल सुगन्ध मन्द बहता समीरण हो,
हृदय में लबालब भरा प्रिय प्यार हो।
'सुधाकर' स्नेह साने-रसिकों की संगति हो,
रमणीय कविता का सरस विचार हो।
दुर्जनों से दूर प्रेम कुटि में निवास हो,
तो स्वर्ग का सुख मुझे यहीं पर अपार हो।
प्यारी-प्यारी घन रस घटा आभा में छा रही है,
धीमे-धीमे मधुर रव से प्रेयसी गा रही है।
देखो देखो हरित वन है, हो रहा सौरव्यदाई,
वर्षा ने क्या अनुपम छटा विश्व को ये दिखाई।

मधुशाला – मधुबाला से कुछ पंक्तियाँ –

1. नाच रहे हैं मोर खुशी से, बरस रहा घन मतवाला
पपीहा बोल रहा है पी पी, चलता प्याले पर प्याला
मस्तानों को पिला रही है हाला ला ला कर निखरी
मस्ती में खुद आती जाती आती जाती मधुशाला
2. बड़ा मनोहर बाग लगा है फूल खिले आला आला
कहीं मोगरा कहीं चमेली कहीं मोगरा गुललाला

मतवालों की महफ़िल बैठी, हर दूब पर खुशतर है

छक छककर है सुधा पिलाती, आज सभी को मधुशाला[2]

4. झालावाड़ रियासत का गुणीजनखाना –

'गुणीजनखाना' से आशय है गुणीयों की खान अथवा अगर इसे सरल शब्दों में कहा जाए तो ऐसा विभाग जो कलावंतों, गायकों, वादकों, नृत्यांगनाओं व गुणियों की खान था। इस विभाग में नियुक्त कलाकारों को राज्य की ओर से आवास व अलग-अलग विधाओं में निपुर्ण कलाकारों को उनकी योग्यता, गुणों के अनुसार निर्धारित वेतन नियमित रूप से प्रदान किया जाता था तथा जब यह कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन राज्य के नरेश के सम्मुख करते थे तो नरेश की ओर से इन्हें बेशक़ीमती उपहार भी पुरूस्कार स्वरूप प्रदान किये जाते थे। झालावाड़ रियासत में भी अन्य रियासतों की तरह गुणीजनखाना चलता था। जिसमें एक से बढ़कर एक बेहतरीन कलाकार शामिल थे। महाराजा भवानीसिंह जी स्वयं उच्च कोटी के नाट्यकार एवं कवि थे। झालावाड़ रियासत में कई महान संगीतकार, नृत्यक व वादक हुए जिन्होंने अपने हुनर से झालावाड़ का नाम हिन्दुस्तान ही नहीं अपितु विदेश में भी रौशन किया। गुणीजनखाना विभाग में कलाकार को नियुक्त करने से पूर्व कुछ निर्धारित मापदण्डों पर खरा उतरना आवश्यक था। जैसे गुणीजनखाना में किसी गायक को नियुक्त करने से पूर्व यह ज़रूरी था कि गायक सुरीले कंठ वाला अवश्य हो, गायक गायन की किस विधा में निपूर्ण है, गायक को राग का ज्ञान होने के साथ-साथ राग-रागीनियों की पहचान होना आवश्यक था। इसी प्रकार गुणीजनखाना में जब किसी नर्तक व नर्तकी को नियुक्त किया जाता था तो उसके लिए भी कुछ मापदण्ड का होना आवश्यक था जैसे नर्तक व नर्तकी को कत्थक, लोक नृत्य का ज्ञान होना आवश्यक था इसके साथ ही नर्तकी का सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व का होना आवश्यक था।

प्रत्येक राजपूत राज्य में जिस प्रकार कलाकारों के लिए अलग-अलग नाम के विभाग होते थे। उस ही प्रकार झालावाड़ रियासत के गुणीजनखाने में भी एक से बढ़कर एक बेहतरीन कलाकार हुए। गुणीजनखाने का प्रमुख कार्य राज दरबार में संगीतकारों, गायकों, नर्तक, नर्तकीयों, वादकों एवं किन्नरों को राज्याश्रय एवं प्रोत्साहन प्रदान करना था।

---

[2] सुधाकर जी की कविता, फ़िरोज़ अहमद : हाड़ौती इतिहास, पृ.सं. 301, 302, 303

राज्य के बहीखातों में गुणीजनखाने सम्बन्धी व्यय का ब्यौरा यह प्रमाणित करता है कि इनके भोजन, आवास व इनके स्वास्थ्य की भली भाँति देखभाल की जाती थी। कहीं-कहीं इस विभाग द्वारा भांड व नक्कालों पर भी व्यय किया जाता था। इस विभाग के लिए जब कभी कलाकारों की आवश्यकता किसी धार्मिक उत्सव में होती थी तो राज्य के पूण्यार्थ विभाग से इस मद पर व्यय करवाया जाता था। शासकों की निज़ी यात्राओं में भी कलाकारों का सानिध्य होता था। इस समय विशिष्ट कलाकारों को ही प्रस्तुति का अवसर प्राप्त होता था। जन श्रुतियों से विदित है कि शासकों की आखेट यात्राओं एवं बारातों की यात्रा में विशिष्ट कलाकारों की भूमिका की अत्यधिक आवश्यकता थी राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर में स्थित रिकार्ड में ऐसी यात्राओं के समय गुणीजनखाने के व्यय का ब्यौरा अंकित पाया जाता है। इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी से बून्दी, कोटा व झालावाड़ की सहायक सन्धियों के उपरान्त जब कम्पनी के अधिकारियों का इन राज्यों में दौरा होने लगा तब उनके मनोरंजन के कारण इस विभाग पर व्यय भार बढ़ गया। पाश्चात्य अधिकारियों व दोनों विश्वयुद्धों के समय इन राज्यों से गुज़रने वाली सैन्य टुकड़ियों का भी मनोरंजन इसी विभाग का दायित्व था। इससे राज्य को दोहरे लाभ हुए प्रथमतया राजपूत रजवाड़ों की प्रतिष्ठा ब्रिटिश प्रशासकों के सन्मुख प्रबल हो गई दूसरी ओर हाड़ौती की कला संस्कृति का प्रभाव पाश्चात्य जगत में चर्चित हो गया। प्रो. सुमीत सरकार के ग्रन्थ आधुनिक भारत का विवरण है कि आस्ट्रेलिया, न्यूजिलेण्ड व यू.के. के सैनिकों का इस काल में निवास भारी संख्या में रहा। तब गुणीजनखाना यहाँ की लोक संस्कृति का प्रतिनिधि बन गया। जिसके परिणामस्वरूप महाराज राणा हरिशचन्द्र सिंह जो झालावाड़ के अन्तिम नरेश थे को इंग्लेण्ड में भारत का नवउच्चायुक्त बनाया गया। तब उन्हें लन्दन में झालावाड़ के कलाकारों की प्रशस्ति से अवगत कराया गया। उनके पुत्र व पूर्व रियासत के उत्तराधिकारी महाराज राणा इन्द्रजीत सिंह अपने पिता के संस्मरणों में बतलाते हैं कि इन स्कूलों में झालावाड़ रियासत के गायन/वादन की ख़्याति बढ़ी चढ़ी थी। यही नहीं हरिशचन्द्र सिंह के पिता ने गंगपुर के मन्दिर में दलित जाति के सदस्यों से भक्ति संगीत की प्रस्तुती भी प्रचलित करवाई थी।

झालावाड़ रियासत में संचालित होने वाले गुणीजनखाने में नर्तकीयों को भी राज्याश्रय प्रदान किया जाता था। जो नर्तकियाँ दरबार में शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुति तो देती ही थी साथ ही लोक गीतों, रजवाड़ी मांड तथा स्थानीय भाषायी गीतों की भी

प्रस्तुति देती थी। जिन्हें प्रस्तुति के लिए दरबार की ओर से स्वर्ण-रजत जड़ित पौशाकें प्रदान की जाती थी, जिन्हें पहन कर ही दरबार में अपनी प्रस्तुति के लिए प्रस्तुत होती थी।

गुणीजनखाना का कार्य तथा व्यवस्था इस प्रकार थी कि इसमें नियुक्त कलाकारों, संगीतकारों, विद्वानों को राज्य की ओर से निर्धारित वेतन नियमित रूप से प्रदान किया जाता था। कलाकार, कवि, चित्रकार, संगीतकार, नाटककार आदि अपनी कला का प्रदर्शन कर उचित सम्मान तथा पुरूस्कार प्राप्त करते थे। कभी-कभी तो किसी विशिष्ट उत्सव व महफ़िल पर जब राजा को कलाकार की कला पसन्द आती थी तो राजा साहब कलाकार को उपहार स्वरूप जागीर, ज़मीन भी प्रदान करते थे।

झालावाड़ रियासत के गुणीजनखाने के अंतर्गत विभिन्न कलाकारों को नियुक्त किया गया था। जिसमें पं. उदयशंकर जी, पं. रविशंकर जी, नवल किशोर जी, कुकी बाई, सादिक अली, मुहम्मद अली खाँ, प्यारे इमामुद्दीन, मुरलीधर शर्मा, करीम बख्श, अमीर बख्श, भूरा जी, गेंदा खाँ, नन्हें खाँ, नारायण लाल जी, हरिशंकर राव, भंवरलाल राव, श्रीलाल जी, मथुरालाल जी, धन्नालाल जी, कन्हैयालाल जी, भवानीशंकर जी, नन्दकिशोर जी आदि के नाम प्रमुख हैं।

गुणीजनखाने में नियुक्त कलाकारों का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पत्नि तथा परिवार के सदस्यों से किसी एक को राहत राशि प्रदान की जाती थी, इस विभाग में कार्यरत कलाकार को अपनी कला की साधना करने के अलावा कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं होती थी।

नौका विहार में संगीत –

चित्र सं. 4.3 नौका विहार में संगीत महफ़िल का चित्रण

रियासतकाल के समय में राजपूत शासक नौका विहार के लिए जाते थे। राजपूत रजवाड़ों में नौका विहार व जल क्रीड़ा करते वक्त संगीत का आनंद लेने की अभिजात्य वर्गीय वृत्ति उल्लेखनीय है। इसका शब्द चित्र विवरण लक्ष्मी कुमारी चुड़ावत जी ने भी अपनी पुस्तक 'सांस्कृतिक राजस्थान' में किया है। नौका विहार करते समय जो नाँव जल विहार के लिए चुनी जाती थी। उसको सभी ओर से पुष्पों से सजाया जाता था। नाव में बैठने के लिए मखमल की चादर मसन्द आदि के साथ राजा के लिए पान, हुक्का आदि भी रखे जाते थे। इस ख़ूबसूरत नाव को 'बजरा' कहा जाता था। समीक्षाधीन तीनों रियासतों में जल के व्यापक स्त्रोत हैं, बून्दी में जैत सागर तालाब, कोटा में किशोर सागर तालाब व झालावाड़ में चन्द्रभागा नदी इत्यादि जन श्रुतियों में भी साक्ष्य है कि राज परिवारों के सदस्य प्रायः नौका विहार करते थे। इस समय राजा साहब के बजरे के साथ दूसरी नाव में गायक-गायिकाएँ तथा वाद्य वादकों के समूह अपनी गीत-संगीत की प्रस्तुति देते रहते थे। एक अन्य नौका से दास-दासियाँ गर्म व्यंजन राजा साहब के बजरे में प्रदान करते रहते थे। गीत-संगीत का यह क्रम घंटों तक जारी रहता था। इसमें प्रायः कलाकारों को इनाम इकराम भी प्रदान किये जाते थे। झालावाड़ नरेश भवानीसिंह झाला द्वारा भेंट की गई अमूल्य वस्तुएँ वर्तमान तक कलाकारों के परिवारों में सुरक्षित हैं। इस मनोरंजन युक्त क्रीड़ा में प्रायः जल में तैरते वक़्त भी संगीत का आनंद लिया जाता था। यह कलाकारों के उत्साहवर्धन का महत्वपूर्ण दृष्टांत होता था।

झालावाड़ रियासत के प्रमुख दरबारी संगीतज्ञ, कलावंत –

1.	पं. रवि शंकर जी	12.	गेंदा खाँ
2.	पं. उदयशंकर जी	13.	नारायण लाल जी
3.	मुहम्मद अली खाँ	14.	नन्हें खाँ
4.	प्यारे इमामुद्दीन	15.	हरिशंकर राव
5.	अमीर बख्श	16.	भंवरलाल राव
6.	कुकी बाई	17.	श्री लाल जी
7.	नवल किशोर जी	18.	मथुरालाल जी
8.	सादिक अली खाँ	19.	धन्नालाल जी

9.	मुरलीधर शर्मा	20.	कन्हैयालाल जी
10.	करीम बख्श	21.	भवानीशंकर जी
11.	भूरा जी	22.	नन्दकिशोर जी

5. झालावाड़ रियासत के दरबारी संगीतज्ञ -

उदयशंकर जी-

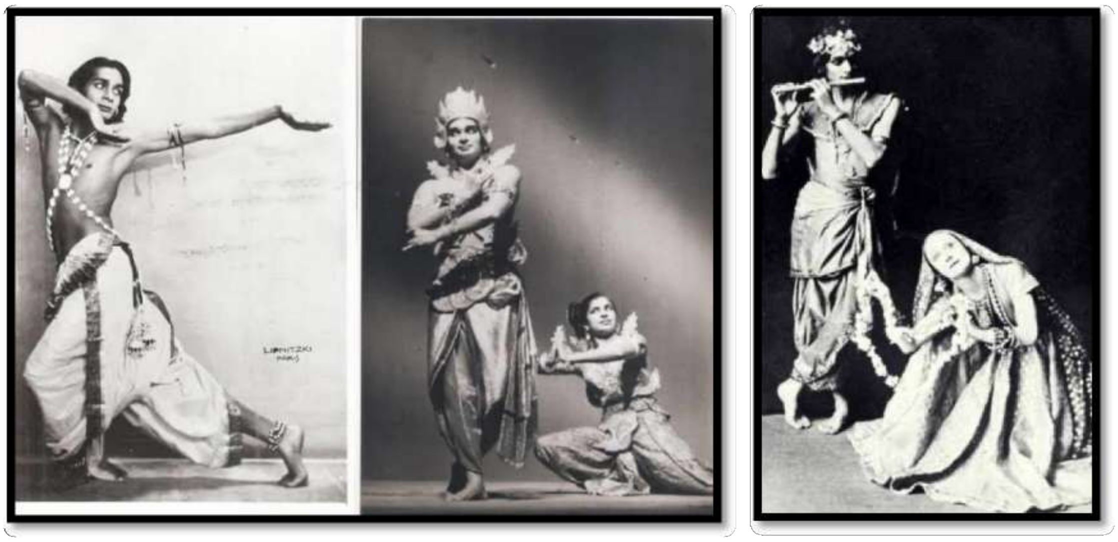

चित्र सं. 4.4 नृत्य कला की प्रस्तुति देते उदय शंकर जी

आपका जन्म 8 दिसम्बर 1900 ई. को उदयपुर में हुआ। आपके पिता का नाम श्याम शंकर चौधरी था जो झालावाड़ रियासत में दीवान के पद पर कार्यरत थे। उदयशंकर जी की शिक्षा झालावाड़ रियासत में ही हुई थी। आपने अपनी नृत्य व नाट्य कला के मंचन से अपने पिता जी के गौरव को रियासत में उच्चतम स्तर तक पहुँचा दिया था। आपकी ख़ासियत थी कि आपने कभी भी भारतीय शास्त्रीय संगीत की किसी भी विधा का कभी भी औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया था नृत्य कला ईश्वरीय उपहार स्वरूप ही आपको प्राप्त हुई। झालावाड़ नरेश महाराज राणा भवानीसिंह जी झाला ने आपको अनेक पुरूस्कारों व विशेष सम्मान से अलकृंत किया। रियासत में जब भी कोई ब्रिटिश अधिकारी आते तथा विशेष महफ़िल का आयोजन होता तो आपकी प्रस्तुति मनोरंजन का अनिवार्य अंग थी। आप स्वयं श्रीकृष्ण जी की भक्ति में लीन थे उनकी विभिन्न लीलाओं का गुणगान आप अपने नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। झालावाड़ रियासत के कई तबला नवाज़ों व अन्य वाद्यों का वादन करने वाले कलाकारों ने आपके साथ संगत करके आपके कला प्रशिक्षण व साधना में

सहयोग करके आपकी कला को अकल्पनीय रूप प्रदान किया। आपने अपनी वेशभूषा शैली, नृत्य शैली एवम् आहार सम्बन्धी नियमावली स्वयं निर्धारित की थी। आपको रियासत की ओर से गुणीजनखाना विभाग द्वारा अपने अनुज रविशंकर जी के साथ पर्याप्त वेतन देय होता था किन्तु अनेक अवसरों व राजकीय उत्सवों पर झालावाड़ नरेश व अन्य जागीरदारों अभिजात्य अतिथियों के द्वारा "खिचड़ी" नामक मुठी भर स्वर्ण-रजत मुद्राएँ भी भेंट की जाती थी। जब खड़ी बोली हिन्दी का आधुनिक काल[3] आरंभ हुआ तब रचे गए अनेक कथानकों व नाटकों का उदयशंकर जी ने भवानीनाट्य शाला में मंचन करके रियासत की अविस्मरणीय सेवा की झालावाड़ राज्य की कला विज्ञता पर आपकी कला का प्रभाव आगामी वर्षों में भी दृष्टिगोचर हुआ। झालावाड़ रियासत से अन्य स्थान पर प्रस्थान करने पर भी झालावाड़ से आपका सम्बन्ध प्रगाढ़ बने रहे विदेश से भारत आने पर भी आप झालावाड़ दरबार के यहाँ पर आया करते थे

पण्डित रविशंकर जी-

चित्र सं. 4.5 झालावाड़ रियासत में सितार वादन करते रविशंकर जी

आपका जन्म 7 अप्रैल सन् 1920 ई. में हुआ। झालावाड़ रियासत के कलाप्रिय, प्रजावत्सल शासक महाराज राणा ने भवानी नाट्यशाला में भट्ट बन्धुओं (पं. उदयशंकर जी व पं. रविशंकर जी) को समाविष्ट करके इस करके इस रियासत का गौरव तत्कालीन राजस्थान में संगीत के क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा दिया।

[3] प्रसाद डॉ. जयकिशन : हिन्दी साहित्य का इतिहास

आपके पिता श्याम शंकर चौधरी जी (श्याम शंकर चौधरी जी को नरेशों के द्वारा "हरचोधरी" की उपाधि सम्मान स्वरूप प्रदान की गई थी लेकिन इन्होंने अपने उपनाम से "हर" शब्द को पृथक करके सिर्फ 'चौधरी' शब्द का ही प्रयोग किया।) आपके पाँच पुत्रों में से दो सर्वश्री उदयशंकर जी व सर्वश्री रविशंकर जी की प्रतिभा को पर्याप्त संबल प्राप्त हुआ। इन दोनों भ्राताओं ने अपनी कला प्रस्तुतियों से झालावाड़ रियासत को तो गौरन्वित किया ही किन्तु इनकी संगीत साधना तत्कालीन झालावाड़ की प्रतिष्ठा का मानदण्ड बन गई। इन्होंने बग़ैर किसी धर्म व जाति के भेद के सम्मिलित समन्वित समाज का अनूठा उदाहरण भी प्रस्तुत किया था। पं. जी का पूरा नाम रविन्द्र शंकर चौधरी था जिसमें से आपने रवि शब्द जो सूर्य का सूचक है को ही अपने नाम में प्रयुक्त किया। शुरूआत के दिनों में जब आप झालावाड़ रियासत में थे आपकी रूचि नृत्य कला में थी आपने कई घण्टों अपने अनुज उदयशंकर जी के साथ भवानी नाट्यशाला में कला साधना की। व्यस्क होने पर आपकी स्वाभाविक रूचि सितार वादन की ओर इतनी ज़्यादा बढ़ गई कि सितारवादन करते समय आप आत्म बोध के स्थान पर सितार की स्वरलहरियों में लीन हो जाते थे। अमीर खुसरो के द्वारा 13वीं शताब्दी ई. में राज दरबारों में प्रचलित किए गए सितार की धुनों कठिन रागों तथा विभिन्न स्वरूपों की गहनता का प्रशिक्षण अर्जित करने हेतु आप उस्ताद अल्लाऊदीन खाँ के सानिघ्य में गए तथा उनका शिष्यत्व ग्रहण करके उनके लगभग 7 साल सितार वादन सिखा। आप स्वयं हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेज़ी भाषा से भलिभांति परिचित थे अतः सार्वजनिक रूप से आपने अपनी कला प्रस्तुतियों के माध्यम से रियासतकाल व स्वतंत्र भारत दानों में अपनी ख्याति उच्चतम स्तर पर तो प्राप्त की ही साथ ही अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी आपके उत्कृष्ट सितार वादन को उच्च मानको पर प्रतिष्ठा अर्जित होने लगी। आपने भारतीय फिल्म जगत को भी अपनी उत्कृष्ट कला के माध्यम से समृद्ध बनाया कई फिल्मों में अपना संगीत दिया। भारत सरकार के द्वारा पं. रविशंकर जी की विशवव्यापी प्रतिष्ठा व उच्चतम संगीत साधना पर इन्हें सर्वोच्च नागरिक पुरूस्कारों क्रमशः संगीत नाटक अकादमी पदम् भूषण, पदम् विभूषण तथा भारत रत्न से अलंकृत किया। आपको सर्वप्रथम ग्रेमी लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड पाने वाले प्रथम भारतीय होने का गौरव भी प्राप्त है। आपको अपने जीवन काल में पाँच बार ग्रेमी अवार्ड प्राप्त हुआ। आप वायुयान यात्राओं में अपने सितार के लिए पृथक टिकट क्रय किया करते थे। विदेश में रहने पर भी झालावाड़ रियासत से आपका लगाव गहरा था। झालावाड़ की राजदादी साहिबा बताती थी कि आप महाराव

राजा राजेन्द्र सिंह जी से मुलाक़ात के लिए झालावाड़ पधारते थे जहाँ पर शाम के समय में संगीत की महफ़िल रखी जाती थी। इस महान् संगीतज्ञ का देहावसान 11 दिसम्बर 2012 को हुआ।

मुहम्मद अली खाँ –

आप झालावाड़ रियासत के शासक महाराज राणा जालिम सिंह बहादुर के दरबार में राज गायक के पद पर नियुक्त थे। आप सुप्रसिद्ध गायक रमज़ान खाँ जो कि सिकन्दराबाद निवासी थे के भतीजे थे। आपको संगीत की तालीम बाल्यावस्था से ही अपने परिवार के बुज़ुर्गों से मिली थी। इसके पश्चात् आप बाँदा चले गये तथा वहाँ जाकर बाँदा के प्रसिद्ध गायक हाण्डे इमामबख्श की गायन शैली से प्रभावित हुए तथा उनका शिष्यत्व ग्रहण किया।[4] कई वर्षों तक संगीत की गहन साधना करने के पश्चात् आप झालावाड़ आ गए। झालावाड़ महाराजा आपकी गायकी से बहुत अधिक प्रभावित हुए तथा आपको अपने दरबार में दरबारी संगीतज्ञ के पद पर नियुक्त कर लिया। दरबार के द्वारा आपको सवारी के लिए पालकी दी गई। जिसमें बैठकर ही आप दरबार में आते थे। आप अपने जीवन के अन्तिम समय तक झालावाड़ में ही रहे। आपको झालावाड़ के अलावा अपनी प्रस्तुति के लिए जयपुर नरेश, बून्दी नरेश तथा अलवर नरेश के द्वारा भी बुलाया जाता था तथा इन रियासतों से आपको कई बेशक़ीमती उपहार भी प्रदान किये गये।

प्यारे इमामुद्दीन –

आप झालावाड़ रियासत के नरेश महाराज राणा के दरबार के दरबारी संगीतज्ञ थे। आपका निवास स्थान मथुरा था, परन्तु जब आप झालावाड़ दरबार के यहाँ आए तो फिर यही के होकर रह गए। आपकी गायकी पूर्वांग प्रधान थी। उस समय दरबार में आप जैसा टप्पा व ख़्याल गायन कोई ओर नहीं कर सकता था। विदेश से आने वाले मेहमान भी आपकी कला की भूरी भूरी प्रशंसा करते थे। झालावाड़ नरेश का आप पर विशेष स्नेह था। आपको राजा साहब द्वारा उपहार स्वरूप सोने के कड़े प्रदान किए गए थे। आपको झालावाड़ इस क़दर रास आया की आप आजीवन यहीं रहे।

---

[4] वही, पृ.सं.26

अमीर बख़्श –

आप महाराज राजा राजेन्द्र सिंह जी देव बहादुर के समय में झालावाड़ रियासत के गुणीजनखाने में संगीतज्ञ के पद पर नियुक्त थे। आपको गायन की शिक्षा अपने पिता जी करीम बख़्श जी द्वारा मिली थी, जो ख़ुद भी झालावाड़ दरबार के गुणी कलाकार थे। अपने पिता के अलावा आपने झालावाड़ के मास्टर पुरूषोत्तम जी से भी संगीत गायन व वादन की शिक्षा ग्रहण की थी। आपको शास्त्रीय गायन की ख़्याल, ध्रुपद, धमार आदि गायन शैलियों में तो महारत हासिल थी, परन्तु गायन के साथ आप सितार वादन, वायलीन वादन, जलतरंग वादन, काष्ठ तरंग वादन में भी प्रवीण थे। काष्ठ तरंग पर्क्यूशन संगीत वाद्य यंत्र ज़ाइलोफ़ोन के समान एक वाद्य यंत्र है। जिसमें लकड़ी की पट्टियाँ होती है, जिन्हें मेलेट की सहायता से बनाया जाता है, यह एक अप्रचलित वाद्य यंत्र होने की वजह से बहुत कम लोग ही इस वाद्य यंत्र से परिचित हैं।[5]

कुकी बाई (ईनायत जान) –

आप महाराव राजा राजेन्द्र सिंह जी बहादुर के दरबार की राज नृत्यांगना थी। उस दौर में नृत्य कला में आप जितना प्रवीण शायद ही कोई होगा। महाराजा की सवारी जब अपने लवाज़मे के साथ निकलती थी तो आप भी उस सवारी में शामिल होती थी। आपकी ख़ासीयत यह थी कि आप पूरी सवारी के दौरान हाथी की सूंड पर खड़े होकर बेहद ही ख़ूबसूरती के साथ नृत्य करती थी। आज भी महल में आपकी हाथी की सूंड पर खड़े होकर नृत्य करते हुए चित्र महल में देखने को मिलते हैं। आप महाराव राजा साहब की शिकार की यात्रा व अन्य यात्राओं पर भी राजा के साथ जाती थी। आपकी कला के हुनर से आपने राजस्थान को गौरवान्वित किया है। कुकी बाई का असली नाम ईनायत जान था। आपने अपनी अद्भुत नृत्य शैली के कारण ब्रिटिश सरकार के वायसराय, रियासतकालीन राजा, महाराजाओं तथा मेवाड़ के महाराणाओं से विशेष सम्मान व पुरस्कार प्राप्त कर अपनी कला की हमेशा के लिए अमिट छाप छोड़ी है। ईदगाह के समीप में उत्तर की ओर कुकी बाई (इनायत जान) की याद में एक भव्य मकबरा बनवाया गया, जो राजपूत व मुगल दोनों स्थापत्य शैलियों की विशेषता अपने आप में समेटे हुए है। जिस पर लाल पत्थरों की नक्काशी की गई है।

---

[5] राजस्थान संगीत और संगीतकार, पृ.सं. 115

नवल किशोर जी राव –

आप झालावाड़ रियासत के कलाप्रिय शासक महाराव राजा राजेन्द्र सिंह जी के गुणीजनखाने के दरबारी गायक थे।

आपका जन्म सन् 1905 ई. में कोटा ज़िले के डाबरी गाँव में हुआ। आपके पिता श्री रामलाल जी स्वयं एक कुशल गायक थे। आपको संगीत की शिक्षा आपके पिताजी द्वारा ही प्रदान की गई। परन्तु संगीत शिक्षा का यह सफर ज़्यादा दिन तक नहीं चल सका। क्योंकि कम उम्र में ही आपके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। इस वजह से आप झालावाड़ आकर रहने लगे। आपके झालावाड़ आने के समय में इस रियासत के नरेश भवानीसिंह जी द्वारा स्थापित भवानी नाट्यशाला में गुणी व योग्य कलाकारों को आश्रय मिलता था। जिस कला में भी वो पारंगत होते, उन्हें उनकी योग्यतानुसार कार्य प्रदान कर दिया जाता था। आपको भी भवानी नाट्यशाला में नियुक्त कर लिया गया। आप झालावाड़ के मास्टर पुरूषोत्तम जी से संगीत की विधिवत शिक्षा ग्रहण करने लगे तथा एक कुशल गायक बन गए। झालावाड़ रियासत के राजा (उस समय राजकुमार) राजेन्द्र सिंह जी भी संगीत कला में रूची रखते थे, अतः उन्होंने आपसे संगीत की शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ कर दिया। महाराजा राजेन्द्र सिंह जी का आपके प्रति अनन्य प्रेम व आदर था। जब महाराजा साहब ने झालावाड़ रियासत के राजा के रूप में पदभार ग्रहण किया। वो राजगद्दी पर बैठे, तब राजा साहब ने आपको रियासत का राज गायक घोषित कर दिया। आपका नाम उनके मर्ज़ीदान संगीतकार में शुमार था। महाराजा साहब आपकी हर जायज़ मांग को पूरा करते थे। एक बार आपने महाराजा साहब से जब ओर अधिक संगीत ज्ञान अर्जित करने की बात कही तो महाराजा साहब द्वारा अपने निज़ी खर्च पर आपको मुम्बई पंडित नारायणराव जी व्यास के पास भेजा गया।

चूंकि महाराजा साहब स्वयं उम्दा कवि थे, आप उनकी कई रचनाओं को अपने स्वर दिया करते थे। महाराजा द्वारा रचित गीतों को गाकर नवलकिशोर जी ने कोलम्बिया कम्पनी के लिए रिकॉर्ड तैयार किया। आपने झालावाड़ रियासत के दो नरेशों प्रथम महाराजा साहब राजेन्द्र सिंह जी 'सुधाकर' द्वितीय उनके पुत्र हरिशचन्द्र जी (जो अपने पिता के स्वर्गवास हो जाने पर राजगद्दी पर बैठे) के समय में अपनी सेवाएँ दी है। महाराजा हरिशचन्द्र जी भी अपने पिता की भाँति ही आपको सम्मान प्रदान किया करते थे। आपके भजन गायन करते समय मन्दिरों में कई चमत्कार होते

थे, जैसे जब आप भावपूर्ण भजन गाते थे तो भगवान की माला टूट जाती, कभी पुष्प गिर जाते, तो कभी घंटिया बजने लगती थी। एक बार ग्वालियर नरेश के द्वारा आपको ग्वालियर दरबार में आमंत्रित किया गया। दरबार आपकी गायकी से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने आपको सोने की ज़री के काम और सोने के बटन लगा हुआ बेशकीमती जैकेट आपको उपहार स्वरूप प्रदान किया। कोटा स्थित रघुनाथ चौक में प्रदोष के दिन अखण्ड जागरण की रीत भी आपने ही शुरू की। आप झालावाड़ से कोटा प्रदोष जागरण के लिए ही आते थे। जो जागरण शाम से सुबह तक चलता था। कोटा के सभी कलाकार तो इसमें शामिल होते ही थे, परन्तु बाहर से भी लोग आपको सुनने के लिए आते थे। इस जागरण की ख़ास बात यह थी कि मंगला के समय होने वाली आरती भैरव राग में की जाती थी। यह परम्परा आज भी क़ायम है। कई साल से यह जागरण प्रदोष की शाम को आज भी इसी रघुनाथ चौक में होता है।

आप सरल व संत प्रवृत्ति के कलाकार थे तथा दरबार की हर आज्ञा का पालन करते थे। एक बार एक नाई ने आपसे प्रतिशोध की भावना होने के कारण झालावाड़ दरबार से कहा कि दरबार नवलकिशोर जी गायन तो अच्छा करते हैं लेकिन अगर इनके कंठ के तालु को कटवा दिया जाए तो इनका गला ज़्यादा सुरिला हो जाएगा और यह ज़्यादा अच्छा गाने लग जाएगा। दरबार ने आपके सामने नाई की बात रखी। आपने मान लिया कंठ का तालु कट जाने के कारण आपके कंठ से बहुत खून बहा। दरबार साहब ने अपने निष्पाप मन के कारण नाई की जो बात मान ली उस पर बहुत शर्मिन्दा हुए और आपका उपचार करवाया। इस दुर्घटना के कई दिनों तक आप गा नहीं सके। नाई ने चाहे आपका बुरा चाहा हो पर ईश्वर उपासना के कारण आपका गायन और अधिक निखरा। आपने झालावाड़ में कई शिष्यों को भी संगीत की शिक्षा दी, जिसमें कुछ शिष्य मुरलीधर शर्मा, अमीर बख़्श, नन्दकिशोर जी।

आपके द्वारा झालावाड़ दरबार में गाए जाने वाले मुख्य भजन निम्न हैं –

1. श्याम सलोना सुभद्रा ना बीर
   रे बाला गरूड चढीने बेगा आवजो जी
2. पीलो ही केसर, पीलो ही बेसर, पीलो ही पान धरयो मुख माही
   पीलो ही अंगना में पलंग बिछायो, पीलो ही छे श्रृंगार
3. जाओ छो तो बेगा म्हारे आजो जी सांवरिया
   म्हारी कंवरी के प्रभू भाई तो नहीं छे जी

4.	बाड़ी थ्हारी फूलड़ा सूं छाई रे गोरा रा लाड़ा

बाड़ी थ्हारी फूलड़ा सूं छाई

5.	ओ म्हारा जनम मरण रा साथी

थ्हाने नहीं बिसरू दिन राती

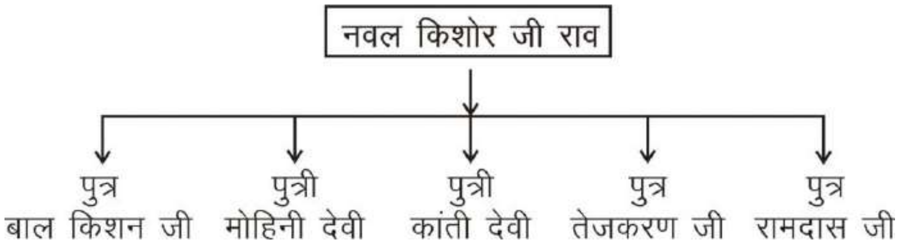

सादिक अली –

चित्र सं. 4.6 वीणा वादन करते सादिक अली जी

आपका जन्म सन् 1897 ई. में जयपुर में हुआ था। आपके पिताजी का नाम मुशर्रफ खाँ था। आप पाँच भाई थे। पाँचों भाईयों में आप हिन्दुस्तान के उच्च कोटी के वीणा वादक हुए तथा आपके चार भाईयों ने गायन शैली को अपनाया। अल्पआयु से ही आपको देश के उच्चतम कलाकारों को श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आपने संगीत की तालीम सुप्रसिद्ध गायक व बीनकार रज्जब अली तथा आपके पिताजी से पाई। 15 वर्ष तक संगीत की गहन साधना करने के उपरान्त आप वीणा वादन में पारंगत हो गए थे। सबसे पहले झालावाड़ नरेश महाराज राणा भवानीसिंह जी ने आपकी कला को पहचाना। झालावाड़ नरेश आपकी वादन कला की कद्र व बेहद सम्मान करते थे। झालावाड़ नरेश ने आपके कई कार्यक्रम भवानी नाट्यशाला में भी आयोजित करवाए थे। आपको गुणीजनखाने की ओर से 30 रूपये मासिक वेतन

मिलता था। आप आम रास्ते से दरबार में प्रवेश नहीं करते थे। आपके लिए महल में पीछे की ओर एक रास्ता था जहाँ से आप प्रवेश करते थे।

भँवरलाल भोभरा -

1845 के पश्चात् आप महाराज राणा पृथ्वी सिंह जी के दरबार में हुए। आप शास्त्रीय गायन में निपुर्ण थे। ख़्याल गायकी के लिए मशहूर थे। इसके साथ आप वायलीन वादन भी किया करते थे। आप शास्त्रीय संगीत के साथ लोक संगीत के भी ज्ञाता थे। दरबारी संगीतज्ञों की सोहबत मिलने के कारण आपकी गायन शैली ओर अधिक निखर कर सामने आई। आप जिस समय दरबार में नियुक्त हुए थे, उस समय आपको 10 रू. मासिक वेतन प्रदान किया जाता था। दरबार से सम्बन्धित होने के कारण आप कभी रियासत से बाहर नहीं गए।

मुरलीधर शर्मा –

आप महाराज राणा राजेन्द्र सिंह जी के शासन काल के समय में झालावाड़ दरबार के यहाँ पर साहित्यकार व गायक के पद पर नियुक्त रहे। आपका जन्म झालावाड़ में हुआ। आपने गायन के साथ वायलीन वादन की भी उच्च शिक्षा ग्रहण की थी।[6] ख़्याल गायन शैली के आप बेहतरीन गायक थे। आपने झालावाड़ रियासत में अपने गायन के कार्यक्रम देने के साथ जयपुर, कोटा, उदयपुर, राजगढ़, बूंदी, उज्जैन में भी अपने संगीत कार्यक्रम पेश किए। आपने संगीत की तालीम श्री सुन्दर सिंह जी राठौड़, नवल किशोर जी, कादर खाँ, छुट्टन खाँ तथा लाला भट्ट गंगाधर जी से ग्रहण की थी।

करीम बख़्श –

आप महाराज राणा भवानी सिंह जी के दरबार में थे। आप झालावाड़ रियासत के अंतर्गत संचालित होने वाले नक्कारखाने विभाग के वरिष्ठ प्रभारी थे। यूं तो आप कई वाद्यों का वादन करने का ज्ञान रखते थे पर आपका शहनाई वादन संपूर्ण हाड़ौती क्षेत्र में मशहूर था। आपके शहनाई वादन की प्रशंसा पण्डित रविशंकर जी के द्वारा भी की गई थी। झालावाड़ रियासत में आने वाले कलाकारों के साथ आप संगती तो करते ही थे पर आपका व अन्य कलाकारों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक जुगलबंदी भी होती थी।

[6] प्रताप सिंह चौधरी, राजस्थान : संगीत और संगीतकार, पृ.सं. 112

आपके दो पुत्रों क्रमशः अमीर बख्श, इलाही बख्श ने संगीत के क्षेत्र में खूब नाम रौशन किया।[7]

भूरा जी –

आप महाराज राणा जालिम सिंह जी के दरबार में नियुक्त थे। आपके परिवार में कई पीढ़ियों से संगीत गायन वादन का क्रम चल रहा था। झालावाड़ के शासक जालिम सिंह जी आपको पलायता गाँव जो कि वर्तमान समय के बारां ज़िले के अंतर्गत आता है से अपने दरबार में लाए थे। आप रजवाड़ी मांड दरबार में गाया करते थे तथा इसके साथ आप शहनाई वादन व तबला वादन भी किया करते थे। पलायता से आपके भ्राता रमज़ा जी भी आपके साथ ही झालावाड़ आए थे जो भी अच्छे गायक थे। दरबार के द्वारा आपको 80 बीघा उपजाऊ कृषि योग्य भूमि आजीविका के लिए प्रदान की गई थी।

गेंदा जी –

आप महाराज राणा भवानी सिंह जी के शासन के समय में झालावाड़ दरबार में संचालित गुणीजनखाने में नियुक्त थे। संगीत आपका ख़ानदानी पेशा था। बाल्यावस्था से ही आपको संगीत सीखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आपने गायकी में नए प्रयोग किए, अपनी कल्पनाशीलता से गमकदार ताने तथा बेमिसाल लयकारियों का प्रयोग करके अपने गायन को आकर्षक बनाया। आपने कई वर्षों तक झालावाड़ रियासत की भवानी नाट्यशाला में कार्य किया।

नारायण लाल जी –

आप महाराज राजा राजेन्द्र सिंह जी के दरबार में तबला वादक के पद पर नियुक्त थे। दरबार के अलावा आपने स्वतंत्र रूप से भी कई प्रमुख संगीतकारों के साथ तबले पर संगती की आप सारंगी व हारमोनियम वादन में भी दक्ष थे। आपने लगभग 20 वर्षों तक झालावाड़ रियासत में अपनी सेवाएं प्रदान की। रियासत में बाहर से आने वाले कलाकारों के साथ भी तबले पर आप ही शिरकत करते थे। आप तबलावादन में इतने सिद्धहस्त थे कि एक बार आप किसी कलाकार को सुन लेते तो उसके जैसा ही क़ायदा व लग्गी हू-ब-हू तबले पर बजा देते थे।

---

[7] वही, पृ.सं.

नन्हें खाँ –

आप महाराज राजा राजेन्द्र सिंह जी के शासनकाल के समय के कलाकार है। आप श्रेष्ठ गायक तो थे ही इसके साथ ही आप कत्थक नृत्य करने में भी प्रवीण थे। भवानी नाट्यशाला में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में आप बहुमुखी भूमिका निभाते थे, महाराव राजा साहब की बड़ी कोठी में स्थित उनके आराध्य देव श्री कृष्ण जी के मन्दिर में सुबह तथा संध्या के समय में कीर्तन करने के लिए जाया करते थे। दरबार के द्वारा आपको विशेष आदेश दिया गया था। उस मन्दिर में आम व्यक्ति नहीं जा सकते थे। आपने सन् 1947 तक झालावाड़ दरबार में अपनी सेवाएँ दी, इसके पश्चात् महाराजा राजेन्द्र सिंह जी द्वारा स्थापित संगीत विद्यालय में आपको अध्यापक के रूप में नियुक्त कर दिया गया।

हरिशंकर राव -

आपका जन्म सन् 1914 में झालावाड़ में हुआ था। झालावाड़ रियासत के कलाप्रिय शासक महाराव राजा के दरबार के गुणीजनखाने में तबला नवाज़ के पद पर नियुक्त थे। आपको दरबार द्वारा आश्रय भी प्रदान किया गया था। आप भवानी नाट्यशाला के कार्यक्रमों में संगीत निर्देशन भी करते थे तथा नाटकों का मंचन जब होता था और उसमें ताल वाद्य की आवश्यकता होने पर तबला वादन भी करते थे। आपने रियासत में कार्य करने के सिवा भी अन्य कलाकारों के साथ भी कई राज्यों की यात्रा की है अर्थात् उनके साथ तबले पर संगति की है। आप स्थाई रूप से आजीवन झालावाड़ में ही रहे। सन् 1964 में आपका स्वर्गवास हो गया।

भँवरलाल राव –

आप महाराव राजा भवानीसिंह जी के शासन के समय में झालावाड़ दरबार के गुणीजनखाने में सारंगी वादक के पद पर नियुक्त थे। आप पर महाराजा साहब की विशेष कृपादृष्टि थी। आप बेमिसाल सारंगी वादक थे। शास्त्रीय व सुगम संगीत दोनों में ही आपका सारंगी वादन उत्कृष्ट था। जयपुर रियासत के गुणीजनखाने की सुप्रसिद्ध गायिका गौहरजान जी के साथ भी आपने कई दफ़ा सारंगी पर संगत की थी।[8] झालावाड़ रियासत से पाँच वर्ष के लिए आप जयपुर चले गए थे और वहाँ से 11 वर्ष के लिए आप करांची चले गए। जहाँ आपने सारंगी वादन में बुलन्दियों को छुआ।

[8] प्रताप सिंह चौधरी, राजस्थान : संगीत और संगीतकार, 12

करांची से आप बम्बई आ गए थे, जहाँ पर आप रणजीत फिल्म स्टूडियो में रहे। आपने अपने पुत्र चाँदमल तथा छीतरमल जी दोनों को भी सारंगी वादन की शिक्षा दी।

श्रीलाल जी –

आपने झालावाड़ रियासत के तीन शासकों क्रमशः जालिम सिंह जी, महाराजा भवानी सिंह जी तथा महाराजा राजेन्द्र सिंह जी के दरबार में अपनी संगीत की सेवाएँ दी है। आपको सारंगी वादन की शिक्षा आपके पिता नन्दराम जी से मिली थी। आपके पिता जी और अतरौली के उस्ताद फिदा हुसैन खाँ साहब दोनों में काफ़ी घनिष्टता थी। आपको संगीत शिक्षा के लिए पिता जी ने फिदा हुसैन खाँ साहब को सौंप दिया। आप गायन व वादन दोनों ही प्रवीण थे। झालावाड़ दरबार के जन्मदिन पर आपका सारंगी वादन तथा गायन दोनों अवश्य होते थे। आप कोटा, बूँदी तथा झालावाड़ तीनों स्थानों पर ही रहे।

मथुरालाल जी –

चित्र सं. 4.7 झालावाड़ दरबार द्वारा सम्मान प्राप्त करते उस्ताद मथुरा लाल जी

आपका जन्म 1848 ई. में हुआ। आपने महाराज राणा जालिम सिंह तथा महाराज राणा भवानी सिंह जी के दरबार में संचालित गुणीजनखाने में अपनी सेवाएँ प्रदान की। इसके अलावा दरबार की ओर से झालरापाटन स्थित द्वारकाधीश जी के मन्दिर में कीर्तन व मृदंग वादन करने के लिए आपको नियुक्त किया गया था। आपका नाम उस दौर में राजस्थान के बेहद गुणी कलाकारों में शामिल था। आप दरबार से संबंधित अन्य कलाकार जैसे नृत्यकारों, गायकों (ध्रुपद, धमार व ख़्याल

गायकों) के साथ भी मृदंग वादन करते थे। आपने देश के बड़े-बड़े संगीत सम्मेलनों में भाग लिया तथा कई ख्याति प्राप्त कलाकारों के साथ मृदंग की संगत करके श्रोताओं व गुणीयों की खूब प्रशंसा प्राप्त की। आपने अपनी वृद्धावस्था में भी अपनी कला का ज्ञान कई योग्य व्यक्तियों को प्रदान किया तथा अपने पाँच पुत्रों को भी तबला वादन में योग्य कलाकार बनाया। आपके पाँच पुत्र भंवरलाल जी, धन्नालाल जी, देवीलाल जी, कन्हैयालाल जी तथा रामलाल जी थी। आपके पाँचों पुत्र भी झालावाड़ रियासत के गुणीजनखाने व भवानी नाट्यशाला से सम्बन्धित रहे।

मज़ीद खाँ-

आप झालावाड़ रियासत के गुणीजनखाने में गायक के पद पर नियुक्त थे। आप दरबार में ख़्याल तथा गीतों का गायन करते थे। आपकी गायकी से प्रसन्न होकर दरबार के द्वारा आपको कई पुरूस्कार व सम्मान प्रदान किए गए। आपका निवास स्थान बूँदी रियासत था किन्तु गुणीजनखाने में गायक होने के कारण आप झालावाड़ रियासत में रहे जहाँ पर आपको कई अन्य गुणी कलाकारों का सानिध्य भी प्राप्त हुआ। आपने झालावाड़ रियासत में संगीत का खूब प्रचार-प्रसार किया। आप हमेशा तानपूरे पर ही गायन करना पसन्द करते थे।

धन्नालाल जी-

आपने झालावाड़ रियासत के दो शासकों महाराज राणा भवानी सिंह जी तथा महाराज राणा राजेन्द्र सिंह जी के शासन काल में अपनी सेवाएँ दी। आपकी नियुक्ति गुणीजनखाना नामक विभाग में तबला वादक के रूप में थी। आपने अपने जीवन का अधिकांश समय भवानी नाट्यशाला में आयोजित होने वाले नाटकों व संगीत की महफ़िलों में तबले पर संगती करके व्यतीत किया है। आपकी रूचि लोक गीतों के गायन में होने के कारण आप गुणीजनखाना विभाग में लोक गायक के रूप में भी अपनी भूमिका का निर्वहन किया है। आपको तबला वाद्य वादन के अलावा भी अनेक ताल वाद्यों के वादन का ज्ञान था। संगीत का वातावरण आपको प्रारंभ से ही मिला। क्योंकि आपके परिवार में संगीत का माहौल आपके दादा जी, परदादा जी के समय से ही था। महाराज राणा भवानीसिंह जी के द्वारा आपको कई पुरूस्कार भी प्रदान किए गए थे। आपने राजस्थान के कई ख्याति प्राप्त कलाकारों के साथ भी तबले पर संगति की है और अनेक नगरों में आपके तबला वादन के एकल कार्यक्रम भी हुए है।

कन्हैयालाल-

आप झालावाड़ रियासत के शासक भवानी सिंह जी की रियासत में संचालित गुणीजनखाने में कार्यरत थे। गुणीजनखाने के साथ ही आप भवानी नाट्यशाला में भी कार्यरत रहे। आपको संगीत की शिक्षा आपके पिता श्री मथुरालाल जी (नाना पानसे घराने के पखावज़ वादक) से मिली। कन्हैयालाल जी तबला वादन में तो अग्रणी थे ही परन्तु हारमोनियम वादन में भी रियासतीय स्तर पर आपका नाम प्रथम था। आप भवानी नाट्यशाला में मंचीत नाटकों का संगीत निर्देशन भी करते थे। दरबार के द्वारा उपहार स्वरूप आपको चाँदी की मौजड़ी भी प्रदान की गई थी। आपने लगभग 20 वर्षों तक गुणीजनखाने व भवानीनाट्शाला में अपनी संगीत की सेवाएं दी, 35 वर्ष की आयु में इस महान् कलाकार का स्वर्गवास हो गया।

भवानीशंकर जी-

आपका जन्म सन् 1882 ई. में झालावाड़ रियासत में हुआ। आप झालावाड़ रियासत के महाराज राजा भवानी सिंह जी एवं महाराज राजा राजेन्द्र सिंह जी के समय में गुणीजनखाने के कलाकार रहे। आपने संगीत की शिक्षा झालावाड़ रियासत के गुणी कलाकारों क्रमशः उस्ताद मथुरालाल जी, उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब एवम् भँवरलाल जी से ग्रहण की। आप लगभग चार दशकों तक झालावाड़ रियासत के गुणीजनखाने में मुलाज़िम रहे। आप राजस्थान की अन्य रियासत व ठिकानों में भी संगीत प्रस्तुति के लिए जाते थे। इसके साथ ही हाड़ौती क्षेत्र में आयोजित होने वाले नाटको, तमाशों, माँच व रामलीला में भी सारंगी, तबला व पखावज़ वादक के रूप में आप मुख्य भूमिका निभाते थे। आपने 100 वर्ष से भी अधिक आयु को प्राप्त किया। आपने सम्पूर्ण जीवन काल में झालावाड़ के समीप स्थित झालरापाटन में ही निवास किया। आपने अपने पुत्र नन्दकिशोर जी को भी सफल व योग्य कलाकार बनाया।

नन्दकिशोर जी-

आप झालावाड़ दरबार महाराज राणा राजेन्द्र सिंह जी की रियासत में संचालित गुणीजनखाने के दरबारी गायक थे। आपको संगीत की विधिवत शिक्षा अपने पिता जी श्री भवानीशंकर जी से प्राप्त हुई। आपके मामा जी भँवरलाल जी से आपने सारंगी वादन की शिक्षा प्राप्त करके झालावाड़ रियासत के दरबारी संगीतज्ञ प्यारे ईमामुद्दीन से गायकी की बारीक़ियों को सीखा। इसके बाद आपने झालावाड़ नरेश के निज़ी दरबारी गायक नवल किशोर जी से ध्रुवपद, धमार व भजन गायकी की शिक्षा प्राप्त की। इन

सभी योग्य गुणीयों के सानिध्य से आप केवल वाद्य वादन (तबला, क्लारनेट, सारंगी, मृदंग) में ही नहीं गायकी में भी बेहतरीन कलाकार बने। दरबार में आप ख़्याल, धमार ठुमरी आदि का गायन करते थे। आपने उस्ताद रविशंकर जी के साथ भी झालावाड़ दरबार में संगत की थी। आप गुणीजनखाने के अलावा झालावाड़ नरेश के द्वारा झालरापाटन स्थित द्वारकाधीश जी के मन्दिर में भजन गायन करने के लिए कीर्तनकार के पद पर नियुक्त रहे।

जमालुद्दीन खाँ-

आपका जन्म सन् 1859 में हुआ। आप झालावाड़ रियासत के कलाप्रिय नरेश महाराज राणा भवानीसिंह जी के दरबार में रहे। आप गुणीजनखाने से सबसे अधिक वेतन प्राप्त कलाकार थे। आपको दरबार की ओर से आश्रय भी प्राप्त था। जमालुद्दीन साहब के पिता जी का नाम अमीर खाँ था। आपको वीणा वादन व गायन की तालीम आपके परिवार के बुज़ुर्गों से तथा आपके पिता जी अमीर खाँ साहब से प्राप्त हुई। माँ सरस्वरती जी के आशीर्वाद से वीणा वादन में भी आप दक्ष थे। परन्तु ध्रुपद गायकी के भी अप्रतिम कलाकार थे। आप गायन वादन दोनों विधाओं के बेजोड़ कलाकार थे। आप संगीत के गूढ़ विद्वान तो थे ही लेकिन संत स्वभाव रखने वाले नेक व शिष्ट व्यक्तित्व के धनी थे। आपकी वीणा वादन की ख़्याति झालावाड़ रियासत के सिवाय भी राजस्थान की अन्य रियासतों में भी फैली थी। आपके वीणा वादन की निपुणता व उत्कृष्टता के कारण आपको 'वीणा विनोद' की उपाधि प्रदान की गई थी। बहोत लम्बे अरसे तक झालावाड़ रियासत के गुणीजनखाने को आपने अपनी कला से प्रकाशमय किया और उसके बाद आप महाराजा साहब जयसिंह जी के दरबार में अलवर चले गए थे। जहाँ आपकी कला से प्रसन्न होकर दरबार ने आपको अलवर राज्य में जागीर प्रदान की थी। आप संगीत के ज्ञाता तो थे ही साथ ही आपको संस्कृत, उर्दू, फ़ारसी भाषा की भी अच्छी जानकारी थी। आपके प्रमुख शिष्य उस्ताद अब्दुल अज़ीज़ खाँ (जो विचित्र वीणा का वादन करते थे) है।

पंचम अध्याय

बारां में संगीत का विकास

पंचम अध्याय

बारां में संगीत का विकास

वराह नगरी बारां यद्यपि 1994 में कोटा से पृथक एक स्वतंत्र ज़िला बन गया, परन्तु इस से पूर्व कोटा राज्य की सीमा में यहाँ अनेक सांस्कृतिक तलों ने अपने मुखरित संगीत स्वर प्रदान किए थे। रामगढ़ के भण्डदेवरा मंदिर में मंगला व संध्या की भजन गायकी रियासतीय दौर में अत्यंत भावप्रधान मानी जाती थी। जनश्रुतियों में निहित है कि कोटा नरेश महाराव उम्मेद सिंह द्वितीय जब तांगे में छद्मवेश में राज्य का निरीक्षण करते थे, तब कभी-कभी वह इस धार्मिक परिवेश का आनंद भी लेते थे, जहाँ जैन नसीया जी में समाई के भजन मालवी भाषा के उच्चारण के कारण कोटा राज्य की दक्षिणी डिंगल के उच्चारण से भिन्न स्वरूप में गेय होते थे। सूफ़ी दरगाह में क़व्वाली का गायन स्वतंत्रता के पश्चात् भी प्रचलित था। जो मुरीदों के लिए 'समा बांधने का' सम्मोहन प्रस्तुत करती थी। सीताबाड़ी के मेलों में गायन व नृत्य की छटा आकर्षक होती थी। जिसमें जनजातियों की प्रस्तुतियाँ पूर्णतया भिन्न ज्ञात होती थी। केलवाड़ा में कथित गुरू वाल्मीकी आश्रम में स्थित कुंडो के समीप भी भजन गायकी के वृतांत मुख सुख में शताब्दियों तक संवरते रहे हैं। वराह नगरी मालवा को दोआब क्षेत्र से सम्बन्ध करने वाला भू-खण्ड रहा है। इसी कारण यहाँ सूर सेनाओं, मुगल सेनाओं, पींडारियों व मराठों के आक्रमण हुए थे। यहाँ अनेक वास्तुप्रतीक समन्वित कला शैलियों के प्रमाण प्रस्तुत करके इसी तथ्य को प्रमाणित करते है। इस पृष्ठभूमि में यहाँ मिश्रित संस्कृति ने विकास पाया, जिसका प्रभाव सांस्कृतिक तत्वों पर मुख्यतया संगीत पर भी अंकित ज्ञात होता है। यहाँ गाए जाने वाले गीतों में विभिन्न आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता था। सन् 1991 के पूर्व बारां ज़िला कोटा ज़िले के अन्तर्गत आता था। अतः बारां तथा इसके आस-पास के क्षेत्रों के कलाकार अपनी गायन तथा वादन प्रस्तुतियों के लिए कोटा, बूंदी तथा झालावाड़ शासकों के दरबार में ही उपस्थित होते थे। इसके अलावा यह कलाकार पलायथा, अंता, मांगरोल, सोरसन, कोयला, छबड़ा आदि जागीरदारों के यहाँ पर आयोजित होने वाले जन्मोत्सवों, ग्रह प्रवेश, विवाह उत्सवों में भी मांड, लोकगीत, भजन, दोहे आदि की स्वर लहरियों से वातावरण को गुन्जित करते थे। अभी भी इन कलाकारों के वंशज गाने-बजाने का कार्य कर रहे हैं। बारां अलग से रियासत न होने के कारण यहाँ के कलाकार हाड़ौती

क्षेत्र की तीनों रियासतों से ही सम्बन्धित थे। अधिकांश कलाकारों का निवास स्थान तो बारां क्षेत्र था, किन्तु इन सभी की कार्यस्थली कोटा, बूंदी ही रहा है।

ढाई कड़ी की रामलीला –

बारां ज़िले के अन्तर्गत आने वाले गांव पाटुन्दा में जो कोटा से लगभग पैंसठ (65) किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस स्थान पर ढाई कड़ी की रामलीला का मंचन किया जाता है। यह परम्परा डेढ शताब्दी लगभग 170 वर्षों से निरन्तर चल रही है। सांगीतिक ढाई कड़ी की रामलीला की शुरूआत ब्राह्मण कुल में जन्मे "श्री गुरू गणपतलाल दाधीच जी के द्वारा की गई थी। इस रामलीला की विशेषता यह है कि यह हाड़ौती भाषा में लिखी गई है, जिसके आधार ग्रंथ तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरितमानस तथा वाल्मीकि जी द्वारा रचित रामायण है। इस रामलीला का सांगीतिक पक्ष अपने आप में विशेष स्थान रखता है। क्योंकि ढाई कड़ी की रामलीला में हाड़ौती भाषा में रचित पद्यों को रैला तर्ज़ में संगीतबद्ध किया गया है। यह रामलीला 15 दिवस तक चैत्र नवरात्रों की चैत्र शुक्ल पंचमी से वैशाख माह की पंचमी तिथि तक आयोजित की जाती है। इस रामलीला का मंचन संध्या के समय में किया जाता है। गाँवों में कृषक वर्ग ही मुख्य रूप से निवास करते हैं तथा अन्य गाँव के निवासी भी संध्या के समय अपने कार्यों से निवृत्त हो जाते हैं। इसलिए रामलीला श्रवण करने अपने परिवार सहित आते हैं। इस रामलीला में अभिनय करने वाले कलाकार पाटुन्दा क्षेत्रवासी ही हैं, जो कोई पेशेवर कलाकार नहीं होते। ईश्वर में आस्था होने के कारण वह श्रृद्धा स्वरूप ईश्वर के समक्ष अपनी मेहनत व लगन के फलस्वरूप कला का प्रदर्शन करते थे। नवोदित कलाकारों को जो रामलीला का मंचन करते थे, बुज़ुर्ग कलाकारों के द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। रामलीला के कलाकार बग़ैर वेतन के ही रामलीला का मंच करते थे। इस रामलीला की सबसे ख़ास बात यह है कि इसमें पद्यों को गाने के लिए किसी गायक का सहारा नहीं लिया जाता था (अब स्वरूची से क्षेत्रीय निवासी गायन करने लगे हैं) जो भी कलाकार जिसभी पात्र का अभिनय करता था वह खुद ही पद्यों का गायन भी करते थे। ढाई कड़ी की रामलीला में चितारा नामक वाद्ययंत्र को वादन के लिए प्रयुक्त किया जाता था। अब चितारा वाद्य के स्थान पर वायलिन का प्रयोग किया जाता है तथा हारमोनियम भी प्रयोग में लाया जाता है। रौशनी के लिए प्राचीन काल में मशालों का प्रयोग किया जाता था, जिसमें अलसी के तेल का उपयोग किया जाता था, इसके बाद मिट्टी के तेल से

जलने वाली लालटेन तथा अब रौशनी के लिए हैलोजन का प्रयोग होने लगा है। जिस मंदिर में रामलीला का मंचन होता है, उसका निर्माण 11वीं शताब्दी के लगभग हुआ था। यह मंदिर लक्ष्मीनाथ भगवान का मंदिर है।[1] मंदिर परिसर के आंगन में ही रामलीला का मंचन होता है, जहाँ कुछ समय से पक्का रंगमंच बना दिया गया है जिस रंगमंच पर छत का निर्माण भी करवाया गया है, जिससे मौसम की वजह से रामलीला प्रभावित ना हो। पाटुन्दा कस्बा होने पर भी यहाँ के स्थानीय लोगों के प्रयास से हाड़ौती क्षेत्र के एक छोटे से क़स्बे ने सम्पूर्ण भारत में अपनी भिन्न शैली के कारण सबसे अलग पहचान बनाई। पन्द्रह दिवसीय इस रामलीला में तीन भिन्न-भिन्न सवारी निकलती है।

1. रामलीला आरम्भ होने वाले प्रथम दिवस चैत्र शुक्ल की पंचमी तिथी को प्रथम पूज्य श्री गजानन्द जी महाराज को न्योता देने के लिए पहली सवारी निकलती है, जिसमें गाँव के छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं की रूची देखने योग्य होती है।
2. रामलीला आरम्भ होने से चतुर्थ दिवस पर भगवान श्री रामचन्द्र जी तथा सीता माता जी के स्वयंवर के दिन गांव में भगवान श्री राम जी की बारात बहुत हर्षोल्लास व बैण्ड–बाजों के साथ निकाली जाती है।

ढाई कड़ी की रामलीला की प्रसिद्धि

1. सन् 1950 ई. में कोटा राज्य में आयोजित हुए "अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन" में पाटुन्दा की 'ढाई कड़ी की रामलीला' ने विजय श्री को प्राप्त कर पहला स्थान प्राप्त किया। जिसमें कोटा दरबार महाराव के द्वारा उपहार के रूप में 2 किलो शुद्ध चांदी से निर्मित छत्र दिया गया।
2. ढाई कड़ी की रामायण ने 'अंतर्राष्ट्रीय रामायण मेला चित्रकूट' में दो बार राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया तथा भारतीय रामायण मेला भोपाल में दो बार सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सम्मान प्राप्त किया।
3. 'अंतर्राष्ट्रीय रामायण मेला अयोध्या' में ढाई कड़ी की रामायण के सम्पूर्ण खर्च का वहन भारत सरकार के द्वारा किया गया, जिसमें भी हमारी गौरवमयी रामलीला का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा।

[1] शोधार्थी को चेतन नागर (पाटुन्दा निवासी) के माध्यम से प्राप्त जानकारी

4. हिन्दुस्तान की तीन रामलीला जो हिंदी भाषा में विशेष रूप से गाकर प्रदर्शित की जाती है। इन तीनों में से एक ढाई कड़ी की रामायण है।

5. ऑस्ट्रलिया के क्वींसलेंड विश्वविद्यालय की सन् 2018 में प्रकाशित पुस्तक रूटलेज हैंडबुक ऑफ फेस्टिवल में एक अध्याय हाड़ौती संभाग की ढाई कड़ी की रामलीला का है।

6. 12 फरवरी 2024 को दिल्ली के हिन्दू महाविद्यालय की 125वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सम्पूर्ण भारत की विभिन्न कलाओं में से हाड़ौती क्षेत्र में स्थित पाटुन्दा की 'ढाई कड़ी की रामलीला' को महाविद्यालय में रामलीला प्रदर्शन के लिए चुना गया।

7. रामलीला की प्रसिद्धी सुनकर कोटा नरेश ने पाटुन्दा जाकर रामलीला के मंचन को देखा वह इतने अधिक प्रभावित हुए की ढाई कड़ी की रामलीला के लिए भूमि दान में दी।

ढाई कड़ी की रामायण में गाए जाने वाले संवाद

दशरथ जी के द्वारा गुरू वशिष्ट जी से प्रार्थनापूर्वक संवाद –

अरज मूं करूँ बिनती रसी राज आपसूं होव म्हारो काज
सोच मत करजे दशरथ राज जग सूं होव थ्हारो काज
अरज करूं मूं पुत्र कारण पुत्र हमारे नांही अवस्था वृद्ध पणा की आई
असो जतन थां करो रसीजन पुत्र हमार होई

श्री राम रावण संवाद –

रावण तुम समझ लंक पति ईश बाण थार मारूँ पूरा इगतीस।
तोड़ कर फाँकूं बाण इगतीस नाम मारो छ लंकपति ईश।
इगतीस भाल को बाण बणाऊँ ईं शस्त्र सूँ आर मारकर पहुँचादयूँ जमहार।
मारयाँ बिना छोड़ूँ नहीं तोकूँ ये म्हारो समचार।।

इगतीस बाण थारा काट गिराऊँ ई शस्त्र सूँ देख दशरथ जी क तूही भयो र कश्त।

बनोवास थन ईं बिध पायो छ घर मं नहीं राख्यो सूत।।

नाराणतक रावण संवाद

पिताजी नमो: करूँ परणाम देख ज्यो अब म्हारो संग्राम।

धीर धर बैठो हमारे पास पुत्र म्हार थारो ही विश्वास।।

सोच फिकर सब छोड़ो पिताजी मन मं राखो धीर पकडल्यूँ लक्ष्मण दूजा राम।

उनसे ऐसी बिवारूँ पिताजी रहे न उनको नाँव।।

एक समय के माहिन मूं जी गयो बन क माँही जाप कर हरी जानकी नार।

फेर जटायु लड़बाआयो ऊ भी डारयो मार।।

मंदोदरी रावण संवाद

गड़द उड़ रही छ जी आसमान लंक प चढ़ आया भगवान।

सहज घबराती तारिया जाल जीत कर नहीं जाव रघुनाथ।।

बुरी करी थान लाया ज्यानकी आण पहुँचो काल अजी थांको नहीं बच परिवार।

लेर ज्यानकी न मलो राम सूँ न तर लेगा मार।।

नहीं जीत रघुनाथ री तरिया मन मं मत घबराव हमार शंकर को वरदान।

पकड़ूं रण मं रामचन्द्र न बात हमारी मान।।

ढ़ाई कड़ी की रामलीला में गाई जाने वाली 'अखाड़ा तान'

प्रथम गुरू आद अखाड़ा आर लगादयूं चारों खूंटां कार

प्रथम अखाड़ा बीच चौक मं बराजे श्री रघुनाथ शम्भु की नांक दो चीर राम अर लक्ष्मण भरत शत्रुघन टाढे हनुमत वीर

बावन भेरू चौसठ योगिनी आवो अखाड़ा मांही दाव दुश्मन का लगता नांही जंतर मंतर नजर मुठ या चले किसी की नांही

एक खूंट प दुर्गा बिराज दूजा भवानी माई खूंट तीजां पर शारदा माही ईन अखाड़ा म जो कर बखेड़ो जीन खाव कालक्या माई

धरती बाँध आकाश बाँधू बाँधू चौदह लोक बाँध कर इनको करूं मजबूत ईर अखाड़ा माहिन नहीं आव डाकन भूत

अखाड़ा तान की रचना होने की एक प्राचीन कहानी है। इस रामलीला के बारें में लगभग 170 साल तक के दस्तावेज़ तो सुरक्षित है, परन्तु यह रामलीला इससे भी पहले से होती है। पाटोन्दा के बुज़ुर्गों के द्वारा मुझे अखाड़ा तान के संदर्भ में अवगत कराया गया कि ढ़ाई कड़ी की रामलीला जन-जन में अत्यधिक लोकप्रिय थी। लेकिन इसमें कई भूत-प्रेत भी शामिल हो जाते थे। एक बार जब गांव में रामलीला का मंचन हो रहा था तब लक्ष्मण जी को शक्ति बाण लगने का संवाद चल रहा था, तब मेघनाद द्वारा श्री लक्ष्मण जी पर ब्रह्म शक्ति का प्रहार किया गया। परन्तु लक्ष्मण जी का पात्र निभा रहे कलाकार पर किसी जादुई शक्ति ने प्रहार कर दिया, जिससे लक्ष्मण जी का पात्र अदा करने वाले की उस समय ही मृत्यु हो गई, परन्तु रामलीला में किसी भी प्रकार की विघ्न आने पर भी रामलीला निरंतर चलती रहे यह परंपरा प्राचीन काल से अब तक चली आ रही है। जिसके चलते कथा प्रेमियों के द्वारा रामलीला का मंचन बंद नहीं किया गया। सुबह रावण वध होने के पश्चात ही लक्ष्मण जी का पात्र निभाने वाले अदाकार का क्रियाकर्म किया।

इस घटना के घटित होने के बाद से ही रामलीला निर्विघ्न रूप में अनवरत चलती रहे तथा किसी बुरे विचारों या नकारात्मक शक्तियों, क्रियाओं के प्रभाव को नष्ट करने के लिए मंत्र स्वरूप इस रामलीला में अखाड़ा बांधने की परंपरा है। इसलिए ढ़ाई कड़ी की रामलीला में अखाड़े की तान गाई जाती है। इस घटना के बाद से जब से अखाड़ा बांधन गायन किया गया तब से आज तक इस रामलीला में कोई दुर्घटना नहीं हुई।

"एक खूंट पर दुर्गा बिराज दूजा भवानी माई

खूंट तीजां पर शारदा माई

ईर अखाड़ा मं कर बखडो जीन खाव कालक्या माई"

इसका अर्थ है के अखाड़े के एक खूंट पर या कोने पर माताश्री दुर्गा जी विराजमान हो गई है तथा दूसरे कोने पर माताश्री भवानी जी सुशोभित हो गई है। तीसरे खूंट पर माता श्री शारदा जी विद्यमान हो गई है। इस अखाड़े में जो भी नकारात्मक शक्तियाँ अपना प्रभाव दिखाएगी तथा कुछ बाधा डालेगी चौथे खूंट पर उपस्थित माँ काली उन्हें जान से मार देगी।

बारां क्षेत्र के कलाकार -

1. उस्ताद रामनारायण जी
2. श्यामनाथ जी
3. भैरवनाथ जी
4. काशीराम जी रावल
5. छीतर लाल जी राव
6. जगदीश प्रसाद
7. घासी लाल जी राणावत (नक्कारखाना, शहनाई पद बाबाई सा राजका बाग माँगरोल)
8. सीता राम जी त्यागी (शहनाई)
9. मूलचन्द जी राणावत (नगाड़े)
10. देवीदान जी
11. माँगीलाल जी
12. नवल जी राव
13. कृपाशंकर जी

उस्ताद राम नारायण जी -

इन्होंने बारां के स्थानीय उत्सव व विवाह उत्सवों में मांड गायन की प्रस्तुतियाँ दी तथा कोटा व बून्दी रियासतों में भी मांड गायन करने के लिए आते थे। दरबार की ओर से इन्हें प्रत्येक प्रस्तुती के लिए 10 रूपयें दिए जाते थे। इसके अलावा यह बारां क्षेत्र के आस-पास की जागीरों में भी विशेष उत्सवों पर अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए जाते थे। कई स्थानों पर आपने हाड़ाओं के मांड की भी प्रस्तुति दी थी तथा स्थानीय कलाकारों को भी आप मांड गायकी का प्रशिक्षण प्रदान करते थे। आपके पुत्र कृपाशंकर जी भी संगीत के क्षेत्र में आपकी परम्परा को आगे बढ़ा रहे है।

आपके द्वारा गाया गया हाड़ौती प्रशंसा गीत -

स्थाई - प्यारा भारत रा हरदारो हरदो हाड़ौती रो देश

अंतरा - कोटा को दशहरो प्यारों, बाराँ का रे डोल

सांगोद को न्हाण प्यारों, सारथल की गणगौर

बाराँ, कोटो, अटरू, अंतो, वाछे छीपा बडौद

शेरगढ़ शूरा की धरती, गढ़ बाकी घूघेर

परवन अंडेरी कालीसिंध, वाछे घोड़ा पछाड़

तीन धार महू के नीचे, जहाँ खींच्या रो बाग

श्यामनाथ जी -

श्यामनाथ जी तबला वादक थे। आपने तबला वादन की शिक्षा टोंक निवासी मम्मू खाँ साहब से प्राप्त की थी। आपने लगभग 35 वर्षों से तबला वादन का कार्य किया। आपका नाम हाड़ौती के ख्याति प्राप्त कलाकारों में शामिल था। आपने गुलाम अली खाँ साहब के साथ भी तबले पर संगत की थी। बारां में आयोजित होने वाले संगीत कार्यक्रमों में अधिकतर कलाकारों के साथ आप ही तबले पर संगत करते थे।

भैरवनाथ जी -

श्यामनाथ जी के बेटे भैरवनाथ जी को संगीत की शिक्षा अपने पिता जी द्वारा ही मिली। आप तबला वादन तो जानते थे पर बतौर पेशा आपने सारंगी वादन को अपना साथी चुना। कलाकार होने के नाते बारां क्षेत्र में आप बहुत प्रसिद्ध थे। आपका सारंगी वादन सुनकर कोटा नरेश महाराव उम्मेद सिंह जी के द्वारा आपके सारंगी वादन की प्रशंसा में कहा गया था कि, "भैरूनाथ जी की सारंगी सौ रंग दिखा द छः।" भैरवनाथ जी के पुत्र मांगीलाल जी भी संगीत कला से जुडे हुए है।

काशीराम जी रावल -

आप हाड़ौती लोकगीतों को गाने में पारंगत थे। हाड़ौती के लोकगीत संगीतमय तो होते ही थे, पर इन लोकगीतों में अनेक गाथाओं तथा हाड़ौती की संस्कृति, साहित्य का भी समावेश होता था। आप सामाजिक व धार्मिक लोकगीत गाते थे। पाटुन्दा की ढ़ाई कड़ी की रामलीला तथा सांगोद के न्हाण में भी आपके द्वारा भजनों

की प्रस्तुति दी जाती थी। आपके पूर्वज भी दरबार के यहाँ पर अपनी प्रस्तुति देने के लिए आते थे।

छीतरलाल जी राव -

इनके द्वारा पारम्परिक रूप से नगाड़े व शहनाई वादन का कार्य किया जाता है। नगाड़े तथा शहनाई को भावोत्तेजक स्वरूप में बारां क्षेत्र अत्यधिक प्रतिध्वनित करता आया है। हाड़ौती क्षेत्र में आक्रमणों का सामना करती हुई राजपूत सेनाओं के उत्साहवर्धन के लिए यह दोनों वाद्य नगाड़ा व शहनाई का आश्रय लिया जाता था। इन वाद्यों के साथ भांटो के ओजस्वी गीत गुंजन रियासती युग में भी बेहद प्रभावकारी सिद्ध हुए। छीतरलाल जी के द्वारा युद्धों में थकी हुई सेना में जोश भरने के लिए नगाड़ा वादन का कार्य किया जाता था। विवाह उत्सवों में भी नगाड़ा व शहनाई अतिमांगलिक प्रभाव उत्पन्न करते आए है। कन्या पक्ष की ओर से बारात के स्वागत के लिए भी दुन्दुभि वादक को अनिवार्य रूप से मुख्य द्वार पर बैठाया जाता था। आज भी कई स्थानों पर यह परम्परा देखने को मिलती है। शहनाई की विशेष धुनों के द्वारा भी आनन्द माधुर्य का संचार होता था।

माँगीलाल जी -

चित्र 5.1 गायक माँगीलाल जी के साथ शोधार्थी

बारां क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले माँगरोल ठिकाने के बाबाई सा राजबाग के यहाँ आपके पूर्वज नक्कारखाने पर कार्यरत थे। माँगीलाल जी कोटा में अपने गायन के कार्यक्रम पेश करने आते है। माँगीलाल जी महाराव राजा इज्यराज सिंह जी के यहाँ होली पर दिवाली की दूज पर तथा विशिष्ट उत्सवों व तीज, त्यौहारों पर कुछ पुरानी परम्पराओं की गायकी प्रस्तुत करते आए है। जैसे आपके द्वारा यह जानकारी मुझे दी

गई कि कोटा रियासत के समय से ही होली गायन काफ़ी प्रसिद्ध रहा है। कोटा रियासत में काफी राग में रचित होली गाने का ही प्रयत्न था। जैसे – ''पिया संग खेलूंगी होरी'' तथा ''गणगौर'' के अवसर पर 'बिलाला ढोला आज तो रंगीली गणगौर' एवं विशेष उत्सवों पर 'थाने घणी घणी खम्मा म्हारा छत्रधारी हाडा राव साहब'। इस मांड में एक-एक स्वर पर काफी देर ठहराव होता था और इसमें हाड़ौती के हाड़ाओं की वंशावली का गायन भी किया जाता था। वर्तमान में आप नाटकशाला, पर्यटन विभाग तथा विरासतीय कार्यक्रमों में भी अपना प्रदर्शन करते है। हाड़ा रा राजा ऊबा री जो, चांदनी में चंदा ढोला प्यारा घणां लागो जी, वारू था पे लाख करोड़। यह गीत भी आपके द्वारा राजपूत प्रशंसा गीत के रूप में गाया जाता है।

कृपाशंकर जी -

आपको संगीत की शिक्षा आपके घर के बुज़ुर्गों के द्वारा प्राप्त हुई। अभिजात्य वर्ग में जन्मोत्सव, गृह प्रवेश, गोद बैठाने आदि उत्सवों में गायन की स्वर लहरियों से वातावरण को गुंजित करने की रीत सैकड़ों वर्षों से आज तक चली आ रही है। इसी क्रम में आपके द्वारा राजपूती बन्ना-बन्नी, कलाली आदि की प्रस्तुति हाड़ौती क्षेत्र में दी जाती है। आपके द्वारा गाए जाने वाले बन्ना राजपूत नरेशों की प्रशंसा के लिए गाए जाते है। उसके बोल कुछ इस प्रकार है -

स्थाई - बना सा थाकी चाल प्यारी लागे सा अजी म्हारा नवल बना

अंतरा - बना सा थाको मुकुट प्यारो लागे सा अजी म्हारा नवल बना

षष्ठम् अध्याय

हाड़ौती संभाग की वर्तमान सांगीतिक स्थिति

षष्ठम अध्याय

हाड़ौती संभाग की वर्तमान सांगीतिक स्थिति

हाड़ौती संभाग के अंतर्गत कोटा, बून्दी, बारां, झालावाड़ आदि जिले समावेशित है। यहाँ वर्तमान में कुछ ऐसे नामी संगीतज्ञ है, जिन्होंने देश ही नहीं अपितु विदेश में भी यहाँ की सांस्कृतिक विरासत को फैलाया है। यहाँ राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा में संगीत विषय लगभग (60-70 वर्ष) वर्षों से पढ़ाया जा रहा है और यहाँ की छात्राओं ने देश ही नहीं वरन् विदेश में भी संभाग एवं राजस्थान राज्य के नाम को गौरवान्वित किया है। कोटा में रामपुरा में 'राजकीय संगीत माध्यमिक (प्रभाकर) विद्यालय' में भी स्कूली स्तर पर संगीत विषय लगभग (40-50) वर्षों से संचालित है। इस विद्यालय में संगीत विषय में गायन, वादन, नर्तन की शिक्षा भी सांयकालीन समय में दी जाती है।

कोटा संभाग में महाराव राजाओं के शासनकाल से ही संगीत की महफ़िलों का आयोजन होता आया है। इसी श्रृंखला में कोटा रियासत के महाराव राजा बृजराज सिंह जी के जन्मदिवस के अवसर पर 21 फरवरी को शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम रखा जाता था। जिसमें भारत देश के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायकों को आमंत्रित किया जाता था। साथ ही कोटा संभाग तथा इसके आसपास के क्षेत्र के सभी गणमान्य नागरिकों, गायकों, वादकों को भी इस आयोजन में उपस्थित होने का न्योता भेजा जाता था। महाराव साहब बृजराज सिंह जी जब तक जीवित थे, तब वर्षों तक यह सिलसिला ऐसे ही चलता रहा। हर वर्ष भारत के उम्दा कलाकारों को आमंत्रित किया जाता था तथा सन् 2022 में महाराव साहब का स्वर्गवास हो जाने पर भी महाराव इज्यराज सिंह जी के द्वारा अपने स्वर्गीय पिता जी की पुण्यतिथी पर हर वर्ष 21 फरवरी को राव माधोसिंह ट्रस्ट की ओर से गढ़ पैलेस में इस संगीत कार्यक्रम का आयोजन करवाया जाता है। जिसमें 21 फरवरी 2023 को कौशिकी चक्रवर्ती जी के शास्त्रीय गायन का आयोजन हुआ, जिसमें तबले पर ओजस अढ़ीया जी व हारमोनियम पर तन्मय देओचके जी ने, सारंगी पर मुराद अली जी ने संगत की थी। इस कार्यक्रम में पधारने वाले कुछ संगीतकारों में पं. राजन साजन मिश्र, गंगूबाई हंगल, पं. अजोय चक्रवती, पं. जसराज, मीता पंडित, शुभा मुदगल, कौशिकी चक्रवर्ती, पं. राम रंग झा, किशोरी

अमोनकर, छन्नू जी महाराज, कुमार गन्धर्व, उ.जावेद अली खाँ, गिरजा देवी, नवोदीप चक्रवर्ती प्रमुख हैं।

राजकीय कला कन्या महाविद्यालय -

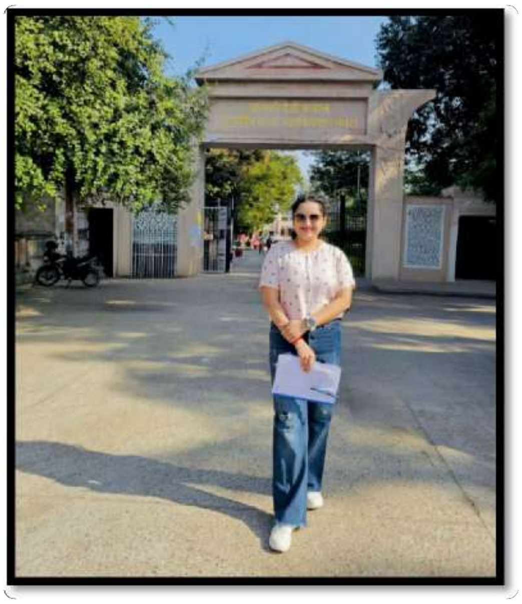

चित्र 6.1 राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा पर शोधार्थी गुंजन हाड़ा

हाड़ौती संभाग का सबसे बड़ा कन्या महाविद्यालय कोटा संभाग के नयापुरा क्षेत्र में स्थित राजकीय कला कन्या महाविद्यालय है। 2018 से पूर्व इस महाविद्यालय का नाम जानकी देवी बजाज राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय था। 2018 के बाद कला, विज्ञान, वाणिज्य संकाय पृथक हो जाने के कारण बाद में इसका नाम राजकीय कला कन्या महाविद्यालय हुआ। इस महाविद्यालय में संगीत विभाग स्नातक स्तर व स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर संचालित है। इस महाविद्यालय में हाड़ौती क्षेत्र की ही नहीं राजस्थान व भारत के अलग-अलग स्थानों से छात्राऐं संगीत विषय में प्रवेश लेने के लिए आती है। सन् 1958-59 तक इस महाविद्यालय में संगीत विषय में स्नातक तक ही अध्यापन होता था, परन्तु छात्राओं की रूचि को देखते हुए सन् 1992-93 में इस महाविद्यालय को स्नातकोत्तर स्तर पर छात्राओं को प्रवेश देने की तथा संगीत के विषय में अध्यापन करने की भी सुविधा प्राप्त हो गई। सन् 1996 में यहाँ संगीत विषय में प्रवेश लेने वाली छात्राओं की संख्या ओर अधिक हो गई। इस महाविद्यालय में प्रतिदिन नियमित रूप से संगीत की कक्षाओं का संचालन होता है। यहाँ पर संगीत की नियमित कक्षा में उपस्थित होकर संगीत साधना व महान गुरूओं से सीखने पर अन्यत्र कहीं संगीत सीखने की आवश्यकता नहीं होती।

इस महाविद्याय में संगीत विभाग के द्वारा समय-समय पर छात्राओं के लिए संगीत की कार्यशाला का भी आयोजन करवाया जाता है। बसंत पंचमी, गुरू-पूर्णिमा, सावन, जन्माष्टमी आदि अवसरों पर सभी छात्राओं को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने के समान अवसर प्रदान किए जाते है। संगीत विभाग के द्वारा संगीत प्रतियोगिता का भी आयोजन करवाया जाता है। जिससे छात्राओं को मंच प्रदर्शन के गुण सीखने को मिलें। महाविद्यालय में विभाग के द्वारा राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों को भी विभिन्न अवसरों पर आमंत्रित किया जाता है, जिससे छात्राओं को गुणी कलाकारों को श्रवण करके उनसे कुछ ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है। इस महाविद्यालय में सुप्रसिद्ध ग़ज़ल व शास्त्रीय संगीत गायक प्रो. भारती जी ने लगभग 33 वर्षों तक अपनी सेवाऐं दी है। घरानेदार गायक जिन बारीक़ बातों को अपने घराने के लोगों तक ही सीमित रखते है, उन गुणों को भी आपने बग़ैर छुपाये सभी छात्राओं को समान रूप से बाँटा। डॉ. भारती जी का ताल्लुक सेनिया घराने से है। आपने सेनिया घराने की ख़ास बंदिशों को भी सभी छात्राओं को सिखाया। आप जैसे गुरू मिलना सभी के लिए परम सौभाग्य की बात है। आपकी लगन व मेहनत की बदौलत ही यहाँ की छात्राओं ने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजकीय कला कन्या महाविद्यालय को प्रस्तुत किया है। इस महाविद्यालय को (NACC) के द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदान की गई। यहाँ से पढ़ कर कई छात्राऐं आकाशवाणी की सफल कलाकार बनी। कुछ विदेश में संगीत अध्यापक और कुछ छात्राऐं पार्श्व गायिका बनी है।

चित्र 6.2 राजकीय महाविद्यालय, बून्दी के संगीत विभाग से तथ्य संकलन करते शोधार्थी

बून्दी संभाग -

बून्दी संभाग में स्थित महाविद्यालय बून्दी क्षेत्र के छात्र-छात्राओं को शिक्षा अर्जित करने कोटा नहीं आना हो बून्दी में ही रहकर वह स्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण कर सके, इस उद्देश्य से सन् 1959 में हाड़ेन्द्र महाविद्यालय नाम से छोटी काशी में महाविद्यालय की स्थापना हुई।

वर्तमान समय में राजकीय महाविद्यालय, बून्दी जिस स्थान पर स्थापित है, वो सन् 1959 ई. तक इस महाविद्यालय में स्नातक स्तर तक का ही शिक्षण कार्य होता था। सन् 1992 में इसे स्नातकोत्तर स्तर तक का शिक्षण प्रदान करने की मान्यता भी प्रदान हो गई। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के स्वायत संस्थान राष्ट्रीय मूल्याकंन तथा प्रत्यापन परिषद के द्वारा इस महाविद्यालय को 'बी प्लस' ग्रेड दी गई। इस महाविद्यालय में संगीत विभाग भी स्थापित है, जिसका सबसे अधिक फ़ायदा हाड़ौती क्षेत्र में संगीत विषय में शिक्षा प्राप्त करने की चाहत रखने वाले छात्रों को हुआ, क्योंकि कोटा में छात्राओं के लिए संगीत में बी.ए. तथा एम.ए. करने की सुविधा थी लेकिन छात्रों के लिए नहीं। कोटा के राजकीय कला महाविद्यालय में संगीत विषय नहीं होने के कारण हाड़ौती क्षेत्र के सभी संगीत प्रेमी छात्रों ने बून्दी के राजकीय महाविद्यालय में ही प्रवेश लिया। इस महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर संगीत विषय सन् 1959-60 में आरंभ हुआ। सन् 1992-93 में इस महाविद्यालय में स्नातकोत्तर तक संगीत विषय का शिक्षण होना आरंभ हुआ। संगीत विषय में भी संगीत कंठ, तबला, सितार आदि विधा में संगीत शिक्षा अर्जित की जा सकती है, परन्तु इस महाविद्यालय में संगीत कंठ विषय का ही अध्यापन छात्रों को करवाया जाता है। संगीत विषय में प्रवेश लेने से पहले संगीत विभाग के संगीत सह-आचार्यों के द्वारा संगीत छात्रों का परीक्षण होता है। सुरीले कंठ वाले छात्र को ही संगीत कंठ विषय के लिए पात्र माना जाता है। छात्रों के लिए तानपुरा मैनुअल व इलेक्ट्रोनिक, तबला मैनुअल व इलेक्ट्रोनिक, हारमोनियम आदि वाद्यों की भी इस महाविद्यालय में उचित व्यवस्था है।

संगीत विभाग राजकीय महाविद्यालय, बून्दी के द्वारा संगीत की दुनियाँ को बहुत कलाकार प्रदान किए गए है। जिन्होंने अपनी संगीत साधना व उच्चतम स्तर की गायकी से सम्पूर्ण विश्व में वीर भूमि राजस्थान को ख़ूब गौरवान्वित किया है। राजकीय महाविद्यालय में अध्ययन करके देश-विदेश में संगीत का अग्रणी प्रदर्शन करने वालों में कुछ नाम प्रमुख है।

भारत के सुप्रसिद्ध ग़ज़ल गायक प्रो. भारती जी, जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व में ख़त्म होती ग़ज़ल गायकी की ख़ुशबू को फिर से जीवित किया तथा इतने आसान शब्दों को अपनी ग़ज़ल के माध्यम से प्रस्तुत किया की आम लोग भी उसे गा सके। बाल्यावस्था से वृद्धावस्था की आयु तक के सभी लोगों में आप तथा आपकी ग़ज़लें बेहद प्रसिद्ध है। आपको भारत के साथ-साथ विदेशों के विश्वविद्यालयों में भी छात्र-छात्राओं को संगीत शिक्षा प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। आज के दौर के सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ल गायकों में आप अव्वल स्थान रखते है। आप जैसी ग़ज़ल गायकी शायद ही कोई ओर कर पाए।

फिल्म जगत के प्रखर पर राजस्थान का नाम करने वाले श्री शैलेन्द्र (शैल) हाड़ा जी जिनका नाम भारत के सुप्रसिद्ध पार्श्व गायकों में शुमार होने के साथ-साथ ही बॉलीवुड के प्रसिद्ध संगीत निर्देशकों में भी शामिल है। आपका संगीत सफ़र बॉलीवुड में बतौर पार्श्व गायक 2005 में आई 'ब्लैक' फिल्म तथा 2007 में आई 'सांवरिया' से शुरू हुआ। जिसके बाद आपने कई सुपरहिट फिल्मों में अपनी आवाज़ दी। आपको 'पद्मावत' फिल्म के घूमर (जो आपने अपने परिवार के बुज़ुर्गों को श्रृद्धांजली स्वरूप प्रस्तुत किया) के लिए 'नेशनल अवार्ड' से सम्मानित किया गया। आपने कई फिल्मों में संगीत निर्देशन किया। जैसे - सरबजीत, पद्मावत, राम-लीला, गंगूबाई, हीरामंडी आदि।

झालावाड़ -

झालावाड़ ज़िले में संगीत विद्यालय की स्थापना करवाने का श्रेय झालावाड़ रियासत के राज-गायक श्री नवल किशोर जी राव को जाता है। झालावाड़ नरेश कला व कलाकारों दोनों को ही उचित आदर-सत्कार प्रदान करते थे। देश आज़ाद होने के समय जब झालावाड़ रियासत का गुणीजनखाना बंद होने लगा। तब महाराज राणा राजेन्द्र सिंह जी के पुत्र महाराज राणा हरीश्चन्द्र जी ने नवल किशोर जी से कहा कि, "नवल किशोर जी कहिये आपकी क्या सेवा की जाए। आप जो कहेंगे मेरा वचन है वो आपको मिलेगा।" नवलकिशोर जी ने दरबार से कहा कि, "महाराज साहब आप झालावाड़ में संगीत विद्यालय की स्थापना करवा दीजिए।" महाराज राणा साहब ने झालावाड़ में हरीशचंद्र संगीत विद्यालय की स्थापना की, जिसका उद्देश्य था कि झालावाड़ की संगीत परंपरा निरन्तर चलती रहे, संगीत का सफ़र ख़त्म ना हो तथा कलाकारों को रोज़गार व बच्चों की शिक्षा भी प्राप्त हो। सन् 1940 ई. में जब

हरीश्चन्द्र संगीत विद्यालय की स्थापना हुई थी तो झालावाड़ रियासत के गुणी कलाकारों को ही इस विद्यालय में संगीत शिक्षक के पद पर नियुक्त किया गया था। हाड़ौती क्षेत्र का प्रथम संगीत विद्यालय होने का गौरव भी हरीश्चन्द्र संगीत विद्यालय को प्राप्त है।

ग़ैर सरकारी शिक्षण संस्थान

सिंघानिया स्कूल -

इस विद्यालय का पूरा नाम सर पद्मपत सिंघानिया स्कूल है। इसकी स्थापना 01 जुलाई 1996 को हुई थी। यह एक ग़ैर-सरकारी शिक्षण संस्थान है। हाड़ौती के शीर्ष के पाँच विद्यालयों में से यह एक है। यह विद्यालय जे.के. फाउन्डेशन द्वारा संचालित है। यहाँ पर शास्त्रीय संगीत की संपूर्ण शिक्षा दी जाती है। जिसमें विद्यार्थियों को रागों, तालों तथा अन्य विधाओं की संपूर्ण बारीक़ियाँ सिखाई जाती है। यह कोटा का पहला ग़ैर-सरकारी विद्यालय है, जिसमें कला संकाय के अंतर्गत संगीत कंठ भी एक विषय के रूप में विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है। 11वीं कक्षा का विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार संगीत विषय ले सकता है। जिसके लिए विद्यालय में अलग से संगीत के अध्यापकों को रखा गया है। इस विद्यालय के संगीत विभाग के विभागाध्यक्ष श्री रजब अली भारती है, जो की पिछले 27 वर्षों से इस विद्यालय में अपनी सेवाऐं दे रहे है।

इस विद्यालय के बच्चों ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पुरस्कार प्राप्त किए है। अभी हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा भी यहाँ के विद्यार्थी को पुरस्कार मिला है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सैलस्टा इन्टरनेशनल प्रतियोगिता जो की लखनऊ में होती है, वहाँ भी इस विद्यालय के बच्चों द्वारा अपनी प्रतिभा के द्वारा खिताब को अपने नाम किया गया तथा यहाँ के विद्यार्थी श्रीमति शीला दीक्षित जी के द्वारा भी पुरस्कृत हो चुके है।

हाड़ौती संभाग के वर्तमान स्थापित संगीतज्ञ -

1. डॉ. रौशन भारती जी -

चित्र 6.3 डॉ. रौशन भारती जी रियाज़ करते हुए

हिन्दुस्तान के गौरव तथा राजस्थान की शान, हाड़ौती के एक मात्र विश्वप्रसिद्ध ग़ज़ल एवं शास्त्रीय गायक डॉ. भारती जी का जन्म देश (हिन्दुस्तान) की राजधानी दिल्ली में 2 मई 1967 को हुआ था। आपकी संगीत की शुरूआती तालिम आपके जन्म के समय से ही प्रारंभ हो गई थी, क्योंकि जैसे ही आपका जन्म हुआ और आपको आपके दादाजी उस्ताद जमाल खाँ साहब के हाथों में सौंपा गया, तो उनके द्वारा आपके कानों में सर्वप्रथम अज़ान एवं तदुपरान्त राग दरबारी की एक बंदिश सुनाई गई। तभी से आपका संगीत का सफ़र शुरू हो गया था। आप सेनीया घराने के उच्च कोटि के कलाकारों में माने जाते है। आपकी रूचि जितनी ग़ज़ल गायकी में है, उतनी ही साहित्य तथा लेखन में भी है। आपके द्वारा कई ग़ज़ले लिखी गई है।

आपने अपनी स्कूली स्तर की शिक्षा कोटा से ग्रहण की। तत्पश्चात विश्वविद्यालयी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आप जयपुर चले गए, जहाँ आपने मास्टर्स में सर्वाधिक अंक प्राप्त करके स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

आपको आकाशवाणी द्वारा 'टॉप ग्रेड' प्रदान की गई तथा ऑल इंडिया रेडियो के सबसे कम उम्र के जूरी सदस्य होने का गौरव भी आपको प्राप्त है।

आपने बेगम अख़्तर जी पर अपना शोध कार्य सम्पूर्ण किया। आज आपके निर्देशन में 7 से अधिक पी.एच.डी. अवार्ड हो चुकी है तथा कई शोधार्थी आपके निर्देशन में अपना शोध कार्य कर रहे है।

आपको माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर राजस्थान तथा कई विश्वविद्यालयों द्वारा सदस्यता प्रदान की गई है तथा 12वीं के संगीत विद्यार्थियों को आपके द्वारा लिखी गई पुस्तक ही पढ़ाई जाती है।

देश के साथ-साथ आपकी मधुर आवाज़ में आपका गायन सुनने के लिए विदेश में भी लोग आपकी राह देखते है। आपको कनाडा, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, डेनमार्क की सरकार द्वारा विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित तो किया गया ही है, साथ ही वहाँ की सरकार द्वारा आपको वहाँ की अस्थायी नागरिकता भी प्रदान की गई है।

देश की जानी-मानी म्यूज़िक कम्पनियों द्वारा आपके कई एलबम रिलीज़ किए गए हैं तथा कुछ रिलीज़ होने वाले है। आपकी सफल एलबमों में आपकी ख़ातिर, दाग़, एहसास, ग़ज़ल गोल्ड, शामें ग़ज़ल, उल्फत (The Loving Heart), ख़्वाहिशे आदि है।

राजस्थान सरकार तथा भारत सरकार द्वारा आपको कई पुरूस्कार प्रदान किए जा चुके है। जैसे -

1. हिन्दी गौरव अवार्ड
2. सर्वोत्तम ग़ज़ल गायक अवार्ड 'संगीतायन'
3. सर्वश्रेष्ठ गायक का खिताब 13 बार लगातार आपने प्राप्त किया।
4. सन् 1996 में लायन्स क्लब (कोटा) के द्वारा संगीत के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान प्रदान करने के लिए व सर्वश्रेष्ठ कलाकार के रूप में आपको सम्मान प्रदान किया गया।
5. राजस्थान नाटक अकादमी के द्वारा 'यूथ अवार्ड' जनवरी 2002
6. कोटा ज़िले में स्वतंत्रता दिवस पर कला व संस्कृति में बहुमूल्य योगदान देने हेतु सम्मान प्राप्त किया।

डॉ. साहब बेहद सरल व्यक्तित्व के धनी हैं। लोगों की मदद व परोपकार को सबसे पुण्य का काम मानते है। आपने अपने ज्ञान को महाविद्यालय की कक्षा में ही बाँटा है। आपने कभी महाविद्यालय के अलावा किसी छात्रा को घर पर संगीत की

शिक्षा नहीं दी। आप कितने उच्च कोटी के गुरू है, आपके द्वारा बताए गए एक किस्से से पता चलता है कि आज से कई वर्षो पूर्व जब प्रथम बार आपको बैचलर ऑफ आर्ट के प्रथम वर्ष की संगीत छात्राओं का बैच मिला। (इससे पूर्व आप M.A. की छात्राओं की कक्षा ही लेते थे) आपके पास एक छात्रा आई, आपने उसका स्वर परिक्षण लिया तथा संगीत कंठ की कक्षा में प्रवेश की अनुमति दी। आपने देखा की छात्रा सुर में तो है पर उसे ना संगीत का ज्ञान था ना ही शास्त्रीय संगीत से पहले कोई वास्ता था। आपके द्वारा जब कोई बंदिश सिखाई जाती आप उसे गाने को कहते तो स्थाई को वह छात्रा पाँचवे काले से तथा अंतरे को उस ही बंदिश को साढ़े पाँचवें काले से गाती थी। इस बात से आप भी हैरान हुए। आपने प्रण लिया कि 30 दिनों के अंदर मुझे इसे सुरों से वाक़िफ़ करवाना है। मैं जैसा सिखाऊँ यह वैसा ही गाए। आपने उस छात्रा पर अपने सम्पूर्ण जीवन काल में सबसे अधिक मेहनत की तथा आपने जो प्रण लिया था उसे पूर्ण किया, जिसमें आपका कोई स्वार्थ निहित नहीं था। आज वह छात्रा सहायक आचार्य के पद पर कार्य कर रही है।

आप फ़रमाते हैं एक गुरु किसी भी छात्र-छात्रा को सुरों से वाक़िफ़ ही नहीं करवा सके तो फिर तो उसकी संगीत साधना ही व्यर्थ है। संगीत में कई परीक्षाओं को उत्तीर्ण करके नौकरी पाना आसान है पर सही मायनों में आप जैसे गुरू आज के युग में बामुश्किल ही देखने को मिलें। आप महाविद्यालय कि छात्राओं को आपकी कक्षा में आने के पहले दिन से ही बंदिशों के साथ खुले आलाप-तान करना भी सिखाते है। आपका मानना है कि जब छात्राऐं आपके पास आती है, उस समय वो अनघढ़ मिट्‌टी होती है। उन्हे सुगढ़ सुन्दर स्वरूप प्रदान करना आप अपना प्राथमिक फ़र्ज मानते है। आपकी कक्षा में चाहे एक ही छात्रा उपस्थित हो तब भी आप उसे उतने ही मन से सिखाते हैं जितने की जब आपकी कक्षा में 50 छात्राऐं उपस्थित हो। आपके सिखाने में कोई फ़र्क नहीं होता। संगीत की सभी छात्राओं को कक्षा में बैठकर सिखने की अनुमति तो थी ही, परन्तु अलग संकाय की छात्राओं को भी आपने कभी मना नही किया। आप बेहद उदार व्यक्तित्व के धनी है। आपसे संगीत की तालीम लेने के लिए भारत ही नहीं परदेस के संगीत प्रेमी भी लालायित रहते है। हिन्दुस्तान के अलग-अलग राज्यों में आपके शिष्य है।

डॉ. साहब के गायन में शहंशाह-ए-ग़ज़ल उस्ताद मेहदी हसन साहब, आपके दादा जी उस्ताद जमाल खाँ साहब, सरताज़-ए-ग़ज़ल जगजीत सिंह जी साहब की

ख़ुशबू नज़र आती है, पर सभी की कुछ ना कुछ ख़ूबी लिए हुए भी आपका गायन सबसे भिन्न मालूम होता है।

आपका मानना है कि शब्दों को सुरों का लिबास पहनाना गायकी का ज़रूरी अंग है, पर सबसे ज़्यादा ज़रूरी है शब्दों को अपनी आत्मा का ऐसा लिबास पहनाया जाए कि श्रोताओं के दिल पर असर करे। आत्मा व सुरों के लिबास के पहराव के साथ सबसे ख़ास तथा ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि गाना-बजाना रंग में होना चाहिए, जिसमें आप माहिर है। आप ग़ज़ल गाते वक़्त उसमें अन्य सम प्राकृतिक रागों की छाया दर्शाते है, फिर उसके मूल स्वरूप में आ जाते है, पर हमेशा उस राग के रंग में रहते थे। ज़ाहिर सी बात है अगर कोई हमें हमारे ग़लत नाम से पुकारे तो हमें भी बुरा लगेगा, उसी प्रकार ही जब हम राग-रंग ख़राब करेंगे तो श्रोता को भी पसन्द नहीं आएगा और सुर भी ख़फ़ा होंगे।

आपने ग़ज़ल को अपनी संगिनी के तौर पर पूरी दुनियाँ में मक़बूल किया है, पर सिर्फ इसलिए की आपकी रूचि ग़ज़ल गायन में थी नहीं तो आप शास्त्रीय संगीत गायन में भी अव्वल है। आपने अपना शोध कार्य भी मल्लिका-ए-ग़ज़ल बेगम अख़्तर साहिबा पर किया है, पर दो-तीन वर्ष की आयु में जब आपके वालिद साहब उस्ताद यासिन भारती जी साहब के द्वारा आपको संगीत की तालीम देना प्रारंभ हुआ तो आपको शास्त्रीय संगीत ही सिखाया गया। उपशास्त्रीय व सुगम संगीत ना गाने की तथा हारमोनियम का उपयोग नही करने की सख़्त हिदायत थी। आपको सबसे पहले पाँच स्वरों का राग मालकौंस सिखाया गया, जो लगभग एक वर्ष तक आपने सीखा। उसके बाद आपको तबले पर विभिन्न तालों का ज्ञान दिया गया।

आपके वालिद साहब के द्वारा अभी भी आपको कुछ अप्रचलित रागों की जानकारी व तालीम मिलती रहती है। वृदावस्था में गायन करने में असमर्थ होने पर भी दादा जी के द्वारा आपको हाथ के इशारों से बताया जाता है कि इस जगह पर ऐसी तान होनी चाहिए तथा इस ग़ज़ल में कुछ इस प्रकार के उतार-चढ़ाव होने चाहिए। जिस प्रकार ग़ज़ल गायन में आज के समय में कोई आपके समकक्ष नहीं है, उसी प्रकार शास्त्रीय संगीत गायन में भी आपका जवाब नहीं है। गायन के चारों मत शिवमत, हनुमंत मत, कृष्ण मत तथा भैरव मत आपकी गायकी में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते है। आप महफ़िलों में भी ग़ज़ल पेश करते हैं। आपसे संगीत की तालीम लेने वाली छात्राएँ बख़ूबी जानती है कि आप शास्त्रीय संगीत गायन में भी उतने ही

दिग्गज़ है, जितने कि ग़ज़ल गायन में है। आप आपकी संगीत कक्षा में छात्राओं को संगीत की तालीम के साथ ही शिष्टाचार के गुणों की सीख भी देते थे। आपका संगीत का सफ़र यूँ तो दुनियाँ में आते ही शुरू हो गया था, पर शास्त्रीय संगीत की तालीम 3 वर्ष से शुरू हुई जो आज तक अनवरत चल रही है। पूरी दुनियाँ में ग़ज़ल गायकी के आकाश में आपका नाम ध्रुव तारे की भाँति सबसे अलग नज़र आता है, जिसके पीछे कम उम्र से की गई कठोर अनुशासनयुक्त साधना है। आपने हमेशा तानपूरे पर ही शास्त्रीय संगीत गायन किया है। कम से कम 7 घंटे रियाज़ करना आपका दैनिक दिनचर्या का हिस्सा था।

आपके द्वारा सभी शिष्यों को एक ही गुरुमंत्र दिया जाता है कि सफलता प्राप्त करने और क़ामयाबी के शिखर तक पहुँचने के लिए संगीत की दुनियाँ में शार्टकट जैसा कोई रास्ता नहीं है। आप संगीत के क्षेत्र में सफ़ल होना चाहते है तो आपको बेहद कठिन साधना करनी होगी। शार्टकट से प्राप्त सफलता का समय भी शॉर्ट ही होता है। जितनी जल्दी मिलती है उस से भी जल्दी ख़त्म भी हो जाती है। आपके व्यक्तित्व के गुणों को शब्दों में पिरोना बेहद मुश्किल है। आपके व्यक्तित्व में अनगिनत अच्छाइयाँ हैं। घरानेदार उस्ताद गायकी की जिन बारीक़ियों को सिर्फ अपने बच्चो को ही सिखाते है, ऐसी अनोखी बन्दिशें तथा गुण की बातें भी आपके द्वारा सभी शिष्य-शिष्याओं को बताई गई है। आपकी गाई ग़ज़लें 'उसके हँसते चेहरे से तो ऐसा लगता है', 'मैंने कहा नज़र मिला', 'वो तो ना मिल सके हमें', 'दिल दो तरह का तेरी मोहब्बत में चाहिए', 'गो ज़रा सी बात पर बरसो के याराने गए', 'निशां भी कोई ना छोड़ा', 'मेरे हमनफ़स मेरे हम नवां मुझे दोस्त बनके दगा ना दे', 'जाने कैसी पसंद रखता है', 'क्या भला मुझको परखने का नतीजा निकला', 'देख तो दिल की जां से उठता है', 'आए कुछ अब्र कुछ शराब आए', 'जब शाम होती है मुझे तुम बेहद याद आते हो', 'आह को चाहिए ईक उम्र असर होने तक', 'हमने दास्तां अपनी सुनाई आप क्यूँ रोए', 'उनको एहसास-ए-ग़म नहीं होता', 'रोया करेंगें आप भी पहरों इसी तरह', 'शुक्रिया मेहरबानी है क़रम आपका', 'तुम को चाहा तो ख़ता क्या है बता दो मुझको', 'दिल में हम आपकी तस्वीर लिए बैठे है', 'याद से दिल बहलाओं ना', 'जो अब भी ना तकलीफ़ फ़रमाईयेगा' आदि पूरी दुनियाँ में काफ़ी मशहूर है।

प्रो. रोशन भारती की प्रमुख ग़ज़ल व नज़्म में, आँखों में आँसू आएगें, तेरे पीछे जिन्दड़ी गवाई, गुन प्यारी गुन सुन मेरे दिल की धड़कन सुन, वो मेरा दोस्त मुझे अब, तू जो मुझसे कभी बरहम होगा आदि प्रमुख है।

2. शैल हाड़ा -

चित्र 6.4 शैल हाड़ा जी के साथ शोधार्थी

आप देश के जाने माने पार्श्व गायक, संगीत निर्देशक है आपका जन्म 11 अप्रैल 1975 को कोटा, राजस्थान में हुआ आपकी स्कूली शिक्षा कोटा में हुई।

संगीत के आपके प्रथम गुरू आपके पिता श्री जसवंत सिंह जी हाड़ा है तथा उसके पश्चात् आपने श्री महेन्द्र दीक्षित जी से सीखा तथा संगीत विशारद किया तत्पश्चात् आप सपनों के शहर मुम्बई की ओर प्रस्थान कर गए, वहाँ आपने पं. श्री आसकरण शर्मा से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्रहण की तथा उनके कंडा बंध शिष्य बन गए तथा आपके गुरू पं. श्री आसकरण शर्मा जी के अनुशासन में कोटा विश्वविद्यालय से मास्टर ऑफ आर्ट्स इन म्यूज़िक की डिग्री प्राप्त की।

एम.ए. करने के पश्चात् आप मुम्बई विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में शामिल हो गए। जहाँ आपने मुम्बई विश्वविद्यालय को प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय स्तर की कई प्रतियोगिताओं में विजय श्री को प्राप्त करते हुए नो स्वर्ण पदक जीते तथा देश का गौरव बढ़ाया। आपने 2000 तक (M.U.) का प्रतिनिधित्व किया तथा आप कलकत्ता गए, वहाँ आपने भारत सरकार की ओर से बेस्ट एक्टर का अवार्ड मिला।

मुम्बई में रहते हुए आपको देश की महान विभूति पद्मभूषण श्री पं. जसराज जी से सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आपका बॉलीवुड में गायक के रूप में करियर 2005 में शुरू हुआ। जब ब्लैक फिल्म रिलीज़ हुई 2005 में आप मोंटी शर्मा से मिले। जिनसे आपने सफल संगीतज्ञ व संगीत निर्देशक बनने के कई बारीक़ गुण सीखे। आप दोनों घंटों बैठकर अपने संगीत पर काम किया करते तथा कुछ नया करने की तथा दुनियाँ से अलग काम करने की चाह में अपनी संगीत साधना में बैठे रहते थे।

सन् 1998 ई. 28 जून को आप श्री किशोर दा साहब से मिले। वहाँ पर उनके साथ आर.डी.बरमन जी भी थे। आपका गायन सुनकर वह आपसे प्रभावित हुए तथा आपके गाने की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

एक दिन मोंटी शर्मा के स्टूडियो में आपकी मुलाक़ात फिल्म निर्देशक श्री संजय लीला भंसाली से हुई। जहाँ पर फिल्म ब्लैक का गाना "मौसम की अदला बदली" पर काम चल रहा था। जहाँ संजय भंसाली ने आपकी प्रतिभा को पहचाना तथा आपको अपना पहला गाना एक पार्श्वगायक के रूप में मिला। उसका नाम था साँवरिया, आपने "साँवरिया" फिल्म के गानों पर लगभग 2.5 साल काम किया।

आपने संगीत अरेंजमेन्ट संजय भंसाली तथा मोंटी शर्मा से सीखा और इस तरह आपका फिल्मी सफ़र शुरू हुआ। आज संजय भंसाली जी के साथ आपको 19 साल हो गए हैं।

आपके द्वारा गाए गए गीत निम्न हैं –

हर-हर महादेव (महाराणा प्रताप), बन्द ख़्वाबों की, अंग लगा दे वे मोहे रंग लगा दे रे, ढोलिड़ा, दिल जो ना कह सका, मुस्कुराहट को भी आने पे मज़ा आने लगे, मेरा जुनुन, दरस बिना नाही चैन, बरसन लागी आँगन बूंदीयन, तूंग लक, मेहरबान पूरे चाँद की ये आधी रात है, तेरे चेहरे पे जाके रूक जाती है, मारतण्ड मल्हारी, इक मलाल ऐसा, मायड थ्हारो तो पूत करे, तेरा ज़िक्र है, जब जब करता हूँ महकता हूँ, कह ना सकूँ मैं इतना प्यार, रूबा-रूबा, ऊड़ी नीदें आँखों से, ढोलिड़ा, लहू, मूहँ लग गया, खलीबली हो गया है दिल दुनियाँ से मेरा।

आपका मानना है संगीत एक योग साधना है। आप जितना अधिक इसको समय देंगे यह उतना ही ख़ूब निखर कर आएगा। आपको कई सम्मानों से सम्मानित किया गया है।

1. Best Arranger of the Decade (2021) Diwani Mastani
2. Diwani Mastani Best Arranger
3. National Award for Chalo Jeete Hai
4. Narendra Award (Ghoomer)
5. National Award for Ghoomar Song of Padmawat
6. I.M.D.B. Award (Radio Mirchi)
7. Tera Jiqr Star Dust
8. Album of the year Padmawat, Bajirav Mastani
9. GIMA Nomination
10. Chalo Jeete Hain - President Award

आपका मानना है कि गायन के क्षेत्र में "मेंहदी हसन शहंशाह-ए-ग़ज़ल" से बड़ा कोई स्कूल नहीं है। अगर कोई व्यक्ति एक अच्छा गायक बनना चाहता है तो उसे मेंहदी साहब का सुर लगाने का तरीक़ा सीखना चाहिए।

दूसरों की आवाज़ की नकल करने के बजाय अपनी आवाज़ को समझ कर गाए ईश्वर ने हर व्यक्ति को किसी न किसी ख़ुबी के साथ भेजा है। आप अपने उसूल पर अपना जीवन जीते हैं। इसलिए आप कभी भी किसी जजमेन्ट शो में नहीं जाते आपका सीखना अभी भी ज़ारी है। आपका मानना है कि कभी भी किसी की आलोचना नहीं करनी चाहिए। हमारे पास इतना वक़्त नहीं की हम उसे लोगों की कमियाँ ढूंढने में ज़ाया कर दे। आपके द्वारा जिन फिल्मों में संगीत निर्देशन किया गया, उनके नाम सरबजीत, carry on maratha, dil jo na keh saka, safed आदि हैं।

3. श्रेया घोषाल-

सुमधुर आवाज़ की धनी गायिका श्रेया घोषाल का जन्म 12 मार्च 1984 को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में हुआ। आपका जन्म बंगाली परिवार में हुआ। परन्तु आपका पालन पोषण कोटा राजस्थान के पास में स्थित रावतभाटा में हुआ। आपके पिता इंजीनियर तथा आपकी माता स्वयं एक सुमधुर गायिका है।

आपने आठवीं कक्षा तक की स्कूली शिक्षा रावतभाटा के परमाणु ऊर्जा विद्यालय से ग्रहण की थी आप जब भी अपनी माँ को गाते हुए सुनती थी तो उनसे बहुत प्रभावित होती थी। आपकी संगीत की ओर रूचि देखकर आपकी माता श्री ने 6 साल की उम्र से ही आपकी शास्त्रीय गायन की शिक्षा शुरू कर दी थी। आपने कुछ वर्ष कोटा के संगीत गुरू श्री महेश चन्द्र जी शर्मा से तथा इसके पश्चात् आपने पद्म श्री से सम्मानित स्वर्गीय कल्याण जी भाई एवं स्वर्गीय मुक्ता भिदेजी से 18 महीनों तक संगीत शिक्षा ग्रहण की।

आपकी आवाज़ में पार्श्व गायिका बनने के गुण होने के कारण आपने कम उम्र में ही अत्यधिक सफलता अर्जित कर ली। आपने छः वर्ष की उम्र में अपनी पहली मंच प्रस्तुती दी थी। आपने सन् 2000 में सारे गा मा पा चाइल्ड स्पेशल शो में हिस्सा लिया। तथा उसका ख़िताब अपने नाम किया।

आपने 1998 में सबसे पहले एक बंगाली एल्बम में अपनी आवाज़ दी श्रेया जी का बालीवुड में पहला गाना (16 साल) देवदास फिल्म में बैरी पिया में था। इस फिल्म में इनकी आवाज़ में पाँच गाने है।

4. रजब अली भारती-

सेनिया घराने के रजब अली भारती का जन्म कोटा (राजस्थान) में हुआ। आपके दादा स्वर्गीय उस्ताद जमाल खाँ साहब एक उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे जिनका शिष्यत्व ग्रहण करने का सुअवसर मशहूर ग़ज़ल गायक स्वर्गीय जगजीत सिंह जी को मिला।

आपकी कंठ संगीत की शिक्षा बचपन में आपके पिता "उस्ताद यासीन खा" के सानिध्य में शुरू हुई। आपने छोटी उम्र में ही राष्ट्रीय स्तर की गायन प्रतियोगिता में 9 बार विजय श्री प्राप्त की। आपने भारत सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय के आर्ट एवं कलचरल डिपार्टमेंट से ग़ज़ल गायन में राष्ट्रीय छात्रवृत्ति सन् 2001 व 2002 में हासिल की। यह छात्रवृत्ति पूरे देश में सिर्फ दो लोगों को ही प्रदान की जाती है।

आप ऑल इण्डिया रेडियों के जयपुर केन्द्र से 'ए' ग्रेड प्राप्त कलाकार है तथा दूरदर्शन के जयपुर, मुम्बई, दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र से आपकी ग़ज़ले एवं इन्टरव्यू समय समय पर प्रसारित होते रहते है आपने कई बॉलीवुड फिल्मों एवं टी.वी. सीरियल्स में भी अपनी आवाज़ दी है।

आप राजस्थान सरकार द्वारा भी सम्मानित हो चुके है। हाल ही मैं मुम्बई में आयोजित होने वाले 'ख़ज़ाना' कार्यक्रम में संसार के सबसे उत्कृष्ट कोटि के 20 ग़ज़ल गायकों को प्रस्तुती के लिये चयन किया गया। जिसमें से एक आप भी थे आपने कई प्रादेशिक स्तरीय प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका भी निभाई है।

5. रेखा राव-

चित्र 6.5 रेखा राव का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी

रेखा राव का जन्म कोटा में हुआ। जो आज के समय में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की गायिका है। आप 3 साल की छोटी उम्र से ही गा रही है आपको संगीत कला आपके दादा स्वर्गीय श्री पंडित नवलकिशोर राव एवं पिता स्वर्गीय श्री तेजकरण राव जी से प्राप्त हुई।

आपने देश ही नही विदेश में भी राजस्थान का गौरव बढाया है आपने कनाडा अमेरिका, ब्रिटेन, सिंगापुर, मॉरीशस, दुबई तथा नेपाल आदि देशों में गायन प्रस्तुती दी है आपने धारावाहिकों के साथ ही हिंदी फिल्मों के गानों के लिये भी पार्श्व गायन किया है राजस्थान में आप 'लोक-रानी' के नाम से मशहूर है।

आपके राजस्थान के जन-जन के बीच लोकप्रिय कई गीत गाये है जैसे- पीली लुगडी।

घूमर के 9 volume को आपने आवाज़ दी है, लारा चाले न धापूडी, मारूडा ला जे रे दारू, नाया की बारात राजस्थान में काफ़ी लोकप्रिय हुआ। डिस्को को चुडो, कोटा सू कागज आयो री, मैं तो मेले में जायाई रे डोलर चकरी में झुलयाई रे, नखराली

बन्जारन के 8 volume लोक गीतों के अलावा आपने भजन भी गाए है। आपके दादा जी के द्वारा रचित भजन बोल शंकरा रे आज भी मन्दिरों में कीर्तन करने वाली महिलाऐं प्रमुख रूप से गाती है आपने मीरा बाई एकली तथा चौंसठ जोगनी भजन भी गाए है। बॉलीवुड के पार्श्व गायक सुखविन्दर जी के घर में आयोजित होने वाली माता की चौकी में भी आपकी प्रस्तुती होती है। बॉलीवुड के पार्श्व गायक श्री उदित जी नारायण के साथ भी आपका भौजपुरी एल्बम आया है मनोज तिवारी जी के साथ आपने एक एल्बम में गाया है। मशहूर पार्श्व गायक श्री सोनू निगम जी के साथ भी काम किया है। सन् 1998 में आज संगीत रियलिटी शो "मेरी आवाज़ सुनो" कि आप फाइनलिस्ट रही है। उसके बाद सा.रे.गे.म.प. संगीत रियलिटी शो में आपने अपनी कला का प्रदर्शन किया। जिसमें आपके साथ सुनिधि चौहान भी थी इस शो की आप फाइनलिस्ट रही है। विनोद राठौर के साथ आपने काम किया है। आकाशवाणी से आप 'बी' हाई श्रेणी की कलाकार है आपको कई सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। आपका संगीत योगदान सराहनीय है।

उपसंहार

उपसंहार

हाड़ावती अथवा हाड़ौती अंचल क्रमश: हाड़ा व झाला शासकों द्वारा शासित बूंदी-कोटा व झालावाड़ राज्यों में वैदिक ललित कला व पाणिनी के अष्टाध्याय के अनुसार चारूलता ने सम्पूर्ण ऐतिहासिक काल में वैवेध्यिपूर्णे विकास किया था। उसी की संक्षिप्त विवेचना प्रस्तुत शोध प्रबंध में निहित है।

प्रथम अध्याय में सांगीतिक पृष्ठभूमि को प्रतिध्वनित करने वाले हाड़ौती के राजनैतिक व सांस्कृतिक इतिहास का प्रकाशन है, जिसमें बूंदी, कोटा, झालावाड़ व बारां के वर्तमान ज़िलों में स्मारकों, देवालयों, वापियों व शैलचित्रों की रचना को अनुप्रेरित किया था। इसे केन्द्र में रखकर समीक्षाधीन क्षेत्र के भूगोल की भी सूक्ष्म विवेचना की गई है।

द्वितीय अध्याय में बूंदी रियासत के शासकों का संगीत के विकास के क्रम में दिए गए योगदान को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है, जिसमें बूंदी रियासत के गुणीजनखाने का उल्लेख करके उसमें नियुक्त कलाकारों का परिचय दिया गया है तथा विभिन्न कलाओं में दक्ष कलाकारों की कलात्मकता को भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

तृतीय अध्याय में कोटा रियासत में विकसित हुई संगीत कला के साथ-साथ अन्य कलाओं में पारंगत कलाकारों का परिचय दिया गया है। कोटा दरबार में आयोजित होने वाली संगीत महफ़िलों तथा कलाकारों के प्रतिस्पर्धातमक जुगलबंदी का भी ज़िक्र किया गया है। कोटा रियासत काल से आज तक चली आ रही हवेली संगीत परंपरा तथा अपने ईष्ट देव की सेवा में गाए जाने वाले पदों का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में झालावाड़ रियासत के शासकों का वर्णन करके अनके दरबारी कलाकारों का परिचय दिया गया है तथा झालावाड़ के कला प्रेमी शासक भवानी सिंह जी के द्वारा बनवाई गई ओपेरा शैली की भवानी नाट्यशाला तथा उसके कलाकारों का वर्णन किया गया है तथा नौका विहार में सजने वाली संगीत महिफ़ल का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्याय में प्राचीन काल से आयोजित होने वाली ढ़ाई कड़ी की रामलीला तथा उसकी प्रसिद्धि एवं रामलीला में गाए जाने वाले कुछ पदों का वर्णन किया गया है तथा इसके उपरांत बारां क्षेत्र के कतिपय कलाकारों का परिचय ज्ञात करके उनका समावेश करने का प्रयत्न किया गया है।

षष्ठम अध्याय में रियासत काल से चली आ रही संगीत परंपरा जो वर्तमान समय में विकसित हो रही है तथा हाड़ौती संभाग के सरकारी शैक्षणिक संस्थान, जहाँ संगीत कला का विषय के रूप में छात्र-छात्राओं को अध्ययन करवाया जाता है अर्थात शिक्षा प्रदान की जाती है, ऐसे महाविद्यालयों का वर्णन तथा हाड़ौती संभाग के ऐसे नामवर संगीत कलाकार जिन्होंने विश्व में संगीत कला का प्रचार-प्रसार किया है, उन कलाकारों का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

सारांश

सारांश

राजस्थान प्रारंभ से ही सांस्कृतिक विविधताओं का राज्य रहा है। यहाँ के भौगोलिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक विषमता पाई जाती है। यहाँ की भौगोलिक परिस्थिति का इस क्षेत्र के खान-पान, रहन-सहन, संस्कृति, त्यौहार, संगीत, नृत्य, वाद्य यंत्रों, चित्रकला पर भी प्रभाव रहा है। राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र जो हाड़ा तथा झालावाड़ में झाला राजपूत शासकों का शासन होने के कारण हाड़ावटी अथवा हाड़ौती कहलाता है, हाड़ौती क्षेत्र अपने गौरवपूर्ण इतिहास के लिए काफ़ी प्रसिद्ध रहा है, हाड़ा व झाला राजपूत शासकों ने बून्दी, कोटा, झालावाड़ तथा बारां क्षेत्र में सांस्कृतिक उन्नति मुख्यतः संगीत व चित्रकला के विकास हेतु अपने दरबार में नायाब कलावंतों को आश्रय प्रदान कर संगीत कला का प्रसार किया। जिसमें लोक कलाकार, नर्तक, वादक, चित्रकार, कवि आदि शामिल है।

अध्ययन क्षेत्र - प्रस्तुत शोध "हाड़ौती संभाग के राजपूत शासकों का संगीत के विकास में योगदान" का विषय राजपूत नरेशों के संगीत व कला के क्षेत्र में किए गए योगदान पर केन्द्रित है।

प्रथम अध्याय "हाड़ौती संभाग की भौगोलिक स्थिति" है, जिसमें हाड़ौती संभाग के अंतर्गत आने वाले कोटा, बूंदी तथा बारां ज़िलों की भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक स्थल तथा सांस्कृतिक त्यौहारों को समावेशित किया गया है। प्रथम अध्याय के प्रथम भाग में बून्दी राज्य की भौगोलिक स्थिति, क्षेत्रफल, पहाड़, नाल (पहाड़ से होकर गुज़रने वाले तंग रास्ते) नदियाँ, झील तथा बाँध, आबोहवा, बाग, धर्म, सांस्कृतिक कला जैसे संगीत, साहित्य, चित्रकला तथा ऐतिहासिक स्थलों में बूंदी का तारागढ़ दुर्ग जिसका निर्माण राव राजा वर सिंह जी के द्वारा सन् 1354 ई. में 1426 फीट ऊँचे पहाड़ के शिखर पर करवाया गया था।

सुख महल जो की जैतसागर झील के किनारे पर स्थित है जिसका निर्माण महाराव राजा विष्णु सिंह जी ने सन् 1773 ई. में करवाया था, रानी जी की बावड़ी जो की सन् 1600 ई. का निर्माण है, रानी जी की बावड़ी रानी नाथवती जो राव राजा अनिरूद्ध सिंह जी की छोटी रानी सा थी के द्वारा करवाया गया था। 84 स्तंभों की छतरी जिसका निर्माण राव राजा अनिरूद्ध सिंह जी की धायभाई देवा को श्रद्धांजली प्रदान करने के लिए करवाया गया था, गरड़दा गुफा जिसमें 10,000 वर्ष पुराने शैल चित्र है आदि स्मारकों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अध्याय के द्वितीय खण्ड में कोटा रियासत की भौगोलिक स्थिति जिसका नामकरण कोटा 'कोटिया' नामक भील नेता के नाम पर रखा गया। इसमें कोटा राज्य की सीमा इसका विस्तार, पहाड़, नदियाँ, जलवायु, भूमि व ऊपज, वन, संचार व्यवस्था, उद्योग-धंधे, निवासी, धर्म, भाषा, दशहरा, जिसे सम्पूर्ण भारत में लोकप्रिय बनाने का श्रेय श्री महाराव उम्मेद सिंह जी द्वितीय को जाता है, नवरात्री के प्रथम दिवस से शुरूआत होने वाली पूजा प्रतिष्ठा जिसके अंतर्गत पंचमी की सवारी, सप्तमी की सवारी, अष्टमी पूजन की रस्म तथा विजयदशमी की रावण वध की सवारी का उल्लेख है।

प्रथम अध्याय के तृतीय खण्ड में झालावाड़ रियासत की भौगोलिक स्थिति जो झाला शासकों का राज्य होने के कारण झालावाड़ कहलाया। इसका भौतिक स्वरूप, जलवायु, तापमान, पर्वत तथा झालावाड़ के लोकप्रिय नरेश महाराज राणा श्री भवानीसिंह जी के द्वारा फ़ारसी ओपेरा शैली में बनवाई गई 'भवानी नाट्यशाला', त्रिकोणात्मक शैली में बना घंटाघर जो की राजेन्द्र सिंह जी सुधाकर के द्वारा पेरिस के कलात्मक टावर की तर्ज़ पर बनवाया गया, झालावाड़ रियासत की राज नृत्यांगना कुक्की बाई का मकबरा, झालावाड़ नरेश पृथ्वी सिंह जी के द्वारा निर्मित करवाया गया शाही महल 'पृथ्वी विलास पैलेस', गढ़ पैलेस आदि की रचना मध्यभारतीय दाहल शैली के वास्तु से प्रभावित है, यह सभी स्थापत्य प्रतीक झालावाड़ नगर में ही अवस्थित है।

प्रथम अध्याय के चतुर्थ खण्ड में बाराँ क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक विभाजन, पहाड़ियाँ, मृदा व चट्टानों के साथ इतिहास के कुछ अंश भी उद्धृत है।

द्वितीय अध्याय 'बून्दी रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान' है। जिसमें बून्दी रियासत की स्थापना कब व किस प्रकार हुई, इस रियासत पर 24 जून 1241 को राजपूतों की चौहान शाखा के हाड़ा वंश नरेश राव देवा ने अधिकार कर लिया। तदन्तर राव राजा समर सिंह के पुत्र जैत्र सिंह ने कोटा में राजनैतिक अव्यवस्था देखकर 1254 ईस्वी में इस क्षेत्र को अधिकृत कर लिया, तब से यह बून्दी राज्याधिन बन गया। मेवाड़ के शासकों ने बून्दी को अपने राजनैतिक प्रबद्धों में लाने के प्रयास किए, महाराणा लाखा ने बून्दी के कृत्रिम दुर्ग तक पर अधिकार का दृष्टान्त प्रस्तुत किया, दूसरी ओर मालवा में मांडू के तुर्क सुलतानों ने भी बून्दी पर आक्रमण किए, महमूद खिलजी ने राव बैरीशाल को हरा कर बून्दी का अधिग्रहण कर लिया, जिससे राव नारायण दास ने पुनः मुक्त करवाया। राव सुरताण की अक्षमता पर

सामन्तों ने इनसे बून्दी का राज सिंहासन छीन लिया। राव सुरजमल को रणथम्भौर के प्रश्न पर छिड़े संघर्ष के उपरान्त अकबर से अधीनता की संधी स्वीकार करनी पड़ी, इसके उपरान्त बून्दी राज्य में शांति का अभूतपूर्व दौर व्याप्त हो गया। 19वीं शताब्दी में क्रमशः मराठे व इंग्लिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने बून्दी पर राजनैतिक प्रभाव अंकित किए, फलतः 1818 ई. में बून्दी कम्पनी के अधीन हस्ताक्षरबद्ध हो गया। भारतीय स्वतंत्रता के समय जब संयुक्त राजस्थान की कीर्ति अग्रसर करने हेतु कोटा नरेश भीम सिंह द्वितीय की अध्यक्षता में स्थापित इस संघ के वरिष्ठ राज उप राजप्रमुख बून्दी नरेश महाराव राजा बहादुर सिंह हाड़ा को बनाया गया। अंततः 25 मार्च, 1948 को बून्दी राज्य राजस्थान संघ में विलयित होकर यूनीयन ऑफ इंण्डिया का Erstwhile State बन गया। बून्दी रियासत के राजपूत नरेशों ने हाड़ौती संस्कृति संगीत, नृत्य व चित्रकला को भी समृद्ध बनाने के उत्तम प्रयास किए है, बून्दी रियासत में दरबार में संगीत तो था ही अपितु मंदिरों में भी संगीत कला ने खूब विकास किया है, राजपूत शासकों ने अपने दरबार में कलाकारों को नियुक्त कर उन्हें उचित मानदेय व पुरस्कारों से नवाज़ा दरबारों में प्रारंभ से ही संगीत किसी न किसी रूप में विद्यमान रहा ही है, जिसके प्रमाण उम्मेद महल चित्रशाला के चित्रों में भी देखने को मिलते हैं, बून्दी रियासत में कलाकारों को सम्मान प्रदान करने की परंपरा भी रही है, जो चार श्रेणियों में विभाजित थी। बून्दी रियासत में कलाकारों के लिए गुणीजनखाना नामक विभाग का संचालन बून्दी नरेश की ओर से होता था। बून्दी रियासत में अनेक नामी संगीतकार जैसे सूर्यमल्ल मिश्रण, मीर बख्श खाँ साहब, गुलाम ग़ौस खाँ, संगीत सम्राट अल्लादिया खाँ, काले खाँ, नन्ही बाई आदि प्रमुख है, जिनमें से कुछ लोक गायक, कुछ शास्त्रीय संगीत गायक तथा कुछ मांड व भजन का गायन करते थे। बून्दी चित्रशाला में बारहमासा, राग-रागिनी तथा राजपूत शैली के चित्रों का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में कोटा रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान के अंतर्गत कोटा रियासत की स्थापना का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करने के उपरान्त कोटा राजवंश के राव राजा माधोसिंह जी से महाराव उम्मेद सिंह जी द्वितीय तक का परिचय तथा शासन काल तत्पश्चात् कोटा रियासत के शासकों ने अपने दरबार में किन-किन कलाकारों को राज्याश्रय प्रदान किया, जिसमें सर्वधर्म सम्भाव को प्राथमिकता प्रदान की गई। कोटा रियासत में दो प्रकार के संगीतज्ञ हुए, प्रथम समाधानिये जिनके पास कठिन रागों के गायन का समाधान था तथा कलावन्त जो अप्रचलित रागों का भी ज्ञान रखते थे तथा राजपूत नरेशों की संगीत रूची का वर्णन

किया गया तथा कोटा रियासत की महारानी ब्रज कंवर जी, महारानी केसर कुंवर जी तथा महारानी शिव कुमारी जी की संगीत कला के प्रति प्रेम के भाव को अभिव्यक्त किया गया। तदउपरान्त कोटा रियासत के गुणीजनखाने का वर्णन करने के पश्चात् कोटा रियासत के दरबारी संगीतज्ञों, कलावंतों व भगतणों के बारे में विस्तृत वर्णन है तथा वह दरबार में किस गायन शैली की प्रस्तुती देते थे। कोटा के दरबारी संगीतज्ञों में उ. श्री लाल जी, उ. प्रभुलाल जी, फिदा हुसैन खाँ, नन्दराम जी, बालाबख्श जी, किशोरी देवी जी, मोहम्मद अली, सुन्दर बाई, बिब्बो बाई, भूरी बाई, बुल्लो बाई का परिचय लेखन किया, कोटा रियासतकाल के समय में राजमहल, झाला हवेली, नान्ता महल, अर्जुन महल व देवता जी की हवेली में चित्रित विभिन्न उत्सवों सेवाओं के चित्रों को भी समावेशित किया गया है, रियासत की भक्ति कालीन हवेली संगीत परम्परा का वर्णन तथा हवेली संगीत में गाए जाने वाले विशिष्ट उत्सवों के पदों का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में 'झालावाड़ रियासत के शासकों का संगीत के विकास में योगदान' में झालावाड़ रियासत की स्थापना, झालावाड़ रियासत के प्रमुख शासक महाराज राणा मदन सिंह जी, महाराज राणा पृथ्वी सिंह जी, महाराज राणा जालिम सिंह बहादुर जी, महाराज राणा भवानी सिंह बहादुर जी तथा महाराज राणा राजेन्द्र सिंह जी बहादुर का परिचय, झाला नरेशों की झालावाड़ रियासत के राजपूत शासकों ने किस प्रकार युद्धों के साथ में संगीत के विकास में योगदान प्रदान करने का सामंजस्य स्थापित किया तथा झालावाड़ जैसी छोटी व नवीन स्थापित रियासत में भी गुणीजनखाना सुचारू रूप से संचालित था जिसमें पं. उदयशंकर जी, पं. रविशंकर जी, पं. नवलकिशोर जी, कुकी बाई, अमीर बख़्श, करीम बख़्श, गेंदा खाँ तथा पं. मथुरालाल जी जैसे उत्कृष्ट कलाकारों ने अपनी प्रतिभा से रियासत को सम्पूर्ण भारतवर्ष में गौरवान्वित किया। इन सभी की विस्तृत जानकारी को प्रस्तुत शोध के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

पंचम अध्याय 'बारां में संगीत का विकास' में वराह नगरी की स्थापना तथा बारां ज़िले की विश्वप्रसिद्ध ढाई कड़ी की रामलीला जिसका इतिहास लगभग 170 वर्ष पुराना है जिसका मंचन स्थानीय निवासियों के द्वारा ही किया जाता है, जहाँ पर लोक वाद्यों को भी प्रयोग में लाया जाता है, तथा रामलीला में गाए जाने वाले मुख्य संवादों पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। तत्पश्चात् बारां ज़िले के कलाकारों का परिचय तथा गायन शैली का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

ढाई कड़ी की रामायण में दशरथ जी के द्वारा गुरू वशिष्ट जी से की गई विनती –

अरज मूं करूँ बिनती रसी राज आपसूं होव म्हारो काज

सोच मत करजे दशरथ राज जग्ग सूंहोव थ्हारो काज

षष्ठम् अध्याय 'हाड़ौती संभाग की वर्तमान सांगीतिक स्थिति' में हाड़ौती संभाग के कोटा ज़िले में महाराव राजा बृजराज सिंहजी के जन्मदिवस के उपलक्ष में 21 फरवरी को प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले संगीत कार्यक्रम में पधारने वाले कलाकारों के नाम तथा कोटा ज़िले के सरकारी शिक्षण संस्थान में राजकीय कला कन्या महाविद्यालय जहाँ सन् 1958-59 से संगीत विषय का अध्यापन हो रहा है जहाँ की छात्राओं ने अपने देश का नाम सम्पूर्ण विश्व में रौशन कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है। बून्दी ज़िले के राजकीय महाविद्यालय जहाँ पर सन् 1976-77 में संगीत विषय में नियमित संगीत कक्षाओं का संचालन हो रहा है तथा झालावाड़ ज़िले का हरीशचंद्र संगीत विद्यालय जिसकी स्थापना झालावाड़ रियासत के राज गायक श्री नवल किशोर जी राव के आग्रह पर महाराज राणा हरीशचन्द्र जी के द्वारा करवाई गई थी।

ग़ैर-सरकारी शिक्षण संस्थान के अंतर्गत कोटा ज़िले का सर पदमपत सिंघानिया स्कूल जहाँ 11वीं कक्षा के छात्र संगीत कला को अपने विषय के रूप में चयन कर सकते हैं का विस्तृत वर्णन किया गया है।

हाड़ौती संभाग के वर्तमान स्थापित संगीतज्ञ जिन्होंने राजस्थान राज्य के हाड़ौती संभाग को सम्पूर्ण विश्व में अपनी कला के माध्यम से प्रस्तुत किया है, इन कलाकारों में प्रो. डॉ. रौशन भारती जी का परिचय तथा उनके द्वारा रचित ग़जल व नज़्म का वर्णन किया है।

फिल्म जगत के नक्षत्र पर कोटा को दीप्तिमय करने वाले श्री शैलेन्द्र सिंह हाड़ा (शैल हाड़ा) आपने बॉलीवुड की मशहूर फिल्मों जैसे साँवरिया, ब्लैक, रामलीला, सरबजीत, बाजीराव मस्तानी, गुज़ारिश, पद्मावती, गंगूबाई काठीयावाड़ी, हीरामंडी आदि सफल फिल्मों में अपनी आवाज़ दी तथा संगीत निर्देशन किया है, आपको भारत सरकार की ओर से नेशनल अवार्ड से भी सम्मानित किया गया है।

सुमधुर गायिका श्रेया घोषाल का परिचय, रजब अली भारती का परिचय, रेखा राव का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

- गहलोत, डॉ. जगदीश सिंह, (1960), बूंदी राज्य का इतिहास, जोधपुर : हिन्दी साहित्य मंदिर प्रकाशन।
- शर्मा, डॉ. मथुरालाल, (1940), कोटा राज्य का इतिहास, कोटा : कोटा प्रिंटिंग प्रेस, द्वितीय खण्ड।
- शर्मा, पीताम्बर दत्त (2008), बून्दी राज्य का इतिहास, जोधपुर : राजस्थानी ग्रन्थागार।
- सक्सेना, डॉ. अरविन्द कुमार (1999), बून्दी राज्य का इतिहास, जोधपुर : राजस्थानी साहित्य संस्थान।
- श्रीवास्तव, डॉ. ज्योत्सना, (2015), 18वीं शताब्दी के हाड़ौती संभाग का सामाजिक जीवन, जयपुर : गौतम बुक कम्पनी।
- सहल, डॉ. कन्हैयालाल, (1964), वीर सतसई, पं. सूर्यमल्ल मिश्रण, कलकत्ता : बंगाल हिन्दी मंडल।
- मेहता, श्री लज्जाराम, (1915), पराक्रमी हाड़ा राव, बम्बई : विक्रमी वेंकटेश्वर प्रेस।
- मेहता, श्री लज्जाराम, (1933), आप बीती, बम्बई : वेंकटेश्वर प्रेस।
- मेहता, श्री लज्जाराम, (1915), उम्मेदसिंह चरित्र, बम्बई : वेंकटेश्वर प्रेस।
- गहलोत, श्री जगदीश सिंह (1960) : कोटा राज्य का इतिहास, जोधपुर : हिन्दी साहित्य मन्दिर।
- हाड़ा, गोपाल सिंह, लुप्त होता हाड़ौती का पारम्परिक लोक संगीत, हाड़ौती लोक कला संस्थान, कंसुआ, कोटा।
- अहमद, फिरोज, ऐतिहासिक नगर कोटा के दर्शनीय स्थल : हाड़ौती खंड महासचिव इतिहास व कला परिषद, कोटा।
- चन्द, रमेश 'वारिद', झालावाड़ के ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थल।
- शर्मा, कन्हैयालाल, हाड़ौती बोल और साहित्य, शोध प्रबन्ध, राज0 विश्वविद्यालय।
- शर्मा, मथुरालाल, कोटा राज्य का इतिहास।
- शर्मा, कन्हैयालाल, हाड़ौती साहित्य एवं स्वरूप।
- गुप्ता डॉ. निर्मला, राजस्थान का आधुनिकीकरण।
- सोमानी, रामवल्लभ, जिओग्राफी ऑफ हाड़ौती, कल्चर हेरीटेज ऑफ हाड़ौती।

- वर्मा, डॉ. बद्रीनारायण, कोटा भित्ति चित्रांकन परम्परा।
- प्रभाकर, मनोहर, राजस्थान ज्ञान कोष।
- गहलोत, जगदीश सिंह, राजपूताना का इतिहास।
- भानावत, डॉ. महेन्द्र, राजस्थान के लोकगीत।
- भार्गव, जया, राजस्थान के शाहबाद क्षेत्र के पुरातत्व का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन।
- जगतनारायण, कोटा के महाराव द्वितीय एवं उनका समय।
- दत्त सर्वेश्वर, झालावाड़ के झरोखें से झाँकती भवानी नाट्यशाला।
- मुकल, मेघराज, राजस्थानी सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान का सांस्कृतिक सर्वेक्षण।
- गौरीशंकर 'कमलेश' एवं प्रधान हरिमोहन, हाड़ौती अंचल के राजस्थानी कवि।
- दूगड़, रामनारायण, नैणसी री ख्यात भाग 1, 2
- जैन, नाथूलाल, हाड़ौती दर्शन।
- जिन्दाणी, इन्द्रमल अमोलकचन्द, तवारीख राज झालावाड़।
- शर्मा, डॉ. हरिशंकर, हाड़ौती लोक गीत।
- शर्मा, ललित, झालावाड़ जिले की रूपरेखा।
- पाठक, डॉ.नाथूलाल, हाड़ौती कहावतें।
- पथिक, ज्ञानेन्द्र, मुंह बोलता झालावाड़।
- मांगीलाल, राजस्थान के राजपूत।
- दीपक, माधवसिंह, महाराज भवानीसिंह : जीवन और व्यक्तित्व।
- स्वाती, सूर्यमल्ल मिश्रण
- अहमद फिरोज, हाड़ौती इतिहास।
- सक्सेना, डॉ.अरिवन्द कुमार, बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास।
- चौधरी, प्रतापसिंह, राजस्थान : संगीत और संगीतकार।
- सिंह, ठा. जसवन्त, राजस्थान के रजवाड़ी गीत।
- नाग, रवि प्रकाश, राजस्थानी गीतां रो गजरो।
- डॉ. कौमुदी, राजस्थान के दरबारी संगीतज्ञ।

- नैणसी, मुहणोत, ख्यात, भाग प्रथम, काशी संस्करण।
- कविवर श्यामदास, वीर विनोद, राज यंत्रालय, उदयपुर संवत् 1943, मित्र वासर, चैत्र शुक्ल 15
- गुप्ता, मोहनलाल (सं) जिलेवर ऐतिहासिक सर्वेक्षण, झालावाड़।
- भारद्वाज, शांति (सं), हाड़ौती का पुरातत्व।
- प्रेमी जी प्रेम, हाड़ौती की यात्रा।
- व्यास, एम.एल.(अनु.), राजपूताने के सिक्के (वैवकृत)
- मिश्रण, पं. सूर्यमल्ल, वंश भास्कर, संपादक स्व. पंडित रामकरण आसोपा, मुद्रक प्रताप प्रेस, उदयपुर, बाफना बुक डिपो।
- मिश्रण, पं. सूर्यमल्ल, वीर सतसई, डॉ. कन्हैयालाल सहल द्वारा संपादित मुद्रक बी.पी. ठाकुर लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्रकाश बंगाल हिन्दी मंडल, कलकत्ता, वि.सं. 2021, (1964 ई.)
- गहलोत, डॉ. जगदीश सिंह (1960), बूंदी राज्य का इतिहास, हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर।

- The District Gazetteer of Raj. Bundi, 1964 A.D., Published by Jaipur Printing Press for Government of Rajasthan.
- Reports on the Administration of Bundi State (From 1900 A.D. to 1946 A.D. annually) Printed at Shri Rangnath State Press Bundi for Gov. of Bundi State.
- The Bundi Land Revenue Act, 1942, A.D. Printed at Shri Rangnath State Press Bundi for Govt. of Bundi State.
- Rajputana Gazetteers, Vol. III B, The Western Rajputana State Residency the Bikaner Agency, Publication – Allahabad, The Pioneer Press, 1906 A.D.
- Dr. R.S. Mathur – Relations of Hadas with Mughal Emperors 1986, Pub. Sanjay Arora – Deputy Publications IX/1976, Jain mandir Street, Gandhi Nagar, Delhi
- M.L.Sharma – Kota Rajya Ka Itihas, Pub.
- Constitution of Bundi State 1941 A.D., Printed at Shri Rangnath State Press, Bundi for Govt. of Bundi State
- Rajputana Gazetteers, Vol. III B Publication Allahabad The Pioneer Press, 1906 A.D.
- पुरालेखीय : कोटा अभिलेखागार से संबंधित कागजात।
- अप्रकाशित : झालावाड़ राज्य का इतिहास, जगदीश सिंह गहलोत
- हाड़ा, सोनकँवर, बून्दी राज्य : साहित्य व धार्मिक स्थिति पर एक विहंगम दृष्टि।

- अग्रवाल, शिखा एवं सिंघल, डॉ. प्रभात कुमार, ये है हमारी रंग-बिरंगी बूंदी।
- गुप्ता, डॉ. मोहनलाल, कोटा संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन।
- व्यास, आर.पी., राजस्थान का वृहद इतिहास, भाग प्रथम।
- मेहर, जहूर खाँ, राजस्थान इतिहास रत्नाकर।
- राणावत, मनोहर सिंह, शाहजहाँ के हिन्दु मनसबदार।
- शर्मा, कालूराम, राजस्थान का इतिहास।
- शर्मा, गोपीनाथ, राजस्थान का इतिहास, 1980 ई.।
- खींची, आर.एस., खींची वंश प्रकाश।
- इन्दा, माधोसिंह, राजस्थान की श्रेष्ठ कृतियाँ।
- जर्नल्स, रिपोर्टस, पत्र-पत्रिकाएँ
- माथुर, घनश्यामलाल (सं.) हाड़ौती चिन्तन 1985 ई.
- भारते समिति, कोटा, हाड़ौती-दर्शन, 1972 ई.
- हाड़ौतिका (विभिन्न अंक) इन्टेक, कोटा
  राजस्थान लेखक सम्मेलन, 1972 ई. कोटा स्मारिका, भारतेन्दु समिति, कोटा
- दैनिक भास्कर (विभिन्न अंक), कोटा संस्करण।
- राजस्थान पत्रिका, कोटा संस्करण।
- देश की धरती, कोटा संस्करण।
- दैनिक नवज्योति, कोटा संस्करण।
- राजस्थान राज्य अभिलेखागार, कोटा
- रागमाला चित्र शोध ग्रंथ, डॉ. एम.के.शर्मा
- बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, डॉ. अरविन्द कुमार सक्सेना
- राजस्थानी चित्रकला, डॉ. जयसिंह नीरज
- बून्दी पेन्टिंग, जीवान सोढ़ी
- बून्दी – द सिटी ऑफ पेन्टेड वाल्स, आर.ए.अग्रवाल

ISSN : 2581-8872

Vol. - 5, No. - 8, Sep. - 2023

Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research

Peer Reviewed - Refereed Journal
Impact Factor - 4.8, Open Access,
Double Blind, Monthly Journal

EDITOR
PRASHANT KUMAR

PUBLISHED BY
International Scientific Research Solution
Web : www.srfresearchjournal.com
Email : srfjournal24@gmail.com

Contents

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	अनुसूचित जनजाति में शैक्षणिक विकास एवं सामाजिक गातिशीलता का समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. गीता परतेती	1-2
2	भारत संसद में सांसदों का गिरता स्तर वर्तमान स्वरूप में	Dr. Mamta Saitya	3-7
3	वैश्विक स्तर पर वर्तमान बढ़ती हुई पर्यावरणीय चिंताओं के साथ पर्यावरण प्रदूषण का मानव जीवन एवं स्वास्थ्य पर प्रभाव–एक विधिक अध्ययन	डॉ. जयश्री तिवारी	8-12
4	नव उदारवादी समाज में महिला जनित अपराधो का विश्लेषणात्मक अध्ययन	शायरा बानो डॉ. योगेश कुमार वामनकर	13-15
5	भारतीय संस्कृति और अमृतलाल नागर	समीक्षा मिश्र	16-20
6	नागपुरी डमकच लोक गीत का सामान्य परिचय	सुरेश महतो	21-23
7	भारत में लैंगिक असमानता का महिलाओं का एकमात्र लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नही हो सकता	मुकेश कुमार उइके प्रो. डॉ. विनोद तिवारी डॉ. जितेन्द्र गुप्ता	24-29
8	कोटा रियासत में संगीत का विकास	प्रो. रौशन भारती गुंजन हाड़ा	30-32

Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research (U.I.J.M.S.R.)
Peer Reviewed - Refereed Journal & Impact Factor - 4.8, Open Access, Double Blind
Monthly Journal, ISSN : 2581-8872, Vol. : 6, No. : 6, July – 2024

कोटा रियासत में संगीत का विकास

प्रो. रौशन भारती
प्राचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा
गुंजन हाड़ा
रिसर्च स्कॉलर, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

कोटा रियासत राजस्थान के दक्षिण पूर्वी भाग हाड़ौती में स्थित हाड़ा शासकों की प्रमुख रियासत थीं। मुगल एवं मराठा सत्ता के क्रमिक ह्रास के साथ–साथ उसके आश्रित कलाकारों एवं संगीतज्ञों और नृतकों ने देश के क्षीण होते केंद्र को छोड़ कर राजस्थान तथा अन्य राज्यों की रियासतों में आश्रय ढूंढना प्रारंभ किया। कोटा शासकों ने भी इन संगीतज्ञों एवं कलाकारों को आश्रय देकर कला की समृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया। कोटा शासकों ने कलाकारों को प्रोत्साहित करते हुए संगीत कला और चित्रकला के संगम को उच्च स्तर प्रदान किया और भक्ति संगीत के पुष्टि मार्ग परंपरा को आगे बढाया जो आज भी महल संगीत या हवेली संगीत के रूप मथुराधीश मंदिर में विद्यमान है।

शब्द सूची :– हवेली, संगीत, सारंगी, हाड़ौती, गुणीजन खाना, मथुराधीश मंदिर, हाड़ा शासक

अध्ययन क्षेत्र का परिचय :– कोटा रियासत हाड़ौती क्षेत्र की प्रमुख रियासतों में से एक थी। भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूप से इसका स्थान राजस्थान के रियासतों में प्रमुख था। कोटा रियासत का विस्तार 24^0 25′ और 25^0 51′ उत्तरी अक्षांश ओर 75^0 37′ और 77^0 26′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है तथा क्षेत्रफल 14828 वर्ग मील था। इसका विस्तार दक्षिण में कोटरी इंदरगढ़ तक तथा उत्तर में मनोहर थाना तक था। यहाँ का अधिकतर भाग पठारी एवं पहाड़ी है इसके अंतर्गत मालवा का पठारी भाग तथा अरावली एवं विंध्याचल पर्वत क्षेत्र आते हैं मुकुंदरा की पहाड़ियाँ इंदरगढ़ की पहाड़ियाँ तथा बूंदी का आड़ावल पहाड़िया प्रमुख भौगोलिक स्थिति है यहाँ पर प्रमुख नदी चंबल एवं उसकी सहायक नदियाँ है। यह क्षेत्र वन संसाधन एवं प्राकृतिक वन्य जीव के लिए भी प्रसिद्ध है। इस प्रकार यहाँ के प्राकृतिक संसाधन तथा भौगोलिक उच्चावच का संगीत एवं कला पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा। यही कारण हैं कि यहाँ की चित्रकला तथा संगीत पर प्राकृतिक संसाधन जैसे शिकार, प्रकृति मौसम आदि का प्रभाव देखा जाता है।

कोटा रियासत के प्रमुख शासक :– कोटा रियासत चंबल नदी के किनारे स्थित हाड़ा राजपूत शासकों की प्रमुख रियासत थी कोटा रियासत की प्राकृतिक स्थिति एक ओर दिल्ली तथा दूसरी ओर मालवा और गुजरात के मध्य थी। कोटा रियासत दो प्रमुख शासकों के मध्य एक प्रवेश द्वार का रूप होने के कारण तत्कालीन राजनीति का भू राजनीति के केन्द्र के रूप में उभर कर सामने आया और यहाँ के शासक मुगल साम्राज्य, मराठा शासक और अंग्रेजों की सत्ता में सेवा कर अपनी वफादारी के रूप में प्रसिद्ध रहे। परिणाम स्वरूप इसका प्रभाव यहाँ की कला तथा संगीत पर भी रहा। कोटा रियासत विधिवत और सही तरीके से सन् 1631 में एक राज्य के रूप में अस्तित्व में आया और यहाँ पर माधव सिंह की माधुरी पीढ़ी के 17 शासकों ने कोटा पर सन् 1947 तक शासन किया। प्रथम शासक राव माधव सिंह राव मुकुंद सिंह, राव जगत सिंह, राव किशन सिंह तथा राव रामसिंह राव की पदवी तक रहे है लेकिन महाराज भीम सिंह प्रथम को महाराव की पदवी मुगल बादशाह ने प्रदान की जो कि अंतिम शासक भीम सिंह द्वितीय तक विद्यमान रही। प्रारंभिक शासक राव माधोसिंह से लेकर राव राम सिंह तक के शासक मुगल शासकों की सेवा में रहने के कारण यहाँ की संगीत कला तथा चित्रकला पर दक्कनी संस्कृति का प्रभाव रहा। महाराव भीम सिंह प्रथम के समय यहाँ की कला संस्कृति वल्लभ संप्रदाय से प्रभावित हुई। जिस कारण कोटा रियासत में हवेली संगीत का उत्थान हुआ जिस पर पुष्टि संप्रदाय का प्रभाव दिखा। महाराव भीम सिंह प्रथम ने अपनी गुणीजन खाने में देश के अन्य भागों से आए गायकों को आश्रय दिया। महाराव उम्मेदसिंह द्वितीय के समय श्रीपुरा क्षेत्र विशिष्ट तहजीब के लिए जाना जाता था। इस समय यहाँ पर वहीदन खान शकूरन बाई, भवानी बाई जैसी प्रसिद्ध तवायफे ग़ज़ल, ठुमरी, दादरा की उम्दा गायिका थी। मुमताज बाई अपने हुनर तथा गायन के लिए प्रसिद्ध थी। कोटा रियासत के महाराव उम्मेद सिंह के शासन काल में होली और दीपावली पर्व पर संगीत कला का विशेष आयोजन होता था। होली का त्यौहार 9 दिन तक चलता था। अंतिम नौंवे दिन संगीत की महफिल का आयोजन कर दीपदान किया जाता था। कोटा रियासत का अंतिम शासक महाराव भीम सिंह द्वितीय कला प्रेमी थे, उनका विवाह बीकानेर

शासक गंगा सिंह बहादुर जी की पुत्री शिवकुमारी जी के साथ संपन्न हुआ था। शिवकुमारी संगीत गायन तथा वादन दोनों विधाओं में निपूर्ण थी। उन्हें शास्त्रीय संगीत तथा मांड गायन की अच्छी समझ थी। वे कला पारखी की होने के साथ–साथ कलाकारों को प्रोत्साहन भी देती थी। वह भारतीय संस्कृत निधि (इंटेक) की आजीवन सदस्य थी।

इस प्रकार कोटा रियासत के शासक रसिक प्रवृत्ति के थे। 18वीं शताब्दी में मुगलों के युद्ध से मुक्त हो जाने पर यहाँ के शासकों ने यहाँ की सांस्कृतिक विरासत को पुनः जीवित करने का प्रयास किया। 18वीं शताब्दी के पश्चात् यहाँ के शासकों ने अपनी संस्कृति को अत्याधिक प्रोत्साहन दिया। कोटा गढ़ में स्थित अर्जुन महल, छत्रमहल, झालाहवेली, राजमहल में गणिकाओं के भित्ति चित्र देखने को मिलते हैं जो उस समय की नर्तकियों एवं गणिकाओं के है। जैसे गायन करते हुए स्त्री तथा वीणा बजाती हुई नायिका आदि। कोटा रियासत की पुष्टि संगीत परंपरा की याद दिलाने के लिए कोटा रियासत के कैथूनीपोल में कलावंतों की मस्जिद और मोहल्ला आज भी मौजूद है जहाँ पर समाधनियों के वंशज आज भी निवास करते हैं कोटा रियासतों के राजाओं के ईष्ट मथुराधीश जी के प्रति अत्याधिक आस्था होने के कारण यहाँ पर हवेली संगीत की प्रचुरता है इसके परिणाम स्वरूप समय–समय पर क्रमानुसार कर्म, ज्ञान और भक्ति पर आधारित अनेक धर्म का यहाँ प्रचार प्रसार होता रहा है। अंततः इन सब मार्ग में से भक्ति मार्ग में अत्यंत सुगम और सरल रहा है। प्राचीन काल में भारत की संगीत सरिता दो प्रमुख धाराओं में विभाजित होकर प्रवाहित हुई मुगल बादशाहों के संरक्षण में होने वाली संगीत सरिता दरबारी संगीत के रूप में जानी गई तथा दूसरी ओर वैष्णव मंदिर में होने वाली संगीत सरिता देवालय संगीत अथवा कीर्तन के रूप में जानी गयी इसका दूसरा नाम हवेली संगीत है। कोटा के महलों में हवेली संगीत गुंजयमान होता रहा। यहाँ पर अपने इष्ट देव को मनाने के लिए प्रातः भोग के पद से लेकर रात्रि शयन तक के पद राग तथा भोग की प्रभुता वाले इस पुष्टि मार्ग में भगवान की सेवा बिना राग व संगीत के होना असंभव बताया गया है।

हवेली संगीत में गाये जाने वाले पद कुछ इस प्रकार है :–

महाप्रभुजी के विवाह खेल के पद :– चन्द्रावली कहत नाथ राधाजूकों गहो हाथ काहे को दुरावो प्यारे जगत उजियारे करो ब्याह लाल आप मेरी त्रिविध तनके ताप हरो दुख करो सुख नैनन के तारे तब ही कृष्ण अवतार कियो रास जमुनाघाट गोपिन प्रतिरूप धर्यो आप प्राण प्यारे

अभ्यंग ओर श्रृंगार दर्शन के पद :–

मंजन कर कंचन चोकी पर बैठी बांधत केशन झरोरी रूचिर भुजन की उपमा अनोपम ललित करन विच झलकत चुरोरी।

लाल लटित बेंदिमाल विराजत तैसो ही फ़शि रहोमांग सेंदूरी चतुर बिहारी पिय प्यारी के मुख पर वारों कोटिसरद ससिपूरोरी।

कोटा रियासत के प्रमुख संगीतज्ञ :–

(1) **फिदा हुसैन** :– कोटा गुणीजन खाने में कार्यरत रंगीला घराना के अनुयायी थे। उनकी आवाज उतरांग वाली थी। वे ख्याल के साथ–साथ अंतरे को दो–तीन बार एक जैसे गाने के बाद बोल श्रृंगार से कविता के शब्दार्थ भाव राग के रस का आदर्श मिश्रण करके आनंद का वातावरण स्थापित करने में माहिर थे। टप्पा, तिलवाड़ा, झुमरा, आड़ा–चौताला और एक ताल की विभक्तियों के अनुसार तनोती करते थे। उस्ताद श्री लाल जी का कथन था कि भारत के विख्यात गायकों के लिए कोटा राज्य के गुणीजन खाने का यह अप्रतिम संगीतज्ञ था।

(2) **उस्ताद प्रभु लाल** :– यह परंपरागत रूप से कोटा के बृजनाथ मंदिर के कीर्तनकार थें किन्तु ध्रुपद धमार के आप एक अच्छे गायक थे। राग रागिनियों एवं ताल का आपको अच्छा ज्ञान था। इनके कुछ शिष्य जैसे केसरी लाल गंधर्व व मदनलाल जोशी के नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने संगीत क्षेत्र में ऊंचा नाम कमाया।

(3) **शकूरन शहजादी** :– कोटा राज्य के गुणीजन खाने में अनेक तवायफें थी। जिनमें मुमताज बेगम, वहिदन, अल्लारखी आदि ख्याल, ठुमरी एवं ग़ज़ल बहुत अच्छा गाती थी। शकुरन शहजादी टप्पा को लच्छेदार तानों और ज़मज़मों के साथ आसानी से स्वर में पिरो कर पेश करती थी और एक के बाद एक बेदम गायकी का टप्पा गाती थी।

(4) **रामचंद्र समाधानी** :– ये कोटा के मथुराधीश मंदिर के संगीतज्ञ थे और वल्लभ सप्रंदाय की संगीत गायकी के कुशल कलाकार थे। आपने 40 वर्ष तक मथुराधीश मंदिर की सेवा की। आप सूरसागर के पदों को विशेषतया गाते थे और सूरसागर के सैकड़ों राग–रागिनी एवं अनेक तालों में वर्जित सूर पदों की नोटेशन से अनभिज्ञ होनें की पश्चात् भी शुद्धता से गाते थे। इनकी आवाज दमदार और

सुरीली थी।

(5) **सोहन भईया** :– आप दक्षिण भारत से कोटा आकर राज मंदिर ब्रजनाथ जी में हरि कथा करते थे आपने संगीत की शिक्षा ग्वालियर के मेहंदी हुसैन खाँ से प्राप्त की थे। आप ध्रुपद गायन में दक्ष थे। आपकी स्वतंत्र गायकी अलौकिक थी। तानपुरा बजाते हुए बड़े ख्याल के आलाप, तान गाना और तबला बजाते हुए ध्रुपद की लयकरी करना इनकी विशेषता रही है।

(6) **माणिक बाई** :– कोटा रियासत काल की शास्त्रीय गायन की सुप्रसिद्ध कलाकार माणिक बाई सुप्रसिद्ध गायक फिदा हुसैन तथा इब्राहिम खान की शिष्या थी। उनका जन्म 1923 में हआ। यह शास्त्रीय गायन की ख्याल शैली में पूर्णतया दक्ष थी। बुलंद तथा दमदार आवाज, बड़ी तैयारी के साथ दानेदार फिरकत पूर्ण तानों के कारण आपकी ख्याल गायकी बड़ी ही आकर्षक रही।

(7) **मोतीलाल (भुजवाले)** :– यह कोटा रियासत के प्रमुख संगीतकार थे। उनकी आवाज की तुलना बिस्मिल्लाह खान साहब की शहनाई से की जाती थी। आपको राजा भैया पूछवालों की तान मालिका और पंडित नारायण राव व्यास की मुद्रिकाओं के स्वर कंठस्थ थे। छितरलाल जो की एक श्रेष्ठ सारंगी वादक थे के साथ इनकी जोड़ी प्रसिद्ध थी।

(8) **भंवरलाल राव** :– आप कोटा रियासत के दरबारी संगीतज्ञ के थे। आप प्रसिद्ध तथा कुशल सारंगी वादक थे। उस समय की प्रसिद्ध गायिका गौहर जान के साथ भी आपने सारंगी की संगत की थी। बाद में उन्होंने अपना हुनर कराची फिल्म स्टूडियों की फिल्मों में काम करते हुए दिखाया।

निष्कर्ष :– कोटा रियासत के शासकों ने राजस्थान के अन्य राजपूत रियासतों की तरह संगीत तथा कलाकारों को अपने यहाँ आश्रय प्रदान किया। मुगलों एवं मराठों से सौहार्दपूर्ण संबंध के कारण यहाँ के गुणीजनखाना में उस समय के सर्वश्रेष्ठ कलाकार विराजमान रहते थे। यहाँ के महाराव वल्लभ सम्प्रदाय से प्रभावित थे इसलिए उन्होंने यहाँ पर हवेली संगीत को आश्रय देख कर भक्ति के पुष्टिमार्ग संप्रदाय को प्रशस्त किया।

संदर्भ ग्रंथ :–

- राजस्थान संगीत और संगीतकार।
- राजस्थान राज्य अभिलेखागार कोटा।
- राजस्थान थ्रू दी एजेजे–डॉ दशरथ शर्मा।
- हमारे संगीतज्ञ–श्री प्रकाश नारायण।
- हवेली संगीत–राजस्थान संगीत नाटक अकादमी प्रकाशन।
- रागमाल चित्र शोधग्रंथ–डॉ एमके शर्मा।
- हाड़ौती इतिहास–फिरोज अहमद।
- झालावाड़ इतिहास संस्कृति और पर्यटन–ललित शर्मा।
- राजपूताना का इतिहास–जगदीश सिंह गहलोत।
- कोटा राज्य का इतिहास–मथुरालाल शर्मा।
- राजस्थान के राजपूत–मांगीलाल।

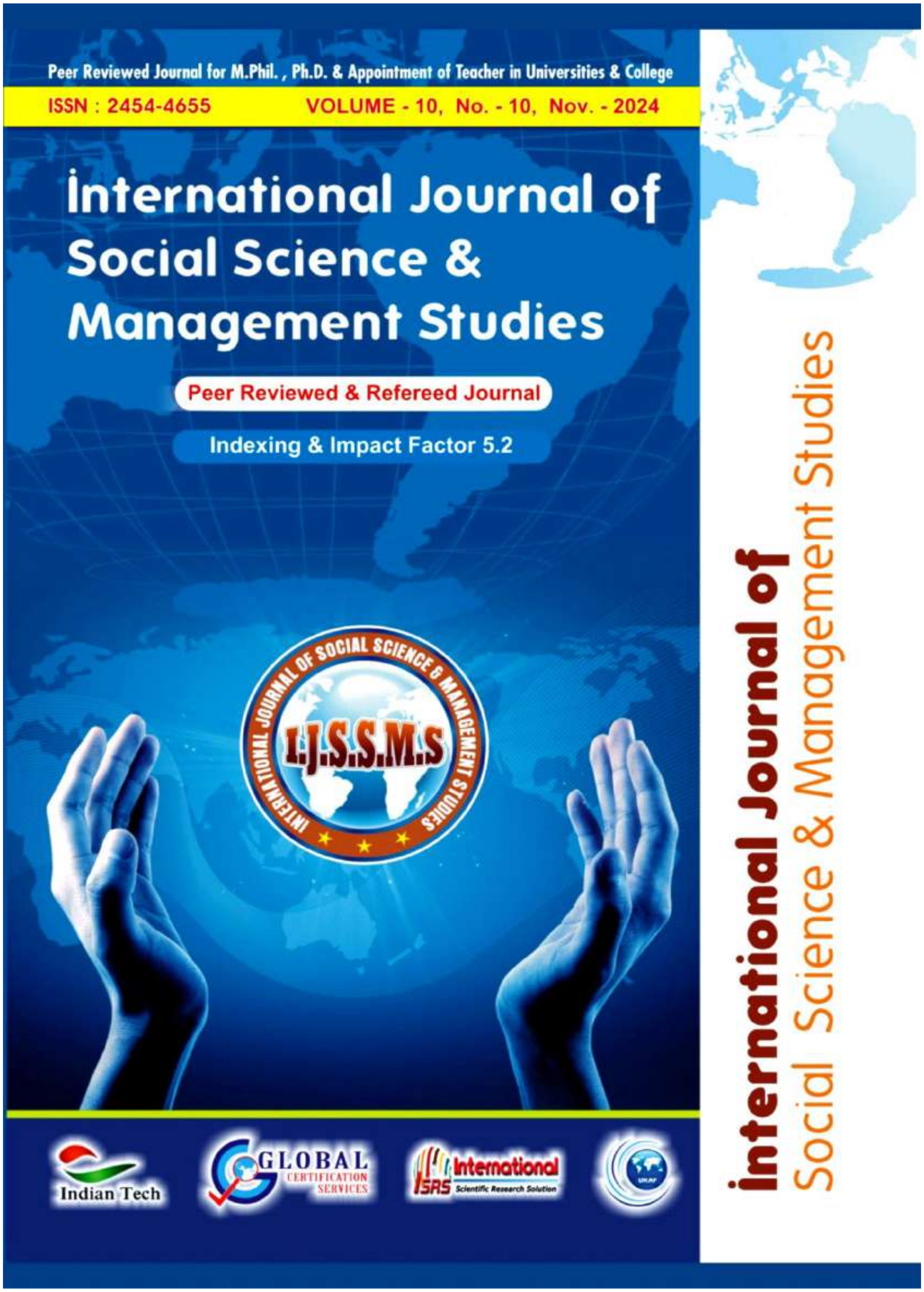
Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College
ISSN : 2454-4655
VOLUME - 10, No. - 10, Nov. - 2024
International Journal of Social Science & Management Studies
Peer Reviewed & Refereed Journal
Indexing & Impact Factor 5.2
INTERNATIONAL JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & MANAGEMENT STUDIES
I.J.S.S.M.S
Indian Tech
GLOBAL CERTIFICATION SERVICES
ISRS International Scientific Research Solution
International Journal of Social Science & Management Studies

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	गोंड जनजाति महिलाओं की शैक्षणिक एवं साँस्कृतिक स्थिति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. सरला चतुर्वेदी सुश्री अंजूलता गोस्वामी	1-7
2	तकनीकी शिक्षण संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का एक अध्ययन	डॉ. राजेन्द्र बौद्ध विनय कुमार सिंह	8-11
3	पश्चिम एशिया में सैन्य संघर्ष और भारत	डॉ. दीपेन्द्र सिंह तोपवाल	12-14
4	शैक्षणिक ग्रंथालय सेवाओं का मूल्यांकनः मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में	अशोक सिंह डॉ. सरिता वर्मा	15-19
5	लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना एवं महिला उद्यमिता	सीमा त्रिपाठी	20-24
6	कृषिः युवाओं के लिए रोजगार का विकल्प	श्री क्षितिज कुशवाह	25-27
7	राज्य विद्युत वितरण निगम : प्रशिक्षण द्वारा सुशासन की ओर	राकेश कुमार चौधरी	28-29
8	पॉलीसिस्टिक ओवेरियन डीसीज (पीसीओडी): शोध के आधार पर बचाव के नये दृष्टिकोण	खुशबू अखण्ड डॉ. मनोज कुमार शर्मा	30-35
9	आजमगढ़ जनपद (उ.प्र.) में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में विद्यमान क्षेत्रीय विषमताएं	शिक्षा राय डॉ. अजय कुमार चौहान	36-41
10	भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी : परिवर्तन की संभावनाएँ	कैलाश मेड़ा	42-46
11	ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवासी श्रमिकों के कारण एवं परिणाम के प्रभावों का एक अध्ययन	डॉ. गोविन्द पाटीदार रमेश नरगाँवे	47-50
12	जटिल न्यायिक प्रक्रिया और माध्यस्थम : एक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. जी.के. शर्मा विकास शिवहरे	51-52
13	नागपुरी जन्म संस्कार लोकगीतों में जनजीवन	डॉ. सुमन कुमार	53-57
14	बेरोजगारी : एक ज्वलन्त समस्या	डॉ. अरविन्द कुमार	58-62
15	महिला विधायकों की स्थिति : हरियाणा राज्य के संदर्भ में एक अध्ययन	रवि सरोहा डॉ. सोनिका	63-65
16	किशोरों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक निष्पादन पर प्रभाव का अध्ययन	श्रीमती रश्मि तिवारी डॉ. सानन्द कुमार	66-70
17	गांधी व भीमराव अम्बेडकर की दलित चेतना	डॉ. ममता रानी	71-75
18	मानव व्यस्त जीवन में बौद्ध की सम्यक समाधि एवं योग	मणिधर कुमारी	76-79
19	"उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में एकल शिक्षा एवं सह शिक्षा लेने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के (मल्टीडायमेंशन पर्सनॉलिटी) विविध आयामों में अन्तर्मुखता–बहिर्मुखता का अध्ययन" (नागपुर जिले के संदर्भ में)	योगेश चारडे डॉ. एम.एल. पाण्डेय	80-83
20	बून्दी रियासत की चित्रशैली पर संगीत का प्रभाव	प्रो. रौशन भारती जी गुंजन हाड़ा	84-86

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed–Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 10, No. – 10, November – 2024, Special Issue Hindi

बून्दी रियासत की चित्रशैली पर संगीत का प्रभाव

प्रो. रौशन भारती जी
शोध निदेशक, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
गुंजन हाड़ा
शोधार्थी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

प्रस्तावना :– राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर में बून्दी रियासत का महत्वपूर्ण स्थान है। बून्दी रियासत अपनी विशिष्ट चित्रशैली के लिए विश्व प्रसिद्ध है। बून्दी चित्रकला शैली अन्य चित्रशैलियों से पृथक एक बून्दी स्कूल है, जिसमें कालांतर में राजपूतों के प्रभाव ने भी इस शैली पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। बून्दी चित्रशैली पर संगीत का सारगर्भित प्रभाव रहा, जो कि बून्दी गढ़ में स्थित उम्मेद चित्रशाला के भित्ति चित्रों में नज़र आता है। रागमाला, बारहमासा तथा रागरागिनी आधारित बून्दी शैली के चित्रों ने बून्दी क़लम की विशिष्ट पहचान स्थापित की।

शब्द सूची :– उम्मेद महल, रागमाला, चित्रशाला, राग रागिनी।

अध्यरयन क्षेत्र का परिचय :– हाड़ौती क्षेत्र के बून्दी में स्थित बून्दी की चित्रशाला जिसे "Picture Gallery" भी कहा जाता है, राजस्थान के गौरवपूर्ण इतिहास का एक छुपा हुआ ख़ज़ाना है, जो अपनी शानदार वास्तुकला और उत्कृष्ट लघु चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है। इस चित्रशाला का निर्माण राव राजा उम्मेद सिंह जी (1739–1770) के शासनकाल में हुआ था। इस चित्रशाला की वास्तु कला में राजपूत और मुग़ल शैली का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इसमें बनाई गई मेहराबदार खिड़कियाँ तथा बारीक़ जाली का काम इसके अंदर हवा और प्रकाश का प्रवाह बनाते हैं तथा इसके साथ ही प्राकृतिक दृश्य भी दिखाते हैं। वास्तु कला की यह खूबसूरती चित्रशाला की दीवारों, छतों तथा अन्य स्थानों पर बनी कलाकृतियों के साथ मिलकर इसकी शोभा बढ़ाती है। चित्रशाला में बने चित्र हिन्दू पौराणिक कथाओं, राजपरिवार के दैनिक जीवन और प्राकृतिक दृश्य की झलकियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ श्री कृष्ण लीला, मानूसन के उत्सव और शाही सवारी के दृश्यों को बहुत ख़ूबसूरती के साथ उकेरा गया है। इन चित्रों में प्राकृतिक रंगों का सुन्दर समन्वय है, जिनमें नीला, हरा और सुनहरा रंग विशेष रूप से अपनी ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

बून्दी चित्रशाला में बने संगीत सम्बन्धित चित्र :– संगीत महफिल, सावन के हिण्डोले, बारहमासा, धार्मिक चित्र, रागमाला जनाना शामियाना दरबार, राग–रागनियों में काकूबा रागिनी, आसावरी राग, तोड़ी राग, बसन्त राग, दीपक राग, कामोद राग, राग हिण्डोला, राग मालकांस, भैरवी राग आदि प्रमुख है।

1. **काकूबा रागिनी** :– प्रस्तुग चित्र में काकूबा रागिनी को दर्शाया गया है। जो अष्ट नायिका श्रृंखला में से एक है। हर एक श्रृंखला में वर्णित नायिका की अलग–अलग प्रेम कहानी है। इस चित्र में प्रदर्शित नायिका को 'विरोहन कान्ती' तथा 'उत्का नायिका' के नाम से जाना जाता है, जिसमें नायिका अपने प्रियतम के परदेस चले जाने से बेहद दुखी है। जब से उसके प्रियतम परदेस गए हैं, नायिका अपने प्रेमी की राह देख रही है। कभी उद्यान में जाती है, तो कभी छत पर जा कर अपने प्रेमी को पुकारती है, पर उसे नायिका का कोई ख़्याल ही नहीं है। नायक के ना होने पर अपनी विरह व्यथा कभी मोर को सुनाती है, तो कभी अन्य पक्षियों को सुनाती है।

काकूबा रागिनी

2. **आसावरी राग** :– आसावरी राग को चित्रों में अक्सर नायिका के रूप में ही अधिकांशत दर्शाया जाता है, जो अपने गीत–संगीत एवं नृत्य के

माध्यम से सर्पों को मोहित अथवा अपने वश में करती है। इसमें वर्षा ऋतु का चित्रण होता है तथा घने जंगल में गायन करती नायिका को प्रदर्शित किया जाता है, जिसमें सर्पों पर तथा भक्ति भाव से ओतप्रोत होकर प्रकृति व जीवों को नियंत्रित करने की उसकी क्षमता को दर्शाया गया है। आसावरी राग की कुछ व्यारख्याओं में उसे सर्पों की देवी 'मानसा देवी' के साथ भी जोड़ा जाता गया है तथा कहीं–कहीं पर इसे योगिनियों से जोड़ा गया है, जो महिला तपस्वी है, जिसके पास अलौकिक शक्तियाँ विद्यमान है।

आसावरी राग

3. **भैरव राग** :– राग भैरव में सभी स्वरों का प्रयोग होने के कारण गुणीजन इसे सदा–सुहागनी रागिनी के नाम से भी पुकारते हैं। जिस प्रकार नई दुल्हन सौलह श्रृंगारों से सुशोभित होती है, उसी प्रकार भैरवी राग में भी सात शुद्ध व पाँच विकृत स्वरों का प्रयोग किया जाता है।

राग भैरव को भगवान शिव से जोड़ा जाता है। कई चित्रों में भैरव रागिनी को भगवान शिव की आराधना करते हुए, महादेव के सामने ध्यान करते हुए दर्शाया गया है, जो कि भैरवी राग की आध्यात्मिकता और भक्तिसूचक प्रकृति को दर्शाता है। भैरव राग की सुंदरता तथा गहराई ने कई संगीतकारों को अपनी ओर आकर्षित किया है। कई प्रसिद्ध गायक और वादक इस राग में अद्वितीय रचनाएँ प्रस्तुत कर चुके हैं। भैरवी राग की लोकप्रियता और प्रभावशीलता इसे हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सबसे महत्वपूर्ण रागों में से एक बनाती है। किसी भी संगीत सभा में सबसे अंत में समापन पर भैरवी राग प्रस्तुत किया जाता है। भैरवी राग के गायन अथवा वादन के बाद सभा समाप्तं हो जाती है। भैरवी राग गायन के पश्चात अन्य राग नहीं गाए–बजाए जाते हैं।

भैरव राग

4. **राग मालकॉस** :– राग मालकॉस औडव जाति का राग है, जिसका चलन मध्यम स्वर पर केन्द्रित होता है। मालकॉस राग का चित्रण जहाँ भी हुआ है, वहाँ पर निशा को प्रदर्शित किया गया है। जिसमें कई चित्रों में प्रेमी युगल के संवाद की मधुरता व सौंदर्यात्मकता का वर्णन किया गया है। कहीं पर नायक–नायिका को गीत के माध्यम से संदेश प्रेषित कर रहा है, तो किसी चित्र में नायिका गीत के माध्यम से अपनी विरह–व्यथा का वर्णन कर रही है। मालकॉस राग में अधिकांशत नायक व नायिका के प्रेम प्रसंगों का चित्रण हुआ है।

राग मालकॉस

5. **दीपक राग** :– दीपक राग की रचना भगवान शिव जी के द्वारा हुई, जिसका उल्लेख विभिन्न धर्मग्रंथों

में भी मिलता है। संगीत सम्राट तन्ना मिश्र 'तानसेन' जी जो असाधारण सांगीतिक प्रतिभा के धनी थे, उन्होंने भी दीपक राग को इस अंदाज़ में गाया की उसके प्रभाव से दीपक जल गए।

दीपक राग अत्यन्त रहस्यमयी तथा शक्तिशाली राग है, इस राग के स्वरों में बहुत असर है, तथा जहाँ इस राग का गायन होता है, वहाँ का सम्पूर्ण वातावरण ज्वलनशिल हो जाता है। ऐसी ही एक सत्य घटना जो अकबर के दरबार में घटित हुई थी, उससे सभी संगीतप्रेमी परिचित है। इस राग को 'अग्नि राग' भी कहा जाता है। दीपक राग मध्य रात्रि के समय ही गाया जाता है। दीपक राग के चित्रों में चन्द्रमा को मुख्य रूप से दर्शाया जाता है।

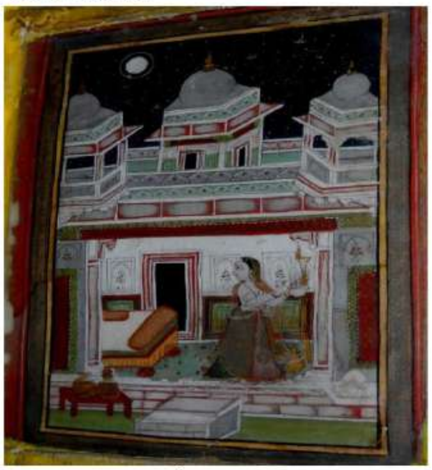

दीपक राग

निष्कर्ष :– बून्दी दरबार में फली–फूली चित्रकला पर संगीत का प्रभाव इस कदर रहा कि बून्दी चित्रशैली ने संगीत कला को श्रव्य से दृश्य रूप प्रदान करके विदेशी महमानों को भी अपनी कला की ओर आकर्षित किया तथा बून्दी चित्र शैली की कलात्मकता अन्य शैलियों में से सुप्रसिद्ध हुई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, कोटा।
2. रागमाला चित्र शोध ग्रंथ – डॉ.एम.के.शर्मा।
3. बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, डॉ. अरविन्द कुमार सक्सेना।
4. राजस्थानी चित्रकला – डा. जयसिंह नीरज।
5. Bundi Painting – Jiwan Sodhi.
6. Bundi The City of Painted Walls – R-A-Agrawala.

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

(ऑनलाइन - ऑफलाइन माध्यम)

साहित्य,समाज और हिंदी सिनेमा

आयोजक

राजकीय कला कन्या महाविद्यालय,कोटा (राज.)

18 जनवरी 2023

प्रमाण-पत्र

This is to certify that Pro/ Dr/ Ms/ Mr GUNJAN HADA

Designation Research Scholar

from GOVERMENT ARTS GIRLS COLLEGE KOTA

presented Paper (Oral / Poster) in Seminar. Title of the Paper संगीत के विकास में हाड़ौती शासकों का योगदान

डॉ.अशोक कुमार गुप्ता प्राचार्य राजकीय कला कन्या महाविद्यालय कोटा	डॉ. कविता मीणा संयोजक	डॉ. जीतेश जोशी सह संयोजक	धर्म सिंह मीणा सह संयोजक

50 Years Golden Jubilee

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Department of Music

Faculty of Fine Arts,
University of Rajasthan, Jaipur

Certificate

This is to certify that ~~Mr.~~/~~Mrs.~~/Ms./~~Dr.~~ Gunjan Hada

participated / ~~chaired a session~~ / ~~performed~~ / presented a paper

titled हाड़ौती अंचल के शिक्षण संस्थानों में संगीत की स्थिति

in the international conference.

International Conference on "कलाओं में वसंत"
23, 24 & 25 January 2023

Dr. Amita Raj Goyal
Co-Convenor

Prof. Vandana Kalla
Co-Convenor

Prof. Anjalika Sharma
Convenor

Dr. Anshu Verma
Organising Secretary

Dr. Harshit Vayar
Organising Secretary